Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

एक मुँह दो हाथ

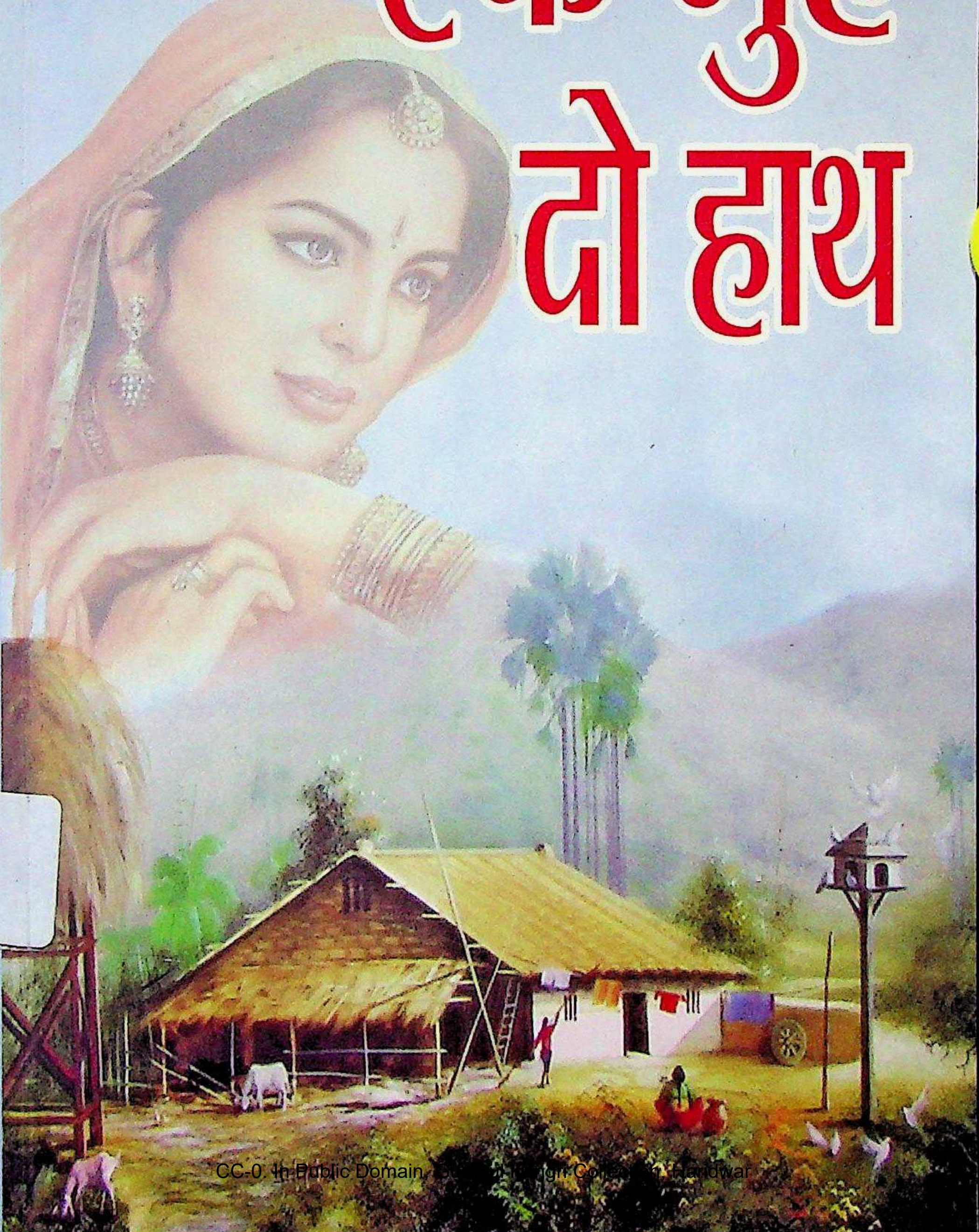

43
E
2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167892
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मुँह दो हाथ

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मुँह दो हाथ

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

Central Library
167892
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167892

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-E

पुस्तक मूल्य 250 रुपये
प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप)
नई दिल्ली–110005
वैबसाईट www.hindisahityasadan.com
ई–मेल hindisahityasadan@gmail.com
indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष 23553624, 23551344, 09213527666
संस्करण 2015
पुस्तक एक मुँह दो हाथ
लेखक *गुरुदत्त*
मुद्रक संस्कृती प्रेस, दिल्ली

EK MUH DO HAATH
By. GURU DATT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

दोपहर हो गयी थी। खेतों में निराही करते हुए गोपाल का अपना साया उसके पांव में आ गया। इस बात का ज्ञान होते ही उसने सिर उठाया और आकाश की ओर देखा। निर्मल नीलवर्ण निरभ्र आकाश बहुत सुन्दर दिखाई दिया। सूर्य सिर पर था। वह उठा और उसने अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई।

बसन्त ऋतु थी। सरसों का खेत था और पीले फूलों से खेत भरा पड़ा था। दूर-दूर तक जो कुछ भी दिखाई देता था, पीला और हरा ही दिखाई देता था।

गोपाल ने आवाज़ दी, "मोहन! अरे ओ मोहन!!" मोहन गोपाल के सबसे बड़े पुत्र का नाम था।

दूर खेतों से आवाज़ आई, "आया बाबा!"

गोपाल ने कुएँ की ओर देखा। कुएँ पर सोहन रहट पर खड़ा बैलों को खोल रहा था। गोपाल ने सन्तोष अनुभव किया और अपना खुर्पा हाथ में पकड़े हुए कुएँ की ओर चल पड़ा। इस समय मोहन भी खुर्पा हाथ में लिए कुएँ की ओर चल पड़ा था। सोहन ने बैलों को कुएँ की नाल के नीचे बनी हौदी में जल पिलाया और फिर उनको कुएँ के पार्श्व में बनी कोठरी के बाहर धूप में ले जाकर खड़ा कर दिया। उनके सामने उसने खाने के लिए भूसा डाल दिया।

कुएँ के समीप पक्की सीमेंट का चबूतरा बना था। उस पर गोपाल और उसके बड़े लड़के मोहन ने अपने खुर्पे रखे। मोहन ने रहट को हाथ से धकेला तो कुएँ से पानी निकलने लगा। गोपाल ने हाथ, पांव और मुख धोया। इस समय सोहन बैलों के सामने चारा इत्यादि डाल कुएँ के समीप आ गया। उसने रहट को धकेला तो मोहन ने भी हाथ मुख धो लिया। अब तीनों खड़े हो गाँव की ओर देखने लगे।

खेतों और रहट से गाँव डेढ़ फर्लांग के अन्तर पर था। वहाँ से चला आदमी खेतों से दिखाई दे जाता था। ये भी किसी के आने की प्रतीक्षा में थे। आज कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता दिखाई नहीं दे रहा था।

सोहन ने कहा, "बाबा! माँ नहीं आ रही?"

गोपाल ने आँखें मूंद कुछ विचार किया और कहा, "हम घर चलेंगे। कदाचित् वह आज नहीं आयेगी।"

सोहन ने पूछा, "क्यों?"

गोपाल मुस्कराया, "मैं तुम्हारे एक नये भाई अथवा बहिन के आने की आशा करता हूँ।"

सोहन ने हंसते हुए कह दिया, "तो अब हम सात हो जायेंगे।"

गोपाल ने कहा, "नहीं आठ। सात भाई और एक बहिन।"

"बाबा, चलो। उसे देखें।"

"हाँ।" सोहन को भी भूख अनुभव होने लगी थी। वह भागा हुआ गया और बैलों के गले का रस्सा, वहीं गढ़े एक खूटे से बांध चलने को तैयार हो गया।

गोपाल मन में विचार कर रहा था कि यह सौभाग्य है क्या? उसको अपने गाँव के बनियों की बात स्मरण हो आई थी। बनिये ने एक दिन गोपाल से कहा था, "गोपाल दादा! अब अपनी बीवी को छुट्टी दे दो। बहुत हो गये हैं।"

गोपाल ने हंसकर उत्तर दिया था, "पर, पंडित तो कह रहा था कि शास्त्र में दस बच्चे पैदा करने वाले को महान सौभाग्य का भागी बताया है।"

बनिये का कहना था, "दादा! आजकल कलयुग है। जो सतयुग में सौभाग्य माना ज़ाता था वह आजकल दुर्भाग्य ही कहा जायेगा।"

अब गोपाल को यही बात ध्यान में आ गई थी। उसका विवाह हुए अट्ठारह वर्ष हो चुके थे। विवाह के समय उसकी पत्नी भगवन्ती देवी की आयु बारह वर्ष की थी। प्रथम सन्तान विवाह के चार वर्ष उपरान्त, जब भगवन्ती देवी सोलह वर्ष की थी, हुई और फिर तब से नियम पूर्वक प्रति दो वर्ष बाद एक बच्चा हो रहा था। अभी तक लड़की एक ही हुई थी। वह भगवन्ती की पांचवीं सन्तान थी। लड़की का नाम रखा गया था, राधा। राधा के अनन्तर दो लड़के और हो चुके थे। अब यह आठवाँ प्रसव था।

सब बच्चे हृष्ट-पुष्ट थे। बड़े दोनों मोहन और सोहन, इस समय चौदह और बारह वर्ष के हो चुके थे और पिता के साथ खेतों में काम करते थे। सोहन से दो छोटे लड़के राम और श्याम पड़ोस के गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते थे। मोहन और सोहन तो गाँव के पंडित ब्रजलाल से ही पढ़े थे, पंडित ने उन्हें हिन्दी और गणित में जोड़, ऋण, गुणा और भाग करना सिखा दिया था। मोहन तो अभी भी पंडित जी से पढ़ने जाया करता था; सोहन ने पढ़ना छोड़ दिया था। स्कूल जाने वाले राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और श्याम से छोटी थी, राधा। वह भी पंडित जी से हिन्दी-गणित पढ़ने लगी थी। छोटे दोनों, लाल और माणिक ने पढ़ना आरम्भ नहीं किया था।

पिता और उसके दोनों बड़े लड़के गाँव में पहुँचे और बनिये सुन्दरलाल की दुकान के आगे से गुज़रे तो सुन्दरलाल ने आवाज़ दे दी, "गोपाल भैया!" सुन्दरलाल मुस्करा रहा था।

गोपाल भी यह समझ कि वह उसकी पत्नी के विषय में किसी प्रकार की सूचना देना चाहता है, रुककर उसकी दुकान के बाहर आ खड़ा हुआ। गोपाल बोला नहीं। वह उससे सुनने की प्रतीक्षा में था। सुन्दरलाल हंस पड़ा और बोला, "भाई, तुम बहादुर आदमी हो। इस बार दो...एक लड़का और एक लड़की!"

"सच?"

"हाँ। शान्ति अभी तुम्हारे घर से ही आई है। मैं तो तुमको मना करता हूँ और तुम दोगुनी गति से बढ़ते जाते हो।"

"भगवन्ती तो ठीक है?" गोपाल ने अपनी पत्नी की बात पूछ ली।

"शान्ति कह रही थी कि इस बार दो होने से कष्ट अधिक हुआ है; परन्तु भाई, कमाल है मोहन की माँ भी। डेढ़ घंटा लगा और वह होंठों को दांतों तले दिये लेटी रही है। मुख से 'सी' तक नहीं निकली। दायी अभी वहीं है। वह तुमसे इनाम पाने की प्रतीक्षा में ठहरी है।"

"ईश्वर का धन्यवाद है।" गोपाल के मुख से अनायास निकल गया। तीनों घर को चल पड़े। उनका घर सुन्दरलाल की दुकान से बीस पग के अन्तर पर ही था। वे घर के प्रांगण में पहुँचे तो नूरी दायी मुस्कराते हुए बोली, "भैया! लाओ मेरा इनाम। इस बार दोगुना लूँगी।"

"नूरी बहिन! पारिश्रमिक दोगुना होगा, पर इनाम तो एक ही होगा।"

"एक हो या आधा हो। लूँगी पूरे पांच। कम नहीं लूँगी।"

"देखो, नूरी! तुम्हारे काम का हिसाब तो तेरह दिन के उपरान्त करूँगा, पर इनाम पहले दो रुपये दिया करता था, इस बार तीन किये देता हूँ। लड़की का तो आधा इनाम होना चाहिये।"

नूरी हंस पड़ी और बोली, "मर्द हो न। इसीलिये पुत्रों की कद्र लड़कियों से ज़्यादा करते हो। तुम दो ही दे दो। लड़की का इनाम में बहिन भगवन्ती से ले लूँगी। वह लड़कियों की कद्र जानती है।"

गोपाल हंस पड़ा और बोला, "जैसा मन आये करना। मैं तो जो मुझे ठीक जान पड़ता है, कर देता हूँ।"

गोपाल घर में गया और दो मिनट में ही लौट आया। वह कुछ मुट्ठी में बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लाया था। उसने आते ही कहा, "मोहन! देखो, राधा रसोई में कुछ खाने को बना रही है। वह सब कुछ जला देगी। सोहन, तुम देखो, लाल और माणिक कहाँ हैं? पड़ोस में खेल रहे होंगे।"

दोनों लड़के गये तो गोपाल ने मुट्ठी खोल नूरी को रुपये दे दिये। ये सात थे। नूरी ने गिने और विस्मय में गोपाल का मुख देखने लगी। गोपाल ने पूछ लिया, "क्यों? कुछ कम हैं?"

"नहीं भैया! भगवान तुम्हारे काम में बरकत डाले।" इतना कह वह बाहर को चल पड़ी। प्रांगण के द्वार के समीप पहुंच वह घूमी और बोली, "मैं चार पांच बजे आऊंगी। मोहन की माँ को कह देना।"

सोहन, माणिक और लाल को पकड़ लाया। गोपाल ने पूछा "लाल, कहाँ थे?"

"सीता की माँ ने कहा था। घर से बाहर जाकर खेलो। हम मैदान में गुल्ली-डंडा खेल रहे थे।"

"रोटी खायी है?"

"हाँ। माँ ने आज जल्दी ही खिला दी थी। राधा ने पकायी थी।"

गोपाल भगवन्ती के कमरे में गया। वह खाट पर सीधी लेट रही थी। गोपाल ने पूछा, "सुनाओ, कैसी हो?"

"वहुत थक गयी हूँ। शान्ति कह गयी थी कि वह मेरे लिए 'सीरा' लायेगी। उसकी प्रतीक्षा में हूँ, बच्चों को वह मधु चटा गयी है। वे सो रहे हैं।"

"ठीक है। मैं राधा को उसके घर भेजकर सीरा मंगवा लेता हूँ।"

"और तुम क्या खाओगे?"

"मोहन कुछ बनाने लगा है।"

"हाँ, जो बने खा लेना। मैं तो अब तेरह दिन की छुट्टी पर हूँ।"

गोपाल मुस्कराया और बोला, "अच्छी बात। मैंने दायी को इनाम दे दिया है। काम के लिए तुम देना।"

"कुछ पहले से अधिक देना था।"

"अच्छा! पर क्यों?"

"मेरे आस-पास देख लो।" भगवन्ती ने मुस्कराते हुए कहा उसका आशय था कि उसने दो बच्चों को जन्म दिया है। गोपाल ने मुस्कराते हुए कहा, "शान्ति का घरवाला कहता था कि जितने अधिक तुम पैदा करती हो, उतनी ही मुसीबत होने वाली है।"

"वह मूर्ख है।"

"कहता था जब ये खेतों को बांटेंगे तो आपस में लड़ पड़ेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह नहीं समझता। ये जाट के बेटे हैं। बनियों से तो अधिक ही सूझ-बूझ रखेंगे।"

इस समय शान्ति आ गयी। उसने कमरे में आते ही कहा, "भैया! बहुत-बहुत बधाई हो। इस बार तो बहिन को भी शकुन दोगुना मिलना चाहिये।"

"वह तो होगा।"

शान्ति एक कटोरदान में कुछ लायी थी। उसने गोपाल को कह दिया, "मैं तुम्हारे लिये भी बाहर रसोई में रोटियां और दाल रख आयी हूँ। तुम लोग खाओ। मैं इसे खिला देती हूँ।"

गोपाल बाहर निकल गया। शान्ति ने भगवन्ती को कहा, "तुम लेटी रहो। मैं चम्मच से तुम्हारे मुख में डाल देती हूँ। हिलना-डुलना नहीं।"

भगवन्ती लेटी रही और शान्ति चम्मच से सीरा उसके मुख में डालने लगी थी। आटा भून कर गुड़ के शीरे में बहुत पतला-पतला हलुआ बना हुआ था।

पेट में गरम-गरम सीरा गया तो प्रसूता को कुछ शान्ति अनुभव हुई। शान्ति ने कहा, "अब तुम सोने का यत्न करो।"

2

इसके सवा मास उपरान्त की बात है। छोटे बच्चे चालीस दिन के हो गये थे। भगवन्ती अब सर्वथा स्वस्थ थी और घर का काम-काज करती थी। बच्चों का नाम रखने का समारोह था। प्रांगण में दरी, चादरें और पूजा का सामान रखा था। गाँव का पुरोहित ब्रजलाल एक थाल को दरी के ऊपर रखकर, उसमें गूंथे आटे का दीपक बना, घी और बत्ती उसमें लगा, जलाने को तैयार बैठा था। भगवन्ती वस्त्र आभूषण धारण किये पंडित जी के सामने बैठी थी। एक बच्चा उसकी गोद में था और दूसरा राधा ने लिया हुआ था। गाँव के लोग आ रहे थे और गोपाल प्रांगण के द्वार पर खड़ा उनका स्वागत कर रहा था।

स्त्री-पुरुषों तथा बाल-बच्चों के साथ प्रांगण भरता जाता था। ब्रजलाल ने आकाश की ओर देख गोपाल को आवाज़ दे दी, "गोपाल भैया! अब आओ। मुहूर्त्त का समय टलता जाता है।"

गोपाल और उसके सब बच्चों ने नये वस्त्र पहिने थे। गोपाल भगवन्ती की दाहिनी और बैठ गया और छः बच्चे उनके पीछे बैठ गए। पंडित ने पूजा आरम्भ कर दी। गाँव के प्रायः सब स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध उपस्थित थे। गाँव वालों में कुछ तो गोपाल के सौभाग्य पर ईर्ष्या करते थे, कुछ घृणा करते थे। ईर्ष्या करने वाले स्वयं निःसन्तान अथवा कम सन्तान होने के कारण अपने को उससे कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग्यशाली मानते थे। घृणा करने वाले, बच्चों को गंदगी समझते थे। कुछ ऐसे भी थे जो गोपाल की पत्नी पर दया अनुभव करते थे। वे समझते थे कि बेचारी को कितना कष्ट सहन करना पड़ा है और फिर इतने बड़े परिवार के पालन-पोषण का भार भी उस पर है। सुन्दरलाल भी आया हुआ था। वह तो पुरोहित जी के पास बैठा था और उसकी पत्नी और दो बच्चे भगवन्ती के बच्चों के पास बैठे थे।

सुन्दरलाल की बड़ी लड़की थी सीता। वह मोहनलाल के पीछे बैठी थी। सीता का भाई चुन्नीलाल अपने पिता के पास बैठा था। पंडित मंत्र-पाठ कर रहा था। लोग पंडित जी के बुड़बुड़ाने को न समझते हुए चुपचाप बैठे देख रहे थे।

पंडित जी ने पूजा समाप्त की। बच्चों का नाम रखा गया। लड़की का शकुन्तला और लड़के का केवलकिशोर। बधाइयाँ दी गयीं और पंडित जी को नगर से मंगवाई मिठाई का एक थाल, ग्यारह रुपये और धोती, अंगोछा भेंट में दिया गया। घर की दाई, नाई, मोची, भंगी, लुहार इत्यादि को दो-दो रुपये दिये गये। गाँव के सब आये हुए लोगों को एक-एक दोने में बूंदी के चार-चार लड्डू मिले। लोग बधाइयाँ देते हुए विदा होने लगे।

एक पड़ोसी बिहारीलाल था। वह गोपाल के विस्तार-पाते-परिवार को देख घृणा करने वालों में था। वह अपने तीन बच्चों और पत्नी के साथ आया था। तीन बच्चों में दो लड़कियाँ और एक लड़का था। बड़ी लड़की सुभद्रा इस समय बारह वर्ष की थी। सुभद्रा की माँ पन्ना को लड़की के विवाह की चिंता होने लगी थी। उसकी दृष्टि मोहन पर लगी थी। वह देख रही थी कि लड़का मेहनती और पिता का कहा मानने वाला है। देखने में भी सुन्दर और सुडौल प्रतीत होता है।

बिहारीलाल अपने परिवार सहित गोपाल के घर से निकला तो पन्ना ने अपने पति की ओर देखकर कह दिया, "गोपाल भीतर से मज़बूत मालूम होता है। इस बार इसने दिल खोलकर व्यय किया है।"

"हाँ।" बिहारीलाल ने व्यंग के भाव में कह दिया, "तीस एकड़ भूमि है और भूमि के बीचों-बीच कुआँ है : दोनों लड़के पिता के साथ काम करते हैं। वैसे सुन्दरलाल इसका मित्र है : इस कारण हाथ खुला है। परन्तु पन्ना! यह चार दिन की चांदनी है। शीघ्र ही अन्धेरी रात आने वाली है।"

"अच्छा, क्यों?"

"सात लड़के हैं। अब तो दो स्कूल में पढ़ने जाने लगे हैं। पढ़ों और अनपढ़ों का एक घर में निर्वाह नहीं हो सकेगा। सात बहुएँ एक ही घर में रहेंगी तो दिन भर गाली-गलौज और लांछन-उल्हाने होते रहेंगे। यह तीस एकड़ भूमि जब बंटेगी तो यदि आपस में मुकद्दमा न हुआ तो चार-चार एकड़ हाथ में रहेगी और तब ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सब हमसे भी छोटे हो जाएंगे।"

पन्ना समृद्ध घरों में बंटवारे से बरबादी होते देख चुकी थी। उसको अपने भाइयों की बात स्मरण हो आई। वे खत्री (क्षत्री) खन्ने थे। नगर में दुकान करते थे। चार भाई थे और एक बहिन थी। पिता के देहान्त पर उसके भाइयों में मुकद्दमा हो गया। बंटवारे पर झगड़ा हुआ और मुकद्दमे में चारों बरबाद हो गये। पन्ना ने कुछ विचार कर कहा, "पर, संसार में सब झगड़ा नहीं करते। अब तो कुन्दन भी कहता है कि मुकद्दमा कर उसने भूल की थी। जब से वह ऐसा समझने लगा है, उसकी अवस्था सुधरने लगी है।"

कुन्दन पन्ना का सबसे बड़ा भाई था और यह कहा गया था कि उसने पिता के बही-खाते गुम कर पिता की सम्पत्ति का अधिकांश छुपा लिया है। मुकद्दमा सात वर्ष तक चलता रहा था और कुन्दनलाल का यह कहना था कि जो कुछ भी प्रत्यक्ष अथवा छिपाया हुआ उसके पास था, वह सब मुकद्दमे के दिनों में समाप्त हो गया था।

इस समय बिहारीलाल और उसकी पत्नी तथा बच्चे अपने घर पहुंच गये थे। अपने बैठक घर में पहुंच पति-पत्नी बैठ गये थे। बच्चे अपने-अपने काम में लग गये थे। पत्नी ने अपने मन की बात बता दी, "सुभद्रा अब ग्यारह वर्ष की हो गई है। भगवन्ती का लड़का मोहन कैसा रहेगा?"

"सुभद्रा के विवाह की बात कर रही हो?"

"गाँव में कोई और लड़का इतना अच्छा दिखाई नहीं देता।"

"पर, मेरी एक टांग नगर में भी तो है। वहाँ तो अपनी जाति-बिरादरी के बहुत लोग रहते हैं।"

बिहारीलाल के फलों के बाग थे। वह रहता था गाँव में परन्तु उसका काम नगरों में भी था। फल बेचने का प्रबन्ध करने के लिए नगर में जाना-आना लगा रहता था। सुभद्रा की माँ ने कह दिया, "नगर में लड़कियां पढ़ने लगी हैं और वहाँ इस अनपढ़ लड़की का कैसा निर्वाह होगा?"

"तुम नगर में चलकर रहो। वहाँ सुभद्रा को स्कूल में बैठा दूँगा।"

"परन्तु वह तो अब बड़ी हो गई है। ग्यारह वर्ष की लड़की पहली श्रेणी में कैसे जाकर बैठेगी?"

"एक बात हो सकती है। नगर में चलकर इसको घर पर पढ़ाने के लिए एक अध्यापिका रख देंगे।"

"यदि घर पर ही पढ़ाना है तो यहीं पंडित ब्रजलाल से पढ़ने के लिये भेज दीजिये। मोहन की बहिन राधा भी तो उससे पढ़ती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह क्या पढ़ायेगा? अंग्रेज़ी तो वह जानता नहीं। यही कुछ शास्त्री पढ़ पत्रा बाँच लेता है।"

"पढ़ाई तो है यह भी?"

"परन्तु नगर में यह पढ़ाई चलेगी नहीं।"

"तब तो लड़की का विवाह यहीं करना होगा। मोहन मुझे पसन्द है।"

"परन्तु उनका बड़ा परिवार मुझको पसन्द नहीं। लड़की उनके घर में जायेगी तो घर के प्राणियों की सेवा ही करती-करती मर जायेगी। इससे भी बड़ी बात यह है कि वे जाट हैं और हम खत्री हैं।"

"तो जाट खत्री नहीं क्या?"

"मैं तो उनको अपने से पृथक् मानता हूँ।"

"एक दिन भगवन्ती कह रही थी कि वे यदुवंशी हैं। भगवान कृष्ण की जाति के। कृष्ण तो क्षत्रिय थे।"

"पर, खत्री तो नहीं थे।"

"दोनों एक नहीं हैं क्या?"

बिहारीलाल मुख देखता रह गया। इस पर पन्ना ने कह दिया, "मैं करूँ बात भगवन्ती से?"

बिहारीलाल मन को राज़ी नहीं कर सका, परन्तु वह अपनी पत्नी की बात का खण्डन भी नहीं कर सका। वह अपने को क्षत्रिय वर्ण का मानने के लिए तैयार हो गया था। जब अपने को क्षत्रिय मानने के लिए तैयार हुआ तो जाटों को यदुवंशी मानने पर विवश हो गया। इतना मानकर अपनी लड़की को किसी यदुवंशीय के घर देने में आपत्ति नहीं कर सका। फिर भी उसके सामने यह आपत्ति तो बनी ही थी कि गोपाल के घर में फूट पड़ेगी और परिवार तबाह हो जायेगा। उसने कह दिया, "लड़की को इतने बड़े परिवार में देते हुए भय लगता है।"

पन्ना ने कह दिया, "लड़का बहुत अच्छा है। ऐसा कहीं अन्यत्र मिलेगा नहीं।"

बिहारीलाल ने बात टालने के लिये कहा, "ज़रा विचार कर लेने दो।"

पन्ना के मन में मोहन समा गया था। परिणाम यह हुआ कि वह भगवन्ती के घर में आने-जाने लगी। यद्यपि उसने अभी सुभद्रा की सगाई की बात नहीं की परन्तु इस बात से पूर्व उसने दोनों परिवारों में मेल-मुलाकात बढ़ाने का यत्न आरम्भ कर दिया। एक दिन पन्ना ने भगवन्ती से बातों ही बातों में पूछ लिया, "राधा पंडित जी से क्या पढ़ती है?"

भगवन्ती ने बताया, "जब मैंने लाल और माणिक को स्कूल भेजना आरम्भ किया तो पंडित जी ने पूछ लिया कि राधा को नहीं पढ़ाओगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने पूछ लिया, कहाँ पढ़ाऊं?" पंडित जी ने कहा, "मैं अपनी लड़की कलावती को पढ़ा रहा हूँ। इसे भी भेज दिया करो। इसे हिन्दी, संस्कृत पढ़ा दूँगा।"

मैंने कहा, "संस्कृत पढ़कर यह पंडितायिन बन जायेगी?"

पंडित जी हंस पड़े और बोले, "नहीं, यह रहेगी जाट की बेटी ही। हाँ, अक्ल सीख जाएगी। राधा बहुत समझदार है। इसकी बुद्धि तीव्र है और कहीं शास्त्र की सान पर चढ़ गई तो यह सुखी हो जायेगी।'

"पंडित जी का कहना है, सुख मिलता है परमात्मा की कृपा से और कुछ शास्त्र-वास्त्र पढ़ गई तो परमात्मा का स्मरण कर लिया करेगी।"

पन्ना को बात समझ आने लगी। उसने कह दिया, "मैं विचार करती हूँ कि सुभद्रा को भी पंडित जी से पढ़ने भेज दूँ।"

"बात तो ठीक है। हम पंडित जी को पढ़ाने के लिये व्यास-पूजा के समय एक सौ रुपये मूल्य का अन्न-अनाज अथवा नकद जो कुछ भी वे चाहें, देते हैं।"

"यह तो बहुत ज़्यादा है। स्कूल में तो चार आने महीना फीस होती है।"

"पंडित जी तो कुछ माँगते नहीं, परन्तु मोहन के पिता इतना कुछ पूजा में दे आते हैं।"

इस पर पन्ना विचार करने लगी कि इनके घर में क्या रुपयों की वर्षा होती है जो ये खुले हाथ दान-दक्षिणा देते हैं। एक बात इसकी समझ में आ गई थी कि यह फीस नहीं है। यह पूजा में चढ़ावा है और न्यूनाधिक भी हो सकता है। उसने पंडित जी से बात करने का निश्चय कर लिया।

वह पंडित ब्रजलाल के घर जा उनसे पूछने लगी, "पंडित जी! भगवन्ती की लड़की को पढ़ाने का क्या लेते हैं?"

"लालायिन।" बिहारीलाल पंडित ब्रजलाल का यजमान नहीं था। उसका पुरोहित नगर में रहता था। लाला के घर कोई संस्कार होता तो वह नगर से बुलाया जाता था। इस कारण पंडित ब्रजलाल ने पन्ना को यजमानिन के स्थान पर लालायिन कहा था। उसने कहा, "विद्या का दाम नहीं लिया जाता। इस कारण मैं तो इसका कुछ नहीं लेता।"

"परन्तु वे आपको कुछ तो देते हैं?"

"हाँ, वे यजमान हैं अपने पुरोहित को सदा देते रहते हैं।"

"मैं अपनी लड़की को भी दो अक्षर पढ़ाने का विचार कर रही हूँ।"

"दो नहीं, लालायिन। सब अक्षर पढ़ा दूँगा। उसको भेज दिया करो।"

इस प्रकार पंडित ब्रजलाल की एक अन्य शिष्या बन गई। पंडित जी गाँव के कुछ लड़कों को भी पढ़ाते थे। गोपाल का लड़का मोहन और एक अन्य जाट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लक्ष्मण का लड़का साधु भी पढ़ने आते थे। लड़कों की पढ़ाई सायंकाल होती थी। लड़कियों में तो पंडित जी की अपनी लड़की कलावती, रामलुभाया की बहिन सरस्वती और गोपाल की लड़की राधा ही थी। अब बिहारीलाल की लड़की सुभद्रा भी आने लगी। लड़कियाँ पढ़ने के लिये मध्याह्न के समय आया करती थीं।

3

रामलाल और श्यामलाल, गोपाल के दो लड़के पड़ोस के गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते थे। स्कूल इनके अपने गाँव से सवा मील के अन्तर पर था। रामलाल अब पांचवीं श्रेणी में और श्यामलाल तीसरी श्रेणी में पढ़ता था। इनके गाँव में कोई स्कूल नहीं था। एक स्कूल मास्टर आस-पास के गाँवों में घूम-घूम कर अपने स्कूल के लिये विद्यार्थी एकत्रित किया करता था। उसकी प्रेरणा पर ही गोपाल ने अपने दो लड़कों को भेजा था।

स्कूल का मास्टर घनश्याम जात का बनिया था। स्कूल सरकारी था और उसमें लड़कों की संख्या पर मास्टर की कार-गुजारी का अनुमान लगाया जाता था और इससे उसके वेतन में वृद्धि होती थी। इसी कारण घनश्याम स्कूल में विद्यार्थी अधिक करने का यत्न करता रहता था।

इस पर भी स्कूल में विद्यार्थियों की पढ़ाई का ध्यान कम रहता था। एक बात वह किया करता था। बच्चों के स्कूल आने में रुचि बनाये रखने के लिये वह उनको कहानियाँ सुनाता रहता था।

मास्टर घनश्याम का एक सहायक भी था चिरंजीत लाल। वह जाति का क्षत्रिय और दसवीं श्रेणी तक पढ़ा था। घनश्याम तो जे.ए.वी. पास था। वह चिरंजीत लाल से अधिक योग्य था, परन्तु चिरंजीत लाल मेहनत से लड़कों को पढ़ाता था और स्कूल के प्रबन्ध में भी अधिक परिश्रम करता रहता था।

घनश्याम कभी-कभी गोपाल के गाँव बेगमपुरा में भी आया करता था। वह यह अपना कर्त्तव्य समझता था कि स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिलता रहा करे। इससे स्कूल में आने वाले लड़कों की संख्या बनी रहती थी व धीरे-धीरे और अधिक होती रहती थी।

जब-जब भी वह बेगमपुरा में आता था, वह सुन्दरलाल की दुकान पर भी आता था और वहाँ बैठकर टोह लेता रहता था कि किन-किन के लड़के स्कूल जाने योग्य हुए हैं।

व्यास-पूजा का दिन था। मास्टर घनश्याम सुन्दरलाल की दुकान पर बैठा था कि गोपाल अपने छहों लड़कों मोहन, सोहन, राम, श्याम, लाल और माणिक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साथ वहाँ आया। मोहन के हाथ में थाली थी। थाली एक रेशमी वस्त्र से ढंकी हुई थी। छुट्टी का दिन था। उस दिन मास्टर के लिये सुन्दरलाल ने दुकान के बाहर छाजन के नीचे खाट डलवा दी थी। मास्टर वहीं पर बैठा था।

गोपाल अपने लड़कों के साथ आया तो मास्टर को खाट पर बैठे देख हाथ जोड़ 'पाय लागूं' कर पूछने लगा, "मास्टर जी कैसे हो?"

"चौधरी! सब ठीक है। ईश्वर की कृपा है।"

गोपाल और उसके लड़कों ने नये कपड़े पहने हुए थे और वे सब मास्टर की खाट के पास खड़े थे। मास्टर उन सबको सज-धज से खड़ा देख, पूछने लगे, "चौधरी! क्या है आज? ऐसा प्रतीत होता है किसी बारात पर जा रहे हो?"

"आज व्यास-पूजा है न। हम सब पुरोहित जी की पूजा के लिये जा रहे हैं।"

"ओह! चौधरी, तुम पूजा भी करते हो?"

"हाँ, मास्टर जी। वर्ष में एक दिन पंडित जी की सेवा करने का अवसर भी मिलता है।"

घनश्याम मन में विचार करने लगा कि वह भी ब्राह्मण के घर पैदा होता तो उसकी भी पूजा होती। उसने गोपाल से पूछ लिया, "पूजा में क्या होता है?"

सुन्दरलाल दुकान पर नहीं था। भीतर घर में गया हुआ था। घर दुकान के पीछे था और घर को जाने का मार्ग दुकान में से भी था। अतः गोपाल, जो सुन्दरलाल से पूजा में भेंट देने के लिये रुपये लेने आया था, मास्टर जी से बातें करने खड़ा हो गया। मास्टर के प्रश्न के उत्तर में उसने कहना आरम्भ कर दिया, "थाली में पुष्प, फल और मिठाई हैं। साथ ही एक कटोरी में घिसा केसर है। चावल हैं। केसर-चावल से पंडित जी को तिलक लगाते हैं। फिर पंडित जी के सम्मुख फूल चढ़ा हम कुछ भेंट देते हैं। मिठाई फल उनको दे दिये जाते हैं। वे सबको एक-एक टुकड़ा मिठाई और एक-एक फल बांट देते हैं और शेष अपने पास रख लेते हैं।"

"हाँ, जो कुछ हमारी सामर्थ्य में होता है, देते हैं। लाला सुन्दरलाल से इसी मतलब के लिये अपने हिसाब में से रुपये लेने आया हूँ।"

रुपये की बात सुन घनश्याम के मुख से लार टपकने लगी थी। वह पूछना चाहता था कि वह कितने रुपये भेंट में दिया करता है, परन्तु वह पूछ नहीं सका। सुन्दरलाल दुकान पर आ गया था। गोपाल ने उसे देखा तो कह दिया, "लाला जी! जय राम जी की।"

"आओ, गोपाल! क्या चाहिये?" सुन्दरलाल भी नये कपड़े पहिने हुए था। उसके साथ उसका लड़का चुन्नीलाल भी सफ़ेद धुले कपड़े पहने खड़ा था।

गोपाल ने कह दिया, "लाला सुन्दरलाल! पंडित जी कहते हैं कि इस वर्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको अन्न-अनाज की आवश्यकता नहीं।"

"तो फिर?"

"फिर नकद भेंट दे रहा हूँ।"

"कितना चाहिये?"

"एक सौ एक तो देना ही चाहिए।"

सुन्दरलाल दुकान की चौकी पर बैठ गया। उसने बही निकाली और गोपाल का खाता निकाल उस पर रकम लिख गोपाल से हस्ताक्षर कराने के लिये कलम उसके हाथ में दे दी।

गोपाल ने कलम पकड़ रकम के नीचे हस्ताक्षर कर दिये। लाला ने फूंक मार स्याही सुखा बही बन्द करके अलमारी में रख दी। तत्पश्चात् जेब में से दस-दस रुपये के दस नोट और एक रुपया चांदी का निकालकर दे दिया। गोपाल ने पूछा, "लाला जी, अभी चलेंगे क्या?"

"हाँ, शान्ति और सीता तो गयी हैं। मैं तुम्हारे साथ ही चलता हूँ।"

गोपाल ने रुपये लिये। मोहन के हाथ में पकड़ी थाली पर से कपड़ा उठाया और उसमें रख दिये। सुन्दरलाल और चुन्नीलाल ने जूते पहने और दुकान से नीचे उतर आये।

घनश्याम व्यास-पूजा के दिन पहली बार ही इस गाँव में आया था। वह पंडित जी को एक सौ एक रुपये की भेंट दी जाती सुन अवाक् इन सब को देखता रह गया। उसके मन में आया कि चलकर देखे कि कौन-कौन पूजा के लिये वहाँ जा रहा है। उसने लाला सुन्दरलाल से पूछ लिया, "मैं भी चलूँ क्या?"

"हाँ, चल सकते हो। तुम भी पूजा करना चाहते हो?"

"मैं तो स्वयं मास्टर हूँ।"

गोपाल ने मुस्कराते हुए कह दिया, "वे पुरोहित और पंडित हैं।"

"और मैं अनपढ़ हूँ क्या?"

इस पर सुन्दरलाल ने कह दिया, "पूजा नहीं करना चाहते तो भी आ सकते हो।"

घनश्याम भी खाट से उठा और जूता पहिन गाँव वालों के साथ पंडित ब्रजलाल के घर पर जा पहुंचा।

आज पंडित जी अपने घर के प्रांगण में एक चौकी पर दरी और सफ़ेद चादर बिछाये बैठे थे। पंडित जी के सामने एक बड़े से थाल में गणेश का स्वास्तिक चिह्न केसर से बना था और उस पर पुष्प तथा चावल चढ़े थे। उस थाल के समीप कुछ रुपये और मिठाई तथा आमों का ढेर लगा था। पंडित जी स्वयं रेशमी वस्त्र पहिने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाल के पीछे पालथी मारे बैठे थे। उनके मस्तक पर केसर पुता था। ऐसा प्रतीत होता था कि बहुत लोगों ने तिलक पर तिलक लगाते-लगाते माथा केसर से पोत दिया था। पंडित जी के गले में कई पुष्प मालायें पड़ी थीं।

सुन्दरलाल की पत्नी और लड़की वहाँ प्रांगण में बिछी दरी पर एक ओर बैठी थीं। उसके समीप ही भगवन्ती अपने दो शिशुओं और राधा के साथ थी। ये अपने घर के पुरुषों के आने की प्रतीक्षा में थीं। गाँव के कुछ अन्य लोग भी आये थे और पंडित जी की पूजा कर चले गये थे।

जब सुन्दरलाल इत्यादि आये तो पड़ोस के लक्ष्मण दास और उसकी पत्नी तथा लड़का साधु पूजा कर रहे थे। लक्ष्मण ने अपनी मिठाई और पुष्प पंडित जी के सामने रख कर पंडित जी को तिलक किया और पांच रुपये सामने रख दिये। तदनन्तर पति-पत्नी ने पंडित जी के सम्मुख माथा नवा नमस्कार की और पीछे हट गये।

इस समय सुन्दरलाल आगे आया। उसके साथ उसकी पत्नी और बच्चे भी आगे आ गये। सुन्दरलाल ने थाल में से पुष्प चढ़ाये, केसर छिड़का और फिर पंडित जी को तिलक लगा ग्यारह रुपये तथा फल और मिठाई उनके सामने रख दी। उसके बाद यही बात गोपाल और उसके परिवार ने की। अन्तर केवल यह रहा कि जहाँ लक्ष्मण ने पांच रुपये और सुन्दरलाल ने ग्यारह रुपये भेंट स्वरूप दिये थे, वहाँ गोपाल ने एक सौ एक रुपया दिया था।

पंडित जी ने सबको आशीर्वाद दिया तो ये लोग उठ बाहर आ गये। घनश्याम दूर खड़ा ही सब कुछ देखता रहा। वह अनुमान लगाता रहा था कि कितने रुपये भेंट में पंडित जी के सामने रखे हुए होंगे?

जब सब बाहर आ गये तो घनश्याम ने सुन्दरलाल के साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "कितनी भेंट हो जाती है पंडित जी को इस दिन?"

"ढाई तीन सौ तक पहुंच जाती है। इस वर्ष वर्षा ठीक समय पर हुई थी। पैदावार बहुत अच्छी हुई है और भेंट कुछ अधिक ही होगी।"

घनश्याम अपने स्कूल का बड़ा अध्यापक था और वह पढ़ाई कराने की ट्रेनिंग लिये हुए था। उसका वेतन आरम्भ में चालीस रुपये था और अब छः वर्ष नौकरी कर चुकने पर पचास रुपये पर आ पहुंचा था, अर्थात् उसको कुल छः सौ रुपया वार्षिक मिलता था। वह पंडित जी के सामने ढाई-तीन सौ रुपये भेंट के रखे देख विचार कर रहा था कि अध्यापकों से यह धन्धा अधिक ठीक है; परन्तु वह विचार करता था कि जाति का बनिया होने से उसकी पूजा करने कोई नहीं आयेगा।

इस विचार पर वह जात-पांत की व्यर्थता पर विचार करने लगा। वह जाति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से श्रेष्ठता और मान-आदर की बात को घृणा की दृष्टि से देखने लगा था। उसने दीर्घ निश्वास ले कहा, "लाला! इसी बात ने तो हिन्दू जाति का सत्यानाश किया है?"

"किस बात ने सत्यानाश किया है?" सुन्दरलाल ने पूछ लिया।

"यही कि बामन की पूजा हो और दूसरा चाहे कितना भी पढ़ा-लिखा क्यों न हो, बामन न होने से नीच माना जाये।"

गोपाल, लाला सुन्दरलाल के साथ-साथ आ रहा था। लाला की पत्नी तो कुछ पीछे भगवन्ती के साथ-साथ थी।

गोपाल ने घनश्याम को उत्तर दिया, "भैया! यह कर्म की बात है, जो एक ब्राह्मण के घर में पैदा होता है और दूसरा जाट अथवा बनिये के घर पैदा होता है।"

"परन्तु, इस जन्म के कर्म भी तो देखने चाहियें।"

"हाँ, मैं आपकी बात समझता हूँ। देखो, मास्टर जी आज आप मेरे घर पर भोजन करिये। आप अपने पुण्य-कर्मों के कारण मेरे लड़के के मास्टर हैं। इसलिये मैं आपको खीर, पूरी, फल और मिठाई खिलाऊंगा।"

घनश्याम का मुख खिल उठा। यद्यपि वह इस निमंत्रण को भीख की भांति माँगी बात समझता था, इस पर भी इन्कार नहीं कर सका।

4

घनश्याम गोपाल के साथ ही उसके घर चला गया। आज व्यास-पूजा के कारण खेतों में काम की छुट्टी थी। इस कारण गोपाल मास्टर साहब को लेकर अपनी बैठक घर में जा पहुंचा। वहाँ मास्टर जी को चटाई पर बैठा कर पूछने लगा, "मास्टर जी! आप तो बहुत पढ़े हैं; परन्तु सुन्दरलाल लूँडी भाषा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पढ़ा। इस पर भी वह इस समय लाख-दो-लाख का स्वामी है। आपकी कितनी सम्पत्ति है?"

"सम्पत्ति? सम्पत्ति तो कुछ भी नहीं। पिता जी नगर में एक आढ़त की दुकान पर मुनीमी करते थे। बीस रुपया वेतन मिलता था। पिता जी ने जो कुछ अपने जीवन में जमा किया, सब अपनी लड़की के विवाह पर व्यय कर दिया। मैं अभी मैट्रिक में पढ़ता था कि पिता जी का देहान्त हो गया और माँ ने अपने आभूषण बेच मुझे मास्टरी करने तक की शिक्षा दिलायी।

"मैं चालीस रुपये महीना पर नौकर हो गया। मुझे नौकरी करते पांच वर्ष से अधिक हो चुके हैं। चार वर्ष में जो कुछ जमा किया था, सब अपने विवाह पर व्यय कर चुका हूँ। अब पत्नी एक बच्चे की माँ है। मेरी माँ भी है। मैं हूँ। पचास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये में बहुत मुश्किल से निर्वाह होता है। बचता-बचाता कुछ नहीं।"

"मास्टर जी!" गोपाल ने चिन्ता की मुद्रा बना पूछ लिया, "यदि आप अथवा आपके घर में कोई अन्य बीमार हो जाये तो क्या करोगे?"

"हमारी नौकरी का यह नियम है कि वर्ष में पन्द्रह दिन बीमारी की छुट्टी वेतन सहित मिल जाती है। फिर पन्द्रह दिन तक आधे वेतन पर छुट्टी मिल जायेगी।"

गोपाल हंस पड़ा। "परन्तु मास्टर जी। मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि बीमार होने पर दवाई, डॉक्टर इत्यादि का खर्चा तो करना पड़ेगा?"

"हाँ! यह तो है। पत्नी के प्रसव के समय लाला सुन्दरलाल से बीस रुपये ऋण ले गया था। अभी दस रुपये ही दिये हैं। दस देने अभी शेष हैं।"

गोपाल दयापूर्ण दृष्टि से मास्टर का मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने पूछ लिया, "आपका स्कूल कितने बजे से कितने बजे तक खुला रहता है?"

"आजकल प्रातः सात बजे से ग्यारह बजे तक।"

"और शेष दिन क्या करते रहते हैं?"

"क्या करूँ? आस-पास के गाँवों में घूमता रहता हूँ। स्कूल के लिये लड़के एकत्रित करता रहता हूँ।"

"यह तो बहुत पुण्य का काम करते हैं, परन्तु आपको खाली समय तो बहुत रहता है। कुछ पैदावार का काम किया करें तो आपके पास पूंजी एकत्रित हो जायेगी। उससे आप अपनी अवस्था सुधार सकेंगे?"

"पैदावार का काम बिना भूमि के कैसे हो सकता है?"

गोपाल मुस्कराया और बोला, "मास्टर जी! मेरा मतलब खेती-बाड़ी से नहीं। पैदावार से अभिप्राय है कि रुपया पैदा करने का काम।"

"क्या काम करूँ? मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा।"

"और आप कहते हैं कि आप बहुत पढ़े हैं। मेरे जैसा अनपढ़ आदमी भी अपने योग्य काम ढूंढ लेता है और आपको काम ही समझ नहीं आता? बहुत विचित्र बात है।

"देखिये, मास्टर जी! मैं बताता हूँ। मैं अपने पिता का अकेला ही लड़का था। विवाह के समय मेरे श्वसुर यह जान कि मैं घर में अकेला हूँ, अपनी लड़की मुझे देना नहीं चाहते थे। मेरी माँ ने कारण पूछा तो बोले, 'घर में जितने हाथ काम करने को होंगे उतनी ही धन-सम्पदा पैदा होती है।'

"माँ ने मेरे श्वसुर की मिन्नत-समाजत की और कहा कि लड़का जवान है, बलवान है और बुद्धिवान् है। वह अकेला भी पांच के बराबर काम कर सकता है। आख़िर श्वसुर माने और मेरा विवाह हो गया। विवाह कर जब मैं अपनी पत्नी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को लेकर विदा हुआ तो वे आशीर्वाद देने लगे कि परमात्मा मुझे बुद्धि दे कि मैं अपने परिश्रम और काम का सदुपयोग कर सकूँ।"

"इस आशीर्वाद और उसकी विवाह से पूर्व की आनाकानी ने मेरे मन में यह विचार उत्पन्न कर दिया कि परिश्रम और समय का सदुपयोग करना चाहिये। परिणाम यह हुआ कि मैं अपने तथा अपने बच्चों के जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं जाने देता। सदा पैदावार करने का काम करता रहता हूँ।

"इसका मुझे बहुत लाभ हुआ है। घर में लक्ष्मी विराजमान है। ईश्वर भी दयालु है। परिश्रम से धन मिल रहा है और ईश्वर की दया से भाइयों का अभाव लड़के पूरा कर रहे हैं।"

घनश्याम का पिता मुनीमी करता था और इसके अतिरिक्त कुछ भी करने की बुद्धि नहीं रखता था। यही बात मास्टर घनश्याम की थी। वह गोपाल की बात सुन उसका मुख देखता रह गया।

गोपाल समझ गया कि मास्टर जी की बुद्धि काम नहीं कर रही। इस पर उसने एक बात और बता दी।

"मास्टर जी! मैं देख रहा हूँ कि आपको मार्ग नहीं सूझ रहा। यह बात मेरे साथ भी हुई थी। आज से अट्ठारह वर्ष पूर्व की बात है। मैं उस समय सोलह वर्ष का था। विवाह कर बहू घर लेकर आया तो मेरी माँ ने कहा, 'गोपाल! मैंने भगवन्ती के पिता को कहा है कि तुम्हारे दो हाथ भी दस के बराबर काम कर सकते हैं। देखो, मेरी बात झूठी सिद्ध न कर देना।'

"मैं विचार कर रहा था कि दो हाथ कैसे दस बन सकते हैं? जब मुझे कुछ समझ नहीं आया तो माँ ने कह दिया, 'यदि समझ नहीं आता तो किसी उम्र और अनुभव में अपने से बड़े से पूछ लो। देखो, इतना और करो कि ऐसे तरीके से काम हो कि ये दो हाथ दस के बराबर पैदा कर सकें और फिर यह घर धन-धान्य से भर जायेगा।'

"मैं अपने से बड़े को ढूंढने लगा। सौभाग्य से मुझे पंडित ब्रजलाल मिल गये। पंडित जी खेतों में शौच से निवृत हो लोटा लिये लौट रहे थे। मैंने पाय-लागूँ की तो वे खड़े हो गये। पूछने लगे, 'गोपाल! ये सब खेत बोये क्यों नहीं गये?'

"मैंने कहा, 'पंडित जी! इस वर्ष वर्षा नहीं हुई। ऊंची भूमि परती रह गयी है।'

पंडित जी बोले, 'तुम अपनी भूमि में कुआँ क्यों नहीं खोद लेते?'

"मैंने कहा, 'मेरे पास कुआँ खोदने के लिये पैसे नहीं हैं, पंडित जी।' इस पर पंडित ब्रजलाल हंस पड़े और बोले, 'यहाँ देहात में धन तो भरा पड़ा है। परिश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-E
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही धन है और परिश्रम तो तुम कर ही सकते हो। इस समय तुम खाली बैठे हो, काम क्यों नहीं करते?'

"मैंने कहा, 'कुछ काम ही नहीं है। करूँ क्या?' पंडित जी ने समझाया, देखो, लक्ष्मण के खेतों में निराई होनी है। वह बेचारा अकेला कर नहीं सकता। तुम ऐसा करो। आज तुम उसके खेत में काम कर दो और कल तुम उसको साथ ले कुएँ की खुदाई कर लेना। इसी प्रकार कुछ दिन तक सुन्दरलाल के खेत में काम कर देना और उसको कहना कि उसके खेतों में काम करने वाले तुम्हारे कुएँ के लिये ईंट पाट दे।'

"मुझे बात समझ में आ गयी। मैं उसी समय लक्ष्मण के खेतों में जा पहुंचा। लक्ष्मण के खेतों की भूमि नीची है। वहाँ कुएँ की आवश्यकता नहीं। उसमें वर्ष भर नाली बनी रहती है। लक्ष्मण अकेला निराई कर रहा था। मैंने उससे कहा, 'लक्ष्मण भैया! मैं सहायता कर दूँ?'

"वह कहने लगा, 'मेरे पास देने को कुछ नहीं।'

"मैंने कहा, 'मैंने माँगा कुछ नहीं। तुम चाहो तो कुछ दिन मेरे साथ मिलकर मेरा काम कर देना।'

"वह तैयार हो गया। मैं अपने घर गया और खुरपा ले आया। मैंने उसके सब खेत दस दिन में ठीक करवा दिये। ईश्वर की कृपा से मैं लक्ष्मण से दोगुना काम करता था। वह भी देख रहा था और प्रसन्न था। जब उसे अपने खेतों से अवकाश मिला तो मुझसे पूछने लगा, 'गोपाल! अब बताओ, तुम्हारा क्या काम अटका हुआ? मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।'

"मैंने बताया कि मैं अपनी भूमि में एक कुआँ खोदना चाहता हूँ।

"वह भौंचक्का हो, मेरा मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, खुदाई मैं तुम्हारे साथ कर दूँगा, परन्तु हम दोनों काम करते रहे तो बहुत दिन लग जायेंगे।'

"मैंने कहा, 'कुछ हानि नहीं होगी, धीरे-धीरे काम पूरा कर लूँगा। मैं कटाई के समय भी तुम्हारी सहायता कर सकूँगा।'

"हम दोनों कुआँ खोदने लगे। एक दिन सुन्दरलाल हमको काम करते देखने आ गया। उसने पूछ लिया, 'गोपाल यह क्या कर रहे हो?'

"मैंने अपना उद्देश्य बताया तो वह बोला, 'खुदाई तो तुम कर लोगे, परन्तु ईंटें कहाँ से आयेंगी और कारीगर कहाँ से लाओगे?'

"मैंने कह दिया, 'लाला, जहाँ से तुम्हारी हवेली के लिये आई थीं।'

"उसने कहा, 'मैंने तो अपने आदमियों से थपवाई और फुंकवाई थीं।'

Central Library
167692
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो भैया। तुम यहाँ भी बनवा देना। मैं तुम्हारे खेतों पर काम कर दूँगा।'

"सुन्दरलाल हंस पड़ा। हंसते हुए बोला, 'यह तो करा दूँगा। इस पर भी कुछ तो रुपया खर्च करना पड़ेगा।'

"मैंने कहा, 'तुमसे ऋण ले लूँगा। पीछे उतार दूँगा।'

"सो मास्टर जी! पंडित जी के सुझाव पर काम करने पर तीन वर्ष में कुआँ बन गया और दो सौ रुपया ऋण सुन्दरलाल से लिया। वह दो वर्ष में मैंने उतार दिया।'

"आजकल मैं दिन में चौदह घंटे रोज़ काम करता हूँ। मेरे दो लड़के मेरे साथ काम करते हैं। हम अपने खेतों में तो काम करते ही हैं, कभी दूसरों के खेतों में भी काम कर देते हैं और उनसे अपने यहाँ काम करवा लेते हैं। यह मकान और इसमें का सब सामान हमने स्वयं बनाया है। कुआँ बन जाने के उपरान्त मैंने बढ़ई का काम सीखा और खाली समय में कुछ न कुछ बनाता रहता हूँ। सोहन को पढ़ने-लिखने का शौक नहीं। वह लोहार का काम सीख रहा है और अभी घर के हलों के फल, छुरी, कांटे इत्यादि बनाने लगा है।

"मोहन की माँ सूत और ऊन कातती है और मैं जुलाहों से कपड़ा बुनवा लेता हूँ। बुनाई के लिये उनको अनाज देता हूँ। इस प्रकार कुछ बारीक कपड़े, नमक, मिर्च, मसाले के अतिरिक्त कुछ भी खरीदने की आवश्यकता नहीं रहती और घर में धन-धान्य भरा रहता है।'

"मैं दान-दक्षिणा भी देता रहता हूँ। इससे ईश्वर की कृपा है कि सूना घर बच्चों से भरता जाता है।"

5

"परन्तु चौधरी! अधिक बच्चे तो निर्धनता के लक्षण हैं।" मास्टर ने मुस्कराते हुए कहाँ

"यह अपने भाग्य और परमात्मा पर निर्भर करता है। परमात्मा मुझ पर प्रसन्न प्रतीत होता है और भाग्य को सुधारने के लिये परिश्रम करता रहता हूँ।"

"चौधरी तुम्हारी बात ठीक है, परन्तु यह मेरे यहाँ नहीं चल सकता। कारण यह कि चार घंटे बच्चों के शोर गुल में रहते हुए दिमाग इतना थक जाता है कि कुछ काम करने को चित्त नहीं करता।"

मास्टर इतना कह समझ रहा था कि उसने अन्तिम बात कह दी है और इसका उत्तर इस जाट के बच्चे के पास नहीं हो सकता। गोपाल निरुत्तर नहीं हुआ था। उसने कह दिया, "घर में कोई गाय, भैंस रखी हुई है या नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं।"

"क्यों, दूध नहीं पीते?"

"जो बच्चे पढ़ते हैं वे कभी दे जाते हैं तो पी लेता हूँ। छाछ प्रायः नित्य मिल जाती है। अब पत्नी के बच्चा हुआ है तो गाँव के ग्वाले से नित्य एक सेर दूध ले लेता हूँ। डेढ रुपया महीना उसको देना पड़ता है।"

"देखो, मास्टर। मेरा कहा मानो। घर में एक आध गाय अथवा भैंस रख लो और उसका दूध पिया करो। मलाई खाया करो और हो सके तो मक्खन निकालकर स्वयं और पत्नी को खिलाया करो। तब तुम इतनी जल्दी नहीं थका करोगे और स्कूल के समय के उपरान्त कोई पैदावार वाला काम कर सकोगे।"

"और गाय, भैंस कहाँ से लाऊँ?"

"वाह! यह भी कोई मुश्किल बात है। कहो तो कल एक नई ब्याही गाय राम के हाथ भेज दूँ?"

"पत्नी से पूछ लूँ। गाय की सेवा भी तो करनी होगी?"

"पति-पत्नी घर में क्या करते रहते हो? गाय की सेवा भला कोई पहाड़ खोदना है?"

"इस पर भी चौधरी, पत्नी से पूछ लूँ।"

"अच्छा, पूछ लो और घर में अथवा घर के बाहर कोई परती भूमि है अथवा नहीं?"

"बहुत है।"

"तो खाली समय में वहाँ खेती किया करो। वहाँ साग-भाजी लगा लो। बीज मैं दूँगा।"

मास्टर को कुछ ऐसा समझ आया कि यह चौधरी दुनिया भर के काम अति सुगम समझता है। जब वह कह रहा था कि वह बढ़ई का काम करता है तो उसे विश्वास नहीं आया था। वह समझ रहा था कि वह उसकी हंसी उड़ा रहा है, परन्तु वह देख रहा था कि उसी बैठक घर में एक तख्तपोश रखा है। दीवार के साथ अलमारी और खूटियां लगी हैं। वह मन में विचार कर रहा था कि क्या ये सब इसी जाट के हाथ की बनी हैं। वह देखना चाहता था कि ये किसी कारीगर की बनी हैं अथवा किसी नौसिखिये के हाथ की।

गोपाल मास्टर को चारों ओर कमरे के सामान की ओर देखते हुए समझ गया कि यह वहाँ का फर्नीचर देख रहा है। उसके मन के विचारों का अनुमान लगा वह कहने लगा, "तो तुम यह विचार कर रहे हो कि क्या यह लकड़ी का सामान मेरा बना है? ठीक है न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टर मुस्करा कर बोला, "मैं यह देख रहा था कि यह सब सामान किसी कारीगर के हाथ का बना है अथवा किसी नौसिखिये का?"

गोपाल हंस पड़ा। हंसकर बोला, "पर मैं नौसिखिया नहीं। मुझे बढ़ई का काम करते हुए दस वर्ष से ऊपर हो चुके हैं। यह तख्तपोश तो आरम्भ में बनाया था। अब मैंने कुर्सी, मेज़ भी बनानी आरम्भ कर दी है।"

"आओ, मास्टर! तुम्हें दिखाऊँ।" गोपाल उठ खड़ा हुआ। मास्टर तो भोजन करने आया था। इस जाट से पाठ पढ़ने नहीं, परन्तु जब बात आरम्भ हुई तो उसके मन में इस व्यक्ति के कामों में रुचि उत्पन्न होने लगी, वह उत्साह से उठा और गोपाल के पीछे-पीछे चल पड़ा। प्रांगण पार कर दोनों एक बड़े कमरे में जा पहुँचे। वह फर्नीचर से भरा हुआ था। मोहन वहाँ बैठा एक मेज़ पर पॉलिश कर रहा था। मेज़ शीशम की लकड़ी की बनी थी। गोपाल ने बताया, "यह मेज़ मैंने बनायी है। मोहन इस पर पॉलिश कर रहा है। जब यह तैयार हो जायेगी तो दस रुपये में बिक जायेगी।"

"और कौन खरीदेगा इसको?"

"नगर का एक दुकानदार है। वह दो तीन महीने में आया करता है और मेरा सब तैयार सामान ले जाया करता है।"

मास्टर देख रहा था कि इस कमरे के एक कोने में बढ़ई के औज़ार रखे हैं और छोटी-सी खराद लगी है।

कमरे की एक अलमारी में कील, कांटे, रोगन का सामान और किरमिच का कपड़ा रखा था। गोपाल ने अलमारी खोल दिखाया।

अब मास्टर साहब को विश्वास आ गया कि सत्य ही यह चौधरी एक समझदार कारीगर है। कमरे में छः सात कुर्सियां और छोटी बड़ी मेज़ तथा तिपाइयां रखी थीं। कुछ पॉलिश की हुई थीं, कुछ अभी बिना पॉलिश के थीं।

मास्टर ने पूछ लिया, "आपके दूसरे लड़के किधर गये हैं।"

"सोहन नगर गया है। वह कह रहा था कि उसे लोहा काटने की आरी चाहिये। वह लेने गया है।"

"पर यह सब काम आप बिना सीखे ही कर लेते हो?"

"ऐसा तो कभी हो नहीं सकता। उस दिन पंडित जी बता रहे थे कि बिना सीखे कुछ नहीं आता। सृष्टि के आदि में परमात्मा ने मनुष्यों को ज्ञान दिया था और तब तो मूल ज्ञान ही था, परन्तु उस मूल ज्ञान पर जोड़-तोड़ हम लगाते रहते हैं। इस जोड़-तोड़ में भी उस्ताद की आवश्यकता होती है। मैंने काम का आरम्भ नगर के बढ़ई से सीख कर ही किया था। उसने मुझे औज़ारों को पकड़ना, उनको तेज़ करना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग करना सिखाया। तदुपरान्त मैंने अपनी बुद्धि से वह तरक्की की है।"

"और यह अक्ल कहाँ बिकती है?"

"देखिये, आरम्भ में पंडित ब्रजलाल ने दी थी, जब पंडित जी ने कहा था कि धन तो देहात में भरा पड़ा है। साथ ही बता दिया था कि वह कहाँ है? उसका कहना था कि परिश्रम ही धन है।'

"फिर एक दिन पंडित जी ने एक बात और बताई। मैं उनके घर पर उनको यह बताने गया था कि उनकी राय से मैंने कुआँ बनाना आरम्भ कर दिया है। वे मेरी बात सुन बहुत प्रसन्न हुए और बोले, 'गोपाल, एक बात और है। वह भी सीख लो। परिश्रम का ठीक प्रयोग ही सिद्धि दिलाता है।'

"भगवान कृष्ण ने कहा है कि जो कर्मों को ज्ञान की अग्नि में तपाता है, उसे सब बुद्धिमान् कहते हैं। ज्ञान ज्ञानी से सीखा जाता है। ज्ञानी के पास जा उनकी पूजा-सेवा करो तो वह ज्ञान की वर्षा करता है।'

"इस कारण जब भी कुछ काम सीखना होता है, मैं उस काम के ज्ञानी से बहुत नम्रता-पूर्वक विनती करता हूँ और उसकी सेवा-पूजा कर सीखने का यत्न करता हूँ।

"देखो, मोहन की बात बताता हूँ। एक दिन मैं और मोहन नगर में उस दुकानदार से अपने माल का दाम वसूल करने गये थे। उससे सौ रुपये के लगभग लेना बन गया था। वहाँ हमारे बने सामान पर एक कारीगर से वह पॉलिश करवा रहा था। मैंने उसी दुकानदार से कहा, 'पॉलिश करना भी हम सीखना चाहते हैं।'

"दुकानदार ने कहा, 'इसका उस्ताद वह बैठा है। उससे बात करो।'

"मैं कारीगर के पास जा बैठा और उसके पांव छूकर मैंने सलाम किया। वह मुसलमान था। उससे मैंने कहा, 'मेरा यह लड़का पॉलिश करने का काम सीखना चाहता है।'

"वह कहने लगा, 'यह मेरे साथ काम करे। धीरे-धीरे सीख जायेगा।'

"मैं उसी समय बाज़ार गया। एक सेर मिठाई ली और पांच रुपये लेकर मोहन के हाथ से उसे दिलवा दिया। इस प्रकार मोहन को उसका शिष्य बना दिया।

"मोहन एक वर्ष तक उसके साथ काम करता रहा है। अब यह अच्छी सफाई से काम करने लगा है। अब भी कभी-कभी यह अपने उस्ताद की भेंट-पूजा करता रहता है और नगर में जो नई-नई बातें चलती हैं, वह सीख आता है।"

"पर यह अक्ल तो चौधरी, सब में होती नहीं।"

"हाँ। यह ईश्वर की कृपा से मिलती है और मैं सदा ईश्वर की शरण में रहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कैसे रहते हो?"

"वह सब स्थान पर हाजिर-नाजिर है। जब भी अवकाश पाता हूँ। उसमें ध्यान लगा लेता हूँ। इसमें भी पंडित ब्रजलाल ने सहायता की थी। पंडित जी को मैं अपने छठे लड़के के होने पर पड़ोसियों की बातें बताने गया था। पड़ोसी कह रहे थे कि मेरी पत्नी बहुत बच्चे पैदा करने वाली औरत है और वह मेरी मुसीबत का कारण होगी। पंडित जी पूछने लगे, 'भला बच्चे पैदा करने का मुसीबत से क्या सम्बन्ध है? मुसीबत का सम्बन्ध तो पाप-कर्मों से होता है।'

"इस पर मैंने लाला सुन्दरलाल की बात बता दी। सुन्दरलाल ने कहा था, 'मेरी पत्नी भगवन्ती पिछले जन्म की पापिन है, जिससे वह बार-बार प्रसव पीड़ाएं सहन करती है और उस पापिन का मेरे घर आना मेरे पूर्व-जन्म के पापों का ही फल है।'

"पंडित ब्रजलाल सुन्दरलाल की बात को सुन हंस पड़े। हंस कर कहने लगे, 'सुन्दरलाल, महर्षि व्यास हो गया है जो हम क्षुद्र प्राणियों के पूर्व-जन्म के कर्मों की बातें जानने लगा है।' उन्होंने मुझे समझाया, 'देखो, गोपाल। कोई नहीं जानता कि तुम्हारी पत्नी पूर्व-जन्म की पुण्य-कर्मा है अथवा पाप-कर्मा। दोनों का ही बच्चे उत्पन्न करने से सम्बन्ध हो सकता है। रही प्रसव में कष्ट की बात। यह तुम अपनी पत्नी से पूछ लेना। यदि वह कष्ट अनुभव करती है तो भैया, ब्रह्मचर्य का पालन करो। कष्ट देने से कष्ट के भागी बनोगे। कभी ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ औरतों को बच्चे जनने से जो सुख मिलता है वह प्रसव में हुए कष्ट से अधिक होता है। वे इसको सहर्ष स्वीकार करती रहती हैं।

"एक बात मैं जानता हूँ कि इस जन्म का पुरुषार्थ पूर्व-जन्म के पापों को निःशेष करने की सामर्थ्य रखता है। कभी वह पूर्ण रूप से भी निःशेष कर देता है, अन्यथा उसको न्यूनाधिक सीमा तक निष्प्रभाव तो करता ही है। शर्त यह है कि कर्मों का चयन विचार करके ठीक ढंग पर किया जाये।'

"इस पर मैंने पूछ लिया, 'पंडित जी, कर्मों के चयन और करने का ढंग कहाँ से सीखा जाये?'

"पंडित जी ने कहा, 'अपनी बुद्धि से। बुद्धि को निर्मल और सजीव रखो तो कर्म करते समय यह बता देती है कि मनुष्य ठीक कर रहा है अथवा नहीं।'

"और बुद्धि को निर्मल तथा सजग कैसे किया जा सकता है?'

"कुछ पूजा-पाठ भी करते हो या नहीं?'

"मैंने बताया कि जप जी साहब का पाठ करता हूँ। वे कहने लगे, 'ठीक है; परन्तु पाठ करते समय अपना ध्यान मस्तक पर भ्रुवों (भवों) के मध्य में केन्द्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोगे तो बुद्धि सजग होगी। तब उस बुद्धि को ईश्वर की ओर लगाओगे तो वह ईश्वर की भांति निर्मल, ज्ञानवान् और भले-बुरे, ठीक-ग़लत और उचित-अनुचित में भेद करने योग्य हो जायेगी।"

"मास्टर! जब से मैं यह कर रहा हूँ तब से ईश्वर मेरी सहायता कर रहा है।"

मास्टर घनश्याम के लिये यह बात बहुत बड़ी थी। वह इसको हज़म नहीं कर सका। जैसे गरिष्ठ भोजन अधिक मात्रा में लेने पर मितली होने लगती है, वही मास्टर जी के साथ होने लगी थी और आगे सुनने की बात तो दूर रही, जो कुछ सुन चुका था वह उसे भी मस्तिष्क से बाहर उल्टी की भांति निकाल देने के लिए व्याकुल हो रहा था।

वह मौन हो गया। उसने और पूछना बन्द कर दिया। इस समय भगवन्ती और उसके अन्य बच्चे जो सुन्दरलाल की पत्नी के साथ सुन्दरलाल के घर चले गये थे, आ गये। उनके आते ही गोपाल ने अपनी पत्नी से कहा, "राम के मास्टर जी आये हैं। भोजन यहीं पर करेंगे।"

"पर शान्ति बहिन तो बता रही है कि मास्टर जी का भोजन उनके घर है और वे इनके लिये खीर, माल-पूए और चटनी आदि बना रही हैं।"

यह सुन मास्टर के मुख से लार टपकने लगी। वह उठा और बोला, "तब तो चौधरी! मैं वहाँ जाता हूँ। उनका बना अन्न व्यर्थ जायेगा और यहाँ चौधरायिन को विशेष बनाना पड़ेगा।"

6

मास्टर घनश्याम को अवसर मिल गया कि वह सब विचार जो गोपाल से सुनकर आया था, उल्टी कर सुन्दरलाल के सामने निकाल दे। उसने सुन्दरलाल की दुकान पर पहुंचते ही कहा, "लाला जी! सुना है लालायिन ने मेरे लिये खीर, पूरी बनाई है?"

"हाँ। आज व्यास-पूजा है न। सब गुरुजनों की पूजा का दिन है। आप हमारे साथ पंडित जी के घर गए थे। शान्ति ने देख लिया और पूछ रही थी कि मास्टर जी क्या पसन्द करते हैं? मैंने बता दिया था, "खीर, पूरी, माल-पूए और जो कुछ भी मीठा बन सके।"

मास्टर हंस पड़ा और बोला, "वैसे तो गोपाल भी हलुवा, पूरी का निमंत्रण दे रहा था, परन्तु खीर की बात सुनी तो यहाँ चला आया हूँ। मुझे हलुवे से खीर अधिक पसन्द है।"

"मैं तो आपके स्वभाव को जानता हूँ। इसीलिए खीर की बात कर दी थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर, लाला जी। वहाँ तो हलुवा, पूरी के अतिरिक्त भी इतना कुछ मिला है कि मुझे गरानी हो गई है। गोपाल बातें बहुत करता है। उसने आधे घंटे में इतनी बातें बता दीं कि उल्टी किये बिना चैन नहीं पड़ेगी।"

सुन्दरलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "हाँ, मास्टर। शान्ति की खीर, पूरी खाने से पूर्व उल्टी कर दो। अन्यथा खीर, पूरी भी साथ ही निकल जायेगी।"

यही तो मास्टर चाहता था और उसे गोपाल की सब बातें बता दीं। सुन्दरलाल मुस्कराता हुआ सुनता रहा। जब मास्टर सब बात कह चुका तो लाला कहने लगा, "बहुत अच्छा किया है मास्टर जी, जो सब बात यहाँ ही छोड़ चले हो, अन्यथा परेशान होते। जाटों की बातें हमारे वैश्य समुदाय के लिये ठीक नहीं।

"देखो, मैं बताता हूँ। सीता की माँ शान्ति पिछले पांच प्रसवों के समय गोपाल की पत्नी के पास जाती रही है। पहले तीन प्रसवों के समय गोपाल की माँ जीवित थी। अब कि आठवीं बार जिसमें दो बच्चे एक साथ हुए हैं, उसे सबसे अधिक कष्ट हुआ था, परन्तु इसमें भी भगवन्ती के मुख से एक बार भी चीख अथवा हाय शब्द नहीं निकला। इस बार एक घंटा लगा था और सब समय वह दांतों तले होंठ दबाये लेटी रही। दूसरा बच्चा होने के समय एक क्षण के लिये माथे पर बल पड़ा था और फिर बस। दूसरे दिन वह उठकर बच्चों की देखभाल करने लगी और अब तीन महीने में वह पुनः बच्चे पैदा करने के योग्य प्रतीत होने लगी है।

"और मास्टर! ऐसा हो भी क्यों न? प्रसव के छः व सात दिन पहले वह दो सेर गौ-दूध का घी पी गई थी।"

मास्टर घनश्याम के लिये यह बात अति विस्मयजनक थी। इस कारण गोपाल की पत्नी की बात उसने मस्तिष्क से निकाल दी। इस पर उसने दूसरी बात के विषय में पूछ लिया, "और कुएँ की बात सत्य है क्या?"

"यही तो कह रहा हूँ भैया। उसमें ज़ाट का दिल है। वह और उसके साथी लक्ष्मण दोनों ने तीन महीने में कुआँ खोद दिया था। फिर एक फसल की कटाई के समय मेरा काम करता रहा, तो मैंने अपने तीन चमार मज़दूरों को ईंटें पाथने और पकाने पर लगा दिया। वह उनके हिस्से का काम अकेला ही करता रहा। इन सब समय गोपाल की माँ और बहू उसके खेतों की देखभाल करती रहीं। मास्टर! तीन वर्ष में कुआँ बन गया। चूना और सफेदी बाज़ार से खरीदनी पड़ी। कुआँ बनांने वाले राजगीरों को मज़दूरी देनी पड़ी थी। यह रुपया मैंने ऋण के रूप में दिया। दो सौ रुपया व्यय हुआ। वह और उसका ब्याज कुल चार सौ रुपया उसने कुआँ बनने के दो वर्ष में ही दे दिया। कुएँ पर रहट एक बढ़ई ने बनाया था। वह बढ़ई पड़ोस के गाँव से आया था। उसको बीस रुपये उसने दिये थे। लकड़ी आम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उसके अपने पेड़ों की थी।

"इस प्रकार जो बात मैं अपने खेतों पर नहीं कर सका, उसने कर दिखाई है। सब से बड़ी बात यह है कि बढ़ई के साथ वह स्वयं काम करता था और काम करता करता वह बढ़ई का काम सीख गया है।"

घनश्याम विस्मय में लाला का मुख देख रहा था। इस पर लाला ने पुनः कहा, "पर मैं जानता हूँ कि इस का परिवार कलह का अखारा बनने वाला है। तनिक बच्चों को बड़ा होने दो।"

लाला की यह बात घनश्याम को बहुत पसन्द आयी। वह बोल उठा, "लाला जी! मैं चार घंटा ही लड़कों की चीं-चीं सुन दिन भर सिर पकड़ बैठा रहता हूँ और यहाँ तो चौबीस घंटों का हो-हल्ला है। इनका मस्तिष्क कैसे ठीक रहता होगा?"

सुन्दरलाल मुस्कराते हुए बोला, "मैं तो गोपाल को कई बार कह चुका हूँ कि वह अब और बच्चे पैदा न करें, परन्तु वह मानता ही नहीं। पिछले अट्ठारह वर्ष में इसने नौ बच्चे पैदा कर दिए हैं।"

इस प्रकार दोनों सहमत हो गए कि गोपाल का परिवार एक ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठा है और किसी भी समय यह विनष्ट हो जायेगा।

इस दिन एक विशेष बात हुई थी। वह थी गोपाल के बड़े पुत्र मोहन का सीता की ओर देखकर मुस्कराना और सीता का लज्जा से लाल मुख हो, भूमि की ओर देखने लगना। सीता की माँ शान्ति ने यह देखा था।

जब दोनों परिवार पंडित ब्रजलाल के घर से वापस लौट रहे थे, तो चार पग ही सीता और मोहन इकट्ठे चले थे। इस समय सीता की माँ जो दोनों के आगे-आगे थी, भगवन्ती से कुछ कहने के लिए घूमी तो उसकी दृष्टि मोहन और सीता पर जा पड़ी। मोहन मुस्कराता हुआ सीता की ओर देख रहा था और सीता लाल मुख किए भूमि की ओर देखती हुई चल रही थी।

उसी समय भगवन्ती चलती हुई शान्ति के पास आ गई और दोनों बातें करने लगीं। शान्ति लड़की से पूछने वाली थी कि क्या बात हो रही है, परन्तु भगवन्ती की बातों में सीता से पूछा नहीं जा सका। भगवन्ती अपने सब बच्चों को ले शान्ति के साथ ही चल पड़ी। मार्ग में उसने कहा, "मैंने गुरु जी के सम्मुख मन ही मन यह निश्चय किया है कि अब और बच्चे पैदा करने बन्द कर दूँ। नौ बहुत हैं।"

"नहीं, भगवन्ती। एक दर्जन तो होने चाहियें।"

भगवन्ती समझ रही थी कि शान्ति उसकी हंसी उड़ा रही है। उसने भी मुस्कराकर कहा, "पर मैं देख रही हूँ कि तुम बच्चे न पैदा करने में सुख समझ रही हो। मैं भी देखना चाहती हूँ कि वह क्या सुख है जो तुम ले रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका स्वाद पांच वर्ष पीछे ही ले सकोगी, परन्तु भगवन्ती! एक दर्जन बच्चों की माँ का स्वाद तो पीछे पाने की सामर्थ्य ही नहीं रहेगी।"

"बात तो तुम ठीक कहती हो, परन्तु मैं शेष जीवन इन बच्चों को कुछ अक्ल सिखाने में व्यय करना चाहती हूँ।"

"तो ये कुछ कष्ट देने लगे हैं क्या?"

"हाँ, राम-श्याम बहुत गन्दी-गन्दी गालियां सीखते जाते हैं। वह इन दिनों में ही हुआ है जब मैं गर्भभार से उनकी देख-रेख नहीं कर रही थी।"

"परन्तु, बहिन! चुन्नीलाल भी बहुत गंद-मंद बोलने लगा है। अभी लाला उसकी बातों पर हंस देते हैं, परन्तु मैं तो चिन्तित हूँ।" "अब तुमने राम-श्याम की बात बताई है तो मुझे सन्देह हुआ है कि ये स्कूल में ही कुछ सीखते होगे? वही तो तीनों का सांझा सीखने का स्थान है।"

"तो क्या किया जाये?" भगवन्ती का प्रश्न था, "मैं तो यह समझी हूँ कि अब मुझे इनकी देख-रेख करनी चाहिए। इस बार मैं तीन महीने तक बच्चों पर ध्यान नहीं दे सकी। बच्चे होने के उपरान्त भी मैं उनकी ओर पूरा ध्यान नहीं दे सकी।"

"और अब क्या देख-रेख करोगी?"

"तुम्हारी बात से सोच रही हूँ कि यदि ये स्कूल में ऐसी बातें सीखते हैं तो उन्हें स्कूल से उठा लेना चाहिए।"

"मैंने चुन्नी के विषय में लाला जी से कहा था। वे कहने लगे, 'स्कूल में पढ़ोओगी नहीं तो कहाँ पढ़ाओगी?'

"मैंने पंडित जी का नाम लिया तो वे बोले, 'पंडित जी की पढ़ाई से दुकान नहीं कर सकेगा।' मैं चुप कर गयी"

भगवन्ती ने पूछ लिया, "क्यों दुकान में क्या विशेष बात है? पंडित जी की राय से ही मोहन पॉलिश का काम करता है और सोहन लोहार का। वे तो कह रहे थे कि राम को कपड़ा बुनने का काम और श्याम को मेसर का काम सिखा दें तो फिर परिवार में ही गाँव के सब काम होने लगेंगे। इससे हमारी बचत बढ़ जायेगी और हम धनवान होंगे।"

"इस पर भी कुछ न कुछ तो बाहर से खरीदोगे ही। क्या रुपया घर में गाढ़ती चली जाओगी?"

"नहीं। मोहन के पिता कहते थे कि जमा धन दान-दक्षिणा में व्यय किया जा सकता है। एक दिन मोहन बोला, 'नगर में सर्कस का खेल आया है। वह देखने जायेगा।' उसके पिता, मोहन, सोहन, राम और श्याम चारों को ले गये। घर आकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने बताया कि खेल तो वही थे जो बाज़ीगर करते हैं अथवा बन्दर और भालू नचाने वाले करते हैं। अन्तर केवल यह था कि इन्होंने कपड़े अच्छे पहने हुए थे और फिर इनके पास खेल करने का सामान कुछ अधिक था। वे इसमें कारण विचार करने लगे तो समझ गए कि सर्कस के मालिक ने रुपया अधिक लगाया हुआ है। ग़रीब बाज़ीगरों के पास रुपया नहीं होता। वे न तो इतना इश्तिहार दे सकते हैं और न ही तम्बू, कनात लगा सकते हैं।

"वे कहने लगे कि उन्नति करने के लिए रुपया होना चाहिये। इस कारण वे धन एकत्रित करने का विचार कर रहे हैं।"

"तब तो तुम चुन्नी के पिता के मुक़ाबले में दुकान भी कर लोगे?" शान्ति ने मुस्कराते हुए पूछ लिया। फिर कुछ विचार कर अपने आप कहने लगी, 'चुन्नीलाल के पिता कहते हैं कि यदि चुन्नीलाल सारी पढ़ाई पढ़ गया तो वह उसे डिप्टी कमिश्नर बनने के लिए कहेंगे।"

भगवन्ती ने शान्ति के दुकान करने के उल्हाने का उत्तर दे दिया। उसने कह दिया, "तब वह भी गाँव में शिकार खेलने के बहाने आया करेगा और मुरगाबियां मारकर ले जाया करेगा।"

गाँव के समीप एक बड़ा-सा तालाब था, जो बारहों महीने जल से भरा रहता था। यह किंवदंती थी कि उसके नीचे जल का स्रोत है। वहाँ मुरगाबियां बहुत थीं और वर्ष में एक आध बार जिले का हाकिम वहाँ आया करता था। खेमे लग जाया करते थे और फिर दस बीस मुरगाबियों को मार, भून कर खा पी जाया करता था। वह प्रायः तीन दिन गाँव में रहा करता था और तीनों दिन उसके खाने-पीने का और कुछ भेंट-पूजा का प्रबन्ध गाँव वालों को करना पड़ता था। पिछली बार एक हिन्दुस्तानी मियां आया था। अब जिला के हाकिम हिन्दुस्तानी बनने लगे थे। उसने तो नगर की कुछ वेश्याओं को भी बुला लिया था और तीन दिन-रात को नाच, मुजरा होता रहा था जिसमें गाँव के युवक भी जाकर रस लेते रहे थे।

इन बातों में शान्ति सीता की बात भूल गयी। जब घर पर पहुंची तो शान्ति ने अपने पति को कह दिया, "मास्टर घनश्याम आए हुए हैं। वैसे आज व्यास-पूजा भी है। खीर इत्यादि बना दें तो ठीक नहीं क्या?"

इस पर स्त्रियों की गोष्ठी भंग हुई। सीता और शान्ति रसोईघर में खाना बनाने में लग गयीं। और भगवन्ती अपने बच्चों को लेकर अपने घर जा पहुंची।

7

रात के समय जब शान्ति और लाला सोने की तैयारी करने लगे तो शान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भगवन्ती की बात याद आ गयी। उसने लाला से कहा, "गोपाल की बीवी कहती थी कि अब वह बच्चे पैदा नहीं करेगी।"

"यह उसके बस में है क्या?"

"वह कहती थी कि अब उसे बच्चों की देख-रेख में लगना है।"

"तो क्या अभी तक वह बच्चों की देख-रेख नहीं करती थी? सब के सब घर में ही तो रहते हैं।"

"वह कहती थी कि राम-श्याम स्कूल जाते है और बहुत गंदी-गंदी बातें सीख रहे हैं।"

"तो वह उनके साथ स्कूल जाया करेगी?"

"यह तो उसने बताया नहीं, परन्तु मैं यह कह रही हूँ कि जो बात मैंने चुन्नीलाल में देखी है, वही तो उसने राम-श्याम में देखी है।"

"फिर इससे क्या?"

"इसका मतलब है कि स्कूल की पढ़ाई में कुछ खराबी है।"

"यह उसने कहा है? भला, वह क्या पढ़ी है, आज मास्टर घनश्याम से चुन्नी के विषय में बात हुई थी। वह कहने लगा, 'बच्चे-बच्चे आपस में अनेकानेक बातें करते हैं। वे इन बातों को बड़ों से ही सीखते हैं।"

इस पर शान्ति को मोहन की बात स्मरण आ गयी। उसने कहा, "मुझे कुछ सन्देह है कि मोहन सीता से कुछ ऐसी बात कहता है जो लज्जाजनक है।"

इसके साथ ही उसने मोहन और सीता की उस अवस्था का वर्णन कर दिया जो उसने पंडित ब्रजलाल के घर से आते हुए देखी थी।

सुन्दरलाल ने सुना तो कुछ गम्भीर हो कहने लगा, "मोहन नगर में अपनी मेज़, कुर्सियां बेचने जाया करता है। वहाँ से ही ऐसी बातें सीख कर आता होगा।"

"इसका इलाज करना चाहिए। सीता अब बारह वर्ष की हो रही है। इतनी अवस्था में तो मेरा गौना भी आ चुका था।"

"तो तुम चाहती हो कि सीता का विवाह कर दिया जाये।"

"हाँ। यही तो कह रही हूँ।"

"अच्छी बात है। अब विचार करूँगा, पर एक बात करो। अब सीता को गोपाल के घर मत जाने दिया करो और मोहन जब कभी यहाँ आए तो उसे सीता से मिलने मत दिया करो।"

यह हो नहीं सका। उक्त घटना के कुछ दिन उपरान्त की बात है। सीता गोपाल की छोटी लड़की, जो अभी छः मास की ही थी, गोदी में ले खिलाती हुई दिखाई दी। शान्ति ने देखा तो पूछ लिया, "सीता! इसकी माँ आयी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं माँ।"

"तो यह कैसे आ गयी है?"

"मैं मौसी के घर गयी थी और इसे ले आई हूँ।"

"तुम कब गयी थीं?"

"अभी अभी गयी थी और अभी लौट आयी हूँ।"

"वहाँ कौन कौन थे?"

"आज उनके घर में नगर का एक मेहमान आया हुआ है। उसके साथ एक औरत भी है।"

"वे किसलिए आए हुए हैं?"

"यह मुझे मालूम नहीं। पुरुष तो भापा के साथ बैठक में बातें कर रहा था और वह स्त्री मौसी के साथ कुछ बातें कर रही थीं।"

"मोहन कहाँ था?"

"अपने कारखाने में काम कर रहा था।"

"सोहन और दूसरे बच्चे कहाँ थे?"

"राधा तो माँ के पास बैठी थी। लाल और माणिक प्रांगण में खेल रहे थे। शकुन्तला और केवल खटोले पर पड़े थे। मैं इसे उठा भाग आई हूँ।"

"मौसी को बता भी आई हो या नहीं?"

"अभी छोड़ आऊंगी। मौसी को तो पता भी नहीं चलेगा?"

"पर तुम इसे ले क्यों आई हो?"

"मेरा जी इसके साथ खेलने को करता है।"

"भला इससे क्या खेलोगी? यह तो अभी बोलती भी नहीं।"

"बोलती है माँ"

सीता ने शकुन्तला को दोनों बांहों में उठाकर कहा, "शकुन्तला।" बच्ची मुस्करायी। सीता ने उसको उछाला तो वह किलकारियां मार हंसने लगी।

"देखो माँ, बातें करती है न?"

शान्ति के जब सीता हुई थी तो वह भी उसको उछाल-उछाल खुश-हुआ करती थी। तब सीता हंसती तो शान्ति भी मन में खुशी और उल्लास अनुभव किया करती थी। वह अपनी इस खुशी का कारण कभी घर में किसी बड़े, अपनी सास तथा जेठानी से पूछती तो वे कहतीं, "तुम माँ जो हो। जब स्त्री में माँ बनने की शक्ति उत्पन्न होती है तो परमात्मा उसमें बच्चे की लालसा उत्पन्न कर देता है। इस कामना-वश वह बच्चे पैदा करने का कष्ट सहन करने के लिए तैयार हो जाती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति को आज यह बात स्मरण हो आई। इसके साथ ही उसके मोहन के प्रति आकर्षण की बात याद आ गयी। आज उसने निश्चय कर लिया कि वह सीता को सतर्क और सचेत कर दे।

लड़की की आंखों में देखते हुए उसने पूछ लिया, "वहाँ मोहन से मिली थी?"

सीता की आँखें भूमि की ओर झुक गयीं। वह धीरे से बोली, "मैं जब भी वहाँ जाती हूँ उससे मिलती हूँ।"

"और वह तुमसे क्या कहता है?"

"कहता है मुझसे विवाह करेगा।"

"और तुम क्या कहती हो?"

"मैंने उसे आज भी कहा है कि विवाह माता-पिता करेंगे।"

"तुम्हारा मन क्या कहता है?"

"माँ, मुझे नहीं पता।"

"तो तुम उससे मिलने क्यों जाती हो?"

"जी करता है कि उससे मिलूँ।"

"देखो। मैंने तुमको एक दिन पहले भी कहा था कि भगवन्ती के घर मत जाया करो। वे हमसे छोटी जाति के हैं। उनसे बहुत मेल-जोल ठीक नहीं। विवाह तुम्हारा वहाँ हो ही नहीं सकता। यह धर्म नहीं कि हम वैश्य, जाटों को अपनी लड़की दें।"

"लाओ, इस लड़की को। मैं इसे भगवन्ती को दे आती हूँ। तुम अब वहाँ जाओगी तो तुम्हारे पिता तुमको बहुत पीटेंगे। वैसे ही जैसे उस दिन चुन्नी को पीटा था। समझ गयी हो न? मैंने तुमको बता दिया है। पीछे पीटी गयीं तो मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकूँगी।"

शान्ति उठी। उसने कपड़े बदले और शकुन्तला को सीने से लगा भगवन्ती के घर चल पड़ी।

भगवन्ती अभी भी मेहमान-स्त्री से बातें कर रही थीं। उसने बच्चे को गोदी में लिये हुए शान्ति को आते देखा तो विस्मय में पूछने लगी "इसे कहाँ से ला रही हो बहिन?"

"सीता आयी थी न?"

"हाँ।"

"वह इसे पालने में से उठाकर ले गयी थी। वह कह रही थी कि तुम्हें बता कर नहीं लायी। इस कारण यह विचार कर कि तुम इसे लापता देखोगी तो चिन्ता करोगी, इसे ले आयी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो, यह बहिन नगर से आयी हैं। कटरा आहलूवालियाँ में रहती हैं। मोहन की सगाई के लिये कह रही हैं।"

"बात तो ठीक है।" शान्ति ने सगाई हो जाने और यहाँ मोहन का विवाह हो जाने की कामना करते हुए कहा।

"पर मैंने दो बातें कही हैं। एक तो यह कि जब तक मोहन बीस वर्ष का नहीं हो जाता, विवाह नहीं होगा। इसमें अभी साढ़े पांच वर्ष हैं। दूसरे यह कि लड़की को मैं देख लूँ। सुन्दर होगी तो लूंगी।"

"इन दोनों शर्तों पर तो शान्ति को और भी सन्तोष हुआ। वह समझती थी कि इतनी देर में सीता का विवाह हो जायेगा और सीता तो मटियाले रंग की है। वह भगवन्ती को पसन्द ही नहीं आयेगी। इस पर भी उसने मुख से कुछ नहीं कहा। नगर से आई स्त्री ने यह स्वीकार किया कि लड़की देखी जा सकती है। हाँ, विवाह के लिये वे एक वर्ष तक ठहर जायेंगे। अधिक नहीं।

इस पर शान्ति ने पूछ लिया, "लड़की कितनी बड़ी है?"

"इस समय बारह वर्ष की है। वैसे देख लो। हमारे विचार में वह इनके लड़के के लिये उपयुक्त ही है।"

"तो हम देखने आयेंगे। ये बहिन जी मेरे साथ आयेंगी। मोहन के पिता को आप अपना पता लिखा जायें, हम पूछते हुए चले आयेंगे।"

"हमारा तांगा है। जब आपको आना हो, हम भेज देगें।"

"नहीं। आपको कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। हम अकस्मात् ही वहाँ पहुंचना चाहते हैं।"

"इसके उपरान्त भगवन्ती ने उस स्त्री और उसके घरवाले का परिचय जैसा उस औरत ने बताया था, शान्ति को दे दिया। उसने बताया, "इन बहिन जी का नाम है जसवन्त कौर। इनके घरवाले नगर में ठेकेदारी करते हैं और वहाँ चार-पांच मकान हैं। अपने रहने की बड़ी-सी हवेली है। भरा-पूरा परिवार है। इनके जेठ और देवर भी हैं। उनके लड़के-लड़कियाँ हैं। घर में पच्चीस से ऊपर प्राणी हैं। सब-के-सब गुरु के प्यारे हैं।"

"भगवन्ती बहिन।" शान्ति ने भगवन्ती को इस सम्बन्ध के लिये उत्साहित करने के लिये कह दिया, "प्रत्यक्ष रूप में तो सब ठीक मालूम होता है।"

भगवन्ती ने शकुन्तला को दूध पिलाने के लिये अपनी गोदी में ले लिया और अपना कुर्ता ऊपर उठा, उसके मुख में अपना स्तन दे दूध पिलाने लगी।

कुछ ही देर में बाहर बैठक से सन्देश आया कि सरदार जी चल रहे हैं। यह संकेत था सरदारनी जी को बाहर आ जाने के लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर तीनों औरतें उठीं और 'सत् श्री अकाल' बोला जसवन्त कौर ने हाथ जोड़ उनसे विदा ली।

गोपाल मेहमानों को घर के बाहर उनके तांगे तक छोड़ने गया। जब वे अपने तांगे में चढ़ गये तो गोपाल ने हाथ जोड़ कह दिया, "आपके इस प्रस्ताव पर में फूला नहीं समाता। साथ ही संकोच होता है कि मैं बहुत छोटा आदमी हूँ। मुझे अपने बराबर के लोगों से ही सम्बन्ध बनाना चाहिये। इस पर भी मैं विचार कर सेवा में उपस्थित होने आऊंगा।"

8

जब ठेकेदार साहब चले गये तो गोपाल भीतर घर में अपनी पत्नी के पास बात करने के विचार से आया। वहाँ सुन्दरलाल की पत्नी को बैठे देख यह कहने लगा, "तो मैं खेतों पर जा रहा हूँ। सोहन वहाँ रहट पर है और आज सिंचाई हो रही है।"

भगवन्ती ने पूछा, "मोहन भी जा रहा है क्या?"

"मैं समझता हूँ कि वह तो गया।"

"तो जाइये।"

गोपाल ने अपनी लाठी पकड़ी और खेतों को चल दिया। उसके सब खेत एक ही स्थान पर परस्पर मिले हुए थे। सब मिल-मिलाकर तीस एकड़ ज़मीन थी। किसी समय वे ऊंची भूमि पर होने के कारण बहुत घटिया समझे जाते थे। अब खेतों के मध्य कुआँ बन जाने से सब की सब भूमि हरी-भरी हो गयी थी। कुआं बहुत बड़ा और गहरा बनवाया था और दिन-रात पानी निकालने पर भी पानी चुकता नहीं था। खुश्क मौसम में भी दिन-रात रहट चलता था। बैलों की तीन जोड़ियां बारी-बारी से रहट चलाती थीं और दिन-रात खेतों की प्यास बुझाने का कार्य होता था।

ऐसा ही यह काल था। इस वर्ष वर्षा कम हुई थी और सिंचाई का कार्य हो रहा था। सोहन प्रातः का आया हुआ था। बैल रहट चला रहे थे और वह खेत में पानी एक क्यारी से दूसरी क्यारी में ले जाने के लिये नालियां ठीक कर रहा था।

गोपाल का विचार था कि मोहन वहीं होगा, परन्तु वह वहाँ नहीं था। गोपाल ने कुएँ पर पहुंच बैलों को चलते रहने का प्रोत्साहन दे, खुरपा लिया और उधर चला गया जिधर सोहन खेतों में बैठा पानी की नाली को ठीक कर रहा था। यह आवश्यक था कि किसी भी क्यारी में न तो अधिक जल चला जाये और न ही भूमि सूखी रह जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपाल ने सोहन से पूछा, "मोहन नहीं आया?"

"नहीं।"

"तुम प्रातः से काम कर रहे हो। अब थक गये होगे। जाओ तनिक कमर सीधी कर लो। अच्छा तो यह है कि घर चले जाओ। मोहन कारखाने में होगा उसे भेज देना।

"और देखो। लक्ष्मण आया था और कह रहा था कि उसके दो हलों के फल टूट गये हैं। देखना, तुम ठीक कर सको तो कर देना।"

"सोहन ने अपना खुरपा लिया और उठकर-कुएँ की ओर चल दिया। वहाँ पहुंच उसने हाथ और पांव धोये और फिर जूता पहिन कर घर को चल पड़ा।

घर जाकर उसने कारखाने में देखा। मोहन वहाँ नहीं था। सोहन ने माँ से पूछा, "माँ! मोहन कहाँ है?"

"खेतों पर गया था।" भगवन्ती ने कह दिया।

सोहन ने कहा, "वहाँ तो नहीं है।"

"भगवन्ती के पास बैठी शान्ति को समझ आया कि कहीं वह सीता के पीछे-पीछे उनके घर चला गया हो। इस कारण वह अपनी बात बीच में ही छोड़ उठ खड़ी हुई और बोली, "मुझे एक काम याद आ गया है। मैं फिर मिलूंगी।"

शान्ति भगवन्ती से कह रही थी कि जब वह इस लड़की को देखने चलेगी उसे भी साथ ले चले। वह नगर के पढ़े, लिखे, सभ्य, सुशील लोगों की प्रशंसा कर रही थी। नगर की धन, दौलत की भी प्रशंसा हो रही थी। सोहन की बात सुन शान्ति उठी और अपने घर को चल दी। भगवन्ती इसका अर्थ न समझती हुई मुख देखती रह गयी।

जब शान्ति चली गयी तो भगवन्ती ने सोहन से पूछ लिया, "क्या बात है, सोहन?"

"किस विषय में पूछ रही हो, माँ?"

"मोहन के विषय में?"

"पिता जी सोच रहे थे मोहन खेतों में होगा। वह वहाँ नहीं था। इस कारण उन्होंने कहा है कि यदि वह घर पर हो तो उसे वहाँ भेज दूँ।"

"तो कहाँ है वह?"

"मैं क्या जानूँ?"

माँ चुप रही।

शान्ति लम्बे-लम्बे पग उठाती हुई अपने घर को चली तो मोहन उधर से ही आता हुआ मिला। उसने यह जानने की इच्छा रखते हुए भी कि वह उधर कहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आ रहा है, कुछ पूछा नहीं और अपने घर जा पहुंची। घर पहुंचते ही उसने देखा कि सीता घर के पिछवाड़े वाले द्वार पर खड़ी है। माँ को देख वह भीतर जाने लगी तो माँ ने उसे आवाज़ दे पूछ लिया, "यहाँ क्या कर रही थी, सीता?

"वह आया था?"

"कौन आया था?

"मोहन।"

"क्या कहता था?"

"यही कि मैं उसके घर से भाग क्यों आयी थी?"

दोनों माँ-बेटी आंगन में से घर की बैठक-घर को जा रही थीं। माँ ने पूछा, "तो तुम वहाँ से भाग आयी थीं?"

"हाँ।"

"क्यों?"

सीता ने कुछ नहीं बताया और भूमि की ओर देखते हुए चुप रही। इस पर शान्ति ने क्रुद्ध हो, डांटते हुए पूछा, "बताती क्यों नहीं? क्या किया था उसने?"

अब सीता ने पिट जाने के भय से त्रसित हो कह दिया, "किया कुछ नहीं था, माँ। वह पूछता था, बताओ मैं उससे विवाह करूँगी। मैंने कह दिया, विवाह माता-पिता करेंगे।

"वह कहने लगा, 'तुम मानो तो मैं उनको मना लूँगा।'

"मैं यही कहती हुई वहाँ से चली आयी थी, 'माँ कहेगी तो विवाह होगा।' आते-आते मैंने देखा कि शकुन्तला पालने में हाथ पांव चलाते हुए खेल रही है। मैं उसे उठा, भाग कर घर से निकल आयी।"

"और यहाँ तुमने क्या कहा है?"

"जब उसने पूछा कि मैं वहाँ से भाग क्यों आयी हूँ तो मैंने कह दिया, 'मुझे तुमसे भय लगने लगा था।'

"वह पूछने लगा, 'भय क्यों? मैं तुमको खाने तो नहीं जा रहा था।'

"मैंने कहा है मैं नहीं जानती। मुझे भय लगा और मैं भाग आयी।

"इस पर वह हंस पड़ा। फिर पूछने लगा, 'अच्छा, फिर कब आओगी?'

"माँ ने मना कर दिया है।'

"इस पर कुछ कहने लगा, जो मैं समझी नहीं। वह कहता रहा। मैं सुनती रही। वह कह कर जाने लगा तो मैं उसके साथ द्वार तक चली आयी थी। वह अभी-अभी गया है और मैं उसे जाते हुए देख रही थी।"

"क्यों देख रही थी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी करता था।"

माँ ने क्रोध में कह दिया, "बड़ी अजीब लड़की हो। उससे भय भी लगता है और उसे देखना भी चाहती हो?"

सीता चुप थी। वह स्वयं भी इसका अर्थ नहीं समझती थी। शान्ति ने चुन्नीलाल के पिता से बात की तो उसने कह दिया, "सीता का विवाह हो जाना चाहिये। दोनों में आकर्षण तो है। इसे और आगे बढ़ने से पहले ही उसको पति मिल जाना चाहिये।"

"आप गोपाल को कह कर मोहन को मना करा दें।"

"मैं स्वयं न कहकर पंडित जी द्वारा कहलाऊँ तो अधिक ठीक रहेगा। पंडित जी से मोहन पढ़ता है। वह कहेंगे तो ठीक रहेगा।"

"ठीक है, पर विवाह तो होना ही चाहिये।"

"वह भी पंडित जी से कहूँगा। नगर में उनके बहुत यजमान हैं। अपनी बिरादरी के भी कई हैं।"

"तो कल ही बात करिये। देर करनी ठीक नहीं।"

अगले दिन प्रातःकाल ही लाला सुन्दरलाल पंडित ब्रजलाल के घर जा पहुंचा। पंडित जी पूजा-पाठ से अवकाश पा अपने स्वाध्याय के लिये बैठे थे। सामने चौकी पर भगवद्गीता रखी थी। पंडितायिन उनके लिये दूध लेकर आयी थी। उसने लाला को आते देखा तो दूध पंडित जी के पास रख जाने लगी, परन्तु पंडित जी ने उसे रोक कह दिया, "लाला जी के लिये भी दूध और मिठाई ले आओ।"

सुन्दरलाल ने कह दिया, "पंडित जी। मैंने तो अभी स्नान भी नहीं किया।"

"तो फिर क्या हुआ? दातुन, कुल्ला भी किया है अथवा नहीं?"

"हाँ वह तो कर आया हूँ।"

"तो ले आओ गार्गी।"

"पंडित जी की पत्नी गार्गी बाहर चली गयी तो पंडित जी ने लाला से पूछ लिया, "क्या बात है, सुन्दरलाल? आज बिना स्नान-ध्यान किये यहाँ किस मतलब से आये हो?"

"पंडित जी! नगर में आपके भी यजमान हैं?"

"हाँ हैं तो। बताओ, क्या बात है?"

"सीता अब बड़ी हो गयी है और उसकी माँ उसके विवाह की चिन्ता करने लगी है।"

"क्या उम्र है उसकी?"

"वह बारहवाँ वर्ष पार कर चुकी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लालायिन को जल्दी किस बात की है? लड़की अभी विवाह की आयु की नहीं हुई है।"

"तो कब होगी महाराज?"

"अभी तीन वर्ष के उपरान्त। अभी वह तुलसी रामायण पढ़ती है। मैं उसे गीता पढ़ाना चाहता हूँ।"

"पंडित जी तब तक तो काम बिगड़ जायेगा।"

"क्या काम बिगड़ जायेगा?"

"गोपाल का बड़ा लड़का मोहन उसके पीछे पड़ा है।"

इस पर पंडित जी गम्भीर हो विचार करने लगे। गार्गी एक तश्तरी में मिठाई और गिलास में दूध ले आयी और लाला जी के सामने एक चौकी पर रख वहाँ से चली गयी। ब्रजलाल ने कह दिया, "लीजिये लाला जी।"

जब सुन्दरलाल मिठाई की टुकड़ी उठा खाने लगा तो पंडित जी ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि मैं मोहन से बात करूँ।"

"क्या बात करेंगे?"

"यही कि सीता अभी विवाह के योग्य नहीं। वह उसे तंग न करें।"

"मतलब यह कि जब वह विवाह के योग्य हो जाए तो तंग कर सकता है?"

"तंग तो कभी भी नहीं कर सकता, परन्तु तब विवाह की बात विचार की जा सकेगी।"

"किससे?"

"जिससे वह चाहेगी।"

"पर पंडित जी। मैं तो यह कहने आया था कि आप मोहन और मोहन के पिता को समझा दें कि अपनी जात-बिरादरी में ही हाथ बढ़ायें। अन्यथा मुझे गाँव छोड़ देना पड़ेगा।"

"पर लाला सुन्दरलाल, गोपाल आपकी बिरादरी में ही तो है। देखो, भगवान ने गीता शास्त्र में लिखा है—'खेती-बाड़ी, गौ-पालन और व्यापार, वैश्य वर्ण वालों के ये स्वाभाविक काम हैं।"

सुन्दरलाल तो भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। उसे चुप देख पंडित जी ने कह दिया, "परन्तु लाला जी! मोहन को मैं ब्राह्मण स्वभाव का मानता हूँ।"

"वह कैसे?"

"उसमें मैं ब्राह्मण के गुण देख रहा हूँ। ब्राह्मण उसको कहते हैं जो शम, दम, तम, शौच और आर्जव् रखता हो। मैंने उस बालक में ये सब गुण देखे हैं। इस पर भी मैं यह चाहूँगा कि उसको अभी चार-पांच वर्ष तक ठहरना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरलाल पंडित जी के शास्त्र के प्रमाणों पर सन्तुष्ट नहीं था। उसने कह दिया, "पर, पंडित जी। हम जाति के बनिया, महेश्वरी और लाख सवा लाख की सम्पत्ति रखने वाले हैं और वह एक जाट का बेटा और उन नौ बच्चों में पन्द्रह-सोलह सहस्त्र की पूंजी रखने वाला है। यह विवाह कैसे ठीक होगा?"

"विवाह तो मोहन का हो जायेगा। मैं उसे कहूँगा कि किसी ब्राह्मण के घर विवाह करे। मैं उसे ब्राह्मण बनाने की बात विचार कर रहा हूँ, परन्तु यह उसकी अपनी रुचि की बात है।"

लाला सुन्दरलाल ने अपने मन की बात कह दी, "हम, मेरा मतलब है कि मैं और मेरी पत्नी, सीता का विवाह जाट के लड़के से नहीं करेंगे।"

"तो ठीक है, यदि मेरी सम्मति मानेगा तो मैं उसे ब्राह्मण बना दूँगा और किसी ब्राह्मण की लड़की से उसका विवाह कर दूँगा।"

"कौन ब्राह्मण अपनी लड़की का विवाह उससे करेगा?"

"मैं भी कर सकता हूँ।"

"पंडित जी। आपकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जायेगी।"

"मैं इन बातों में प्रतिष्ठा नहीं मानता। देखो सुन्दरलाल! प्रतिष्ठा का स्रोत है सदाचार, धर्माचरण और ज्ञान। जब तक ये बातें मुझमें है मैं प्रतिष्ठित रहूँगा।"

"पर लड़की छोटी जाति में देंगे तो लोग आपकी लड़की में किसी प्रकार की खराबी देखने लगेंगे।"

"भाई सुन्दरलाल। मैं मोहन को छोटी जाति का नहीं मानता। वह क्षत्रिय तो अब भी है। यदि वह तीन-चार वर्ष मुझसे और पढ़ता रहा तो वह शास्त्र पढ़कर ब्राह्मण बन जायेगा।

"मैं यह भी बता दूँ कि मैं लोगों के कहने से न तो प्रतिष्ठित हूँ और न ही उनके कहने से अप्रतिष्ठित हो जाऊँगा।"

"देखो लाला! यदि तुम कहो तो मैं तुम्हारी लड़की के लिये कोई वर अपने यजमानों में ढूंढ़ दूँगा। आगे तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।"

"पंडित जी। हम पति-पत्नी दोनों आपके बहुत आभारी रहेंगे। मैं तो आपसे यह प्रार्थना करूँगा कि मोहन हमारी लड़की की ओर कुदृष्टि न करे। मैं उससे लड़ नहीं सकता। मैं यही कर सकता हूँ कि गाँव छोड़ जाऊँ।"

"मोहन को कह दूँगा।"

लाला ने दूध और मिठाई समाप्त की। पंडित जी के चरण स्पर्श किये और उठकर अपने घर लौट आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9

मोहन सायंकाल पढ़ने आया। उन दिनों पंडित जी से वह ईशावा- स्योपनिषद् पढ़ा करता था। उसे पंडित जी से पढ़ते हुए दस वर्ष हो चुके थे। वह अभी चार वर्ष का ही था कि गोपाल उसे पंडित जी के पास ले आया था। पंडित जी ने उसे शिष्य बना लिया था और उसको वर्णमाला से आरम्भ कर दस वर्षों में उपनिषद् पढ़ाने आरम्भ कर दिये थे।

पंडित जी तीन बातें करते थे। वर्णमाला पढ़ाने के बाद पढ़ने, लिखने का अभ्यास कराते थे और फिर लघु कौमुदी पढ़ा देते थे। पूर्ण लघु कौमुदी कंठस्थ करा कर वे सीधा गीता पढ़ाते थे। विद्यार्थी का शब्दज्ञान पढ़ते-पढ़ते वृद्धि पाता जाता था। जो कुछ भी पंडित जी पढ़ाते थे वह कंठस्थ करा कर वे बालक की शिक्षा समाप्त कर देते थे, परन्तु मोहन की बुद्धि प्रखर देख पंडित जी ने उपनिषद् पढ़ाने का विचार कर लिया। ईशावास्योपनिषद् आरम्भ किया तो पंडित जी ने अपने मन में, इस जाट सन्तान को ऊंचे वर्ण में ले जाने का विचार बना लिया। वे उसे अपनी लड़की कलावती के लिये उचित वर समझने लगे थे।

आज मोहन को पाठ पढ़ा और पाठ की व्याख्या समझा पंडित जी ने उस दिन की पढ़ाई समाप्त कर दी। तदनन्तर वे सुन्दरलाल की लड़की के विषय में बात करना चाहते थे। उन्होंने पूछा, "मोहन! आजकल दिन भर क्या करते रहते हो?"

"पंडित जी। प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही स्नानादि से अवकाश पा कलेवा लेकर, जप जी साहब का पाठ करता हुआ खेतों को चला जाता हूँ। वहाँ आजकल सिंचाई और निराई का काम चल रहा है। सो काम में लगा हुआ गीता पाठ कर लेता हूँ। कभी कभी पूर्ण गीता का पाठ कर डालता हूँ। कंठस्थ तो है ही। पाठ करते हुए खेत के काम की कठोरता अनुभव नहीं होती।

"मध्याह्न तक यह काम चलता है। तब घर भोजन करने चला जाता हूँ। भोजन कर कुछ विश्राम कर दो घंटे बढ़ई तथा पॉलिश का काम करता हूँ। मध्याह्नोत्तर पुनः खेतों को जाता हूँ और वहाँ जो भी काम हो, करता हूँ। दो घंटे काम कर घर आता हूँ। माँ दूध पीने को देती है। इसके बाद ही आपसे पढ़ने चला आता हूँ। अब घर जाऊँगा तो भोजन कर कुछ देर तक बातचीत होती है। तदनन्तर सो जाता हूँ। पंडित जी, मुझे सात घंटे गहरी नींद आती है। जिस करवट सोता हूँ, प्रातः उसी करवट उठता हूँ।"

"पर मोहन। सीता रानी से बातें किस समय करते हो?"

मोहन भौंचक्का रहा गया कि पंडित जी को सीता की बात किसने बतायी है? उसे स्मरण आ गया। सीता ने कहा था कि उसकी माँ ने उनके घर जाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना कर दिया है। इससे वह तुरन्त समझ गया कि सीता ने माँ से कुछ कहा है। उसकी माँ ने लाला से कहा होगा और लाला ने पंडित जी से बात की होगी। इस प्रकार बात विचार कर मोहन हंस पड़ा। उसने हंसते हुए कह दिया, "पंडित जी। उससे बातें कारखाने में काम करते-करते ही कर लेता हूँ।"

"क्या बातें करते हो? देखो, तुम्हारी शिकायत आयी है और मैं तुमको सचेत करना चाहता हूँ।"

"पंडित जी, क्या शिकायत आयी है?"

"यही कि तुम सीता को तंग करने लगे हो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि कैसे तंग कर रहे हो?"

मोहन गम्भीर हो गया। उसने पंडित जी की आंखों में देखते हुए कहा, "वह प्रायः नित्य ही भोजनोपरान्त कारखाने में आ जाया करती थी और जब मैं काम किया करता था तो उससे बातें करता रहता था। वह प्रसन्न प्रतीत होती थी। कुछ दिन हुए मेरे मन में विचार आया कि वह विवाहने योग्य है। मैंने उसको कहा कि वह मुझको बहुत अच्छी लगती है। वह इस कथन पर लज्जा से लाल हो गई। इस पर भी उसने मुख से कुछ कहा नहीं। कल मैंने उससे कहा कि वह बहुत अच्छी लड़की है और मैं उससे विवाह करूँगा।

"वह सुनकर हंसी। फिर गम्भीर हो गयी और उसके तुरन्त बाद मेरी छोटी बहिन को पालने में से उठा अपने घर भाग गयी। कुछ देर के उपरान्त मैं उसके घर गया। उसकी माँ वहाँ नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह मेरी बहिन को छोड़ने हमारे घर गयी होगी। मैंने सीता से पूछा, 'भाग क्यों आयी थी?' उसने कहा, 'मुझे भय लग गया था।'

"मेरे पूछने पर उसने यह भी कहा कि वह नहीं जानती, उसे क्यों भय लगा था। उसे भय लगा और वह भाग गयी।

"मैंने उसे समझाना आरम्भ किया कि यदि वह मान जाये तो मैं उसके माता-पिता से कह कर विवाह कर सकता हूँ।

"उसका कहना था, 'मेरी माँ से कहिये। वे विवाह करेंगी तो विवाह होगा।"

पंडित ब्रजलाल ने मोहन की बात को सुन-समझ कर कह दिया, "मैंने समझा था कि तुमने उसको पकड़ा है और चुटकी इत्यादि काटी है।"

"चुटकी क्यों काटता? वह मेरी शत्रु तो है नहीं।"

"सीता भी मध्याह्न के समय तुम्हारी बहिन और अन्य लड़कियों के साथ पढ़ने आती है। आज वह नहीं आयी। इससे मुझे सन्देह हो गया था कि तुमने उसे पीटा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, पंडित जी। मैं तो उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

"पर, वह भी तो विवाह का एक तरीका है। इसे राक्षस विवाह कहते हैं। देखो, मोहन! यह विधि वर्जित है। इससे सन्तान नीच, पतित और अधर्माचरण करने वाली होती है। ऐसा नहीं करना चाहिये। तुम मेरे बहुत अच्छे शिष्य हो। इस कारण मैं समझता हूँ कि तुम मेरा कहा मानोगे।

"तुमको केवल देव तथा आर्य विवाह ही करना चाहिये। उन दोनों प्रकार के विवाह में लड़की के माता-पिता की स्वीकृति लेनी आवश्यक है। यहाँ तक कि उनको ही तुम्हारे पास आकर कहना चाहिये कि वे तुमको अपनी लड़की देंगे।"

मोहन विवाह के आठ प्रकारों को जो हिन्दुओं के धर्म-शास्त्रों में वर्णन किये गये हैं, जानता था। इसी कारण वह पंडित जी की बात को समझ गया। वह जानता था कि पैशाच विवाह और राक्षस विवाह देश के कानून से भी वर्जित हैं। असुर विवाह और गंधर्व विवाह वर्जित नहीं थे, परन्तु वे निन्दनीय अवश्य थे। शेष चार प्रकार के विवाह थे : ब्राह्म, देव, आर्ष और प्रजापत्य। इन सब में लड़की के माता-पिता ही लड़की को स्वेच्छा से वर को देते हैं।

इन सब बातों को जानते हुए मोहन ने आश्वासन दे दिया कि वह धर्म और कानून के विरुद्ध कोई काम नहीं करेगा। पंडित ब्रजलाल इस आश्वासन पर प्रसन्न हो गए।

इस समय उसे पता चला कि उसके विवाह की चर्चा घर में भी हो रही है। जब मोहन पिता से कुछ पूछने आया तो उसके पिता और माता नगर के ठेकेदार की लड़की की बात करते-करते रुक गये। रात का समय था। भगवन्ती और गोपाल अपने सोने के कमरे में ठेकेदार की लड़की की बात कर रहे थे। भगवन्ती कह रही थी, "मैं शान्ति बहन को लेकर सरदार करतार सिंह के घर गयी थी। घर तो बड़ा है। परिवार भी बड़ा है। लड़की के पिता बढ़ई का काम करता-करता फर्नीचर का ठेकेदार हो गया है, परन्तु लड़की बहुत ही साधारण रूप-रेखा और बुद्धि की प्रतीत हुई है।"

"तो क्या समझती हो कि लड़की मोहन के योग्य...।"

इस समय मोहन ने कमरे में प्रवेश किया, तो गोपाल बात करता-करता रुक गया।

"ओह! आओ, मोहन कैसे आये हो?" भगवन्ती ने पूछ लिया।

मोहन ने अपना काम बताने के स्थान में पूछ लिया, "माँ! कौन लड़की मेरे योग्य है?"

"एक है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वह योग्य है क्या?"

"तुमको इस विषय में जानने की उत्सुकता क्यों है?"

"इसलिये कि एक और है जो मेरे योग्य है।"

"गोपाल हंस पड़ा और पूछने लगा, "तो तुम अब लड़कियां देखने लगे हो?"

"पिता जी! मैं उन्हें देखने नहीं जाता। वे स्वयं दिखाई देने लगी हैं।"

"कौन दिखाई दी है तुम्हें?"

"पर माँ। तुमने तो बताया नहीं कि तुमने किसको देखा है?"

इस पर गोपाल और भी ज़ोर से हंसा। हंसते हुए बोला, "अब मैं समझ गया हूँ कि तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करना पड़ेगा।"

"वह तो होगा ही। परन्तु किसके साथ और कहाँ होगा, मैं तो यह पूछ रहा था।"

"और यह नहीं पूछ रहे कि कब होगा?" माँ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"यह माँ! दूसरा प्रश्न होगा।"

गोपाल समझ रहा था कि मोहन विवाह के विषय में कुछ विचार कर चुका है। अतः उसने कहा, "वह स्टूल लेकर बैठ जाओ।"

मोहन बैठा तो पिता ने बताया, "अमृतसर का एक ठेकेदार है, करतार सिंह। आहलुवालियों के कटरे में रहता है। उसकी लड़की का सन्देश है।"

"माँ! मेरी बात मानो तो मेरा वहाँ विवाह न करना।"

"क्यों?"

"मैं विवाह यहाँ गाँव में ही करूँगा।"

"किससे करोगे? एक तो लक्ष्मण दास की लड़की है।"

"वह बहुत गंदी है। उसकी नाक बहती रहती है।"

"तुम उसे साफ़ रहने का ढंग सिखा देना।"

"नहीं, माँ। मुझे वह पसन्द नहीं।"

"तो कौन पसन्द है?"

"मेरे गुरु जी से पूछ सकती हो।"

"कौन गुरु जी?"

"जिनसे मैं पढ़ता हूँ।"

"तो यह भी पढ़ाई में आता है?" गोपाल का प्रश्न था।

"हाँ, पिता जी।"

"अच्छी बात है। उनसे पूछ लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

मोहन अपनी बात कहकर अपने कमरे में गया तो वह प्रसन्न था। वह समझ गया कि उसके माता-पिता अब उसके मन की बात भी जान जायेंगे। रात काफी देर तक गोपाल और भगवन्ती विचार करते रहे कि कौन लड़की हो सकती है जिस पर मोहन की दृष्टि पड़ी है, परन्तु विचार करने में भगवन्ती पति की सहायता नहीं कर सकी।

अतः अगले दिन मध्याह्न के समय जब मोहन कारखाने में काम कर रहा था, गोपाल पंडित ब्रजलाल के घर जा पहुंचा। उस समय राधा इत्यादि लड़कियाँ पढ़ने आयी हुई थीं।

पंडित जी ने जब गोपाल को घर आते देखा तो पढ़ाई के कमरे से बाहर निकल आए और गोपाल के पास आकर पूछने लगे, "सुनाओ चौधरी, कैसे आना हुआ है?"

"पंडित जी। मैं मोहन के विषय में कुछ पूछने आया हूँ।"

"हाँ, पूछो।"

"हम उसकी सगाई कहीं करने का विचार कर रहे हैं। उसको पता चला तो वह कहने लगा है कि वह गाँव की ही एक लड़की से विवाह करेगा।

"मैंने उससे पूछा है कि वह कौन लड़की है, उसने बताया है कि आप जानते हैं।

"इसलिये मैं यह जानने आया हूँ कि आप क्या जानते हैं?"

"सुनो चौधरी। मोहन बहुत ही अच्छा, सुशील और समझदार लड़का है। इस कारण उसके साथ कोई भी अपनी लड़की का विवाह करना चाहेगा, परन्तु वह कहता है कि सुन्दरलाल की लड़की सीता से विवाह करेगा।

"ऐसा प्रतीत होता है कि सुन्दरलाल को मोहन के इस विचार का पता चल गया है और वह यह नहीं चाहता। इसी कारण उसने अपनी लड़की को यहाँ पढ़ने के लिए भेजना बन्द कर दिया है।"

"बड़ा मूर्ख है मोहन?"

"नहीं, चौधरी। वह मूर्ख नहीं। उसका निर्वाचन ठीक ही है, परन्तु मैंने उसे समझाया है कि लड़की से सम्बन्ध बनाने के आठ तरीके हैं। शास्त्र ने उन आठ तरीकों में से चार ही ठीक माने हैं और इन चारों में लड़की के माता-पिता की स्वीकृति आवश्यक है।

"उसे आशा है कि सीता के माता-पिता उसे पसन्द करेंगे, परन्तु अभी तक उनके पसन्द करने के लक्षण दिखाई नहीं दिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर पंडित जी। वे बनिये हैं।"

"और तुम कौन हो?"

"हम जाट है।"

"जाट क्या होते हैं?"

"प्राचीन काल के यदु कुल ठाकुर।"

"होंगे, परन्तु आज तो तुम किसान हो और किसान वैश्य ही होते हैं।"

"यह कहाँ लिखा है?"

"शास्त्र में लिखा है?"

"पर रिवाज नहीं है।"

"गोपाल! रिवाज डाले जाते हैं। ये परमात्मा की ओर से बने-बनाये नहीं आते। मैं शास्त्र की बातें ही कह सकता हूँ।"

"पर, सुन्दरलाल माने तब न।"

"नहीं मानेगा तो विवाह नहीं होगा। मोहन को मैं यही समझा रहा हूँ।

"आजकल उसे एक अन्य बात भी बता रहा हूँ। वह यह कि विवाह का प्रयोजन सुन्दर, सबल और बुद्धिमान सन्तान पैदा करना तथा उसका पालन-पोषण करना है। विषय भोग फोकट में ही प्राप्त होता है। मैं देख रहा हूँ कि वह समझ रहा है।"

"तो हम उसके अन्यत्र विवाह का प्रबन्ध न करें?"

"अन्यत्र कहाँ कर रहे हैं?"

"नगर का एक ठेकेदार है। वह सिक्ख है। कुछ दिन हुए वह और उसकी धर्म-पत्नी यहाँ आये थे और फिर मोहन की माँ सुन्दरलाल की पत्नी के साथ लड़की देखने गयी थी। हम इस सम्बन्ध के विषय में विचार ही कर रहे थे कि मोहन ने यह गाँव की लड़की वाली बात बतायी और मैंने पहले आपसे बात करनी उचित समझी।"

"देखो गोपाल। भविष्य के विषय में कुछ कहना अति कठिन है। इस कारण ईश्वर पर अपनी डोरी छोड़ दो। जैसे ईश्वर करेगा वैसा ही स्वीकार करना चाहिये।"

"पर पंडित जी। कैसे जानें कि भगवान् क्या चाहता है?"

"स्वार्थ रहित होकर सब के कल्याण की इच्छा करते हुए, विचार करो। भगवद्इच्छा का पता चल जाता है।"

"गोपाल पंडित ब्रजलाल के यहाँ से चला आया। पंडित ब्रजलाल ने समझा कि गोपाल को उसकी बात सुहाई नहीं। इस कारण उसने भी अपने मन से मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात निकाल दी और अपने नित्य के काम में लग गया।

शान्ति के घर में भी मोहन और सीता की चर्चा तेज़ होती जाती थी। उसी दिन जिस समय गोपाल पंडित जी से बात करने गया हुआ था, मोहन के मन में सीता से मिलने की लालसा जाग पड़ी। वह काम छोड़ सुन्दरलाल के घर पर जा पहुंचा।

सीता को माँ ने बहुत समझाया था और साथ ही उसे डांटा भी था कि उसे अब मोहन से नहीं मिलना चाहिये। सीता पहले ही मन में यह अनुभव करती थी कि मोहन को उससे विवाह की बात माता-पिता के द्वारा न कर स्वयं करनी ठीक नहीं। अब इसी बात को उसकी माँ ने समझाया था। उसकी माँ ने कहा था कि वह अभी उमर और ज्ञान में बहुत छोटी है। इस कारण इस विषय में माता-पिता ही उसके विवाह का निर्णय कर सकते हैं। वे उसके हित-अहित को भली-भांति समझ सकते हैं।

अतः मन में मोहन से मिलने की लालसा रखते हुए भी, वह माँ के कहने का उल्लंघन नहीं कर सकी। उसने भगवन्ती मौसी के घर जाना छोड़ दिया और साथ ही पढ़ने के लिये पंडित जी के घर जाना भी बन्द कर दिया।

इस दिन मोहन आया तो सीता प्रांगण में बैठी कपड़े धो रही थी। उसने मोहन को देखा तो कपड़े धोने छोड़ भीतर सोने के कमरे में चली गयी। मोहन सीधा शान्ति मौसी के पास चला गया। वह मकान की बैठक में बैठी चर्खा कात रही थी।

शान्ति ने मोहन को देखा तो उसे सामने चटाई पर बैठा पूछ लिया, "सुनाओ मोहन। कैसे आये हो?"

"मौसी! तुम कल माँ के साथ कहाँ गयी थी?"

शान्ति ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "किसलिये पूछ रहे हो?"

"मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि मेरी सगाई का प्रबन्ध हो रहा है। यह ठीक है क्या?"

"तो माँ से पूछा नहीं?"

"माँ ने बताया है, पर तुम भी उसके साथ वहाँ ही गयी थीं?"

"हाँ।"

"लड़की देखी है?"

"देखी है।"

"कैसी है?"

"उसके दो हाथ, दो टांगें हैं। आंख, कान, नाक सब ठीक हैं।"

"और वह बोलती भी है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, बोलती तो है। यद्यपि उसने हमारे साथ बात नहीं की।"

"मौसी। तुमने उससे बात करने का यत्न किया था क्या?"

शान्ति मुस्करायी और बोली, "उसे बुलाया था, परन्तु उसने उत्तर नहीं दिया।"

"तो वह गूंगी भी हो सकती है?"

"नहीं मोहन। जब हम वहाँ पहुँचे थे, तो वह अपने छोटे भाई को डांट रही थी।'

"हमें देख वह चुप कर गयी और उस समय हम भी नहीं जानते थे कि हम उसी लड़की को देखने आये हैं। मैंने लड़की को कहा, 'बीवी जसवन्त कौर घर पर हैं?'

"लड़की ने पूछ लिया, 'कहाँ से आये हैं?'

"मैं गाँव का नाम बताने ही लगी थी कि जसवन्त कौर कमरे से बाहर निकल आयी। उसने हमारी आवाज़ सुन ली थी।

"वह हमें भीतर ले गयी और वहाँ बैठाया। चाय-पानी पूछा। हमारे बहुत न करने पर भी नौकर को आवाज़ दे दी कि सबके लिये चाय ले आओ।

"इसके उपरान्त वह हमें बैठा बाहर चली गई। शायद वह लड़की को बताने गई होगी कि हम किस प्रयोजन से आये हैं। वह लौटी और फिर वह अपने परिवार और सम्पत्ति तथा आय की बातचीत करने लगी।

"तुम्हारी माँ और मैं चुपचाप सुनते रहे, परन्तु जब उसकी अपने धन, दौलत की बात समाप्त न होती दिखाई दी तो तुम्हारी माँ ने कहा कि हम तो लड़की देखने आये हैं। यह सब कुछ आपको मुबारिक हो।

"इस पर जसवन्त कौर ने लड़की को आवाज़ दी, 'मुन्नी! ओ मुन्नी, ज़रा आना तो।'

"वही लड़की जो बाहर प्रांगण में अपने छोटे भाई को डांट रही थी, अब साफ़, धुले कपड़े पहने बैठक में आ गयी। लड़की अच्छी, सुन्दर है। अभी छोटी ही उम्र की है। मेरा विचार है कि तेरह-चौदह वर्ष की होगी। वैसे तुमसे ऊंचाई में दो अंगुल छोटी प्रतीत होती है। मैं तो लड़की को पसन्द कर आयी हूँ।"

"रंग कैसा है?"

"गंदमी है।"

"क्या सीता जैसा?"

"तो सीता तुमको गंदमी रंग की दिखाई देती है?"

"हाँ मौसी! गंदम से कुछ उज्ज्वल।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वह गंदम से कुछ मैली है।"

"वह पढ़ी-लिखी क्या है?"

"इस समय लड़कियों के स्कूल में आठवीं श्रेणी में पढ़ती है।"

"रामायण, महाभारत अथवा कोई धर्म ग्रन्थ भी पढ़ सकती है क्या?"

"उसकी माँ कहती थी कि नित्य गुरुग्रन्थ साहब का पाठ करती है।"

"तुम उसे स्वीकार कर आयी हो?"

"स्वीकार अथवा अस्वीकार तुम्हारी माँ, करेगी। हाँ, मझे लड़की ठीक समझ आयी है।"

"देखो, मौसी। मेरा वहाँ विवाह नहीं होगा।"

शान्ति इसका अर्थ समझती थी और चिन्ता में उसके आगे कहने की प्रतीक्षा कर रही थी। मोहन ने कुछ ठहर कर कह दिया, "मैंने अपनी माँ को भी बताया है।"

"पर, तुमने उस लड़की में क्या दोष देखा है?"

"मैंने किसी अन्य में गुण देखे हैं।"

"अच्छा?" शान्ति ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हुए पूछ लिया, "भला किस में और क्या गुण देखे हैं?"

"मौसी! उसके विषय में मैं अपने पिता से आज रात बात करूँगा और फिर वे सीता के पिता जी से बात कर लेंगे। उनको सब कुछ बतायेंगे।

"अच्छा, अब मैं चला। सीता नहीं दिखाई दी। कहाँ है?"

"वह कपड़े धो रही थी। पता नहीं, अब कहाँ है?"

मोहन सीता से मिलने आया था, परन्तु वह नहीं मिल सकी। जान-बूझकर अथवा घटनावश वह बाहर नहीं आयी। इतना वह जानता था कि उसे उनके घर जाने की मनाही हो चुकी है।

वह वहाँ से सीधा खेतों में पहुंचा तो उसका पिता और सोहन वहाँ पहुँचे हुए थे। आज सब्जी की क्यारियों में सिंचाई हो रही थी। गाजर, मूली, शलजम, पालक, आलू, टमाटर इत्यादि सब्जियाँ लगी थीं। गोभी के फूलों की तो अभी पेढ़ी ही जमी थी। छोटे-छोटे पौधे थे।

मोहन भी अपना खुरपा ले क्यारियों में चला गया। रहट चल रहा था और जल खेतों में आ रहा था। मोहन ने पिता से कह दिया, "पिता जी! एक छोटा-सा फलों का बाग भी लगा लें तो कैसा रहें?"

"कौन से फल लगवाना चाहते हो?"

"केला, अमरूद, सन्तरे इत्यादि।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, बिहारीलाल से बात करूँगा।" इस समय गोपाल को बिहारीलाल की लड़की सुभद्रा की बात स्मरण आ गई। उसने पूछा, "मोहन! सुभद्रा से विवाह करोगे?"

"नहीं, पिताजी।"

"क्यों? क्या दोष है उसमें?"

"वह भी पंडित जी से पढ़ने जाती है। आप उनसे ही बात कर लें।"

गोपाल पंडित जी से मिल आया था और मोहन के मन की बात जान आया था। इस पर भी उसने मोहन को बताया नहीं। वह मन में सीता को घर लाने की बात विचार करता रहा था। उसे सीता ठीक प्रतीत हुई थी, परन्तु सुन्दरलाल उसकी आर्थिक अवस्था को जानता था। गोपाल की सब पूंजी उसी के पास जमा थी। गोपाल का विचार था कि सुन्दरलाल अपने को अधिक धनवान और ऊंची जाति का मान मोहन को अपना दामाद नहीं बनायेगा।

जब गोपाल ने पंडित जी की बात भगवन्ती को बताई तो वह चुप रह गई। उसे भी आशा नहीं थी कि सुन्दरलाल मानेगा। वह स्वयं भी इस सम्बन्ध से कुछ अधिक सन्तुष्ट नहीं थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

पंडित ब्रजलाल ने सुन्दरलाल को दो-तीन लड़कों का सुझाव दिया था। उनमें से दो को सुन्दरलाल ने पसन्द किया था। वह नगर में जाकर लड़कों को देख आया था, परन्तु दोनों के पिता से बात करने पर पता चला कि एक लड़के का पिता नकद बीस हजार माँगता है और दूसरे का पिता नकद पन्द्रह हजार रुपया। विवाह पर व्यय इसके अतिरिक्त था।

इस कारण कुछ खिन्न मन से उसने अपनी पत्नी को बताया, "नगर में तो लड़कों के पिता मुख फैलाये बैठे हैं।"

"और कहीं यत्न करिये। आख़िर नगर में दो लड़के ही तो नहीं रह गये?" शान्ति ने कह दिया।

"पर तुम मोहन में क्या दोष देखती हो?"

"वे जाट हैं और सात भाई हैं।"

"पर एक बात है। गोपाल और भगवन्ती भले और बहुत समझदार हैं। इन्होंने बीस वर्ष में बहुत उन्नति की है।"

"आप ही तो कहा करते थे कि यह उन्नति विनाश का लक्षण है। जहाँ खेती-बाड़ी में उन्नति हुई है वहाँ बच्चों की पैदावार में भी कमी नहीं रही। बच्चों में वृद्धि खेती की उन्नति को मात कर गई है।

"घर पर भगवन्ती दिन भर काम में लगी रहती है। मैं सीता को इतना कठोर काम करते देख नहीं सकती। वह बेचारी जाट के बेटों की सेवा करती करती मर जायेगी।"

इस पर सुन्दरलाल चुप कर गया। समय व्यतीत हो रहा था। सीता को पति नहीं मिल रहा था। मोहन की सगाइयां आ रही थीं और मोहन अस्वीकार कर रहा था।

मोहन को सुन्दरलाल के घर गये पांच वर्ष होने जा रहे थे। अब वह उन्नीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष का हो चुका था। वैसे उसकी रुचि में भी परिवर्तन आ रहा था। इस परिवर्तन में पंडित ब्रजलाल का भारी हाथ था।

पंडित जी ने मोहन को एक दिन बता ही दिया था, "मोहन! तुम तो पूर्व-जन्म के कोई विद्वान ब्राह्मण प्रतीत होते हो।"

मोहन ने कहा दिया, "गुरु जी! हो सकता है, परन्तु इस जन्म में तो मैं वैश्य ही हूँ।"

"मैं यही कह रहा हूँ कि इस पतन को सुधारा जा सकता है। थोड़े ही प्रयत्न की आवश्यकता है।"

"मैं कुछ ऐसा अनुभव कर रहा हूँ," मोहन ने विचार कर कहा, "मेरे पांव में बहुत बड़ा बोझा बंधा है। मैं आकाश में उड़ना चाहता हूँ, परन्तु वह बोझा मुझे उड़ने नहीं देता।"

"यह मैं देख रहा हूँ कि यह बोझा तुम्हारे भीतर नहीं। मेरा अभिप्राय है कि तुम्हारे पांव बंधे हुए नहीं। वह बोझा बाहर का है। तुम चाहो तो उतार कर फेंक सकते हो?"

"कैसे, गुरु जी?"

"देखो। पिछले पन्द्रह वर्ष मे मैंने तुम्हारे मन पर ब्राह्मण वर्ण के संस्कार देखे हैं। पिछले जन्म में मृत्यु के समय तुम किसी कारण से धन सम्पदा की अभिलाषा करते रहे हो। इससे तुम्हारा जन्म एक ज़मींदार के घर में हो गया है। फिर भी तुम्हारे पिछले जन्म के संस्कार तुमको ब्राह्मणत्व की ओर ले जाने में लगे हैं।

"तुम शान्त स्वभाव, मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण, तपस्या का जीवन, क्षमा भाव, मन की सरलता और परमात्मा पर विश्वास रखते हो। ये सब गुण एक ब्राह्मण के हैं और ये तुम में पूर्व-जन्म के संस्कारों के कारण ही हैं।

"अब तुम इस जन्म के वैश्य वृत्ति के कर्म करते हुए भी, अपने मन के संस्कारों को मिटा नहीं रहे।"

"कदाचित् आपका कहना सत्य है, परन्तु मैं इस जन्म के कर्मों को छोड़ नहीं सकता। चौबीस घंटों में ग्यारह घंटे में वैश्य का काम करता हूँ। एक घंटा रात के समय पढ़ता हूँ। बताईये, है न मेरे पांव में बंधा हुआ बोझा?"

"मैं समझता हूँ।" पंडित जी ने कह दिया, "तुम इस बोझे को उतार दो तो तुम ब्राह्मण के कर्म करने लगोगे।"

"वह कैसे?"

"खेती में और कारखाने में तुम अपना काम सोहन को दे दो। वह कुछ अधिक पढ़ नहीं सका। वह उन कामों को कर लेगा। तुम पठन-पाठन, दान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेना-देना, यज्ञ करना-कराना आरम्भ कर दो। स्वभाव तो ब्राह्मण का रखते ही हो। तब कर्म भी ब्राह्मण के करने आरम्भ कर दोगे। मैं अपने काम में बूढ़ा हो रहा अनुभव करता हूँ। तुम मेरा हाथ बंटाओ।"

"मोहन की हंसी निकल गई। हंसते हुए उसने कहा, "गाँव के लोग एक जाट के बेटे को ब्राह्मण का काम करते देख उसे तो पुरोहित बनायेंगे नहीं, हाँ, आपकी पुरोहितायी भी समाप्त हो जायेगी।"

ऐसा प्रतीत होता था कि ब्रजलाल इस सम्भावना पर विचार कर चुका था। उसने कहा, "परन्तु ब्राह्मण के कर्मों में पुरोहितायी तो है नहीं। इस के बिना भी तुम ब्राह्मण हो सकते हो।"

"तो फिर यज्ञ कराना कैसे होगा?"

"देखो मोहन! मैं बताता हूँ। पढ़ तो तुम अब भी रहे हो। कुछ और अधिक पढ़ोगे तो मुझसे भी अधिक विद्वान हो सकते हो। तुम बिना फीस लिए पढ़ाओगे तो कोई इन्कार नहीं करेगा। एक बात करनी होगी। शिक्षा देते समय कुछ जीविकोपार्जन के विषयों की भी शिक्षा देनी होगी। उसका उपाय मैं तुमको बता दूँगा। एक बनिया उस्ताद हो सकता है तो एक जाट का लड़का क्यों नहीं?

"दान तो तुम दोगे ही। कम से कम विद्या-दान तो करोगे ही। दान लेने के लिए भी तुम तैयार हो जाओ। यदि कोई दे तो लेने से इन्कार नहीं करना। हाँ माँगने जाने की आवश्यकता नहीं।

"यज्ञ तुम कर सकते हो। कोई मना नहीं करेगा। दूसरों को यज्ञ करने की राय भी दे ही सकोगे? कोई माने अथवा न माने।"

मोहन इस योजना को सुनता रहा। वह कुछ कह नहीं सका। पंडित जी ने उसके मानस क्षेत्र में बीज डाल दिया था। वह समझता था कि यदि ठीक ढंग पर सिंचाई होती रही और किसी प्रकार का दैवी प्रकोप न हुआ तो यह बीज अंकुरित हो उठेगा।

यह हुआ भी। मोहन पंडित जी के सुझाव पर मनन कर रहा था और उसके मन में वह सुझाव जड़ पकड़ता चला जाता था। यह मानसिक अवस्था थी जब वह आयु का उन्नीसवाँ वर्ष पार कर रहा था। इस मनः स्थिति के अधीन उसकी रुचि अब कारखाने के काम और खेती-बाड़ी के काम में लग नहीं रही थी। पिता ने एक छोटा सा बगीचा लगाया था। अमरूद, सन्तरे और आमों के पेड़ लगाए थे। उसमें मोहन की रुचि थी। वह वहाँ जाता था और उसके फलों की पक्षियों से सुरक्षा करता रहता था। उसने बगीचे के बीचों-बीच एक चबूतरा बना लिया था। धूप और वर्षा से बचाव के लिए पक्की छत डलवा ली थी। अब वह अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन माध्याह्न के समय वहाँ बैठकर करने लगा था।

गोपाल और भगवन्ती उसके इस स्वभाव के परिवर्तन को देख रहे थे। भगवन्ती का विचार था कि उसका विवाह हो जाना चाहिए। गोपाल कहता था, "वह नहीं मानेगा। मुझे कुछ ऐसा सन्देह हो रहा है कि विवाह का प्रबन्ध किया गया तो वह घर से भाग जाएगा।"

"तो वह करने का यत्न किया जाए जो वह चाहता है। कहें तो शान्ति से कहूँ। सीता का भी तो विवाह नहीं हो रहा।"

"पहले मोहन से पूछ लो। फिर मैं सुन्दरलाल से कहूँगा और यदि वह अब भी न मानें तो उसकी लड़की का अपहरण कर लिया जाए। हम जाट हैं। उस दिन पंडित जी बता रहे थे कि क्षत्रियों के लिए शास्त्र में इस प्रकार के विवाह को पाप नहीं माना जाता।"

"परन्तु पंडित जी यह भी तो बता रहे थे कि अपहरण पर लड़की से विवाह करना राक्षस विवाह है और वह विवाह कदापि नहीं करना चाहिए। राक्षस, असुर, गान्धर्व और पिशाच विवाह से उत्पन्न होने वाली सन्तान क्रूर, असत्य बोलने वाली और वेद-धर्म की विरोधी होती है। उस दिन पिता जी का श्राद्ध खाने आये थे तो वे बता रहे थे कि ऐसा धर्म शास्त्र में लिखा है।

"मैं विस्मय कर रही थी कि पंडित जी श्राद्ध के दिन यह क्या चर्चा करने लगे हैं, परन्तु पीछे मोहन और सीता की बात स्मरण कर मुझे समझ आया था कि पंडित जी हमको जाटों वाली बात करने से मना कर रहे थे।"

मोहन की अधिक रुचि फलों के बगीचे में काम करने पर रहती थी। इस पर भी वह अपने पिता और सोहन के साथ खेतों मे काम करता था। राम स्कूल की पांचवीं श्रेणी की पढ़ाई समाप्त कर घर पर काम करने लगा था। उसको सोहन की भांति और अधिक पढ़ाई करने में रुचि नहीं थी। परन्तु श्याम ने पांचवीं श्रेणी पास की तो कह दिया, "मास्टर ने कहा है कि मैं श्रेणी में सबसे अधिक अंक लेकर पास हुआ हूँ। इस कारण और अधिक पढ़ना चाहिये।"

इस पर सोहन और राम ने आपत्ति की। सोहन का कहना था कि जब वह घर पर काम करता है तो श्याम को भी करना चाहिये। राम का कहना था कि पढ़ाई से कुछ लाभ नहीं और श्याम नगर में खेल, तमाशे देखने के लोभ में पढ़ाई का आग्रह कर रहा है।

गोपाल ने श्याम की माँ से पूछ लिया, "तुम क्या कहती हो?"

"जब पढ़ाई में यह तेज़ है तो इसे पढ़ाना चाहिये, परन्तु प्रश्न यह है कि यह आठ मील नित्य आने-जाने में तीन घंटे व्यय करेगा और फिर थक जाया करेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यह पढ़ाई नहीं कर सकेगा।

मोहन परिवार के सदस्यों की बातें चुपचाप सुन रहा था। जब पिता ने उसकी राय माँगी तो मोहन ने कहा, "सोहन और राम की आपत्ति तो इनके अपने-अपने मन की कल्पना ही प्रतीत होती है। सोहन को ईर्ष्या हो रही है कि जैसे वह काम करता है वैसा ही घर के सब प्राणी क्यों नहीं करते। यह बात ग़लत है। जो वह करता है सो तो पिता जी भी नहीं करते। घर का अन्य कोई प्राणी नहीं कर रहा। हाँ, माणिक की रुचि कुछ सोहन के काम में प्रतीत होती है।

"काम अपनी-अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार होना चाहिये। इस कारण सोहन की आपत्ति ठीक नहीं।

"राम ने कहा है कि श्याम खेल-तमाशे देखने के लिये नगर में जा रहा है। मैं समझा हूँ कि इसने भी अपनी रुचि की बात ही बतायी है। राम स्वयं खेल, तमाशे देखने में रुचि ले रहा है। इसी से वह श्याम के विषय में समझ रहा है। मैं यह कहता हूँ कि यदि खेल-तमाशे देखेगा तो अगले वर्ष अनुत्तीर्ण हो जायेगा। तब यह अधिकारी नहीं रह जायेगा कि नगर में पढ़े। परन्तु इस बात का पहले ही यह अनुमान लगाना कि वह पढ़ेगा नहीं, ग़लत है।

"रही माँ की बात। माँ ने कहा है कि नगर दूर है और इतनी दूर नित्य आने-जाने में यह थक जाया करेगा। इसका इलाज मैं कर दूँगा। मैं इसको बाइसिकल पर चढ़ना सिखा दूँगा और फिर यह नित्य हवा की भांति उड़ता हुआ, नगर जाया करेगा और हवा की भांति ही घर आ जाया करेगा।"

"गोपाल, मोहन के सुझाव पर प्रसन्न था। उसने मोहन से पूछ लिया, "कितने में आ जायेगी यह चरखरी?"

"कल पता करूँगा।"

2

श्याम स्कूल में भरती हो वहाँ भी श्रेणी में प्रथम रहा। इस पर निश्चय हो गया कि वह जितना पढ़ सके, पढ़ेगा और लाल और माणिक अब पंडित जी से पढ़ते थे। पंडित जी ने उनको स्वयं पढ़ाना आरम्भ किया तो मोहन पंडित जी के दो शिष्यों को स्वयं पढ़ाने लगा। इससे तो मोहन का काम खेतों में और भी कम होने लगा था। साथ ही मोहन अब प्रातःकाल भी बगिया में जा संध्या, उपासना करने लगा था।

अब वह लगभग नौ बजे प्रातः का अल्पाहार लेकर ही खेतों में आता था। पिता पिछले दो-तीन महीने से यह परिवर्तन देख रहे थे। वैसे काम तो हो ही जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं रह रही थी। लाल और माणिक अपने पिता की सहायता करने लगे थे, परन्तु गोपाल को यह बात परिवार के अन्य प्राणियों में भावी असन्तोष का कारण समझ आने लगी थी।

एक दिन गोपाल ने मोहन को माँ के सामने बैठाकर बात कर दी, "मोहन! तुम अब घर के काम में वह रुचि नहीं ले रहे, जो पहले लेते थे और जो तुमको लेनी चाहिये।"

"पिता जी। रुचि तो मैं अब भी लेता हूँ, परन्तु रुचि का ढंग और दिशा बदल गयी है।"

"क्या ढंग है तुम्हारी रुचि का?"

"पिता जी।" मोहन ने समझाने का यत्न किया, "जो भी काम हम करते हैं उनका उद्देश्य घर के प्राणियों का कल्याण ही है। घर के सब प्राणी घर की सम्पत्ति बनाने में यत्न कर रहे हैं। वे घर के प्राणियों के शारीरिक कल्याण के लिए परिश्रम कर रहे हैं। मैं घर के प्राणियों के आत्मिक, बौद्धिक और मानसिक कल्याण का उपाय कर रहा हूँ।"

गोपाल समझा नहीं। माँ भी कुछ-कुछ ही समझ सकी थी। उसने पूछा, "तो तुम भगवान् से नित्य यह प्रार्थना करते रहते हो कि हमारा अगले जन्म में कल्याण हो?"

"इस प्रकार नहीं, माँ! मैं यह विचार करता हूँ कि हमारे पिता का परिवार गाँव में विशेष है। हमारे पास भूमि सबसे अधिक है। हम गाँव में सब कृषकों से अधिक धनी हैं। इस कारण हमारे परिवार की बुद्धि ठीक हो, ऐसी मेरी प्रार्थना रहती है, परन्तु माँ, मैं जानता हूँ कि परमात्मा अपने कार्यों के लिए इस संसार में से ही साधन बनाता है। इस कारण मेरी भगवान् से यह अनुनय रहती है कि वह मुझमें यह सामर्थ्य दे कि मैं अपने परिवार का और साथ ही गाँव का कल्याण करने में योग्य और सबल हो सकूँ। गुरु जी का यह कहना है कि मुझमें यह सामर्थ्य आ रही है कि मैं यह कल्याण कर सकूँ।"

गोपाल अब भी नहीं समझा। उसने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि धन पैदा करो और फिर उसको धर्म-कर्म में लगाओ तो अधिक ठीक होगा। बिना धन के धर्म-कर्म भी नहीं हो सकता।"

"पिता जी। धन तो कर्म करने वालों का दास बना रहता है। इसकी मुझे चिन्ता नहीं। धन धर्म का स्रोत नहीं। धर्म धन का स्रोत है।"

इस पर भगवन्ती ने कह दिया, "मोहन ठीक कहता है, परन्तु मेरी भी एक बात है। मोहन को वह माननी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ माँ! बताओ?"

"अब तुम विवाह कर लो। लोक-कल्याण बिना पत्नी के सहयोग के हो नहीं सकेगा।"

"माँ। मैं विवाह तो करूँगा, परन्तु उसका अभी समय नहीं आया।"

"तो कब समय आयेगा?"

"जब कोई ठीक ढंग की लड़की पत्नी बनने के लिए आएगी।"

"वह कहाँ से आयेगी?"

"परमात्मा भेजेगा।"

"एक बार तुमने सीता को पसन्द किया था।"

"हाँ।"

"तो मैं उसके माता-पिता से पता करूँ? उसका अभी तक विवाह नहीं हुआ। क्या जाने परमात्मा ने वह तुम्हारे लिए नियत की हुई हो?"

"यह हो सकता है, परन्तु यदि ईश्वर की यही इच्छा हुई तो उसके माता-पिता स्वयं आयेंगे। गुरु जी का कहना है कि वह विवाह सर्वोत्तम है, जिसमें लड़की के माता-पिता स्वेच्छा से वर को पसन्द कर उसका आदर सत्कार कर लड़की उसे दें।"

"पर मोहन! हमको भी तो कुछ पुरुषार्थ करना चाहिए।"

"माँ। एक बार मैंने वह पुरुषार्थ किया था, परन्तु गुरु जी का कहना था कि मेरी ओर से किया गया पुरुषार्थ अच्छा फल नहीं ला सकता। अतः उसके उपरान्त मैंने सीता के दर्शन तक नहीं किये।

"आज मैं नहीं कह सकता कि मैं उसके यहाँ विवाह स्वीकार भी करूँगा अथवा नहीं।"

"क्यों?"

"मेरी दृष्टि में अन्तर आ गया है। यह सम्भव है कि अब वह उपयुक्त सिद्ध ही न हो?"

"मेरे विचार में वह अब पूर्ण यौवन में है और तुमको पसन्द होनी चाहिये।"

"पर माँ! उसको पढ़ाई छोड़े चार वर्ष से अधिक हो चुके हैं और सम्भव है कि उसका मन उतना उज्ज्वल न रहा हो जितना तब था?"

इस पर भगवन्ती ने मुस्करा कर पूछा, "उसका मन कैसे देखा था उस समय और अब यदि वह तुमसे मिलेगी तो कैसे उसके मन को देखोगे?"

"माँ! मन के देखने के कई उपाय हैं। बातें करने से, उसके पढ़ने की पुस्तकें देखने से; उसकी सखी-सहेलियों के आचार-व्यवहार को देखने से और उसके अपने व्यवहार को देखने से उसके मन का ज्ञान प्राप्त हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मतलब यह कि वह पुनः तुमसे मेल-जोल पैदा करें तो तुम जान सकोगे?"

"हाँ। मेरा यही अभिप्राय है।"

"यह अब बहुत कठिन है।"

"नहीं माँ। कठिन नहीं। पहले तो यह बहुत ही सुगम था और अब भी हो सकता है। वह गुरु जी से पढ़ने जाती थी। उस समय वह गुरु जी की लड़की कलावती के साथ पढ़ा करती थी। अब कलावती भगवद्गीता और उपनिषद् पढ़ती है और सीता रामचरित् मानस तक ही रह गई है। यदि, अब वह पुनः पंडित जी से पढ़ने लगे तो कदाचित् वह कुछ उन्नति कर सके।"

"पर मैं पूछती हूँ कि यदि वह कुछ पढ़-लिख गई तो क्या वह एक जाट के घर का काम-काज कर सकेगी?"

"माँ। मेरे घर का काम तो तब ही कर सकेगी जब कुछ पढ़ी-लिखी होगी।"

"तो तुमने घर में पाठशाला खोलनी है?"

"इसमें कुछ पाप है क्या?"

"और खेती-बाड़ी का काम?"

"वह मेरे भाई सोहन, राम, लाल, माणिक इत्यादि करेंगे।"

"पर यदि खेतों का बंटवारा हो गया तो क्या करोगे?"

"नहीं माँ! वह नहीं होगा।"

"तुम बहुत भोले हो, मोहन! पराये घर की लड़कियां आयेंगी तो वे बंटवारे के लिये अपने पतियों की नींद हराम कर देंगी और उनके पति तुमसे झगड़ा करेंगे और फिर बंटवारा होगा।"

"मैं इससे नहीं डरता।"

गोपाल तो अपनी व्यवहारिक बुद्धि से मोहन के व्यवहार का कारण समझ गया। उसने मन में विचार किया जब घर में बहुएं आयेंगी और फिर झगड़ा करेंगी तब मोहन निपट लेगा। यदि नहीं निपट सकेगा तो स्वयं अपनी मूर्खता का फल भोगेगा; परन्तु किसी भावी दुर्घटना की सम्भावना का विचार कर पुत्र से अभी क्यों झगड़ा आरम्भ कर दें। इस कारण उसने कहा, "यदि हम तुम्हारे विवाह का कहीं प्रबन्ध करें तो क्या करोगे?"

"विवाह कर लूँगा। वह जिस योग्य होगी उसमें उसको लगाने का यत्न करूँगा और यदि वह मेरे अनुकूल व्यवहार नहीं रख सकेगी तो घर उसके हवाले कर घर से किनारा कर लूँगा।"

"माँ के माथे पर त्योरी चढ़ गयी। वह विचार करने लगी थी कि यदि उसको भी उसका पति छोड़ जाये तो क्या परिणाम होगा? वह भी पिछले पांच वर्ष से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बात पति की रुचि के विपरीत कर रही थी। उसने अधिक सन्तान उत्पन्न न करने के लिये पति की संगत से इन्कार किया हुआ था। पति इससे प्रसन्न नहीं था, परन्तु अभी तक भगवन्ती उसको समझाने में सफल हो रही थी। इस पर भी वह समझती थी कि किसी भी दिन उसके मन का असन्तोष फूट सकता है और दोनों में झगड़ा खड़ा हो सकता है।

गोपाल ने भगवन्ती के माथे पर त्योरी देखी तो समझ गया कि वह मोहन को डांटने वाली है। इस कारण उसने बात बीच में ही टोक कर कह दिया, "ठीक है। तब पत्नी को तुम्हारे अनुकूल होकर रहना चाहिये। यदि वह नहीं रहेगी तो पृथक्-पृथक् होना ही ठीक है, परन्तु, मोहन! यदि तुम उसके अनुकूल न हुए तो क्या होगा?"

"तो उसको मुझसे पृथक् होकर रहना चाहिये।"

"और उसके खाने-पीने का प्रबन्ध?"

"पिता जी। पृथक्-पृथक् होने पर भी वह परिवार का अंग रहेगी। परिवार से उसका पालन-पोषण होना ही चाहिये।"

"और तुम दूसरा विवाह कर लोगे?" माँ ने पुनः वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया।

"हाँ। यदि वह विवाह कर लेगी तो मैं भी करने के लिये स्वतन्त्र हो जाऊँगा।"

गोपाल को समझ आया कि लड़का माता-पिता से अधिक समझदार हो गया है। कम से कम वह बातें करने में अधिक चतुर है। एक समय था जब ब्रजलाल कहा करता था कि गाँव भर में गोपाल जैसा समझदारी की बात करने वाला कोई नहीं। आज वह देख रहा था कि वह अपने लड़के से दलील नहीं कर सकता।

इसलिये उसने बात समाप्त करने के लिये कह दिया, "देखो मोहन! मैं आज अपने मन से तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने जा रहा हूँ। तुमने यह वचन दिया है कि तुम विवाह करोगे और उसके पति बन कर तब तक रहोगे जब तक वह और तुम दोनों एक दूसरे के अनुकूल रहेंगे। मैं समझता हूँ कि यदि एक दो मास तुम इकट्ठे रह सके तो तुम स्वयमेव परस्पर अनुकूलन बना लोगे। यही परमात्मा का नियम है।"

"तो पिता जी। अब मैं जाऊँ?"

"कहाँ जा रहे हो?"

"अब गुरु जी से पढ़ने के लिये जाने का समय हो गया है।"

"हाँ जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
3

मोहन के चले जाने पर पति-पत्नी परस्पर विचार करने लगे। भगवन्ती ने कहा, "देखिये जी, हम जाट हैं। हमारी बुद्धि की सीमा बहुत छोटी है और उस छोटे-से सीमित स्थान में बहुत बड़े-बड़े शास्त्र भर दिये गये हैं। अब बुद्धि में बाढ़ आ रही प्रतीत होती है और यह वहाँ के सब बने प्रपंच को बहा ले जा सकती है।'

"हमने बड़े प्रयत्न से यह घर बनाया है और आपका यह जाट पुत्र बुद्धि में शास्त्रों को भर बैठा है। इसके शास्त्र इस बने बनाये घर को उजाड़ कर रहेंगे।"

"अच्छा ऐसा करो। तुम सोहन और राम से पता करो कि वे मोहन के विषय में क्या विचार करते हैं?"

"मैं सोहन से बात कर चुकी हूँ। कुछ दिन हुए मैंने उससे पूछा था, 'मोहन आजकल चिकना-चुपड़ा रहता है, क्या खेतों में काम नहीं करता?' उसका उत्तर था, 'करता तो है। बात यह है कि वह गाँव के कुछ लड़कों को दोपहर के समय पढ़ाता भी है। इस कारण वह ऐसा काम करता है जिसमें उसे मिट्टी में लोट-पोट होना न पड़े। वह वैसा काम करने का यत्न भी करता है, तो मैं स्वयं उसे मना कर देता हूँ। उसके विद्यार्थी आते हैं तो गन्दी शक्ल शोभा नहीं देती।'

"सोहन का यह कहना है कि धनोपार्जन हम सब करते हैं और वह यश उपार्जन करता है। इससे भी हमें लाभ ही होता है।

"क्या लाभ होता है?' मैंने पूछा। वह बोला, 'माँ। कितने लोग मोहन के विवाह के लिये तुम्हारे पास आ चुके हैं? मैं समझता हूँ कि गाँव की प्रायः सब सज्ञान लड़कियों की मातायें आ चुकी हैं। जब भी मैं देखता हूँ, तुम्हारे पास कोई न कोई आकर बैठी ही रहती है और उसके घर में अगर कोई सज्ञान लड़की है तो मैं समझ जाता हूँ कि मोहन दादा के विवाह की चर्चा हो रही है।'

"मैंने कहा, कई तो तुम्हारे विवाह के लिये भी आती है। इस पर वह हंसते हुए बोला, 'माँ! मैं जानता हूँ और गाँव की प्रत्येक स्त्री जानती है कि जब तक दादा का विवाह नहीं हो जाता तब तक तुम मेरा नहीं करोगी।'

"मैंने उसे कह दिया, 'मैं तुम्हारा विवाह मोहन से पहले भी कर सकती हूँ, लेकिन एक बात बताओ, यदि तुम्हारी बहू ने भूमि का बंटवारा कराना चाहा तो क्या करोगे?'

"वह बोला, 'भला ऐसी मूर्ख लड़की से मेरा विवाह तुम क्यों स्वीकार करोगी।'

"उसकी यह मूर्खता विवाह के कई वर्ष उपरान्त पता चलेगी। तब मैं इस संसार में रहूँगी अथवा नहीं, कैसे कह सकती हूँ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ! तब की तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिये। उस समय तुम स्वर्ग में बैठी होगी। यहाँ हम क्या करते हैं और क्या नहीं करते, यह हम निपट लेंगे।'

"अब बताइये?" भगवन्ती ने पति से इस वार्त्तालाप के उपरान्त पूछ लिया।

"मैं तो आज सुन्दरलाल को कहने जा रहा हूँ। यत्न करूँगा कि वह सीता के लिये तैयार हो जाये।"

"तो जाइये। कल मैं शान्ति से बातचीत करूँगी।"

आजकल मोहन पंडित जी से बृहदारण्यक उपनिषद् पढ़ रहा था। उसमें भी विवाह के विषय में लिखा था कि पुरुष एवं स्त्री अपने को पूर्ण नहीं समझते, जब तक वे अपना साथी नहीं पा लेते।

पुरुष दो बातों की कामना करता है। स्त्री की, जिससे वह सन्तान प्राप्त करे। वह धन चाहता है, जिससे कर्म (सुख-भोग) करे। जब तक इनमें से एक भी अप्राप्त रहती है, तब तक मनुष्य अपने को अपूर्ण मानता है।

पंडित जी ने जब इस मंत्र की व्याख्या समझायी तो मोहन ने प्रश्न कर दिया, "गुरु जी। दोनों में से किसी एक के न मिलने पर वह अपने को अपूर्ण क्यों मानता है?"

"इस कारण कि संसार में आने का प्रयोजन यज्ञ करना है। यज्ञ का अभिप्राय तुम जानते हो, लोक कल्याणार्थ कर्म करना। सन्तानोत्पत्ति कर उसका पालन-पोषण करना भी एक यज्ञ है। इस यज्ञ को सृष्टि उत्पत्ति के समय ब्रह्मा ने आरम्भ किया था। अपने कर्मों से मुक्ति पाने के लिये आत्मा का इस प्राणी रूप में आना आवश्यक है। अतः उनको मुक्ति पाने का अवसर देने के लिये सृष्टि की रचना आवश्यक थी और अब सृष्टि को चलते रखने की आवश्यकता है। इससे कर्म बन्धन में बंधी आत्माओं को कर्म योनि में आने का अवसर देने के लिये ही यह कर्म यज्ञ ही है।"

"इससे क्या लाभ होता है?"

वही जो कर्त्तव्य पालन करने से होता है, ईश्वर ने यह कर्त्तव्य प्राणियों के लिये नियत किया है।"

"भगवद्गीता में भी लिखा है कि परमात्मा ने सृष्टि की रचना का यज्ञ किया था और जो मनुष्य उस यज्ञ को चालू नहीं रखते, वे पाप कमाते हैं।"

इस वार्त्तालाप से मोहन गम्भीर हो विचार करने लगा। उसे उस दिन माता-पिता से हुई बात स्मरण आ गयी थी। उसे गम्भीर विचार मग्न देख पंडित जी ने पूछ लिया, "क्यों क्या बात है? मौन क्यों हो गये हो?"

"माँ कहती है कि मुझे विवाह कर लेना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाँ। वह ठीक कहती है।"

"तो जिससे भी सम्भव हो विवाह कर लूँ?"

"तुम्हारे लिये सम्भव का तो प्रश्न ही नहीं। मुझे ज्ञात है कि गाँव में से भी कई सम्बन्ध आ चुके हैं, परन्तु मेरी सम्मत्ति यह है कि तुम ब्राह्मण स्वभाव और कर्म से हो और तुम्हारे लिए कोई ब्राह्मण कन्या ही चाहिये।"

"मोहन इस बात का अर्थ समझ नहीं सका। अतः मौन हो पंडित जी का मुख देखने लगा। उसे असमंजस में पड़ा देख ब्रजलाल ने पूछा, "समझे हो, मोहन?"

"नहीं गुरु जी।"

"तुम्हारे गाँव में एक ब्राह्मण ऐसा रहता है जो तुमको ब्राह्मण मानता है!"

"यह मैं जानता हूँ, परन्तु...।"

"परन्तु से क्या अभिप्राय है?"

"एक जाट कुमार से वह ब्राह्मण अपनी लड़की का विवाह करेगा क्या? वह मुझे एक योग्य दामाद मान सकेगा क्या?"

"कैसे कहते हो कि वह नहीं मान सकता? वह तो तुमको जाट मानता नहीं। तुम गुण, कर्म, स्वभाव से एक ब्राह्मण हो। जाट कुमार तो हो, परन्तु स्वयं ब्राह्मण हो।"

"पर मेरा विवाह मेरे माता-पिता करेंगे?"

"यह ठीक ही है। इसका यत्न किया जायेगा। तुम अभी इस विषय में किसी को कुछ नहीं कहना।"

मोहन यह बात सुनकर दो प्रकार के मनोद्गारों से आंदोलित होने लगा था। एक तो वह गुरु जी की कन्या से विवाह की सम्भावना पर अपने को सम्मानित हुआ अनुभव करता था। यह उसके लिये एक अति हर्ष का विषय था। दूसरे, वह सीता से नख-सिख की तुलना में कलावती को कुछ मोटी रूप-रेखा की लड़की देख रहा था। कलावती की शिक्षा और मानसिक विकास के विषय में उसको कुछ अधिक ज्ञात नहीं था। वह इतना ही जानता था कि कलावती भी पंडित जी से उसकी बहिन राधा के साथ ही पढ़ती है, परन्तु उसने राधा से कलावती के विषय में कभी पूछा नहीं था। एक तो वह छोटी बहिन से किसी लड़की के विषय में पूछना नहीं चाहता था और दूसरे उसको उस दिन से पूर्व कलावती के विषय में किसी प्रकार जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई थी। आज वह उसके विषय में जानने की लालसा करने लगा था। उसकी रूप-रेखा तो मोहन ने देखी थी। वह उसके मानसिक विकास के विषय में ही जानने की लालसा रखता था।

Central Library
167692
Gurukula Kangri University Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा इस समय बारह वर्ष की हो गयी थी। कलावती उससे तीन वर्ष बड़ी थी। इस पर भी दोनों गाँव की अन्य चार-पांच लड़कियों के साथ पढ़तीं थीं। इन पढ़ने वालियों में एक-निर्धन जाट की लड़की सावित्री थी। सावित्री का भाई गोपाल के खेतों में काम करता था। नाम था रामलुभाया। रामलुभाया को विदित था कि गोपाल की लड़की राधा पंडित ब्रजलाल से पढ़ती है। अतः वह भी अपनी बहिन को वहाँ भेजने लगा था।

रामलुभाया इस समय सोलह वर्ष का युवक था। उसकी बहिन चौदह वर्ष की थी। यह कलावती की समवयस्क थी। पंडित जी के घर में झाड़ने पोंछने का काम भी कर देती थी और वहाँ से एक समय का भोजन और कभी-कभी कलावती के उतरे हुए वस्त्र पा जाती थी।

मोहन उससे भी कलावती के विषय में पूछने से डरता था। वह यह भी नहीं जानता था कि वह कुछ बता भी सकेगी या नहीं।

उस दिन मोहन अपनी पढ़ाई आगे नहीं चला सका। उसने पंडित जी को स्पष्ट कह दिया, "आपके मेरे विवाह के विषय में बात करने से मेरे मस्तिष्क में भारी हलचल मच गयी है। मैं अपना ध्यान पढ़ाई पर केन्द्रित नहीं कर सकता।"

वह पंडित जी से छुट्टी पा अपने घर चला तो उसने समझा कि माँ शीघ्र लौट आने का कारण पूछेगी। वह बताना नहीं चाहता था। इस कारण वह खेतों की ओर चल पड़ा। उसे विस्मय हुआ जब उसने सायंकाल के छुटपुटे प्रकाश में सोहन को रामलुभाया के मकान से निकलते देखा। वह मन में विचार कर रहा था कि वह वहाँ किस काम से गया है?

रहट बन्द था। बैल सोहन ने रहट से खोल खुरली के सामने बांध दिये थे और उनके आगे भूसा-दाना की सानी डाली हुई थी। मोहन ने रहट को धकेल कर चलाया। वह कुछ घूमा तो प्रवाहिका में जल आ गया। उसने भाग कर बहते जल को अंजुली में ले मुख धोया। पगड़ी उतार, सिर धोया और इस प्रकार मस्तिष्क को ठंडा करने लगा।

इस सब में वह सोहन के रामलुभाया के घर में से निकलने की बात भूल गया। उसका स्वभाव था कि वह कन्धे पर अंगोछा रखता था। इससे बहुत सुविधा रहती थी। उसने अंगोछे से मुख और सिर पोंछा और फिर फलों की बगिया में चबूतरे की ओर चल पड़ा। वहाँ बैठ वह निश्चिन्त हो अपने विवाह के विषय में चिन्तन करने लगा।

वह सीता और कलावती में तुलना कर रहा था। उसे दोनों के शरीर की तुलना करने में सीता कलावती से श्रेष्ठ प्रतीत हुई थी, परन्तु उसे सीता को देखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छः वर्ष होने जा रहे थे। अब वह उनके घर में भी नहीं आती थी। इससे वह मन में विचार करता था कि सीता के शरीर में अन्तर भी पड़ गया होगा। जहाँ तक मानसिक विकास की बात थी, वह अनुमान लगाता था कि कलावती सीता से श्रेष्ठ होगी।

इस अनुमान की वह जांच करना चाहता था। किससे करे? यदि तो गुरु जी ने यह न कहा होता कि अभी इस विषय में किसी से बात न करना तो वह माँ से कहकर जांच कराता। साथ ही उसे माँ के जांच कर सकने पर सन्देह होने लगा था। वह विचार करता था कि एक बाल्मीकि रामायण तथा ईशावास्योपनिषद पढ़ने वाली लड़की के मानसिक विकास के विषय में उसकी माँ भला क्या जांच करेगी? उसकी माँ कोई भी भाषा नहीं पढ़ी थी। वह जपजी साहब का पाठ, जो उसने कंठस्थ कर रखा था, करती रहती थी।

जब वह किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका तो वह उठा और घर को चल पड़ा। अब पर्याप्त अन्धेरा हो गया था। अष्टमी की रात थी। चांद का धीमा प्रकाश हो रहा था और प्रकाश में वह खेतों की मेढ़ों पर चलता हुआ घर जा पहुंचा। गोपाल का घर गाँव के किनारे पर ही था।

4

वह घर पर पहुंचा तो उसके माता-पिता किसी गम्भीर विचार में लीन थे। वह उनको बैठक घर में बैठा देख अपने सोने के कमरे को चल पड़ा, परन्तु माँ ने उसे जाते देख आवाज़ दे दी, "मोहन! इधर आना।"

मोहन लौट आया। वह सामने आया तो माँ ने कहा, "बैठो।"

मोहन दोनों के सामने बैठ गया। माँ ने ही पूछना आरम्भ किया, "किधर से आ रहे हो?"

"बगिया से।"

"वहाँ इस अन्धेरे में क्या कर रहे थे?"

"किसी विषय पर चिन्तन कर रहा था।"

"किस बात का चिन्तन कर रहे थे?"

"माँ! अपने विवाह के विषय में।"

"पंडित जी से बात की है?"

"हाँ, माँ।"

"वे क्या कहते हैं?"

"उन्होंने कुछ कहा है, परन्तु वे कहते थे कि अभी किसी से न बताऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें भी नहीं?"

"किसी को भी नहीं। आप भी तो किसी में आ जाते हैं।"

"अच्छा, यह बताओ।" गोपाल ने गम्भीर भाव बनाये हुए पूछ लिया, "अपनी लड़की के विवाह के विषय में कुछ कहा है उन्होंने?"

"पिता जी! कुछ नहीं बताऊंगा।" मोहन ने दृढ़ता-पूर्वक कहा।

इस पर माँ ने कह दिया, "मत बताओ। पर, सुन लो। हमको विदित हुआ है कि वे कलावती का विवाह तुमसे करना चाहते हैं?"

"यह किसने बताया है, माँ।"

"किसी ने भी बताया हो। बताओ, यह ठीक है अथवा नहीं?"

"मैं तो तब विश्वास कर सकता हूँ जब गुरु जी स्वयं अपने मुख से कहें। अन्यथा इतनी बड़ी बात पर मैं विश्वास कैसे कर लूँ?"

"तो तुम इसको बहुत बड़ी बात मानते हो?" गोपाल ने पूछ लिया।

पंडित जी की लड़की कलावती से विवाह कर सकना एक छोटी-सी बात तो है नहीं? गाँव में उनसे बड़ा कौन है?"

"पर जानते हो?" गोपाल ने बातों का सूत्र अपने हाथ में रखते हुए कहा, "शायद सुन्दरलाल सीता का विवाह तुमसे करने के लिये तैयार हो जायेगा।"

"पर पिता जी! लाला ने देर नहीं कर दी क्या?"

"तो कढ़ी बासी हो गयी है क्या?"

"यह तो मैं जानता नहीं। माँ, सीता को देखती रहती है। वह ही बता सकती है कि वह बासी हो गयी है अथवा तरोताजा है। मैं तो विवाह के सम्बन्ध की बात कह रहा हूँ। यदि माँ का अनुमान ठीक है कि पंडित जी ने कुछ इस दिशा में कहा तो मैं कैसे इन्कार कर सकूँगा? मैं और हमारा पूर्ण परिवार, उनके एहसान के नीचे कितना दबा हुआ है?"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैं तो सुन्दरलाल से बात कर आया हूँ।"

"पर पिता जी। अपने पूछा नहीं कि इतनी देर तक वे चुप क्यों थे?"

"उनके घर में मत-भेद है। सीता की माँ तुमसे विवाह के लिये अभी भी राजी नहीं, परन्तु लड़की के विवाह के लिये उसकी जात-बिरादरी के लोग बीस-तीस हज़ार माँगते हैं।

"पर माँ! तुमको यह किसने बताया है कि पंडित जी मुझे अपना दामाद बनाना चाहते हैं?"

मुझे सोहन ने बताया है। वह कहता था कि रामलुभाया की बहिन ने रामलुभाया को बताया है और उसने सोहन को बताया है। राम की बहिन सावित्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी पंडित जी से पढ़ने जाती है और वह कलावती की उमर की है।"

मोहन को समझ आया है कि सोहन रामलुभाया से मिल कर आया है, परन्तु सावित्री कितना जानती है और कैसे जानती है, यह वह जानना चाहता था। इस कारण उसने कह दिया, "मैं कल प्रातःकाल रामलुभाया से पता करूँगा। सम्भव है रामलुभाया अथवा सावित्री ने बात समझी ही न हो।"

गोपाल का प्रश्न था, "पर तुम बताओ कि यदि सावित्री की बात ठीक हो और कल को पंडित जी मुझे अथवा तुमको कहे कि वे अपनी लड़की का कन्यादान तुम को देते हैं, तो तुम क्या करोगे?"

"पिता जी! बिना सारी बात जाने मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"तो कल तुम्हारी माता शान्ति से बात पक्की करने न जाये?"

"पहले इधर की सब बातें जान-बूझ लेनी चाहियें।"

"सोहन यह कहता था कि अभी तक कलावती की माँ पंडित जी की बात मानने को तैयार नहीं थी, परन्तु अब वह मान गयी है कि कलावती का विवाह मोहन से हो सकता है।"

अब मोहन ने अपने मन की बात बता दी। उसने कहा, "माँ, कलावती के विषय में यह जानना चाहिये कि वह तुम्हारी बहू बन भी सकेगी क्या?"

अब भगवन्ती ने बताया, "तुम्हारे आने से पूर्व मैं इसी विषय पर तुम्हारे पिता से बात कर रही थी। हम तो कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि वह किस प्रकार हमारे घर में समा सकेगी। साथ ही विचारणीय बात यह है कि गाँव में ऐसी चर्चा भी हो सकती है कि सब लोग पंडित जी को या तो महामूर्ख समझें अथवा महाधूर्त्त मानने लगें।

"मूर्ख इस विचार से कि वह अपनी लड़की एक जाट के घर में दे रहा है और धूर्त्त इस बात से कि वह अपनी लड़की को गाँव की रानी बनाने का यत्न कर रहा है। उसको अपने लड़के की भलाई का भी विचार करना चाहिये। एक बार उसने लड़की का विवाह एक जाट से किया तो फिर लड़के का विवाह भी अपनी जात-बिरादरी में नहीं हो सकेगा। उसकी पुरोहितायी का काम तो समाप्त हो ही जायेगा।"

"माँ, गुरु जी मूर्ख तो हैं नहीं। अतः उन्होंने इन सब विषयों पर विचार किया ही होगा। उस विचार से उन्होंने क्या समझा होगा, यह वे स्वयं ही बता सकेंगे। अतः मेरा यह सुझाव है कि हमको अभी सीता के विषय में बात नहीं करनी चाहिये। मैं भी जब तक यह न समझ लूँ कि अब लाला क्यों मुझे दामाद बनाने पर राज़ी हुआ है, तब तक मैं चाहता हूँ कि अभी हाँ नहीं करनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर मैं तो स्वयं ही बात आगे बढ़ा कर आया हूँ।" गोपाल ने कह दिया।

"पर पिता जी। मुझे भी तो कुछ विचार करना है।"

गोपाल असन्तोष में उठा और बोला, "भगवन्ती! आज खाना नहीं बनेगा क्या?"

भगवन्ती उठी और रसोईघर में चली गयी।

गोपाल के घर में मिट्टी के तेल के दिये जलते थे। इससे घर में प्रकाश गाँव के अन्य घरों से अधिक होता था। मोहन उठा और आज पढ़ाई में मन न लगने के कारण वह कारखाने में चला गया और वहाँ बना हुआ फर्नीचर देखने लगा। वह देख रहा था कि सोहन ने बहुत सुन्दर लोहे की खूंटियाँ बनाई हैं। वह एक शिकंजा नगर से लाया था, जिसमें मोटे से मोटे सरिये को सब ओर मोड़ा जा सकता था। वह सरिये के टुकड़े कर उसके किनारों को तपा लालकर सांचे में रख ऊपर से पीट कर गोल कर देता था और फिर उसको खूंटी के आकार में मोड़ देता था। तदन्तर वह उसके पीछे लकड़ी की पीठ लगा, खूंटियों पर रंग कर देता था।

लकड़ी पर राम पॉलिश कर देता था और उनका पिता उन खूंटियों को महीने में एक दिन नगर में जाकर बेच आता था।

मोहन कारखाने में गया तो सोहन खूंटीयाँ बना रहा था। मोहन ने देखा तो कह दिया, "यह फ़ैशन अब पुराना हो गया है।"

"तो अब कैसी बनती है?" सोहन ने कुछ लोहे के टुकड़ों को आग में डाल, धौंकनी से आग को तेज़ करते हुए पूछ लिया। मोहन ने एक लकड़ी का टुकड़ा ले उससे भूमि पर एक शक्ल खींच दी और कहा, "सरियों को इस प्रकार मोड़ो। सरियों की पीठ को एक समान चपटा कर उसमें पेच लगाने के लिये सुराख बना दो। फिर इन सरियों को निकल-पॉलिश करवा कर लकड़ी पर लगाओ तो सुन्दर लगेंगी।"

सोहन का हाथ बहुत साफ़ था। उसने मोहन की बात को समझा और कह दिया, "मैं ऐसी खूंटियां बना सकता हूँ, परन्तु निकल-पॉलिश कैसे होगी?"

"नगर में निकल करने की मशीने लगी हैं और साधारण उजरत पर उनसे कराई जा सकती हैं, परन्तु काम में जितनी अधिक सफ़ाई होगी, उतनी ही बिक्री अधिक होगी।"

"भैया! मैं तुमको पहले एक दर्जन ऐसी खूंटियां बना कर दूँगा। तुम उनको पॉलिश करा देना। तब देखेंगे कि वे बिक सकती हैं अथवा नहीं?"

मोहन जब भी बाज़ार जाता था, वह नये-नये प्रकार के सामान देखकर आता था और सोहन उनकी नकल उतारने मे सफल हो जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन, सोहन को छड़ों के किनारे गोल और घुण्डीदार बनाते देखने लगा। पांच छः मिनट में सोहन ने एक दर्जन छड़ों के किनारे बनाकर रख दिये। वह और छड़ों को अग्नि में तपाने लगा तो मोहन ने पूछ लिया, "सोहन! तुमने गुरु जी की लड़की के विषय में माँ से क्या कहा है?"

सोहन काम करता-करता रुक गया और मोहन का मुख देखते हुए उससे ही पूछने लगा, "माँ ने क्या कहा है?"

"यही कि तुमने उसे बताया है कि गुरु जी अपनी लड़की का विवाह मुझसे करना चाहते हैं?

"हाँ। कहा है।"

"तुमको यह किसने बताया है?"

सोहन परेशानी में भाई का मुख देखने लगा। उसे चुप देख मोहन ने उससे पूछ लिया, "यह रामलुभाया ने कहा है?"

सोहन अभी भी विचार कर रहा था कि यह बताये अथवा न बताये। इस पर मोहन ने आगे कह दिया, "तो रामलुभाया से पूछूँ?"

"नहीं, दादा!" सोहन ने उसे ऐसा करने से मना करते हुए कहा, "वह कुछ नहीं जानता। उसका नाम तो मैंने ऐसे ही ले दिया था।"

"तो किसने तुमको यह बात बतायी है?"

"यदि मेरे एक भेद की बात किसी को न बताओ तो सब बता सकता हूँ।"

"कोई पाप-कर्म है जो भेद में रखा हुआ है?"

सोहन ने अब काम से ध्यान सर्वथा हटाकर कहा, "दादा! मैं उसे पाप नहीं समझता। इस पर भी माता-पिता क्या समझेंगे, मैं नहीं जानता।"

"तो माता-पिता से चोरी-चोरी बातें भी करते हो?"

"देखो दादा। तुमको बता रहा हूँ। बड़ा भाई भी तो पिता के समान होता है।"

"ओह! अच्छा बताओ। यदि तुम भविष्य में उस विषय में मेरा कहा मानोगे तो किसी से नहीं कहूँगा।"

"मैं कहा मानूंगा, परन्तु दादा। मेरी बात सुनकर ही तो आज्ञा दोगे। तुम पढ़े-लिखे हो। तुम कुछ अनुचित बात करने को नहीं कहोगे?"

"मोहन ने कहा, "अच्छा बताओ। फिर विचार कर लेंगे।"

"दादा! रामलुभाया की बहिन सावित्री से यह बात सुनी थी। रामलुभाया को तो यह पता भी नहीं।"

मोहन को समझ आया कि सावित्री से सोहन की मेल-मुलाकात है। कदाचित् सायंकाल वह उससे ही मिलकर आया होगा। इतना विचार कर मोहन ने पूछ लिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यह बात रामलुभाया को पता नहीं?"

"नहीं।"

"तो तुम सावित्री से रामलुभाया की अनुपस्थिति में भी मिलते रहते हो?"

सोहन का मुख लाल हो गया और उसकी आँखें झुक गयीं। उसने धीरे से कह दिया, "मैं उससे विवाह करूँगा।"

"कब करोगे?"

"जब वह कहेगी।"

"तो वह विवाह के लिए कहती नहीं?"

"वह अपने भाई से डरती है।"

"तो तुम उससे मिलते ही क्यों हो?"

"मुझको वह बहुत अच्छी लगती है।"

"रामलुभाया को पता है कि तुम उससे एकान्त में मिलते हो?"

"नहीं। वह सायंकाल नये गुरुद्वारे में जाने लगा है और उस समय मैं उसकी बहिन से मिलने जाया करता हूँ आज वह कह रही थी कि कलावती का विवाह तुमसे होगा, तब मैं उससे विवाह कर लूँ।"

"बिना माता-पिता को बताये?"

"इसी बात पर विचार हुआ है। हम यह समझ नहीं सके कि कैसे बात आरम्भ की जाए। सावित्री ने कहा है कि वह विचार कर बतायेगी। इसलिए कहता हूँ कि जब वह कहेगी तब विवाह करूँगा।"

"तुमने अभी तक किसी प्रकार से खराबी नहीं की?"

सोहन ने उत्तर नहीं दिया। वह भूमि की ओर देखता रहा।

"देखो, सोहन।" मोहन ने कहा, "तुम उससे अब एकान्त में नही मिलोगे। यह वचन दो तो मैं तुम्हारी बात को छुपा सकता हूँ और यदि उसका भाई मान गया तो तुम्हारा उससे विवाह भी हो सकेगा।"

"सच?"

"हाँ।"

"तो दादा। करो यत्न। मैं तुम्हारा कहा मानूंगा।"

"तो अब उसके घर में मत जाना।"

"पर दादा। शीघ्र प्रबन्ध करो।"

"क्यों?"

"इसलिए कि उसका विवाह उसका भाई कहीं भी कर सकता है। एक आध बार उसने उसे कहा भी है। वह अपने विवाह का प्रबन्ध कर रहा है और फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके विवाह का भी प्रबन्ध करेगा।"

मोहन इस बात को सुन बोला, "मैं उससे कल ही मिलूँगा। मैं आशा करता हूँ कि वह मान जायेगा, परन्तु अपने माता-पिता को मनाना सुगम नहीं।"

"दादा, पहले उसे मनाओ। फिर मैं पिता जी और माँ को मना लूँगा।"

"अच्छा। कैसे मना लोगे?"

"दादा! तुम यह करो और वह मैं कर लूँगा।"

"मोहन, सोहन को अपने माता-पिता के विषय में इतने विश्वास से बात करते सुन विस्मय में मुख देखता रह गया, परन्तु सोहन ने मन की बात नहीं बताई और पुनः धौंकनी से भट्टी को गर्म करने लगा।

5

मोहन दो परिणामों पर पहुंचा। एक यह कि उसे अपने विवाह के विषय में शीघ्र निर्णय करना चाहिये। वह विचार करता था कि सोहन का विवाह पीछे होगा और उसको बहुत जल्दी अनुभव हो रही है। दूसरी बात यह थी कि बनियों से सम्बन्ध बनाने के स्थान ब्राह्मणों के साथ बनाने में अधिक कल्याण की आशा की जा सकती है।

एक बात उसको समझ आ रही थी कि जिस बिरादरी में लड़की के विवाह के लिये दहेज के बिना काम नहीं बन सकता, उस बिरादरी से सम्बन्ध बनाने में कल्याण की आशा नहीं।

इन दो निष्कर्षों पर पहुंच उसने यह निश्चय कर लिया कि अगले दिन इस दिशा में वह स्वयं यत्न आरम्भ करेगा। अगले दिन वह पूजा-पाठ के उपरान्त खेतों में गया तो वहाँ जा पहुंचा जहाँ रामलुभाया काम कर रहा था। वह जल के प्रवाह को क्यारियों में ले जाने के लिये प्रवाहिकाओं के किनारे ठीक कर रहा था। मोहन भी अपना खुरपा ले वहीं जा पहुंचा। वह भी प्रवाहिका में बने सुराखों पर मिट्टी डालता हुआ ठीक करने लगा था। रामलुभाया ने देखा तो समीप आ बोला, "दादा! तुम छोड़ो। मैं ठीक कर दूँगा।

"तुम इसे ठीक करो।" मोहन ने समीप के एक टूट रहे किनारे को दिखा दिया।

रामलुभाया उस स्थान पर मिट्टी दबाने लगा तो मोहन ने बात आरम्भ कर दी, "राम! घर पर निर्वाह कैसे हो रहा है?"

"जैसे पहले होता था।"

"मेरा मतलब है कि खाना कौन बनाता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सावित्री बना देती है। वह पंडित जी से पढ़ने जाती है। जाने से पहले साग, रोटी बना लटकन पर रख जाती है। मैं दोपहर को जाता हूँ तो उसे गर्म कर खा लेता हूँ। वह तीसरा प्रहर बीतने पर घर आती है तो बर्तन साफ कर सायंकाल का खाना बना लेती है। घर की सफाई और कपड़े धोने का काम मैं करता हूँ। सायंकाल मैं गुरुद्वारे में जाता हूँ। मेरे लौटने के पहले ही वह खा-पीकर सोने के लिये अपनी खाट पर जा चुकी होती है। मैं खाना गर्म कर खाकर सो जाता हूँ। वह प्रातः मुझसे पहले उठती है और गौ को गोतावा डाल दूध दूह लेती है और गर्म कर लेती है मैं खेतों में जाने से पूर्व गोबर थाप देता हूँ।"

इस पर, मोहन ने मतलब की बात कह दी, "उसको तो ससुराल भेजना है न?"

रामलुभाया काम से मुख उठा मोहन के मुख पर बात का अर्थ समझने के लिए देखने लगा। मोहन ने कहा, "मैं यह पूछ रहा हूँ कि तुमको अपना विवाह करना चाहिये? जिससे सावित्री के भी हाथ रंगे जा सकें।"

"दादा। मैंने अपने विवाह का प्रबन्ध कर लिया है।"

"कहाँ?"

"गुरुद्वारे का ग्रन्थी है। उसकी एक बहिन है। अगर मैं पौल लूँ तो वह अपनी बहिन का विवाह मुझसे कर देगा और मैं पीछे अपनी बहिन का विवाह उससे कर दूँगा।"

"कौन है वह जो इस प्रकार सौदा करना चाहता है?"

"दादा! तुम ग्रन्थी को नहीं जानते क्या? उसने गाँव के पश्चिम की ओर गुरुद्वारा बनाया है। अब तो गाँव के कई लोग वहाँ जाने लगे हैं।

"सुना तो मैंने भी है, परन्तु ग्रन्थी कौन है? कोई गाँव का आदमी है अथवा बाहर का, यह मैं नहीं जानता।"

"वह है बरियाम सिंह। नगर का रहने वाला है। वह कहता था कि जब यहाँ कोई अन्य ग्रन्थी आ जायेगा तो वह पुनः नगर में चला जायेगा।"

"पर बहिनों की अदला-बदली ठीक नहीं।"

"पर, दादा। हम इतने निर्धन हैं कि बिना कुछ लिये-दिये हमारा विवाह कोई करेगा ही नहीं। न मेरा, न सावित्री का। इस प्रबन्ध से न मैं अपने विवाह में दहेज मांगूंगा और न ही मुझे कुछ देना पड़ेगा।"

"तुम पिता जी से बात क्यों नहीं करते?"

"मैं तो गुरुमुखी पढ़ रहा हूँ। बरियाम सिंह कहता है कि मैं सिख हो जाऊँगा, तो फिर मुझे बहुत आराम हो जायेगा। सिख बिरादरी में हिन्दुओं के से बन्धन नहीं होते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कब पौल लोगे?"

"बरियाम सिंह कहता है कि नगर से किसी बड़े ग्रन्थी को बुलाना पड़ेगा जो 'आनन्द' पढ़ा सकेगा। हम दोनों का विवाह वह करा जायेगा। उसी समय यह मुझे पौल छका जायेगा।"

"और बहिन का विवाह वहीं करोगे?"

"नहीं करूँगा तो क्या करूँगा!"

"बहिन को बताया है कि ग्रन्थी से उसका विवाह करने वाले हो?"

"नही। मैं इसकी ज़रूरत नहीं समझता। वह बहुत ही सुशील लड़की है। जहाँ विवाह करूंगा वह वहाँ चली जायेगी।"

"मैं तो उसके विवाह के लिये एक लड़के की बात विचार कर रहा था।"

"पर, मेरा भी तो विवाह होना चाहिये।"

"तुम ग्रन्थी की बहिन से विवाह कर लो और सावित्री का विवाह उससे कर देना जिसका मैं विचार कर रहा हूँ।"

"बरियाम सिंह नहीं मानेगा।"

"बात तो करके देखो। नहीं तो तुम्हारे विवाह की बात पर भी विचार किया जा सकता है। देखो राम! बहनें लेने–देने की प्रथा ठीक नहीं।"

रामलुभाया ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर विचार में मग्न काम करता रहा। मोहन, सोहन के विवाह की कठिनाई पर विचार करने लगा। एकाएक रामलुभाया ने काम से सिर उठा कर कहा, "दादा!"

मोहन ने भी बात सुनने के लिए सिर ऊपर किया और पूछा, "हाँ। क्या कहते हो?"

"सावित्री से विवाह तुम करोगे?"

"नहीं। एक और है। मेरे जितना ही प्रतिष्ठित है।"

"बता दो तो निश्चय कर सकूँगा। मेरा बहिन से बहुत स्नेह है। यदि वह किसी अच्छे घर में जाए तो मैं अपना विवाह भी स्थगित कर दूँगा।"

"अच्छा। मैं एक दो दिन में तुम से बात करूँगा।"

"दादा, जल्दी करना। बरियाम सिंह बहुत जल्दी मचा रहा है।"

"तुमने उसकी बहिन को देखा है?"

"हाँ। वह अच्छी लड़की है।"

मोहन हंस पड़ा और पूछने लगा, "कैसे जानते हो?"

वह संगत में बैठ गुरु महाराज के ग्रन्थ का पाठ सुना करती है और पीछे प्रसाद बांटा करती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ये अच्छी लड़की के लक्षण हैं?"

रामलुभाया हंस पड़ा, फिर अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए बोला, "मेरा मतलब है, मैंने उसे देखा है। दादा। क्या किया जाए? आज तक मुझे गाँव के किसी भी आदमी ने दामाद बनाने का प्रस्ताव नहीं किया। पहली बार बरियाम सिंह ने ही कहा है।"

"अच्छा। मैं शीघ्र ही बात करूँगा। मैं समझता हूँ कि सावित्री का विवाह तो हो जाएगा।"

"घर अच्छा होगा तो स्वयं कुंवारा रह कर भी मान जाऊँगा।"

"नहीं; तुम कुंवारे नहीं रहोगे।"

उसी दिन मध्याह्नोत्तर पंडित ब्रजलाल गोपाल से मिलने आया। मोहन कारखाने में एक चौकी पर पॉलिश कर रहा था। समीप ही उसका सबसे छोटा भाई केवल बैठा हिन्दी की दूसरी पुस्तक पढ़ रहा था। वह ऊंचे-ऊंचे पढ़ रहा था—गाय हमको दूध देती है। उसे हम...।

मोहन उसको कह रहा था, "अब पाटी पर भी तो लिखो।"

केवल बोला, "दादा। पाटी टूट गई है।"

"सत्य...।" इस समय सोहन आया और बोला, "दादा। चलो।"

"कहाँ।"

"गुरु जी पिता जी के पास बैठे हैं।"

मोहन ने सोहन के मुख पर देखा। वह प्रसन्न बदन मुस्करा रहा था। इस पर मोहन ने पूछ लिया, "किसी ने बुलाया है अथवा अपने मन से ही कह रहे हो?"

"पिता जी ने बुलाया है।"

मोहन ने अपना काम छोड़ दिया और उठकर हाथ स्पिरिट में ही धो, स्पिरिट को पुनः बोतल में डाल, वह हाथों को हवा में सुखाता हुआ बैठक घर में जा पहुंचा।

पंडित जी एक उच्चासन पर बैठे थे। गोपाल समीप दरी पर ही बैठा था। माता भगवन्ती पति से कुछ पीछे हट कर बैठी हुई थी। मोहन और उसकी माँ को पंडित जी के कहने पर ही बुलाया गया था।

मोहन गुरु जी को प्रणाम कर उनके समीप भूमि पर बैठ गया और प्रश्नभरी दृष्टि में पिता जी की ओर देखने लगा। बात पंडित जी ने आरम्भ की, "देखो, मोहन! मैं तुम्हारी सगाई के लिए एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ। वह प्रस्ताव तुम्हारे माता-पिता को बताया है और वे कहते हैं कि उन्होंने लाला सुन्दरलाल की लड़की का निश्चय किया था। अब तुम बताओ, क्या कहते हो?"

पूर्व इसके कि मोहन कुछ कहे गोपाल ने कह दिया, "मैंने पंडित जी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बताया है कि इस प्रस्ताव की सूचना हमको यहाँ पहले ही मिल चुकी है और हमने तुमको वह बताई है। तुम इस विषय में कुछ भी निर्णय नहीं करना चाहते जब तक इनके प्रस्ताव की सूचना कोई अधिकारी व्यक्ति न दे। अभिप्राय यह कि जब तक पंडित जी अथवा पंडितायिन जी नहीं बताते, तब तक इस प्रकार की बात पर विचार भी नहीं करना चाहिए। देखो, मोहन! रात पंडित जी का तुम को दामाद बनाने का प्रस्ताव मैंने सुना सुनाया बताया था। अब पंडित जी ने आकर वही प्रस्ताव किया है और हमसे इसका उत्तर चाहते हैं।"

मोहन रात भर कुछ ऐसी ही सम्भावना की आशा कर रहा था। वह समझ रहा था कि पंडित जी अथवा कलावती की माता जी इस प्रस्ताव को लेकर आयेंगीं और तब उसको निर्णयात्मक उत्तर देना पड़ेगा। यह इसका उत्तर और फिर उस उत्तर में कारण रात भर विचार करता रहा था। उसने मन में निश्चय कर रखा था और उस निश्चय को उसने कह दिया। उसने कहा, "पिता जी! मेरा यह मत है कि सीता का विवाह अभी तक न होने में कारण यह है उसकी जाति-बिरादरी के लोग भारी दहेज माँग रहे हैं। मुझे कुछ दिन हुए यह भी पता चला था कि सुन्दरलाल भी अपने लड़के के लिए दहेज मांगने की बात कर रहा है। इस कारण ऐसे समुदाय की लड़की, जिसमें दहेज माँगा अथवा दिया जा रहा हो मेरी पत्नी नहीं बन सकेगी।"

"कुछ तो पंडित जी भी देंगे?"

"ये जो कुछ देंगे अपनी लड़की को स्वेच्छा से देंगे। न मैं मागूंगा, न ही ये विवाह के कारण देंगे। ये लड़की के स्नेहवश ही उसे घर से विदा होते समय कुछ देंगे।

"मेरा आग्रह है कि पंडित जी की बात मान जाइए।"

इस पर बात समाप्त हो गई। पंडित जी ने कह दिया, "इस त्रयोदशी को मैं शकुन लेकर आऊंगा। आप अपनी जाति-बिरादरी के लोगों को बुला लीजिएगा। मेरे भी एक दो सम्बन्धी नगर से आएंगे।"

गोपाल ने झिझकते हुए पूछ लिया, "वे नाराज़ नहीं होंगे क्या?"

"लड़की के नाना पंडित भवानी शंकर ने मोहन को देखा है। उन्होंने इसे पसन्द किया है। वास्तव में कलावती की माँ मानती नहीं थी। उसके पिता ने ही उसे समझाया है और वह मानी है। यह बात आपको विदित नहीं कि मेरे श्वसुर पंडित भवानी शंकर जी मेरे गुरु भी हैं। उनकी शिक्षा का ही प्रभाव है कि मैं ऐसे विचार रखता हूँ कि मुझे मोहन पसन्द आया है। मैंने मोहन को अपने दामाद के रूप में आज से छः वर्ष पूर्व विचार किया था। उस समय लाला सुन्दरलाल मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहने आया था कि मैं मोहन को सीता से विवाह का विचार छोड़ देने के लिए कह दूँ। तब ही मैंने मोहन को अपना दामाद मान लिया था।

"उस दिन के उपरान्त मैंने मोहन को और भी चित्त लगाकर पढ़ाया है। अब कलावती पन्द्रह वर्ष की हो रही है और मोहन भी अब इतना पढ़ गया है कि वह अब ज्ञान वृद्धि स्वयं कर सकेगा।"

गोपाल ने दबी ज़बान में कहा, "हम तो आपका मान करते हैं। इस कारण आपकी बात को टाल नहीं सकते। परन्तु मेरा विचार है कि आप भली-भांति विचार कर लें। अभी जल्दी नहीं है।"

ब्रजलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "कल सायंकाल सुन्दरलाल आया था और कह रहा था कि आप सीता के विषय में बात करने गये थे। वह मुझसे पूछने आया था कि यदि वह सीता का मोहन से विवाह कर दे तो गाँव के लोग बुरा तो नहीं मानेंगे?"

"मैंने उससे पूछा कि सीता के विषय में मैंने नगर के सेठ गौरीशंकर का लड़का बताया था। वहाँ विवाह क्यों नहीं किया?"

"वह कहने लगा कि वे बीस हज़ार माँगते हैं। यह बहुत अधिक है। सेठ करोड़ीमल को अपने लड़के के विवाह पर तीस हज़ार मिल गया है।"

"मैंने उसे यह कहा था कि गाँव के लोगों के भय से मोहन जैसे लड़के को छोड़ना नहीं चाहिए। वह नगर के सब लड़कों से ठीक रहेगा।"

"वह मेरे सुझाव पर सन्तोष प्रकट करता हुआ गया था। इस पर भी मैं समझता हूँ कि मोहन का सम्बन्ध वहाँ ठीक नहीं रहेगा। उसके गुण, कर्म और स्वभाव उनके परिवार वालों से नहीं मिलते।"

पंडित जी ने अपने झोले से एक पुष्पमाला निकाली और मोहन के गले में डालकर कहा, "यह माला कलावती ने पिरोयी है। यह मैं तुम्हारे गले में डाल बात पक्की कर चला हूँ।"

6

सीता का विवाह इस कारण नहीं रुका हुआ था कि सुन्दरलाल इतना रुपया नहीं दे सकता था। वह दो लाख रुपए से ऊपर की सम्पत्ति रखता था और बीस-तीस हज़ार सुगमता से दे सकता था। सीता के विवाह में बाधा सीता स्वयं थी।

सुन्दरलाल गौरीशंकर के लड़के मदनमोहन के विषय में बातचीत करके आया था और उसने बात अपनी पत्नी शान्ति को बताई थी। पति-पत्नी की बात सीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने सुन ली थी। वह मुख पर चादर ओढ़े लेटी हुई थी और पति-पत्नी समीप खाट पर बैठे बातें कर रहे थे। वे सीता को सोया हुआ समझ रहे थे, परन्तु वह सो नहीं रही थी।

अगले दिन सीता ने खाना-पीना छोड़ दिया। पहले दिन तो उसने बहाना किया कि उसके पेट में पीड़ा हो रही है, परन्तु जब दूसरे दिन भी उसने कुछ नहीं लिया तो लाला को चिन्ता लगी। पहले दिन तो चूर्ण देकर पीड़ा शान्त करने का यत्न किया जाता रहा, परन्तु दूसरे दिन भी जब उसने सामने रखी थाली हाथ से हटा दी तो माँ ने पूछ लिया,

"क्यों? दर्द अभी गया नहीं क्या?"

"माँ। दर्द नहीं हो रहा।"

"तो खाती क्यों नहीं?"

"मैं खाऊँगी नहीं।"

"क्यों?"

"मैं वहाँ विवाह नहीं करूँगी जहाँ बीस हज़ार दे रही हो।"

"कौन कहता है?"

"पिता जी कह रहे थे और तुम सुनकर, हाँ! हाँ! कर रही थी।"

"कब?"

"परसों। रात के समय छत पर। सोने से पूर्व।"

"अच्छा खाओ। वहाँ नहीं करेंगे।"

सीता ने कह दिया, "माँ। यदि रुपया देकर विवाह किया तो मैं विवाह से पहले मर जाऊँगी।"

"ओह! मरने से डरती नहीं हो?"

"पर, मरता तो कोई है नहीं। शरीर ही बदला जाता है।"

सीता को तब शान्ति ने आश्वासन दे दिया, "अच्छा। तुम नहीं चाहती तो यहाँ नहीं करेंगे।"

इसके उपरान्त फिर एक स्थान पर सुन्दरलाल बात करने गया और सीता को सन्देह हुआ तो उसने फिर भूख हड़ताल कर दी। इस बार माँ ने कहा भी कि वहाँ दहेज के बिना विवाह स्वीकार हो रहा है, परन्तु सीता ने कह दिया, "मैं जानती हूँ कि तुम झूठ बोल रही हो। मैं अब मर कर ही रहूँगी।"

इस बार तो पिता ने पहले डांटा, फिर पीटा भी, परन्तु वह नहीं मानी। चौथे दिन लाला ने लड़की के सामने भगवान की सौगन्ध खाकर कहा कि वह उसका विवाह बिना दहेज के ही करेंगे। ऐसा वर वैश्य बिरादरी में मिला नहीं और सीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविवाहित की सोलह वर्ष से ऊपर की हो गई थी।

ज्यों ज्यों सीता की आयु बड़ी होती गई माता-पिता की चिन्ता बढ़ती गई। एक आशा वे लगाये हुए थे कि आयु बढ़ी होने पर वह पति की लालसा करने लगेगी और हठ छोड़ देगी।

एक दिन गोपाल सुन्दरलाल की दुकान पर आया तो वह सदा के विपरीत लाला के समीप बैठ गया। लाला ने समझा कि वह किसी मतलब के लिए अपनी जमा पूंजी में से कोई भारी रकम माँगने वाला है इससे उसने पूछ लिया, "हाँ चौधरी। क्या चाहते हो?"

"लाला! मैं एक बात पूछने आया हूँ। सच-सच बताना।"

"हाँ, पूछो।"

लाला को स्वप्न में भी यह बात कभी सूझी नहीं थी कि गोपाल मोहन के विषय में कहने आयेगा। पहली बात पुरानी हो चुकी थी। सीता ने भी मोहन का कभी नाम मुख से नहीं लिया था।

गोपाल ने पूछ लिया, "सीता का विवाह क्यों नहीं करते?"

"हमारी जात-बिरादरी में लोग दहेज माँगते हैं।"

"तो दे दो। देने में संकोच किस बात का है?"

"जितना माँगते हैं उतना मेरे पास है नहीं।" सुन्दरलाल ने झूठ बोल दिया।

"अच्छा।" गोपाल को विस्मय हुआ। वह विचार करने लगा था कि कितना माँगते हैं जो सुन्दरलाल के पास नहीं है। इस पर उसने अपने मन की बात, जो वह कहने आया था, कह दी। उसने कहा,

"यदि रुपया नहीं देना तो मोहन से उसका विवाह कर दो। हम सीता का बहुत मान करेंगे।"

"सुन्दरलाल गम्भीर विचार में मग्न हो गया। उसने समझा कि अवश्य मोहन ने पिता को कह कर भेजा है। वैसे वह इन्कार करना नहीं चाहता था, परन्तु अपनी ऊंची जाति का अभिमान दिखाने के लिए बोला, "गोपाल भैया! चिन्ता करने की बात नहीं है। मैंने अब उचित धन एकत्रित कर लिया है और उसका विवाह अपनी बिरादरी में ही कर सकूँगा।"

"पर हम भी तो तुम्हारी बिरादरी के ही हैं।"

"अच्छा, कैसे?"

"पंडित ब्रजलाल कहते हैं कि किसान और बनिया दोनों धन उपार्जन करते हैं। इस कारण दोनों वैश्य हैं।"

"यह तो उसने मुझे भी कहा था, परन्तु मैं माना नहीं था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब मान जाओ। बात ठीक तो है।"

"तो तुम मानते हो कि आज जाट वैश्यों के समान ऊंची पदवी पर पहुंच गये हैं?"

गोपाल हंस पड़ा। हंसते हुए उसने कहा, "लाला, ऐसा नहीं है। बात यह है कि हम इस कलियुग में पतित होकर बनियों के बराबर हो गये हैं। हम यादव क्षत्रिय थे और अब वैश्य माने जाने लगे हैं।"

"पर, यदुवंशी तो भगवान कृष्ण थे।"

"हाँ। हम भी उसी वंश के हैं। हम अब राजा-रईस नहीं रहे, इस कारण कृषि का काम करने लगे हैं।"

"पर दुनिया माने अथवा न माने। हम, मेरा मतलब है मैं और तुम मान जायें तो काम बन जायेगा। तुम्हारी लड़की का काम बन जायेगा। इधर मोहन के मन की बात भी पूरी हो जायेगी।"

"अच्छा।" सुन्दरलाल ने थोड़ा एहसान जताने के लिए कह दिया, "सीता की माँ से बात करूँगा, वह मानती नहीं।"

"मैं जल्दी ही मिलूँगा विचार कर रखना।" इतना कह वह उठा और अपने घर को चल पड़ा। लाला भी उसी समय उठा। लड़के चुन्नी को दुकान पर बैठा वह पंडित ब्रजलाल से मिलने चल पड़ा।

सुन्दरलाल को पंडित जी ने यह तो कह दिया कि मोहन जैसे होनहार युवक से विवाह की बात गाँव के लोगों की निन्दा के भय से टालनी नहीं चाहिये, परन्तु पंडित जी को विचार आया कि कदाचित् उसमें और सुन्दरलाल में मोहन को दामाद बनाने के लिये दौड़ लग गई है। इस दौड़ में सुन्दरलाल अपने धन के बल पर उससे आगे निकल सकता है। इस विचार पर वह कलावती के लिए मोहन के न मिल सकने की सम्भावना पर विचार करने लगा था। उसके मन में इस दौड़ में पीछे रह जाने पर चिन्ता नहीं लगी थी। वह अपने और लड़की के गुणों का भरोसा कर भगवान् भरोसे ही हो गया। वह समझता था कि उसने मोहन के सामने तो प्रस्ताव कर ही दिया है। अतः वह उठ स्नान, संध्योपासना में लग गया।

रात उसने अपनी पत्नी गार्गी से सुन्दरलाल की बात बताई तो उसने पूछ लिया, "आप तो कह रहे थे कि आज मोहन से बात करेंगे।"

"हाँ, की थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि गोपाल मेरे बात करने के पहले ही सुन्दरलाल के पास चला गया है।"

"तब तो आपको उसी समय गोपाल से मिलने के लिए जाना चाहिये था?"

"हाँ, परन्तु मैं सायंकाल ऐसे शुभ प्रस्ताव को लेकर जाना नहीं चाहता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मुझे पूजा-पाठ करना था। अब कल गोपाल से मिलूंगा।"

"और यदि उससे पूर्व ही सुन्दरलाल गोपाल से वचन ले गया तो?"

"जो भगवान को स्वीकार है, हो जायेगा।"

गार्गी अपने पति के स्वभाव को जानती थी और चुप कर रही। जब से वह विवाह कर इस घर में आई थी, सब कुछ भगवान भरोसे ही हो रहा था। उसका लड़का श्यामचरण जिद कर राजधानी के एक कॉलेज में भरती हो गया था और उसके कॉलेज में भरती होने जाने के समय पत्नी ने पूछा था कि कॉलेज की पढ़ाई का व्यय कहाँ से आयेगा?

पंडित ने कह दिया था, "भगवान देगा।" उसने देखा था कि वह दे रहा था। पंडिज जी लड़के को प्रति मास अस्सी रुपये भेज रहे थे। इस कारण वह मौन हो चुप रही। मन में वह मोहन को अपना दामाद मान चुकी थी और अपने मन में मन्नत मनाती रही थी कि यह सम्बन्ध बन जाए। अगले दिन पंडित जी उठे और पूजा-पाठ से निवृत्त हो कलावती से बोले, "बेटा, अपनी बगिया से बढ़िया बढ़िया फूल बीन कर एक बहुत सुन्दर माला पिरो दो। देखो, वैसी ही जैसी पिछली जन्माष्टमी के दिन भगवान की मूर्ति के लिए बनाई थी।"

कलावती ने पूछ लिया, "पिता जी! क्या है आज?"

"आज एक नवीन देवता की पूजा होने वाली है।" पंडित जी पूजागृह मे बैठे थे और गार्गी उनके लिए दूध लेकर वहाँ आ गई। कलावती अपनी संध्या उपासना कर बाहर जाने वाली थी कि पंडित जी ने उसे पुष्प माला बनाने के लिए कह दिया। पंडित जी अपना स्वाध्याय आरम्भ करने वाले थे। गार्गी ने नए देवता की पूजा का अर्थ समझ कह दिया, "आपको बहुत प्रातःकाल जाना चाहिए था। इस समय गोपाल और मोहन खेतों में चले गए होंगे?"

यह बात जाते जाते कलावती के कान में पड़ गई। वह समझ गई और इस समझने का परिणाम यह हुआ कि कलावती ने बहुत ही प्रेम से अति सुन्दर माला गूंथ दी। माला बनाने में पूरे दो घंटे लग गए और तब तक पंडित जी स्वाध्याय समाप्त कर चुके थे। परन्तु इस समय दिन के दस बज रहे थे। पंडित जी ने माला ली और काग़ज़ में लपेट एक थैले में रख ली। वह, गोपाल को घर पर और मोहन की माँ के सामने ही मिलना चाहता था। इस कारण कलावती को भेज गार्गी के पास चला गया। वह अपने कमरे में बैठी रामायण का पाठ कर रही थी।

"यह क्या हो रहा है, गार्गी?"

"जितनी आप देर लगा रहे हैं उतना ही मुझे अपने संकल्प के पूरे होने में सन्देह उत्पन्न होता जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"तो तुम भगवान पर विश्वास खो रही हो?"

"पर, यह देर भगवान कर रहा है?"

"नहीं। न ही मैं इसमें देर हो रही समझ रहा हूँ। मैं अपनी बुद्धि से ठीक मुहूर्त्त पर ही जाना चाहता हूँ और यह बुद्धि परमात्मा ने ही दी है।"

7

ठीक बारह बजे वह गोपाल के घर पहुंचा। एक झोले में पुष्प माला लिए हुए था। द्वार के बाहर से उसने आवाज़ दी, तो राधा गुरु जी की आवाज़ सुन पहिचान कर भागी हुई आई और द्वार खोल, हाथ जोड़ प्रणाम कर बोली, "बाबा को बुलाऊँ?

"हाँ। उनसे कहो कि मैं मिलने आया हूँ।"

राधा गुरु जी को बैठक में बैठने को कह, अपने पिता को सूचना देने गयी। वही बैठक, जहाँ एक दिन मास्टर घनश्याम को बैठा कर बातचीत हुई थी। तब इस बैठक में चटाई बिछी थी। अब वहाँ दरी थी और उस पर श्वेत चादर थी। एक बड़ा-सा तकिया जिस पर सफ़ेद फूलदार गिलाफ़ चढ़ा हुआ रखा था। एक कोने में फूलदान में गुलदस्ता रखा था।

गोपाल, मोहन, सोहन, राम इत्यादि खाना खा चुके थे। आजकल लाल और माणिक भी पंडित जी से पढ़ते थे। सबसे छोटा केवल घर पर मोहन से ही पढ़ता था। गोपाल आया तो पंडित जी को खड़ा देख पाय लागूँ कर एक ऊंची गद्दी पर उनको बैठा स्वयं नीचे बैठ पूछने लगा, "पंडित जी। क्या मंगवाऊँ?"

"आज मैं कुछ खाने नहीं आया। कुछ खिलाने की बात करने आया हूँ।"

गोपाल समझ रहा था, परन्तु बात से पूर्ण अनभिज्ञता प्रकट करते हुए बोला, "तो पंडित जी, बताईये क्या बात है?"

पंडित जी ने कहा, "चौधरायिन को भी बुला लो तो बताऊँ।"

भगवन्ती आयी तो पंडित जी ने अपने आने का प्रयोजन बता दिया। इस पर गोपाल ने कहा, "किसी से उड़ती-उड़ती ख़बर सुनी थी कि आप ऐसा विचार रखते हैं, परन्तु विश्वास नहीं आया था। मोहन से पूछा तो वह भी समाचार की सच्चाई पर सन्देह करता था। अब आपके मुख से बात सुन कर भी कानों पर सन्देह हो रहा है कि हम इतनी अच्छी बात को समझने में भूल तो नहीं कर रहे? परन्तु पंडित जी! मोहन की भी तो सम्मति लेनी है।"

"हाँ। उसे बुला लीजिये।"

इस प्रकार सोहन को कारखाने में भेज मोहन को बुला लिया गया और फिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात का निश्चय हो गया। मोहन के गले में पुष्पमाला पड़ गयी। माँ ने मोहन को प्यार दिया और पिता ने उसकी पीठ ठोक शाबास दी। इस समय सब बच्चे जो घर पर थे बैठक के द्वार पर आ खड़े हुए थे। सोहन और राधा तो पहले ही वहाँ पर थे।

पंडित जी के जाते ही सब बैठक में मोहन के चारों ओर बैठ गये। राधा ही सबसे पहले बोली, "दादा। मैं सलमे, सितारे का सूट सिलवाऊंगी।"

"वह क्या होता है?"

"जैसा निरंजन की बहू पहने हुए थी।"

"ओह! पर वह तो उसको ससुराल से मिला था। तुमको भी ससुराल से मिल जायेगा।"

"ऊँ हूँ। राधा ने माथे पर त्योरी चढ़ाते हुए कहा और फिर लज्जा में लाल मुख हो उठी और बैठक से भाग गयी। भगवन्ती ने मोहन को डांट दिया।

"मोहन! अभी से बहिन को घर से निकालने की बातें करने लगे हो?"

"माँ, नहीं। भूल हो गयी है। मैं उसको राज़ी कर लूँगा।"

"कैसे राज़ी कर लोगे?"

"निरंजन की बहू से भी बढ़िया सूट और फिर सोने की कंठी पहना कर।"

"अच्छा? तो उसे डांटा क्यों है?"

"पर दादा!" सोहन ने मोहन के कान में कह दिया, "मेरी बात?"

मोहन हंस पड़ा। उसने पिता की ओर देखकर कहा, "बाबा। अब सोहन का भी तो विवाह होना चाहिये।"

"बस तुम्हारे उपरान्त उसकी ही बारी है। तुमने मार्ग रोक रखा था। अब हम शीघ्र ही उसकी बहू की भी खोज आरम्भ कर देगें।"

"बाबा। खोज की आवश्यकता क्या है? जैसे किसी ने मेरी खोज कर ली है वैसे उसकी भी कोई खोज कर चुका है।"

"अच्छा। कौन है वह?"

"बाबा। पृथक् में बताऊंगा।"

"और मैं चली जाऊँ तो बताओगे?" भगवन्ती ने मोहन को बात टाल कर, चुप होते देख कह दिया।

"नहीं माँ! तुम से चोरी तो कुछ हो ही नहीं सकता। मैं तो देख रहा था कि राधा कहीं द्वार से कान लगाये तो नहीं खड़ी है?"

गोपाल ने बच्चों को वहाँ से भाग जाने को कहा तो राम, लाल और केवल उठकर बैठकघर से बाहर निकल गये। मोहन और सोहन ही अपने माता-पिता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पास रह गये। मोहन ने आगे झुककर धीरे से कहा, "बाबा! रामलुभाया की बहिन सावित्री कैसी रहेगी?"

"प्रस्ताव रामलुभाया ने किया?" भगवन्ती ने पूछा।

"नहीं।"

"तो सावित्री ने किया है?"

"माँ। किसी ने भी नहीं किया है और मैं समझता हूँ कि यह सम्बन्ध ठीक ही है।"

गोपाल ने कहा, "लड़की तो ठीक है, परन्तु रामलुभाया सिख हो गया है?"

"नहीं, बाबा! अभी नहीं हुआ।"

"तुमने उससे पूछा है?"

"हाँ। आज ही बात हुई थी। गुरुद्वारे का ग्रन्थी बरियाम सिंह अपनी बहिन के विवाह की बात कर रहा है। वह चाहता है कि बहिन, भाई दोनों को मोल ले ले।"

"और सोहन राज़ी है?"

"हाँ बाबा। मैंने उससे भी पूछा है। इसे लड़की पसन्द है।"

"एक बात और है। सोहन को समझ लेना चाहिये कि लड़की ही लड़की है। यहाँ उतना भी नहीं जितना पंडित जी से मिलेगा।" भगवन्ती ने कहा।

"बाबा।" अभी भी मोहन ने सोहन को कुछ विशेष कहने नहीं दिया। वह स्वयं ही बात कर रहा था। उसने कहा, "हम मेहनत मज़दूरी करने वाले दूसरे से लेकर बड़े नहीं हुए। हम अपने दो हाथों की कमाई पर भरोसा रखते हैं।"

भगवन्ती सोहन के मुख पर देख रही थी। सोहन अपने भाई की वकालत से बहुत प्रसन्न था। भगवन्ती को कुछ ऐसा समझ आया कि सावित्री ने अपने विवाह का प्रस्ताव स्वयं सोहन से किया है।

उसने कह दिया, "मैं सावित्री से बात करके ही इस प्रस्ताव पर विचार कर सकती हूँ।"

"इस पर सोहन से नहीं रहा गया। उसने कहा, "तो सावित्री को यहाँ बुला दूँ।"

इस पर भगवन्ती अपने मन के संशय के प्रभाव पर हंस पड़ी। वह बोली, "तो यह बात है कि तुम उससे बातें करते रहते हो?"

"नहीं माँ!"

"माँ के बच्चे। नहीं तो तुम्हारे बुलाने पर वह यहाँ क्यों आ जायेगी?"

"माँ तुम बुलाओगी। तुम्हारे नाम पर किसी बच्चे को भेजकर बुला दूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहो तो शकुन्तला को भेज सकता हूँ।"

"नहीं, सोहन। मैं स्वयं वहाँ जाऊँगी।"

वह गयी और यह समाचार लायी कि सावित्री छिनाल है। उस से उनके परिवार का सम्बन्ध नहीं बन सकता। यह समाचार भगवन्ती ने अपने पति को दे दिया। गोपाल ने पूर्ण बात सुनकर कह दिया, "लड़की पंडित ब्रजलाल से रामायण पढ़ती है। सोहन ने मोहन के द्वारा उससे विवाह का प्रस्ताव हमारे सामने रखाया है। अतः बिना मोहन और पंडित ब्रजलाल की राय के किसी प्रकार का निर्णय अथवा घोषणा करना ठीक नहीं।"

"भगवन्ती इतनी नाराज हो रही थी कि वह उद्विग्न हो बोल पड़ी, "आप खूब हैं। पंडित जी की लड़की को बहू बनाने की स्वीकृति का यह अर्थ नहीं हो सकता कि हम पंडित जी को अपने घर में चौधरी मान रहे हैं।"

"और मोहन के विषय में भी कुछ कह दो?" गोपाल ने हंसते हुए कह दिया।

उसके विषय में तो यही कह सकती हूँ कि उसे हमारी सम्मत्ति पर टीका-टिप्पणी करने का अधिकार तब हो सकता है जब उसका विवाह होकर उसके घर में दो तीन लड़के-लड़कियां हो जायें।"

गोपाल इस सिद्धान्त को नहीं मानता था। बच्चे पैदा कर देने से कोई बुद्धिमान नहीं हो सकता। बुद्धि तो स्वाध्याय और तपस्या से शुद्ध और तीव्र होती है, परन्तु वह अपनी पत्नी, जिसने उसके घर में बच्चों की लहर-पहर लगा दी है, के इस श्रेय को छोटा कर बता नहीं सका। इस पर भी वह मोहन से राय कर ही सावित्री के विषय में कुछ कहना चाहता था। सायं का समय था और मोहन अभी पंडित जी के यहाँ से पढ़कर नहीं आया था। इस कारण गोपाल ने कहा, "भगवन्ती, तुम ठीक कहती हो। मोहन ने अभी अपना घर नहीं बनाया और उसे इस घर के पुरखा की बात माननी चाहिये, परन्तु क्रोध करने की आवश्यकता नहीं। मोहन से राय करने में हानि नहीं। तुम उससे राय कर लो और फिर जो समझ में आये वह करना।"

इस आश्वासन पर मोहन की प्रतीक्षा होने लगी। सोहन सायं का अल्पाहार ले अपने कारखाने में जा काम कर रहा था। राम और लाल तो बढ़ई के काम का अभ्यास कर रहे थे। गोपाल उनके काम की देख-रेख कर रहा था। वैसे लाल को कपड़ा बुनने के काम में रुचि अधिक थी। वह गाँव के जुलाहे मुहम्मद दीन से काम सीख भी रहा था। अभी लाल और माणिक पंडित ब्रजलाल से पढ़ते थे।

महात्मा गांधी का खद्दर का आंदोलन चल चुका था। यद्यपि शान्तिमय कानून अवज्ञा का आंदोलन असफल हो चुका था, इस पर भी खद्दर पर देश में अभी भी बल था। इस बात से प्रभावित हो लाल घर पर एक खड्डी लगाने का विचार करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगा था। मुहम्मद दीन गाँव में सबसे योग्य कारीगर जुलाहा समझा जाता था। गोपाल का लड़का जब उसके पास काम सीखने पहुंचा तो उसको विस्मय हुआ। उसने पूछ लिया, "तो तुम भी गांधी के चेले हो?"

"हाँ, करमो के अब्बा। गांधी जी कहते हैं कि देहात वालों की अपने मकान, कपड़ा और भोजन की आवश्यकता गाँव में ही पूरी कर लेनी चाहिये। हमको नगरों से कुछ भी मोल नहीं लेना चाहिये।" करमो मुहम्मद दीन की लड़की थी।

"पर मैं भी तो गाँव में ही रहता हूँ। अपने कपड़े मुझसे ही खरीद लिया करो।"

"हाँ, परन्तु तुम सब गाँव के लिये कपड़ा बना सकोगे?"

मुहम्मद दीन इसका उत्तर न जानते हुए चुप रहा। माणिक उससे ताना-बाना, सूत गांठना इत्यादि का ढंग सीखने लगा।

8

मोहन आया तो माँ ने उससे पूछ लिया, "बहुत देर कर दी है?"

"हाँ, माँ! आज मुझे पंडित जी ने पढ़ाई से छुट्टी दे दी है।"

"क्यों?"

"वह कहते थे कि मैं अब उनके जितना पढ़ गया हूँ। उनका अभिप्राय है कि जितना वे अपने विवाह के समय पढ़े हुए थे। उनका कहना है कि शेष वे स्वाध्याय करने से सीखे हैं और मुझे अब स्वयं ही स्वाध्याय से सीखना चाहिये।"

"परन्तु यह देरी का कारण कैसे हो गया? तुमको तो छुट्टी मिलने से शीघ्र ही आ जाना चाहिये था।"

"माँ। पंडित जी ने आज सायंकाल हवन किया है और उसके उपरान्त उन्होंने मुझे दीक्षा दी है। इसमें समय लग गया है।"

"कैसे दीक्षा दी है?"

"उन्होंने पढ़ाई समाप्त कर मुझे आशीर्वाद दिया है। यह कहा है कि मैं अपनी विद्या से संसार को कल्याण का मार्ग दिखाने का यत्न करता हुआ सौ वर्ष तक जीयूं।"

"भगवान उनकी वाणी को सफल करें।" माँ के मुख से अनायास ही निकल गया।

"हवन करते हुए ही देरी हो गयी है।"

"हवन में वे अकेले थे क्या?"

"नहीं, माँ। मेरे साथ पढ़ने वाले दो लड़के सुरेन्द्र और प्राण थे। और...।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन ने बात आधी ही समाप्त कर पूछ लिया, "भोजन तैयार है क्या?"

"राधा ने दाल बना दी है। साग दिन का पड़ा है, अब गरम कर दूँगी। रोटियाँ तैयार हैं। बच्चे सब खा चुके हैं। तुम्हारे बाबा ज़रा बाहर गये हैं। आते हैं तो भोजन गरम कर दूँगी।"

"माँ। सुना है कि सुभद्रा ससुराल से निकाल दी गयी है और अब माँ के घर रहने आ गयी है?" सुभद्रा पन्ना की लड़की का नाम था।

"हाँ। उसका घर वाला शराब पीता है और बाज़ारी औरतों के पास जाता है।"

मोहन चुप रहा। वह विचार कर रहा था कि सुभद्रा की माँ उससे अपनी लड़की का विवाह करना चाहती थी। माँ भी तैयार हो गयी थी। उसने सीता से विवाह के मोह में इन्कार कर दिया था उसके मन में यह प्रश्न उत्पन्न हो रहा था कि यदि उससे सुभद्रा का विवाह हो जाता तो बेचारी का भाग्य बदल जाता। उसे अपने पर विश्वास था कि वह तो न कभी मद्य का सेवन करता और न ही बाजारू औरतों की संगत पसन्द करता। फिर यह विचार कर कि यह उसके भाग्य ही थे कि सीता का विचार बीच में आ खड़ा हुआ था। ईश्वर अपने काम पूरे करने के लिये क्या कुछ करता है? वह चकित था कि सीता से तो विवाह हुआ नहीं पर सुभद्रा को अपने कर्म-फल प्राप्त होने का साधन सीता बन गयी थी।

माँ मोहन को चुप देख पूछने लगी, "क्या सोच रहे हो मोहन?"

"यही सुभद्रा की बात पर विचार कर रहा था। तुम उसकी सगाई मुझसे करने वाली थीं न?"

"हाँ। भाग्य बहुत प्रबल है। अब सीता की ही बात देख लो। यदि उस समय शान्ति मान जाती तो मैं समझती हूँ कि इस समय तक सीता दो बच्चों की माँ बन चुकी होती।"

गोपाल आया। वह बाहर बैठक में किसी से बातें कर रहा था। भगवन्ती ने पूछ लिया, "कौन था?"

"सुभद्रा का पिता बिहारीलाल था।"

"क्या कहता था?"

"यही पूछ रहा था कि लड़की का क्या करें? वह जब से आई है रोती रहती है।"

"आपने क्या कहा है?"

"यही कि उसका ध्यान ईश्वर की ओर लगाओ। दूसरा विवाह हो नहीं सकता।"

"वह पंडित ब्रजलाल के पास भी गया था। पंडित जी ने भी उसे यही शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दी है। पंडित जी ने एक बात और कह दी है कि अपने घर में भागवत् की कथा रख दे। इससे लड़की को सांत्वना मिलेगी। मैंने पंडित जी के कथन का समर्थन कर दिया है।"

"मोहन की भी कुछ बात कही है?"

"नहीं। अभी मैंने किसी को कुछ नहीं कहा। मैं तो सगाई के दिन ही लोगों को बताऊंगा।"

"इस पर भी बात तो कल तक पूर्ण गाँव में फैल जायेगी। बच्चे तो अपने गाँव के साथियों से बात किये बिना नहीं रहेंगे।"

"तो फैल जाये। जब कोई पूछने आयेगा तो उसे कह दूँगा कि सगाई के दिन मिठाई खिलाऊंगा।"

वे रसोईघर में जा बैठे और राधा ने साग गरम कर थालियाँ लगा दीं। उड़द-चने की दाल बनी थी। वह भी उसने कटोरों में डाल रख दी। गोपाल भगवन्ती और मोहन खाने लगे। रोटी खाते हुए भगवन्ती ने सावित्री की बात नहीं की। राधा रोटी खिलाने के लिये सामने पटरे पर बैठी थी।

भोजन कर ऊपर से गुड़ की एक डली खा वे तीनों मोहन के सोने के कमरे में जा पहुँचे। माता-पिता को वहाँ आया देख मोहन समझ गया कि कुछ बात होने वाली है। वह माता-पिता को अपने घर की बनी कुर्सियों पर बैठा पूछने लगा, "माँ कुछ कहना चाहती हो?"

"हाँ। मैं रामलुभाया की बहिन से मिली हूँ।"

"तो अब बताओ क्या कहती हो?"

"मैंने उससे पूछा कि तुम विवाह करना चाहती हो? वह बोली कि मौसी, सब विवाह करते हैं। मैं भी करूँगी।

"मैंने पूछा, 'किससे करोगी?'

"वह बोली कि जिससे मेरा मन मिला हुआ है।

"मैंने फिर पूछ लिया, 'किससे मिला हुआ है?'

"इस पर वह निःसंकोच भाव से बोली, 'राधा के भाई से। सबसे बड़े से छोटे से।'

"सोहन से?

"उसने सिर हिलाकर स्वीकार किया।" मैंने पूछ लिया, "वह नहीं मानेगा तो? वह चट बोल उठी, 'मुझे पता है। वह मान जायेगा।'

"जब मैंने पूछा कि तुमने उससे पूछा है तो वह बोली कि वह मुझसे मिलता रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे जिस बात का सन्देह था, मैंने पूछ लिया, 'उससे मिली भी हो?'

"इस पर वह कुछ सहम गयी। कदाचित् वह विचार कर रही थी कि मैं कितना जानती हूँ? सोहन ने कितना कुछ बताया है?

"उसके चुप कर जाने से मेरा सन्देह पक्का हो गया। मैंने कह दिया, 'तुम उसकी बीवी बन चुकी हो?'

"उसका मुख पीला पड़ गया था। मैंने कह दिया, 'तुम वेश्या हो गयी हो। तुम किसी भले घर में नहीं जा सकतीं।'

"वह रोने लगी। मैं वहाँ से चली आयी हूँ। मैं समझती हूँ कि सोहन का उससे विवाह नहीं होना चाहिये।"

कुछ ऐसा ही सन्देह मोहन को भी था। उसका विचार था कि सावित्री ऐसी बात माँ को नहीं बतायेगी, परन्तु अब क्या हो? उसका मन कहता था कि यह विवाह हो जाना चाहिये, परन्तु वह माँ को कह नहीं सका। वह चुप रहा।

इस पर माँ ने कह दिया, सोहन को कह दो। यह नहीं होगा। उसने जो खराबी की है उसका वह प्रायश्चित करेगा।"

"अच्छा माँ। कह देता हूँ। वह कारखाने में काम कर रहा है।"

गोपाल, मोहन के मुख पर देखता रहा था। उसको कुछ ऐसा लगा कि कहीं कुछ ग़लत हो रहा है, परन्तु वह कह नहीं सका कि इस प्रकार की लड़की को, जो निर्धन होने के साथ विवाह के पहले ही लड़के से सम्बन्ध बना सकती है, घर में ले आये। वह चुप रहा।

एकाएक मोहन अपने स्थान से उठा और कारखाने को चला गया। सोहन वहाँ नहीं था। वह देख रहा था कि कारखाने की छत में मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था और लोहा गरम करने की भट्टी जल रही थी। सोहन वहाँ नहीं था। वह विचार करने लगा कि वह कहाँ गया होगा? उसको यही समझ आया कि हो न हो सोहन सावित्री से मिलने गया है।

अतः वह भी घर से निकल गया और रामलुभाया के घर की ओर चल पड़ा।

वह आधा मार्ग ही गया था कि सोहन उधर से आता दिखाई दिया। मोहन उससे मिलने के लिए वहीं खड़ा हो गया। सोहन आया तो मोहन ने पूछ लिया, "किधर से आ रहे हो, सोहन!"

"दादा। माँ ने सब काम बिगाड़ दिया है।"

"क्या बिगाड़ दिया है?"

"वह सावित्री को कह गई है कि वह वैश्या है और मुझसे उसका विवाह नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन को यह सब कुछ विदित था। इस कारण उसने पूछ लिया, "परन्तु काम बिगड़ा क्या है?"

उसका भाई ग्रन्थी बरियाम सिंह से उसके विवाह का प्रबन्ध करने गया हुआ है और उससे विवाह होने से पहले वह जल मरेगी।"

"क्या बच्चों की सी बातें करते हो?"

"दादा। वह यह कह रही है। यह तो भगवान जाने कि वह क्या करेगी और क्या नहीं करेगी? पर मेरे लिए तो दोनों हालतों में वह गयी न?"

"तो तुम क्या चाहते हो?"

"दादा। तुमने कहा था कि मेरी सहायता करोगे?"

"पर, तुम क्या सहायता चाहते हो?"

"मैंने उसे वचन दिया है कि मैं उसका अपहरण करूँगा।"

"कैसे करोगे?"

"यदि तुम थोड़ी सी सहायता कर दो तो आज रात ही?"

मोहन गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। वह चलता-चलता रुक गया और सोहन के मुख पर देखने लगा। सोहन भी खड़ा हो भाई का मुख देखने लगा था। कुछ देर तक दोनों एक दूसरे का मुख देखते हुए विचार करते रहे। आख़िर मोहन ने पूछा, "मुझसे क्या सहायता चाहते हो?"

"मैं रात के बारह बजे यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ। कम से कम एक सौ रुपया चाहिए और फिर मेरी वकालत माता-पिता और रामलुभाया के सामने।"

"बहुत कठिन काम बता रहे हो, सोहन।"

"दादा। तनिक अपने को मेरी स्थिति में बैठाकर विचार करो कि तुम क्या करोगे? हम पति-पत्नी तो बन चुके हैं। हमने भगवान का नाम लेकर यह सौगंध खाई हुई है कि हम जीवन-भर एक-दूसरे को छोडेंगे नहीं। बताओ, एक इज्जतदार आदमी को क्या करना चाहिए, जब उसकी बीवी का विवाह कोई ज़बरदस्ती उससे करने का यत्न करे जिससे वह नहीं करना चाहती?

"मैं यदि यहाँ रहूँगा और बरियाम सिंह उससे विवाह करने आयेगा तो मैं उसकी हत्या कर दूँगा।"

मोहन को कुछ ऐसा समझ आया था कि सोहन में जाटों की प्रवृत्ति उत्पन्न हो रही है। उसने कहा, "रुपये तो मेरे पास हैं, परन्तु वे पूर्ण परिवार के हैं। इस कारण बाबा से पूछे बिना देना, चोरी करना हो जायेगा। यदि पूछूँगा तो वे स्वीकृति नहीं देंगे।"

"दादा! दे दो, पीछे सफाई दे देना। कह देना तुम मेरे काम को ठीक समझ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इसमें सहायक हो गये हो।"

मोहन अभी मेंढ़ पर खड़ा विचार कर रहा था। एकाएक उसने मन में एक निश्चय किया। उसने कहा, "रामलुभाया घर पर है?"

"नहीं। वह बरियाम सिंह से राय करने गया है।"

"तो चलो। मैं सावित्री से उसकी इच्छा जानना चाहता हूँ।"

दोनों पुनः रामलुभाया के घर की ओर चल पड़े। वहाँ पहुंच सोहन ने द्वार खटखटाया तो भीतर से आवाज़ आई, "कौन है?"

सोहन ने उत्तर दिया, "सोहन। दादा, तुमसे बात करने आए हैं।"

"कौन दादा?"

"मोहन दादा। सावित्री, डरो नहीं। इनको बता दो कि तुम क्या चाहती हो।"

सावित्री ने द्वार खोला। वह द्वार के भीतर मार्ग रोके खड़ी थी। मोहन ने बाहर खड़े खड़े कह दिया, "सोहन कहता है कि तुम घर से भाग जाने के लिए तैयार हो?"

"यह इनका कर्त्तव्य है कि मेरी रक्षा करें। यह मेरे पति हैं। यदि यह नहीं कर सकेंगे तो कल प्रातःकाल मैं जल मरूंगी। मैं धर्म से इनकी पत्नी बन चुकी हूँ।"

मोहन ने इतना और कहा, "भागने से बहुत कठिनाई में फंस सकती हो। सोहन पकड़ा जा सकता है और क़ैद का दंड पा सकता है।"

"कुछ भी हो। मैं किसी दूसरे की पत्नी बनने से पहले यह शरीर छोड़ दूँगी।"

मोहन ने पूछ लिया, "तो कैसे भागोगी?"

"आपके भाई रात के बारह बजे पिछले द्वार पर आयेंगे। द्वार पर संकेत करेंगे और मैं इनके साथ चल दूँगी।"

"पर उससे पहले तुम्हारा भाई तुमको क़ैद भी तो कर सकता है?"

इस पर सावित्री मोहन का मुख देखती रह गई। मोहन ने कह दिया, "तुम अभी चलो। मैं तुमको गाँव से निकालने और तुम्हारे नगर में जाकर रहने का प्रबन्ध कर दूँगा।"

सावित्री का मुख खिल उठा। उसने झुककर मोहन के पांव छूकर कहा, "दादा। जन्म-जन्म तक तुम्हारी कृतज्ञ रहूँगी।"

मोहन ने कहा, "घर से कुछ नहीं ले चलना। कुछ भी ले चलोगी तो चोर हो जाओगी। चलो।"

सावित्री जैसे खड़ी थी वैसे ही द्वार से बाहर निकल आयी और बोली, "चलिये।"

मोहन उनको लेकर बगिया की ओर चल पड़ा। अपने पूजा-पाठ के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बनाए चबूतरे पर सोहन और सावित्री को बैठाकर उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि यहाँ तुमको कोई ढूंढने नहीं आयेगा। तुम बैठो। एक घंटा भर में मैं सब प्रबन्ध कर आता हूँ। तुम मेरी प्रतीक्षा करना। यदि कोई इधर आता दिखाई दे तो उन झाड़ियों में जाकर छुप जाना।"

मोहन उनको छोड़कर घर गया। भगवन्ती और गोपाल सो गये थे। सोने से पहले वे कारखाने में दोनों भाइयों को देखने आए थे और दोनों को वहाँ न देख वे समझे थे कि मोहन, सोहन को बाहर खुले में ले जाकर समझा रहा है। उनको मोहन पर विश्वास था कि वह सोहन को समझाने में सफल हो जायेगा। कारखाने से निकलने का द्वार खुला था अतः उनको यही समझ आया था कि दोनों भाई नई स्थिति पर समझ-समझा रहे हैं। वे भीतर आ लेटे और सो गये थे।

मोहन ने अपने कमरे में रखी तिजोरी में से एक सौ रुपया निकाला और तांगे ठेले को जोतकर तैयार कर दिया। वह घर का द्वार बन्दकर तांगे को बगिया के पिछवाड़े में ले गया।

यह तांगा-ठेला कारखाने का सामान अथवा बगिया के फल तथा अन्न अनाज नगर की मंडी को ले जाने के लिए बनवाया हुआ था।

बगिया के पिछवाड़े जा उसने वहाँ छुपकर बैठे सावित्री और सोहन को संकेत से बुलाया और बोला, "चलो, ठेले पर बैठो। मैं तुमको नगर में छोड़ आता हूँ।"

वे दोनों बैठे तो मोहन ठेले को चला गाँव से बाहर ले गया। गाँव में से वह बहुत आराम से ठेले को ले गया। वह उस स्थान पर न तो स्वयं बोला और न ही उसने उन दोनों को बोलने दिया। वे जब गुरुद्वारे के बाहर से गुज़रे तो भीतर दीपक जल रहा था। तीनों समझ रहे थे कि रामलुभाया अभी तक वहीं है। इस विचार से निश्चिन्त हो वे गाँव से बाहर निकल आये। गाँव से दो फर्लांग के लगभग कच्चा रास्ता था और फिर पक्की सड़क थी। कच्ची सड़क पर वे मन्द गति से ही चल सके, परन्तु पक्की सड़क पर ठेला भगा दिया गया और दस मिनट में वे नगर द्वार पर जा पहुँचे। वहाँ से वे रेलवे स्टेशन पर गये। मोहन ने सोहन को कहा, "यह लो एक सौ रुपया। प्रातः पांच बजे गाड़ी लाहौर को जाती है। उसमें बैठ लाहौर को चले जाना। वहाँ तुम सात बजे के लगभग पहुंचोगे। रत्नचन्द की धर्मशाला में ठहर जाना। मेरी राय मानो तो तुम अपना नाम और घर का पता बदल कर लिखवाना अपने को पति-पत्नी लिखवाना। मैं तुम्हारी टोह लेता रहूँगा।"

अब फिर सावित्री ने हाथ जोड़ अश्रुपूर्ण आंखों से मोहन का धन्यवाद किया और कहा, "दादा! कृपा दृष्टि बनाये रखना। इस उपकार को मैं कभी भूलूंगी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन तांगा-ठेला भगाता हुआ गाँव में आ पहुचा। गुरुद्वारे में रोशनी हो रही थी। उसे कुछ ऐसा समझ आया कि उस समय गुरुद्वारे में कई लोग हैं। वह इसका अर्थ न समझ विस्मय करता रहा। इतना वह संदेह कर रहा था कि गुरुद्वारे में जागरण का सम्बन्ध रामलुभाया की बहिन से हो सकता है। इस पर भी गाँव में शान्ति थी। सारा गाँव यथापूर्व सो रहा था। वह अपने घर पहुंचा तो वहाँ भी सब सो रहे थे। उसके घर में तो सब ईमानदारी से चौदह घंटे रोज़ मेहनत करते थे। अतः जब सोते थे तो गहरी नींद सोते थे।

9

नित्य की भांति आज भी मोहन सबसे पहले उठा। शौचादि से निवृत्त होने से पूर्व वह गायों के लिए सानी करता था। इसके बाद वह लोटा ले खेतों को शौच के लिए चला जाया करता था। वह जब खेतों से लौटता था भगवन्ती उठ गायों का दूध दुहने लगती थी।

यह सोहन का काम होता था कि कुएँ के बैलों को भूसा-दाना डाल कर काम के लिए तैयार करे। मोहन जानता था कि आज सोहन नहीं है। अतः यह काम भी उसने शौच जाने से पहले कर दिया और शौच से लौटते-लौटते उसने बैलों को रहट से जोत रहट चला दिया था।

तब वह घर चला आया। वहाँ से वह अंगोछा और बदलने के कपड़े ले कुएँ पर चला गया। वहाँ कुछ अन्य लोग भी स्नान के लिए आ जाया करते थे। जब वह स्नान कर रहा था तो उनके पड़ोसी बिहारीलाल ने मोहन का अभिवादन कर कहा, "मोहन। सुना है गाँव में क्या हुआ है?"

"क्या हुआ है?" मोहन ने मुख पर विस्मय की मुद्रा बनाकर पूछ लिया।

बिहारी ने बताया, "रामलुभाया का विवाह हो गया है।"

"सच। कहाँ?"

"बरियाम सिंह ग्रन्थी की बहिन से। सुना है कि रामलुभाया ने पौल छक ली है और उसका नाम रामसिंह रख दिया है।"

"यह तो बहुत अच्छा समाचार है।"

"क्या अच्छा है इसमें?"

"एक ग़रीब का विवाह हो गया है। यह अच्छी बात नहीं है क्या?"

"पर इस विवाह का उसने मोल भी तो दिया है।"

"क्या मोल दिया है?" मोहन ने पुनः विस्मय का भाव बनाकर पूछ लिया।

"सुना है कि आज वह अपनी बहिन का विवाह बरियाम सिंह से कर देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, यह बात ठीक नहीं।" मोहन समझ गया कि अभी तक कहानी का शेष अंश बिहारीलाल को पता नहीं। इस पर भी उसने इस पर प्रकाश डालना उचित नहीं समझा।

मोहन घर पहुंचने की जल्दी में था। सोहन के लापता होने की बात फैलने पर माता-पिता के मन की प्रतिक्रिया वह देखना चाहता था। अतः उसने स्नान किया और कपड़े पहिन वह घर को चल पड़ा। वैसे वह स्नान कर बगिया में जा चबूतरे पर बैठ संध्योपासना और जप किया करता था। आज वह घर पहुंचने के लिए उत्सुक था।

भगवन्ती दूध को बाल्टी में उठाकर भीतर ले आयी। चार गायें दूध देने वाली थीं। उन सब का दूध दस और ग्यारह सेर के लगभग एक समय होता था।

माँ ने दूध की भरी बाल्टी उठायी और घर में मोहन को आते देखा तो पूछ लिया, "आज पूजा करने नहीं गए?"

"माँ। आज सोहन कुएँ पर नहीं गया। बैलों के लिए सानी भी मुझे बनानी पड़ी है और स्नान कर यह देखने चला आ रहा था कि सोहन बीमार तो नहीं हो गया?"

"बीमार? नहीं। हमारे घर में बीमारी नहीं आती। अच्छा देखो और बताना।"

भगवन्ती अभी दूध को कपड़े से छान कड़ाही में गरम करने के लिए डाल रही थी कि मोहन आया और माँ से बोला, "सोहन घर पर भी नहीं है।"

भगवन्ती को यह समझ आया कि वह रामलुभाया के घर गया होगा। इससे उसे क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, "तनिक देखो। तुम्हारे पिता सोकर उठे हैं अथवा नहीं? इसके कान खिंचवाने पड़ेंगे।"

"मोहन पिता के सोने के कमरे की ओर चला गया। माँ ने कड़ाही चूल्हे पर रख दी और राधा को आग जलाने के लिये कह स्वयं ही मोहन के पीछे पति के कमरे में जा पहुंची।

मोहन पिता को सोहन के लापता होने की बात बता रहा था। पिता ने कहा, "वह अवश्य रामलुभाया के घर पर होगा।"

"इस पर मोहन ने रामलुभाया के सिख-धर्म की पौल ले लेने और उसके बरियाम सिंह की बहिन से विवाह हो जाने की बात बता दी।

"तब तो वह ज़रूर वहीं होगा कदाचित् उसका भी विवाह रामलुभाया की बहिन से हो गया हो।"

"पर रामलुभाया ने तो यह कहा था कि उसकी बहिन का विवाह बरियाम सिंह से होगा। इसी शर्त पर उसका अपना विवाह हुआ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर गोपाल को परेशानी अनुभव होने लगी। उसने मोहन से पूछ लिया, "तुम रात सोहन से मिले थे तो वह क्या कह रहा था?"

"बाबा। वह कहता था कि उसने धर्म की सौगंध खाकर विवाह कर लिया है। इस कारण वह उसको छोड़ेगा नहीं और उससे यदि कोई दूसरा विवाह करने आया तो वह उसकी हत्या कर देगा। मैं उसको बहुत देर तक समझाता रहा था। वह चुपचाप मेरी बात सुनता रहा था। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया था। अंत में मैंने उसको यह आश्वासन दिया कि आपसे बात करेंगे और यदि माँ मान गयीं तो उसका विवाह कर दिया जायेगा।"

"वह अपने कमरे में सोने चला गया था। बाबा! तुम तो जानते हो कि मैं बहुत गहरी नींद सोता हूँ। आज जब शौच करने जा रहा था तो देखा कि कुएँ के बैलों को भूसा, दाना नहीं डाला गया। मैंने यह समझ कि सोहन रात देर से सो सका होगा। इस कारण समय पर जाग नहीं सका। मैंने ही दाना इत्यादि बैलों को डाला और पीछे ही शौच के लिये गया था। पीछे मैं स्नान करने चला गया। स्नान कर आज मैं अपने नित्य के पूजा-पाठ के लिये बगिया नहीं गया। सोहन को देखने घर चला आया हूँ। घर आकर पता चला है कि सोहन यहाँ भी नहीं है।"

"रामलुभाया के घर जाकर पता करना चाहिये।"

"मोहन ने स्वयं ही वहाँ जाना ठीक समझा। वह उसी समय रामलुभाया के घर चला गया। रामलुभाया का घर गोपाल के खेतों के पार बगिया के समीप था। मोहन बगिया के सामने पहुंचा ही था कि उसे रामलुभाया के घर के बाहर भीड़ दिखाई दी। उसमें कुछ केशधारी लोग भी थे।

मोहन भी उन लोगों में आ पहुंचा। एक सिख सज्जन से मोहन ने पूछ लिया, "रामलुभाया कहाँ है?"

"अन्दर छुपा बैठा है।"

"क्यों?"

"वह बेईमान का बच्चा ग्रन्थी की बहिन को ठग लाया है।"

"कैसे ठग लाया है? मैंने तो सुना है कि उसका उससे विवाह हुआ है।"

"हाँ, मोहन भैया। मगर उसने ग्रन्थी को यह वचन दिया था कि वह अपनी बहिन का विवाह उससे करेगा और अब कह रहा है कि वह रात कहीं भाग गयी है।"

"तो वह भाग गयी है क्या?"

"हमें विश्वास नहीं आता। हम समझते हैं कि इसने उसे कहीं छुपा रखा है।"

"यह तो बहुत बुरी बात कर रहा है। मैं तो उसे विवाह पर बधाई देने आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था और पूछने आया था कि माँ किस समय उसको शकुन देने आए?"

"हम बरियाम सिंह की बहिन को वापिस ले जाने के लिये आये हैं।"

"पर यह तुम कैसे कर सकते हो? विवाह होने के उपरान्त वह वापिस नहीं जा सकती।"

"विवाह तो 'आनन्द' पढ़ा गया है न। यह सरकारी रूप में मान्य कानून नहीं।"

"पर धर्म से तो मंजूर है?" मोहन का अगला प्रश्न था।

इस पर एक केश रहित हिन्दू बोल उठा, "यही तो मैं इनसे कह रहा हूँ।"

मोहन को समझ आया कि एक आदमी तो उसका सहायक इनमें भी है। अतः उसने कहा, "देखो, सरदार जी। झगड़ा करने का कुछ अर्थ नहीं। मुझे रामलुभाया से मिलने दो। मैं उससे सब बात जान कर आपसे किसी प्रकार का समझौता करा देता हूँ।"

"देखो, मोहन!" एक पर्याप्त बड़ी उम्र के सिख सज्जन ने कहा, मैंने ही रात राम का 'आनन्द' पढ़ाया है। इसने वचन दिया था कि आज प्रातः सात बजे वह अपनी बहिन को लेकर गुरुद्वारे पहुँच जायेगा। वह नहीं आया तो हम यहाँ उसको साथ ले चलने के लिये आये थे, परन्तु उसने यह बताया है कि बहिन घर में नहीं है। वह घर लौटा था तो द्वार खुला पड़ा था।

"हम समझते हैं कि वह झूठ बोल रहा है।"

"उसे अपना वचन पालन करना चाहिये।" मोहन ने कहा और स्वयं रामलुभाया के मकान में चला गया। रामलुभाया भयभीत सामने एक खाट पर बैठा था। वह मोहन को आया देख उठकर कहने लगा, "दादा। मुझे इनसे बचाओ।"

"तुम्हारी बीवी कहाँ है?" वह वहाँ दिखाई नहीं दी थी।

रामलुभाया ने कहा, "वह उस कमरे में है। उसने द्वार भीतर से बन्द किया हुआ है।"

"क्यों?"

"ये लोग उसे बलपूर्वक यहाँ से ले जाना चाहते हैं।"

"और वह जाना नहीं चाहती क्या?"

"मुझे तो यही समझ आया है। हम रात बारह बजे के उपरान्त यहाँ आये थे। उस समय हमारे साथ चार पांच लोग थे। वे जानते थे कि जब हम आये थे तो द्वार खुला था। मैंने समझा था कि सावित्री अपने कमरे में सो गयी होगी। इस कारण मैंने साथ आये लोगों को विदा कर दिया और अपनी पत्नी को अपने कमरे में बैठा सावित्री को उसके कमरे में देखने गया तो वह वहाँ नहीं थी। मैंने उसकी भाभी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा तो वह बोली कि मैं उसे विवाह पर ले नहीं गया, इस कारण वह कहीं किसी सहेली के घर में होगी। सुबह पता चल जायेगा। अतः हम सो गये। प्रातः उठे तो मैं आपके घर पता करने जाने वाला था। मेरा विचार था कि वह आपके घर होगी अथवा पंडित ब्रजलाल के घर होगी। इतने में ये लोग आ गये। इनमें वह ग्रन्थी भी है जिसने मेरा विवाह कराया था और अब सावित्री का बरियाम सिंह से विवाह कराना है। मैंने जब बताया कि सावित्री मिल नहीं रही तो ये मुझसे झगड़ा करने लगे। झगड़ा सुन मेरी पत्नी द्वार पर आकर बात सुनने लगी। उसे दरवाज़े के पीछे खड़ा देख ग्रन्थी ने कहा, "चलो गुरमीत। यह तो ठग है। तुम्हें ठग लाया है।"

"गुरमीत भाग कर कमरे में घुस गयी और भीतर से द्वार बन्द कर बैठ गयी। ये मकान को घेरा डाल बैठ गये हैं और कह रहे हैं कि रात मेरा विवाह हुआ ही नही। मैं लड़की को बल-पूर्वक पकड़ लाया हूँ।"

"मोहन यहाँ एक नवीन समस्या उपस्थित देख विचार करने लगा कि इस झगड़े से निकालने का उपाय क्या है? वह समझा कि इनकी फौजदारी को रोकने का उपाय करना चाहिये। उसने कहा, "राम। मैं बाहर जाता हूँ और तुम मेरे बाहर जाते ही द्वार बन्द कर लो। मैं यत्न करूँगा कि इनको तुम्हारे मकान से भगा दूँ।"

"दादा। करो और बहिन का भी पता करो। मुझे उसकी भी चिन्ता लग रही है। शायद वह पंडित जी के घर गयी होगी।"

मोहन घर से निकला तो ग्रन्थी ने ही आगे बढ़ पूछा, "क्या कहता है वह?"

"वह तो सौगंध-पूर्वक कह रहा है कि इसे बहिन का पता नहीं। इसकी बीवी सामने कोठरी में भीतर से द्वार बन्द किये बैठी है। उसको आपसे भय लग रहा है।"

"पर हम बरियाम सिंह की बहिन को साथ लिये बिना जायेंगे नहीं।"

"देखो, सरदार जी। पहले उसको कमरे से निकलने दो। जितना हल्ला करोगे उतना ही वह भयभीत हो बाहर निकलने से इन्कार करेगी। फिर उसे ले जाओगे कैसे?"

"हम घर को फूंक देंगे।"

"तो वह बीच में ही जल मरेगी और गाँव के लोगों को पता चल गया कि आप घर फूंक रहे हैं तो वे आप सबको इसी घर में फूंक देंगे।

देखिए, मैं बताता हूँ। मैं अपने बाबा को बुलाता हूँ। वह लड़की को ढुंढवा, राज़ी कर उसे भाई के घर भेज देंगे। एक बार वह यहाँ आयी तो फिर जो चाहे करना। रामलुभाया को ज़रूरत होगी तो अदालती कार्यवाही करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

रामलुभाया के घर के बाहर खड़ी भीड़ बढ़ रही थी। गाँव के लोग ज्यों ज्यों ख़बर सुन रहे थे, चले आ रहे थे। गाँव में यह समाचार फैल रहा था कि बरियाम सिंह ज़बरदस्ती रामलुभाया की बहिन का अपहरण करने का यत्न कर रहा है और वह लड़की भीतर से द्वार बन्द कर छुपी हुई है।

मोहन जिस समय रामलुभाया के घर में गया था, उस समय से अब लोग दोगुने हो गये थे और उसने देखा था कि कुछ और लोग भी लाठियाँ लिये चले आ रहे थे। पहले तो ग्रन्थी और उसके साथियों ने समझा कि उनके हिमायती आ रहे हैं, परन्तु जब आने वालों की सूरत-शक्ल देखी तो वे भी समझने लगे थे कि उनके विरोधी पक्ष वाले बढ़ रहे हैं। मोहन किसी को अपने और पंडित जी के घर भेजना चाहता था। वह अभी देख ही रहा था कि किसको भेजे कि उसे पंडित जी व पिता जी और उनके साथ आठ दस आदमी लठैत आते दिखाई दिये।

मोहन को पता चल गया था कि गाँव में यह विख्यात हो रहा है कि गुरुद्वारे के लोग रामलुभाया की बहिन का हरण करने आये हैं। इस कारण वह समझ गया कि पंडित जी को भी यही सूचना मिली होगी और वे उसके पिता को साथ लेकर आ रहे हैं। पिता जी आये तो वे अपने साथ कुछ अन्य लोगों को भी ले आये।

ग्रन्थी और उसके साथी अब नरम पड़ गये थे और कह रहे थे कि वह तो बरियाम सिंह की बहिन को लेने आये हैं। अब वह बरियाम सिंह से सावित्री के विवाह की बात नहीं कर रहे थे।

दो तीन मिनट में पंडित जी और गोपाल आ पहुँचे। पंडित जी ने आते ही पूछ लिया, "क्यों, सरदार जी। क्या बात है? आप किसलिये आये हैं?"

"हम बरियाम सिंह की बहिन को यहाँ से लेने आये हैं।"

"वह यहाँ क्यों आई है?" पंडित जी ने पूछ लिया।

"रामलुभाया ने उसका अपहरण किया है।"

"तो गाँव की पंचायत बैठेगी और यदि उसने ऐसा किया है तो उसको दंड दिया जायेगा।"

"क्या दंड दिया जायेगा?" ग्रन्थी ने पूछ लिया।

"उसे पुलिस के हवाले कर देंगे। सरकार उसे सात वर्ष के कठोर कारावास तक का दंड दे सकती है।"

"हम लड़की को अभी साथ ले जायेंगे। हम यहाँ की पंचायत को नहीं मानते।"

इस पर तो गोपाल बोल उठा, देखो, सरदार। यहाँ से चले जाओ। नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थी के समीप खड़े एक केशधारी ने पूछा, "फौजदारी करोगे?"

उसने लाठी उठाई तो गोपाल ने एक ही झपट्टे में उसकी लाठी छीन ली और उसकी कलाई पकड़ ली। वह छटपटाने लगा और अपने को छुड़ाने का यत्न करने लगा। ग्रन्थी और उसके साथी साहस नहीं कर सके कि उसके झगड़े में लपकें। गोपाल की पकड़ ज़बरदस्त थी। एक अन्य केशधारी ने गोपाल पर वार करने के लिये लाठी उठायी, परन्तु उसकी लाठी पीछे खड़े मोहन ने पकड़ कर छीन ली। अब ग्रन्थी ने शान्ति कराने के लिये कहा, "भाइयो! लड़ो नहीं। बातचीत से फैसला करेंगे।"

मोहन ने उस आदमी को कमर से पकड़ दबोच लिया था। जब ग्रन्थी ने कहा कि बातचीत होगी तो गोपाल और मोहन ने पकड़े हुए लोगों को छोड़ दिया, परन्तु उनकी लाठियां उनको नहीं दीं।

जब शान्ति हो गयी तो पंडित ब्रजलाल ने कहा, "गाँव की पंचायत होगी। सब लोग गोपाल जी की बगिया में चलें। राम वहीं आयेगा।"

पंडित जी ने ग्रन्थी को कहा, "बरियाम सिंह को भी वहाँ बुला लो।"

ग्रन्थी समझ रहा था कि पंचायत में उसका पक्ष दुर्बल रहेगा। गोपाल ने अब ऊंची आवाज़ में कह दिया, "सब लोग यहाँ से चल दो। मेरी बगिया में चलो।"

ग्रन्थी और उसके साथी चलने को तैयार नहीं हो रहे थे। गोपाल ने कह दिया, "चलो, सरदार जी।"

"ग्रन्थी ने कह दिया, "मैं आपके गाँव का हूँ नहीं। आपके गाँव की पंचायत के मैं अधीन नहीं हूँ।"

"तो यहाँ से चल दो। नहीं तो पड़ोस के गाँव में थाना है। हाथ-पांव बांधकर हम वहाँ ले चलेंगे।"

ग्रन्थी ने अपने साथियों को कहा, "चलो भाई। ज़बरदस्त की सत्ती बीसे सौ होता है।"

इस पर पंडित जी ने कहा, "नहीं सरदार जी। हम ज़बरदस्ती नहीं कर रहे। तुम लोग क्या चाहते हो? यह भी अभी पता नहीं चला। मुझे तो यही बताया गया है कि तुम यहाँ राम की बहिन का अपहरण करने आये हो।"

ग्रन्थी बिना एक शब्द और बोले चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसके साथी भी चले गये। गोपाल ने एकत्रित लोगों को कहा, "अब पंचायत की आवश्यकता नहीं। जब कोई दावा ही नहीं तो विचार किस बात पर होगा?"

इस सब समय रामलुभाया अपने मकान के द्वार में खड़ा था और वह सब बातें सुन रहा था।

अब पंडित जी ने रामलुभाया से पूछ लिया, "ये लोग क्या कहने आये थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलुभाया ने पुनः वही बात सुनाई जो उसने मोहन को बताई थी।

"और तुम्हारी बहिन कहाँ है?"

"मैं नहीं जानता। मेरा विचार था कि रात वह आपके घर चली गयी होगी। मैं सायंकाल यहाँ बैठा था कि बरियाम सिंह का आदमी मुझे बुलाने आया। उसने कहा था कि मैं अपनी बहिन को लेकर उसके घर पहुंच जाऊँ। मैंने बहिन को कहा था जब तक मेरा विवाह नहीं हो जाता तब तक तुम्हारा विवाह नहीं करूँगा। मैंने बहिन को यह भी बताया था कि यदि मेरा विवाह हो गया तो आज प्रातःकाल उसका विवाह भी हो जायेगा। वह मेरी बात सुन गम्भीर हो गयी थी। मैंने उसे कहा, "भीतर से द्वार बन्द कर बैठो। मुझे आने में देर भी हो सकती है।"

"बरियाम सिंह से मैंने कहा, "यदि रात मेरा विवाह हो जाये तो कल प्रातः तुम्हारा विवाह बहिन के साथ कर दूँगा। दोनों विवाह एक साथ होने ठीक नहीं।"

"पंडित जी! मुझे सन्देह था कि मेरा विवाह तो बहाना है। वास्तव में सावित्री का विवाह ही वे करेंगे।

"जब मैंने समझाया कि दोनों का विवाह इकट्ठे होने ठीक नहीं तो सबकी यही राय रही कि मेरा विवाह रात को ही हो जाये और सावित्री का बरियाम सिंह से आज प्रातः हो।

"रात जब हम यहाँ आये तो सावित्री घर में नहीं थी। मैं समझा था कि या तो वह मोहन भैया के घर गयी है अथवा आपके घर गयी है। अब मैं भी नहीं जानता कि वह कहाँ है?"

अब मोहन ने कह दिया, "गुरु जी। बरियाम सिंह की बहिन को सब बात बताकर पूछना चाहिये कि वह रामलुभाया के साथ रहना चाहती है अथवा अपने भाई के साथ। वर्तमान स्थिति में उसको भी अपनी इच्छा से अपने जीवन की बात चलानी चाहिये।"

इस पर रामलुभाया को कहा गया कि वह उसे बाहर ले आये।

रामलुभाया भीतर कोठरी के बाहर गया और द्वार के बाहर की सब स्थिति समझाकर, द्वार खुलवा, वह पत्नी को बाहर ले आया। वह गुरमीत कौर को बड़े कमरे में खाट पर बैठा पंडित जी और गोपाल को भीतर ले गया। पंडित जी ने गुरमीत से पूछना आरम्भ कर दिया—"तुम यहाँ कैसे आयी हो?"

"ये विवाह कर लाये हैं।"

"तो तुम्हारा विवाह राम के साथ हुआ है?"

"जी। रात हुआ था।"

"तो तुम अपने को इसकी पत्नी मानती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी।"

"तुम भाई के घर जाना चाहोगी?"

"मैं यहाँ ही रहूँगी।"

"क्या राम ने वचन दिया था कि वह अपनी बहिन का विवाह तुम्हारे भाई से कर देगा?"

"मैंने नहीं सुना। मेरे भाई ने मुझे बताया था कि उसका विवाह मेरी ननंद से हो जायेगा। मुझको यह सौदेबाज़ी ठीक प्रतीत नहीं हुई।"

"जानती हो तुम्हारी ननंद कहाँ है?"

"हम रात आये थे तो मकान के सब द्वार खुले पड़े थे और भीतर कोई नहीं था।"

"पंडित जी ने कहा, "यह मकान अकेले में है। इस कारण यहाँ तुम्हारी रक्षा करना सहज नहीं। तुम गाँव में किसी के मकान में चलकर रहो।"

"जहाँ ये ले जोयेंगे, चलूँगी।" गुरमीत ने अपने पति की ओर संकेत कर कह दिया।

पंडित जी ने घर से बाहर निकलते हुए गोपाल को कहा, "चौधरी जी, सावित्री का पता करना चाहिये। मुझे भय है कि वह सरोवर में जाकर डूब न मरी हो।"

बाहर निकलते हुए गोपाल ने कह दिया, "अब आप हमारे घर चलिये। शेष बात वहाँ बैठकर विचार करेंगे।"

"मोहन ने पंडित जी का संकेत पा गाँव के कुछ युवकों को राम के मकान की रखवाली के लिये बैठा दिया। गोपाल का कहना था, "राम! तुम मकान को ताला लगा हमारे घर चले आओ। तुम्हारी और तुम्हारी पत्नी की रक्षा वहाँ भली-भांति हो सकेगी।"

11

गाँव के लोग अपने-अपने घरों को जाने लगे थे। रामलुभाया और गुरमीत कौर गोपाल के घर चलने की तैयारी करने लगे। मोहन गुरु जी को पिता से पृथक् ले जाकर बताने लगा, "गुरु जी एक बात और हो गयी है।"

"क्या?"

"अपने घर से सोहन भी लापता है"

यह सुन पंडित जी चलते-चलते खड़े हो प्रश्न-भरी दृष्टि से मोहन का मुख देखते रह गये। मोहन ने आगे कह दिया, "मैं जानता हूँ कि सावित्री उसके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, परन्तु गुरु जी यह बाबा को अभी ज्ञात नहीं। मैं उनको बताने वाला था और इधर यह झगड़ा हो गया तो बता नहीं सका।"

"इसका अर्थ यह है कि सावित्री भाई को बताये बिना भागी है और सोहन अपने पिता को बताये बिना। परन्तु तुम यह कैसे जानते हो?"

दोनों गोपाल के घर की ओर जा रहे थे। गोपाल रामलुभाया के घर का प्रबन्ध करने पीछे रह गया था। मोहन ने सोहन की वकालत करने के लिये कह दिया, "गुरु जी! सोहन और सावित्री ने गन्धर्व विवाह कर लिया था। दोनों ने स्वीकार किया था। कल उसका भाई जब अपना विवाह करने चला था तो उसने बहिन का विवाह बरियाम सिंह से करने की बात बताई थी। इस कारण वह भागी-भागी सोहन के पास आई। दोनों ने राय की। माँ सोहन का विवाह सावित्री से करना नहीं चाहती थी। मैंने यह समझा कि इन दोनों का सम्बन्ध बन ही चुका है, अब बरियाम सिंह विवाह करने आयेगा तो हत्यायें भी हो सकती हैं और माँ को समझाने का भी अभी समय नहीं है। इस कारण उन दोनों को यहाँ से भाग जाने में सहायता कर दी। वे रात के लगभग दस बजे यहाँ से गये थे। रामलुभाया घर पर उनके जाने के उपरान्त आया है।"

"परन्तु तुमको अपने माता-पिता को तो बता देना चाहिये था?"

"मैंने सोहन के लापता होने की बात तो माँ और बाबा से बताई है। सावित्री के भागने की बात बतानी मेरे अधिकार में नहीं थी। परन्तु अब तक तो पिता जी सब समझ चुके होंगे।"

पंडित ब्रजलाल गम्भीर भाव में गोपाल के घर में जा पहुँचे और मोहन के साथ बैठक-घर में चले गये। पंडित जी ने एक उच्चासन पर बैठते हुए कहा, "और तो सब बात ठीक है। केवल दोनों अभी कानून की दृष्टि में अल्प-व्यस्क हैं। वे अपना विवाह स्वयं नहीं कर सकते। गन्धर्व विवाह तो व्यस्क ही कर सकते हैं।"

"यह तो ठीक है, पर गुरु जी। यह विशेष धर्म ही तो है। यह विशेष परिस्थिति में हुआ। इसमें अपवाद भी तो हो सकते हैं। देखना यही है कि इनकी विशेष परिस्थिति में आज का धर्म लगना चाहिये अथवा नहीं?"

"हाँ। हम सरकारी कानून की भांति शुष्क काष्ठ की सी बुद्धि तो रखते नहीं। हमें देखना ही चाहिये कि उनकी विशेष परिस्थिति में उनका व्यवहार क्षम्य है अथवा नही।"

"जी। सोहन ने एक दिन पूर्व मुझे बताया था कि वह सावित्री से विवाह करना चाहता है। मैंने रामलुभाया को कहा था कि उसे सावित्री का विवाह कर देना चाहिये। वह तैयार था, परन्तु वह चाहता था कि उसके विवाह का भी प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाये। मैंने उसको कहा था कि मैं उससे फिर मिलूँगा। मैंने बाबा और माँ से बात की। माँ सावित्री से मिलने गयी। सावित्री ने अपने सोहन से सम्बन्ध का सत्य स्वरूप माँ को बताया तो उनको क्रोध चढ़ आया और वह इस विवाह की स्वीकृति नहीं दे सकी। मैं आशा करता था कि कुछ ही दिन में माता जी को मना लूँगा। मैं कहूँगा कि बरियाम सिंह अपनी बहिन का विवाह करने को तैयार हो गया था और उसके प्रतिकार में सावित्री को विवाह में माँग रहा था।

"शेष तो आप जान गये हैं। सोहन कह रहा था कि यदि बरियाम सिंह सावित्री को विवाहने आयेगा तो वह उसकी हत्या कर देगा और सावित्री कह रही थी कि यदि किसी अन्य से उसका विवाह करने का यत्न किया गया तो वह जल मरेगी।

"इस कारण मुझे यही समझ आया कि दोनों को गाँव से भाग जाने में सहायता दे दी जाये।

पंडित ब्रजलाल अभी जान नहीं सका था कि मोहन ने क्या सहायता दी है? इस समय गोपाल, रामलुभाया और उसकी पत्नी को लेकर आ गया। गोपाल ने पंडित जी को बैठक में बैठे देखा तो वहीं चला आया। आते ही उसने कहा, पंडित जी। मैं समझता हूँ कि सावित्री के लापता होने में किसी मेरे अपने का ही हाथ है। इस कारण मैं इस अधर्माचरण पर लज्जित हो रहा हूँ।"

"हाँ, मोहन भी कुछ ऐसी ही बात बता रहा है, परन्तु मुझे यह अधर्माचरण लगा नहीं। यह नियम के कुछ विपरीत अवश्य है, परन्तु इसे अधर्म कहने से संकोच होता है।"

"तनिक मुझे समझा दीजिये।"

भगवन्ती नयी लड़की को घर में आई देख उसके विषय में जानकारी प्राप्त कर रही थी। लाल और माणिक भोजन कर खेत को जाने की तैयारी में लगे थे। राम खेतों को चला गया था। गेहूँ के खेत पककर कटाई के लिये तैयार थे। श्याम अपने साथ कुछ कामों को ले कटाई में लगा था। मोहन का विचार था कि कटाई के दिनों में परिवार के साथ खेतों में काम करेगा, परन्तु आज गुरु जी के घर होने के कारण बैठक में ही बैठा था। साथ ही वह सोहन के विषय में कुछ करना चाहता था।

पंडित ब्रजलाल गोपाल को समझाने लगा। उसने बताया, "चौधरी। सोहन सावित्री को लेकर भाग गया है। मुझे मोहन से पता चला है कि दोनों का परस्पर पति-पत्नी बनने का वचन हो चुका था। इस कारण मैं समझता हूँ कि शास्त्रानुसार दोनों का गन्धर्व विवाह हुआ है, परन्तु यदि राम अपनी बहिन का विवाह उसकी इच्छा के विपरीत करने वाला न होता तो यह गन्धर्व विवाह उनके वयस्क होने तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वीकार न किया जाता। परन्तु राम के अनिच्छित कार्य की सम्भावना का अनुमान लगा सावित्री का घर से भाग जाना ही उचित था। वह अकेली भाग नहीं सकती थी। इस कारण सोहन का यह स्वाभाविक अधिकार था कि उसके साथ जाता।

"विवाह की आयु का नियम एक विशेष धर्म की बात है। यह अपरिवर्तनशील धर्म नहीं। स्थिति बदलने के साथ यह धर्म के विपरीत नहीं। वर्तमान परिस्थितियों में यह क्षम्य है।

गोपाल मुख देखता रह गया। वह पंडित जी की बात का उत्तर नहीं दे सका, परन्तु इसे स्वीकार भी नहीं कर सका। उसने कहा, "पंडित जी। छोटी आयु में विवाह तो माता-पिता की रज़ा-मन्दी से ही होना चाहिये न?"

"हाँ। यदि समय होता कदाचित् यह उच्छृंखलता न होती। दोनों के पास समय कम था। इस हाल में बड़ों की स्वीकृति नहीं ली जा सकी। यह उच्छृंखलता अवश्य है, परन्तु अधर्माचरण नहीं। यह भी विवशता में हुई है।"

"पर, पंडित जी। मैं तो दोनों के समागम की बात कर रहा हूँ। उनके यहाँ से भागने की नहीं। समागम तो अधर्माचरण ही था।"

"हाँ। यह कहा जा सकता है; परन्तु मैं समझता हूँ यह भगवान ने ही कराया है। यदि यह न हुआ होता तो कदाचित् सोहन उसको बरियाम सिंह से बचाने के लिये तैयार न होता। मैं तो यह कह रहा हूँ कि उस आपत्ति के परिणामों को देखकर उसको धर्म की ही संज्ञा दी जायेगी।"

गोपाल मौन हो गया। वह जानता नहीं था कि सावित्री के बरियाम सिंह से बचने को अधर्म कैसे सिद्ध करे? उसे मौन देख ब्रजलाल ने कह दिया, "इस समय मुख्य बात यह है कि इन दोनों को अब कहाँ ढूंढ़ा जाये और उनको प्रयत्क्ष रूप में किये अधर्म के लिये प्रायश्चित कैसे कराया जाये?"

अब मोहन ने वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "पहली बात तो यह है कि सावित्री को रामलुभाया क्षमा करे और सोहन को बाबा और माँ।"

"पंडित जी को सन्देह हुआ कि मोहन जानता है कि वे कहाँ छुपे हुए हैं। कदाचित् उनको छुपाने में ही उसने सहायता की है। इस कारण मोहन के सुझाव को उन्होंने गोपाल से पूछ लिया, "हाँ, तो चौधरी जी। यदि आप समझ गये हैं कि यह अधर्म नहीं हुआ, केवल अनियमित बात हुई है तो उसे क्षमा कर दिया जाये जिससे उसको ढूंढने और वापिस बुलाने में सहायता मिल सके।"

गोपाल ने अब अपने मन की बात कह दी, "मैं तो कल यह जानने के उपरान्त भी कि सावित्री ने सोहन से सहवास किया है उसको घर लाने लिये तैयार था, परन्तु घर के कार्यों में भगवन्ती का अधिकार है। सोहन की बहू ने रहना उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साथ ही है। हम तो घर से बाहर के जीव हैं।

"कलावती के विषय में भी उसी की ही चली थी। वह कलावती को सीता की तुलना में अच्छा समझती है। इसीलिये वह राज़ी हुई तो मुझे भी मानना पड़ा।"

पंडित जी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और चौधरी ज़ी। तुम कलावती को सीता से घटिया मानते हो?"

गोपाल ने हंसते हुए कहा, "पंडित जी। अब तो बात हो गयी। अब इस प्रश्न से क्या लाभ होगा?"

"हाँ। मोहन को जयमाला पड़ी तो अब उतर सकेगी नहीं। इस पर भी इस ब्राह्मण सन्तान को कदाचित् एक जाट सन्तान से कुछ अक्ल की बात पता चल जाये।"

"पर यह अक्ल की बात होती तो भगवन्ती भले ही मान जाती पर हमारे घर में सबसे अधिक पढ़ा मोहन इस सम्बन्ध को स्वीकार न करता। अपने मन की बात यदि आप कहते हैं तो मैं बताने में हानि नहीं समझता। मुझे कलावती के इस घर में भेजे जाने से उस पर दया आ रही थी। हम उससे बहुत छोटे हैं।"

"नहीं, नहीं, चौधरी। आप देखेंगे कि वह दया की पात्रा नहीं है, वरन् सौभाग्यशालिनी सिद्ध होगी।"

"पर इस विषय में तो भगवन्ती से ही पूछना पड़ेगा। जानते हैं, सावित्री को भी उसकी ही बहू बन कर रहना होगा।"

"तो बुला लीजिये उसे भी। मैं इस झमेले का निर्णय कर ही जाना चाहता हूँ।"

भगवन्ती के मन में परिवर्तन हो चुका था। जब आई तब तक वह गुरमीत कौर और रामलुभाया से पूर्ण बात सुन चुकी थी। यद्यपि वह सावित्री को अपने बच्चों में रखने के लिए तैयार नहीं हुई थी, इस पर भी अब उसका विरोध इतना नहीं रहा था, जितना पिछले दिन सावित्री की बात सुनकर हुआ था।

अतः जब वह आकर पंडित जी के सामने बैठी तो बात पंडित जी ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "समधिन! यहाँ सब का विचार है कि सोहन ही सावित्री को भगाकर ले गया है।"

"मुझे तो विश्वास हो गया है कि यह धृष्टता उसी ने की है।"

"हम उसको ढूंढने का यत्न करना चाहते हैं, परन्तु उससे पहले यह जानना चाहते हैं कि वे दोनों इस घर में क्षमा पा सकेंगे क्या?"

"इनाम के योग्य न सही, क्षमा के योग्य तो वे हैं ही।" भगवन्ती ने कह दिया।

"इनाम तो उसको मिल ही रहा है।" पंडित जी ने कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इनाम? मालूम होता है, पंडित जी, वह आपके घर में ही कहीं छुपा हुआ है?"

"मेरे पास आता तो मैं उसे छुपाने का यत्न ही न करता। अब तक वे दोनों पति-पत्नी के रूप में गाँव में विख्यात हो चुके होते। देखो, समधिन! सोहन ने एक क्षत्रिय का काम किया है। यह अर्जुन द्वारा सुभद्रा का अथवा कृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण ही माना जा सकता है। अर्जुन के विषय में भी पहले तो यादव रुष्ट हुए थे, परन्तु पीछे वे प्रसन्न हो गये थे।"

"पर पंडित जी। सोहन ने इस अपहरण से पूर्व कुछ किया था।"

"मुझे मोहन ने बताया है। परन्तु उसके लिए वह क्षमा माँगेगा और मेरी राय मानेगा तो उसे इसका प्रायश्चित करना होगा।"

"तो ऐसे कर्म का भी प्रायश्चित हो सकता है?"

"प्रायश्चित तो ब्रह्म-हत्या का भी है। यह तो जवानी में किया गया एक अनियमित काम था और उसके कारण जो उपकार हो गया है उससे तो वह एक धर्मात्मा जीव बन गया है।"

भगवन्ती सब बात सुन आई थी। वह बरियाम सिंह की प्रकृति और रूप-राशि के विषय में जान चुकी थी। इस कारण वह मान गयी। उसने कहा, "पंडित जी। जब आप ही उसकी सिफ़ारिश करने लगे हैं तो फिर मैं कैसे न कर सकती हूँ।"

बात बन गयी। पंडित ने कहा, "तो मैं उसका पता करने का यत्न करता हूँ।" मोहन ने पंडित जी से कहा, "और रामलुभाया से भी तो पता करना चाहिये?"

"वह कहाँ गया है?"

"भगवन्ती ने बताया, "वह राम के साथ खेतों में काम करने चला गया है।"

"चलो मोहन। उससे वहीं पता कर लेते हैं।"

ये दोनों उठे तो भगवन्ती ने पूछा, "पर, पंडित जी। वे दोनों हैं कहाँ?"

"क्यों, किसलिये पूछ रही हो भगवन्ती बहन?"

"मैं उसके कान खींचना चाहती हूँ। उस गधे को यहाँ आकर छुपना चाहिये था?"

पंडित जी मुस्कराते हुए बोले, "कान खिंचवाने के लिये ही तो उसे लाना चाहता हूँ, पर मैं तो इतने मात्र से सन्तोष नहीं करूँगा।"

"तो और क्या करायेंगे उससे?"

"उन दोनों का सात दिन तक व्रत रखवाऊंगा। गायत्री मंत्र का जप करवाऊंगा और फिर ब्राह्मण हूँ, कुछ हवन, यज्ञ, दान-दक्षिणा भी तो करवाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

सोहन के लाहौर से लौटने तक मोहन के कलावती से विवाह की बात गाँव में फैल गयी। गाँव वाले इन दोनों सम्बन्धों में गोपाल के धन-दौलत का हाथ ही मानते थे। सब यही विचार कर रहे थे कि मोहन और कलावती का भी सम्बन्ध वैसे ही बन चुका होगा जैसे सोहन ओर सावित्री का है।

बरियाम सिंह नगर को वापिस चला गया और उसके स्थान एक अन्य बहुत बड़ी आयु का ग्रन्थी वहाँ आ गया था। सरदार सुरजीत सिंह सत्तर वर्ष की आयु का एक बहुत ही रोब-दाब वाला व्यक्तित्व रखते थे। एक फुट लम्बी दूध समान श्वेत दाढ़ी में उनका ओज-पूर्ण मुख सूर्य के समान चमकता था। उनकी वाणी में भी रस था और जब गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ करते थे तो श्रोता गण (संगत) मंत्र-मुग्ध की भांति उनके कथन को सुनते रहते थे।

बरियाम सिंह की बहिन रामलुभाया के पास ही रह गयी थी। सोहन गाँव में आया तो उसका सिर मुंडा दिया गया और उसे तथा सावित्री को सात दिन तक एक बार दूध और सील के लड्डूओं के भोजन पर रहने के लिये विवश किया गया। दोनों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दे जप कराया गया। तदनन्तर उनका विधि-पूर्वक विवाह किया गया।

गाँव में यह हलचल अभी चल ही रही थी कि सुन्दरलाल के घर में भारी झगड़ा चला। मोहन की सगाई का समाचार सुन्दरलाल ही घर लाया था। जब उसने यह समाचार अपनी पत्नी को सुनाया तो शान्ति क्रोध से लाल-पीली होने लगी। उसने कहा—

"अब लड़की का घर में अचार डालेंगे!"

"पर मैं क्या कर सकता हूँ इसमें? मैं तो रुपया खर्च करने के लिये भी तैयार था। तुम्हारी लड़की ही नहीं मानती थी। मैं आज से एक वर्ष पहले ही कहा था कि सीता का संयोग मोहन से ही प्रतीत होता है, परन्तु तब तुम नहीं मानती थी।"

"पर बात तो मेरी ही सत्य सिद्ध हो रही है। यदि सीता के साथ संयोग बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता, तो पंडित जी की लड़की से सगाई की बात नहीं होती।"

"पर मैं तो इस बात की आशा स्वप्न में भी नहीं करता था।"

"किसकी?"

सुन्दरलाल ने विचार कर कहा, "कलावती से सगाई की। मोहन सीता के लिये ही तो गाँव की लड़कियों से विवाह नहीं कर रहा था। मोहन को एक के बाद दूसरी लड़की के साथ सगाई करने से इन्कार करते देख मैं यही समझा था कि उसके मन में सीता बसी हुई है। इसी कारण मैंने तुमसे कहा था कि सीता का संयोग जाटों के घर में ही प्रतीत होता है, परन्तु यह क्या हो गया है? मैं तो इसे समझ भी नहीं सका। मेरी धारणा के विपरीत गाँव भर में यह चर्चा हो रही है कि गोपाल के दोनों लड़कों ने भले घर की लड़कियों पर डाका डाला है।"

शान्ति ने कह दिया, "मैं तो यह समझी हूँ कि ऐसी बात नहीं है। मोहन और सोहन में अन्तर है। मोहन एक विद्वान् ब्राह्मण की लड़की पर फिसल गया है। मेरा मन कहता है कि वह अब भी सीता को ही पसन्द कर रहा है और यदि उसका बस चला तो वह सीता को भी घर में डाल लेगा।"

"यह तो बहुत बुरी बात होगी।"

"यदि यह है तो उसका अब तुरन्त विवाह कर देना चाहिये।"

"कैसे कर दूँ?"

"सब प्रबन्ध चोरी-चोरी कर बारात बुला लो और फिर लड़की को आग के फेरे दे विदा कर दो।"

"और यदि फिर उसने भूख हड़ताल कर दी तो?"

"मैं समझती हूँ कि अब नहीं करेगी।"

"सब बात बताकर उसको पूछ लो। इस भूख हड़ताल से तो सरकार भी डरती है। तभी तो गांधी जी ने अनशन किया तो सरकार ने उसे छोड़ दिया। पिछली बार यही तो हुआ था। जब उसने अन्न लेना बन्द किया तो हमने विवाह का विचार स्थगित कर दिया। कहीं फिर वही बात हो गयी तो?"

"मैं उससे बात करती हूँ।"

"उसे यहाँ बुला लो।"

शान्ति उठी और सीता को बुलाने चली गयी। वह अपने कमरे मे बैठी रामायण स्वर सहित पढ़ रही थी।

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी। मातु बिपति संगिनी तैं मोरी॥
तजौं देह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहिं सहि जाई॥
आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुने को श्रवन सूल सम बानी॥

सीता का मुख दीवार की ओर था उसके सम्मुख राम, सीता और लक्ष्मण का चित्र टंगा हुआ था। शान्ति आई तो सीता के पीछे खड़ी हो सुनने लगी। सीता की आवाज़ अति मधुर, कोमल और उच्चारण अति स्पष्ट था। माँ ने पहले कई बार सीता से पढ़ी जाती हुई रामायण सुनी थी और वह इसकी भाषा को कुछ-कुछ ही समझती थी।

उसने धीरे से कहा, "सीता।"

सीता ने पुस्तक से सिर उठाया और फिर घूम माँ की देखा। माँ ने भी सीता को देखा। उसकी आँखें और गाल आंसुओं से भीगे हुए थे।

शान्ति ने पूछ लिया, "यह क्या पढ़ रही थी?"

सीता ने आंचल से आँखें और गाल पोंछते हुए कहा, "कुछ काम है? माता जी।"

"तुम्हारे पिता जी बुला रहे हैं।"

सीता ने पुस्तक बन्द की और उठ खड़ी हुई। उसने पुनः आँखें और गाल पोंछते हुए पूछ लिया, "क्या काम है?"

माँ ने उसके प्रश्न का उत्तर देने के स्थान पर पूछ लिया, "रो क्यों रही थी? क्या था उसमें?

सीता ने कमरे से निकलते हुए कहा, "माँ। यह सीता का विलाप था।"

"सीता का विलाप?"

"हाँ माँ! वे त्रिजटा को कह रही थी कि उसके लिए चिता लगवा दे और जब वह उस पर बैठ जाये तो उसे आग लगा दे जिसमें वह इस वियोग के जीवन को समाप्त कर दे। उससे अब सहन नहीं हो रहा।"

शान्ति वह प्रसंग लड़की से पहले कई बार सुन चुकी थी, परन्तु उसे इसमें विशेष अर्थ समझ आने लगे थे।

इस समय वे लाला के पास जा पहुंची। दोनों बैठी तो सुन्दरलाल ने कह दिया, "देखो सीता! अभी अभी एक समाचार सुनकर आ रहा हूँ।"

सीता मौन बैठी सुन रही थी। सुन्दरलाल ने कुछ विचार कर कहा, "मोहन की सगाई पंडित ब्रजलाल की लड़की कलावती से हो गयी है।"

सीता अभी भी मौन बैठी थी। शान्ति देख रही थी कि उसकी आँखें पुनः डबडबा आयी हैं। सुन्दरलाल ने कुछ ठहर कर पुनः कहा, "मैंने तो तुम्हारा कहा मान मोहन के पिता के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था, परन्तु एकाएक यह समाचार मिला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अभी इसके समाचार का समर्थन प्राप्त करने के लिये ब्रजलाल जी से मिलने गया था। पंडित जी मिले हैं। उनके घर में सगाई का शकुन देने की तैयारी हो रही है। कलावती के नाना, नानी, मामा, मामी और मामा के लड़के तथा मौसियां आई हुई हैं।

"पंडित जी ने मेरे वहाँ आने का कारण पूछा तो मैंने उल्टा पूछ लिया, "ये तैयारियां किस बात की हैं?'

"वे बोले, 'हम कलावती की सगाई का शकुन दे रहे हैं।' उन्होंने बताया, 'गोपाल के लड़के मोहन के साथ निश्चय किया है।'

"सीता! मैं समझता हूँ कि अब तुमको भी विवाह के लिये तैयार हो जाना चाहिये।"

सीता के आंसू गालों पर लुढ़क रहे थे। वह अब उनको पोछ नहीं रही थीं। कदाचित् उसे उनका ज्ञान ही नहीं था। जब सुन्दरलाल कह चुका तो पति-पत्नी दोनों सीता के कहने की प्रतीक्षा करने लगे। सीता कितनी ही देर तक बैठी आंसू बहाती रही।

सुन्दरलाल को लड़की की इस दशा को देख दया आने लगी। वह भी उसके दुःख और निराशा को अनुभव करने लगा था। वह कुछ अधिक कह नहीं सका। शान्ति कुछ देर तक तो मौन बैठीं रही, परन्तु वह पूछने ही वाली थी कि सीता अब क्या करेगी? उसके मन में रामायण की वह चौपाई आ रही थी–

'आनि काठ रचु चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहि लगाई॥'

वह इसको विचार कर चुप रह गयी।

आख़िर सीता ने अपने पिता की ओर देखकर पूछा, "तो मैं जाऊँ?"

"तो ठीक है न?"

सीता ने कुछ उत्तर नहीं दिया और अपने कमरे को चल दी। उसके चले जाने पर सुन्दरलाल ने पत्नी से पूछा, "अब क्या कहती हो?"

"मैं क्या कहूँ? किसी अच्छे से निर्धन लड़के को देख उससे इसका विवाह कर दो। जो कुछ दहेज में देना है वह उसे पूंजी के रूप में देकर कारोबार करा दो।"

"यह तो तुम पहले भी कहती थीं, परन्तु इसमें दो बाधायें थीं। एक तो निर्धनों के पुत्र सुन्दर होते नहीं। दूसरे धनी-मानी दहेज माँगते हैं, जिसके विपरीत सीता सत्याग्रह करना आरम्भ कर देती थी।

"साथ ही मैं यह विचार करता हूँ कि भाग्यहीन ही निर्धन होते हैं। उनको धन दिया भी तो वह दो चार वर्ष में सब चट्टम कर देगा और फिर दामाद बोझा बन जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परन्तु अब स्थिति बदल गयी है और मैं समझती हूँ कि सीता मान जायेगी।"

"तब मैं कल प्रातः ही नगर में जाऊँगा। बनवारी लाल के लड़के गिरधारी की बात निश्चय कर सकता हूँ। उसको कुछ अधिक देना भी नहीं पड़ेगा।"

"हाँ, तो जाईये।"

"पर तुम उसको समझाओ कि मोहन भगवान् नहीं है। उससे बहुत अच्छे-अच्छे लड़के संसार में हैं। हम अपनी ओर से पूरा पूरा यत्न करेंगे कि अच्छा से अच्छा वर उसे मिल जाये।"

2

प्रातःकाल उठ स्नान ध्यान कर और अल्पाहार ले सुन्दरलाल ने दुकान पर चुन्नी लाल को बैठाया और नगर को चला गया।

माँ ने सीता को बुलाया, "आओ, अल्पाहार ले लो।"

सीता आयी। इस समय वह चित्त से स्वस्थ प्रतीत होती थी। वह देखने मे प्रसन्न और चित्त में शान्त थी वह रसोईघर में आकर बैठो तो शान्ति ने उसके सामने थाली में पूरी और साग रखते हुए कहा–

"चीनी लोगी अथवा आचार?"

"चीनी।" सीता ने स्थिर स्वर में कहा।

शान्ति समझी कि अब वह ठीक मनःस्थिति में है। इस कारण उसने उसको बताने के लिये कह दिया, "तुम्हारे पिता आज नगर को गये हैं।"

सीता इस कथन का अर्थ समझती थी। इस पर भी वह चुप रही और पूरी खाने में लगी रही। जब वह दो पूरी खा चुकी तो माँ ने पूछा, "और दूँ?"

"नहीं माँ।" वह उठी। परनाले पर जा लोटे में से पानी ले, उसने हाथ धोये और हाथ पोंछ माँ के सामने आ खड़ी हुई। माँ ने समझा कि वह उससे कुछ कहना चाहती है। इससे वह उसके मुख पर देखने लगी। सीता ने अपने कुर्ते की जेब में से एक काग़ज़ का टुकड़ा निकाला और माँ से कहा,"माँ! इसे चुन्नी से पढ़ा लो।"

"यह क्या है?" माँ ने काग़ज़ पकडते हुए पूछ लिया।

"कुछ है। मेरे विषय में है।" इतना कह वह घूम अपने कमरे की ओर चल पड़ी।

माँ हिन्दी पढ़ी नहीं थी। वह कुछ-कुछ गुरमुखी जानती थी। अतः वह उठी ओर चुन्नी से चिट्ठी पढ़वाने चल पड़ी। घर के भीतर से ही दुकान को मार्ग जाता था। माँ उस मार्ग पर जाकर चुन्नी को आवाज़ देने लगी। चुन्नी की आवाज़ आयी, "आया माँ। तनिक ठहरो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
माँ ने झाँककर देखा कि दुकान पर कौन है?

गोपाल वहाँ खड़ा था। चुन्नी कुछ रुपये गोपाल को दे रहा था। चुन्नी की माँ समझ गयी कि मोहन की सगाई के समय व्यय करने के लिये वह कुछ रुपये लेने आया है।

माँ वहाँ मार्ग में ही खड़ी प्रतीक्षा करती रही। चुन्नी को दस मिनट लगे। उसने एक सौ रुपया गोपाल को दिया था। गोपाल ने रौली, मौली, नारियल, छुहाड़े इत्यादि सामान भी लिया। इस सब काम में दस मिनट लग गये। जब गोपाल सामान लेकर गया तो चुन्नी उठ दुकान से घर के मार्ग में आया और बोला, "हाँ, क्या है माँ?"

"यह पढ़ो, क्या लिखा है?"

मार्ग में अन्धेरा था। इस कारण चुन्नी घर में आ गया और प्रकाश में खड़ा हो वह पढ़ने लगा।

"माँ! यह तो सीता का लिखा है।"

"हाँ, पढ़ दो।"

चुन्नी पढ़ने लगा। उसमें लिखा था, "माँ। मैं कहती हूँ कि मेरा अब विवाह नहीं होगा। इस कारण मैं अब घर में क़ैद नहीं रहूँगी। मैं आज कलावती से मिलने जा रही हूँ। उसकी सगाई है और मैं उसे बधाई देना चाहती हूँ।"

"पिता जी से कह दो अब मेरे विवाह के लिये भाग-दौड़ करने की आवश्यकता नहीं।"

चुन्नी ने पढ़ा और माँ का मुख देखने लगा। उसने पूछ लिया, "माँ क्या हुआ है?"

"मोहन की सगाई हो रही है न।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"हुआ तुम्हारा सिर...।" माँ ने पत्र उसके हाथ से ले लिया और सीता के कमरे में चली गयी। कमरे का द्वार खुला था और सीता वहाँ नहीं थी। वह समझ गयी कि वह कलावती के घर गयी है। उसने घर का पिछला द्वार जो प्रांगण में खुलता था, देखा तो वह भी खुला पड़ा था।

एक क्षण तक वह अपने कर्त्तव्य पर विचार करती रही। उसे यह निश्चय करने में देर नहीं लगी कि उसे सीता के पीछे जाना चाहिये। अतः वह अपने कमरे में आयी और कपड़े बदल लहंगा पहन, चुन्नी और ऊपर चादर ओढ़ पंडित जी के घर को चल पड़ी। जाते हुए वह द्वार को बाहर से ताला लगा गयी।

पंडित जी के द्वार पर गाँव का नाई हाथ में छोटे-छोटे छैने पकड़े खड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कलावती का मामा एक बड़ा सा थाल जो लाल रेशमी कपड़े से ढका हुआ था, पकड़े था। कलावती का नाना और घर के अन्य लोग श्वेत कपड़े पहिने गुलाबी रंग की पगड़ियां बांधे खड़े थे।

शान्ति वहाँ पहुंची तो सबने उसके भीतर जाने के लिए मार्ग छोड़ दिया। शान्ति भीतर गयी। कलावती की माँ गुलाबी रंग की चादर ओढ़े खड़ी थी। कलावती और सीता वहाँ नहीं थीं। शान्ति को आया देख गार्गी ने आगे आ हाथ जोड़ पूछ लिया, "तो शान्ति बहिन! तुम भी आयी हो?"

"हाँ कहाँ है कलावती?"

"भीतर अपनी सहेलियों के पास बैठी है। सीता भी वहाँ ही है।"

अन्दर कलावती की सहेलियाँ और सीता भी खड़ी थी। कलावती दीवार के साथ सहारा लिये बैठी थी।

जब शान्ति वहाँ पहुंची तो सीता एक क्षण के लिये घबराई, परन्तु तुरन्त ही अपने को सम्भाल कर माँ के पास आ पूछने लगी, "माँ! तुम नहीं चलोगी?"

"कहाँ!"

"कलावती की ससुराल। उसका शकुन जा रहा है न?"

"तो तुम जा रही हो?"

"हाँ। मेरी चिट्ठी पढ़ा कर सुनी है अथवा नहीं?"

"सुनी है, परन्तु...।" शान्ति कहती-कहती रुक गयी।

"परन्तु क्या? मोहन जी के घर नहीं जाना चाहिये न?"

"हाँ।" माँ ने झिझकते हुए कहा।

"मैं मोहन जी के घर नहीं जा रही। मैं मोहन के बाबा के घर जा रही हूँ और कलावती के सम्बन्धियों के साथ।"

"तो चलो। मैं भी चलती हूँ।"

सीता चुप रही। कुछ विचार कर शान्ति ने कहा, "पर, तुम मुझे कहती तो मैं तुम्हारे लिए बढ़िया कपड़े निकाल देती।"

"क्या होता उनसे? वह तो विवाह कराने वाली लड़कियाँ पहनती हैं। इस पर भी मैं अन्य सब लड़कियों से अच्छे वस्त्र पहिने हुई हूँ।"

इस समय गार्गी भीतर आई और सब लड़कियों को चलने के लिए तैयार देख बोली, "तुम भी चल रही हो?"

"हाँ।" सीता ने कहा।

"तो जल्दी करो। मर्द लोग चल पड़े हैं।"

सब लड़कियाँ बाहर निकल आईं। ये आठ दस थीं। शान्ति भी साथ थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गार्गी और उसकी भावज तथा भतीजियां इस जमघट के साथ मिल गयीं। सब गोपाल के घर की ओर चल पड़ीं।

मार्ग में चलते हुए शान्ति ने गार्गी से कहा, "पंडितायिन! गाँव की अन्य किसी औरत को नहीं बुलवाया?"

"शान्ति बहिन! मैंने तो तुमको भी नहीं बुलाया था। बात यह है कि गाँव के लोग हमारी निन्दा कर रहे हैं। विशेष रूप में स्त्रियाँ। इस कारण मैंने किसी को भी नहीं बुलाया, पर जब तुम स्वेच्छा से आ गयी हो तो तुम्हारा स्वागत करती हूँ।"

"बहिन।" शान्ति ने कह दिया, "सीता के पिता स्वयं मोहन को श्रेष्ठ मान सीता उसे देने को तैयार हो गये थे। यह तो संयोग की बात है। जिसके भाग्य में जो होता हैं वह हो जाता है।

"सीता ने कहा कि वह कलावती के घर बधाई देने जायेगी। मैं भी उसके साथ ही चली आई हूँ।"

सब स्त्रियाँ गोपाल के घर के सामने जा पहुंची। पुरुष वहाँ पहले ही पहुँचे हुए थे। वे स्त्रियों के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। नाई गोपाल के द्वार पर खड़ा छैना खड़का रहा था।

द्वार पर रीति रिवाज पूरे किये गये तो वर पक्ष के लोग घर में चले गये। आज बैठक खूब सजायी हुई थी। दीवार पर देवी-देवताओं की तस्वीरें लगी थीं। छत के नीचे चांदनी टंगी थी। भूमि पर दरी, श्वेत चादर और उस पर बड़े-बड़े कई तकिये दीवारों के साथ-साथ लगे थे। बीचों बीच एक कालीन बिछा था। गोपाल सब के स्वागत के लिये घर के द्वार पर पहुँचा हुआ था। वह उनको प्रांगण में से निकाल कर बैठक घर में ले आया था। बैठक में मोहन गुलाबी पगड़ी बांधे वहाँ पहले ही खड़ा था।

गोपाल ने मोहन के ससुराल वालों को बैठक में एक ओर बैठा दिया। दूसरी ओर वह स्वयं जा बैठा। बिहारीलाल, लक्ष्मण दास, उसके लड़के तथा गोपाल के सात लड़के भी वहीं बैठे थे।

भगवन्ती जब स्त्रियों का स्वागत करने द्वार पर पहुंची तो उनमें शान्ति और सीता को देख वह चकित रह गई। सीता ने हाथ जोड़ 'पाय लागूं' की तो भगवन्ती ने उसे अपनी ओर खींचकर गले से लगा लिया।

"तो तुम भी आयी हो?"

"तो न आती? मौसी?"

"पगली। मैं तो पूछ रही हूँ कि तुम्हारी क़ैद टूट गई क्या?"

"टूटी नहीं मौसी। मैं क़ैदखाना तोड़ भाग आयी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा।" भगवन्ती ने शान्ति को भी देखा तो बांह में बांह डाल घर के भीतर ले गयी। शान्ति बहुत लज्जित थी। जब से भगवन्ती को पता चला था कि मोहन सीता से विवाह करना चाहता है, वह कई बार शान्ति से कह चुकी थी, "कर दो न सीता का विवाह। कौन मना करता है?"

शान्ति का उत्तर होता था, "उसके पिता नहीं मानते।"

इस पर भी वह आज प्रसन्न थी कि उसका लड़का सुन्दरलाल से भी अच्छे आदमी की लड़की से विवाह बन्धन में बंध रहा था।

सभी स्त्रियाँ इकट्ठी हो पुरुषों से एक ओर हट कर बैठ गयीं।

पंडित जी अपने श्वसुर के साथ सबसे आगे बैठे हुए थे। जब सब बैठ गये तो पंडित जी ने लड़के को सामने बैठाया और वेद मंत्रों से स्वस्ति वाचन करने लगे। जब वह मंत्र पाठ कर चुके तो उन्होंने थाल पर से कपड़ा उठाया और थाल के एक कोने में रखी कटोरी में से घिसे केसर को अंगूठे पर लेकर मोहन के तिलक लगा दिया। तिलक पर चावल लगाते हुए पंडित जी ने कहा, "मोहन! यह केशर और चावल कलावती ने दिये हैं। मैं उसका प्रतिनिधि बन तुम को तिलक दे रहा हूँ।"

इस पर लड़की के नाना, मामा और कलावती के भाई श्याम चरण ने तिलक लगाये। सब तिलक लगा-लगा कर थाल में से मिठाई उठा-उठा मोहन के मुख में डालते रहे।

इसी प्रकार स्त्रियों ने भी मोहन को मिठाई खिलाई। तदनन्तर पंडित जी ने थाल के एक कोने में रखी एक लाल कपड़े की बनी थैली उठायी और मोहन की झोली में रख कर बधाई दे दी।

रीति पूरी हुई और दोनों पक्ष बधाईयाँ स्वीकार करते हुए उठ खड़े हुए।

कलावती का भाई आजकल लाहौर में बी. ए. की प्रथम श्रेणी में पढ़ता था। वह भी इस अवसर पर आया हुआ था। मोहन उससे परिचित था। इस कारण मोहन ने आगे बढ़ हाथ जोड़ उसे सम्बोधन कर कहा, "सुनाइये, श्यामचरण जी! पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"मैं बैरिस्टर बनने के लिये विलायत जाना चाहता हूँ।"

"सत्य? तब तो भाई, तुम बहुत बड़े आदमी बन जाओगे?"

"मैं लाहौर में बैरिस्टरों की मान-मर्यादा देखता हूँ। मैं समझता हूँ कि उन से भी अधिक प्रतिष्ठा का पात्र मैं बन सकूँगा।"

मोहन कलावती के नाना पंडित भवानीशंकर के चरण स्पर्श कर सामने खड़ा हुआ तो उन्होंने उसकी पीठ पर हाथ फेरा और आशीर्वाद देकर कहा, "मोहन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अब तो तुमको पूर्ण रूप से ब्राह्मण कार्य आरम्भ कर देना चाहिये।"

"आप आज्ञा करिये। कैसे करूँ?"

"लाहौर में आकर मेरे पास दो मास तक रह जाओ। मैं तुमको स्वाध्याय का ढंग बता दूँगा। यह कार्य विवाह से पहले होना चाहिये।"

पंडित भवानी शंकर लाहौर 'ऑरिएण्टल कॉलेज' के प्राध्यापक थे। वे चाहते थे कि मोहन को पुस्तकालय रखने और प्रयोग करने का ढंग सिखा दें। साथ ही पढ़कर पुस्तक में से आवश्यक अंश निकाल कर उसके प्रयोग करने का ढंग भी वे उसे बताना चाहते थे।

मोहन ने पूछ लिया, "कब तक पहुंच जाऊँ?"

"कल ही चलो। अच्छे काम में देरी नहीं करनी चाहिये।"

मोहन ने स्वीकार करते हुए कहा, "बाबा से पूछ कर शीघ्र ही वहाँ आने का यत्न करूँगा।"

जब मोहन पंडित भवानी शंकर से बातें कर रहा था उस समय कलावती की माँ और कुछ अन्य स्त्रियाँ उसके पीछे आ खड़ी हुई थीं। मोहन जब पंडित जी से बात कर चुका तो पंडित जी ने कह दिया, "अपने पीछे देखो। तुमको आशीर्वाद देने के लिये अन्य लोग भी खड़े हैं।"

मोहन ने घूम कर देख तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, गार्गी देवी के साथ शान्ति और सीता भी थीं।

उसने गार्गी देवी को झुककर पाय लागूँ की और फिर शान्ति देवी से पूछने लगा, "मौसी मुझे आशीर्वाद दो न?"

शान्ति ने उसकी पीठ कर हाथ रख कर कह दिया, "तुम्हारे इस सम्बन्ध से घर के सब लोग बहुत प्रसन्न हैं और तुम्हारे लिये शुभकामना करते हैं।"

"लाला जी नहीं आये?"

"ये आज नगर को गये हैं।"

"उनको आज नहीं जाना चाहिये था।"

"पर तुमने उनको बुलाया भी तो नहीं था?"

"बाबा उनको बुलाने गये थे। उन्होंने आने का वचन दिया था।"

"सच? पर मुझे तो किसी ने नहीं बुलाया। मैं अपने आप आयी हूँ।"

"हाँ, मौसी! तुमको नहीं बुलाया। इसका कारण तो फिर कभी बताऊंगा। इस समय सबके बीच कहने की बात नहीं है।"

"तो तुम नाराज हो?"

"मेरे नाराज होने में कोई कारण नहीं। नाराज यदि कोई होगा तो वह हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है जिसको तुमने क़ैद कर रखा था।"

मोहन ने बात बदल कर सीता को हाथ जोड़ नमस्ते करते हुए कहा, "सीता बहिन! सुनाओ, प्रसन्न हो?"

इस समय भगवन्ती मोहन के पास आकर बोली, "मोहन! तुम्हारी ससुराल वाले जा रहे हैं। उनको प्रणाम कर विदा करो।"

बात समाप्त हो गयी। सीता को इससे सुख अनुभव हुआ। वह "सीता बहिन" का उत्तर अति कटु देना चाहती थी, परन्तु बात उसके मन में ही रह गयी। मोहन के चले जाने पर शान्ति ने कहा, "अब चलें?"

"हाँ, माँ। हम तो गुरु जी की ओर से आये हैं न? उनके साथ चलना चाहिये।"

3

सीता के विद्रोह कर घर से निकलने का एक परिणाम और हुआ। पंडित जी कलावती को वह शकुन का नारियल, छुहाड़े, पहिनने के कपड़े और सोने की चूड़ियां जो भगवन्ती ने उसके लिये दी थीं, देने आये तो कलावती की सहेलियां और सीता तथा उसकी माँ वहीं खड़ी थीं। जब पंडित जी ये वस्तुयें कलावती की झोली में रख चुके तो सीता ने आगे बढ़ पंडित जी को प्रणाम कर दिया।

"ओह सीता। सुनाओ, बेटी कैसी हो? बहुत दिनों के बाद तुम्हें देखा है।"

"मैं आप से यह जानना चाहती हूँ "सीता ने कहा, कि क्या मैं अब फिर पढ़ने आ सकती हूँ।"

"मैं मना कैसे कर सकता हूँ? परन्तु बेटी! माता-पिता से पूछकर ही आना चाहिये।"

"जी। उनसे पूछकर ही आऊंगी।"

"ठीक है। आ जाया करो।"

इसके उपरान्त सीता ने शान्ति से पूछा, "माँ। कब चलेंगे?"

बधाइयाँ दे माँ-बेटी लौट आयीं। घर पहुँच सीता माँ से पृथक् हो अपने कमरे में चली तो माँ ने पूछ लिया, "सीता! मैं तुम्हारी चिट्ठी का मतलब नहीं समझ सकी।"

"उसके समझने में कठिन बात तो कुछ नहीं थी। मैंने दो बातें लिखी थीं। एक यह कि मैं अब विवाह नहीं करवाऊंगी। पिता जी से कह दो कि अब मेरे विवाह के लिये भाग-दौड़ न करें। दूसरी बात मैंने यह लिखी थी कि मैं घर क़ैद नहीं रहूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे पिता आ जायें तो अपनी बात उनसे कह देना।"

"तो तुम नहीं कहोगी? माँ, बेटी का इतना-सा भी काम नहीं करोगी?"

शान्ति ने कुछ विचार कर कहा, "कह तो दूँगी, परन्तु मैं तुम्हारी बात मान नहीं सकती।"

सीता मुस्कराई और बोली, "माँ! इसमें तुम्हारे मानने को कुछ नहीं है। एक बात बाबा के मानने की है और शेष मेरे करने की है।"

"तुम क्या करोगी।"

"एक तो पंडित जी से पढ़ने जाया करूँगी। दूसरे मैं मौसी भगवन्ती से मिलने जाया करूँगी। घर में बैठे-बैठे मेरा दिल नहीं लग रहा।"

"मैं समझती हूँ कि तुम्हारा विवाह हो जायेगा तो तुम्हारा दिल लगने लगेगा।"

"विवाह तो अब होगा नहीं।"

"कैसे रोकोगी विवाह को!"

"विवाह के पूर्व ही यह शरीर छोड़ दूँगी।"

"तुम जानो और तुम्हारा बाप जाने। मैं इसमें दखल नहीं दूँगी।"

"माँ! मेरी बात पिता जी से कह देना। बस मैं और कुछ नहीं चाहती।"

इतना कह सीता अपने कमरे में चली गयी और शान्ति अपने पति के लौटने की प्रतीक्षा करने लगी। इस बार सुन्दरलाल अपने प्रयास में अधिक सफल हुआ। वह नगर से एक तांगा लेकर आया था। उसके साथ दो औरतें भी थीं। वह लगभग एक बजे गाँव में पहुँचा था और तांगे वाले को रोके हुए था जिससे औरतें वापिस जा सकें।

वह उन औरतों को घर की बैठक में बैठा, शान्ति से बताने चला गया कि वह किनको साथ लाया है? उसने शान्ति को, जो अपने कमरे मे चिन्ताग्रस्त बैठी थी, कहा, "लो भाग्यवान्। मैं बनवारीलाल की बहिन और बहू को ले आया हूँ लेन-देन की बात कर आया हूँ। बस लड़की को ये देख लें तो एक सप्ताह में विवाह हो जायेगा।"

"तो वे आ गयी हैं?"

"शान्ति ने समझा कि सीता को दिखा देना चाहिये। एक बार उसके ससुराल का निश्चय हो जाये तो फिर उस पर दबाव डालकर और पंडित जी तथा भगवन्ती से कहलवाकर मनवा लेगी। इस कारण वह उठी और सीता के कमरे में चली गयी। उसने कहा, "सीता। ज़रा अन्दर से नये कपड़े पहने कर मेरे साथ जाओ।"

"कहाँ?"

"यहीं बाहर के कमरे में।"

"वहाँ क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे सम्बन्धी आये हैं। यह शोभा नहीं देता कि कोई घर में आये और तुम अपने कमरे में पड़ी रहो। ज़रा उठो, पहले उनको प्रणाम करना। फिर उनके लिये दूध और मिठाई ले आना।"

"माँ! मैं आ रही हूँ, परन्तु इन्हीं कपड़ों में हानि नहीं समझती।"

माँ ने समझा कि कहीं उसकी मनःस्थिति न बदल जाये, इस कारण उसने मान लिया।

शान्ति बाहर आई तो दोनों औरतों को प्रणाम कर उनसे मिली। उनमें से एक ने कह दिया, मैं रत्न देवी हूँ। मैं लड़के की बुआ हूँ। हम ज़रा आपकी लड़की को देखने आये थे।"

"पर, बहिन जी!" शान्ति ने धीरे से कह दिया, "लड़की के सामने इस प्रकार की बातें न करियेगा और बातें कर सकती हैं, विवाह की बात तब तक ठीक नहीं, जब तक निश्चय नहीं हो जाता।"

इस समय सीता आ गयी। उसने बाहर से आयी औरतों को हाथ जोड़ नमस्कार किया। माँ ने कहा, "सीता, जरा जाओ तो। दो गिलास दूध और मिठाई ले आओ।"

सीता खड़ी-खड़ी ही रसोई में चली गयी। जब वह चली गई तो माँ ने कहा, "ज़रा उसे चलाकर दिखाना चाहती थी। लड़की रामायण बहुत मीठे स्वर में गाती है। कहो तो उसे कहूँ कि वह आपको पढ़कर सुनाये?"

"नहीं, बहिन जी। इसकी ज़रूरत नहीं। घर-गृहस्थी की बातें आनी चाहियें। पढ़ने से क्या होता है?"

शान्ति चुप रही। दूसरी औरत ने कह दिया, "मेरा नाम चानन देवी है। मैं लड़के की माँ हूँ। वैसे लड़की अच्छी सुन्दर है। हमें पसन्द हैं"

"सीना, पिरोना, खाना बनाना सब कुशलतापूर्वक करती है।" शान्ति चाहती थी कि सीता के आने से पूर्व ही वह उसकी प्रशंसा की सब बात कर दे, जिससे विवाह के विषय में कोई बात उसके सामने न हो सके।

इस पर चानन देवी ने अपनी प्रशंसा के पुल बांधने आरम्भ कर दिये। उसने बताया, "इस समय हमारी पांच दुकानें हैं। अमृतसर, जाखल, फ़िरोजपुर, गुरदास पुर और लायलपुर में। अन्न और कपास का काम है। ईश्वर की कृपा से पिछले चार-पांच वर्षों में भाव ऊंचे-नीचे बहुत हुए हैं और हमारा रुपया बैंकों में भरा पड़ा है।"

"बहिन जी!" शान्ति ने कह दिया, "हम सबको ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये।"

इस समय सीता थाली में दो गिलासों में दूध और दो प्लेटों में मिठाई लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आ गई। उसने मेहमानों के सामने मिठाई इत्यादि रख दी और स्वयं बैठ गई।

रत्न देवी ने पूछ लिया, "क्या नाम है बेटी।"

सीता ने कह दिया, "जी, रामप्यारी।"

इस पर चानन देवी ने विस्मय में पूछ लिया, "और सीता, तुम से बड़ी है?"

"मौसी।" सीता ने कह दिया, "राम की प्यारी ही तो सीता है।"

सीता की बुझारत औरतें समझ नहीं सकीं। शान्ति समझ रही थी। उसने उनके विस्मय का निवारण कर दिया। उसने कहाः

"बहिन जी! इसका मतलब यह है कि सीता राम की प्यारी थी और यह रामायण पढ़ती-पढ़ती अपने का राम की प्यारी मानने लगी है।"

"ओह!" चानन देवी ने बात समझ, सीता की पीठ पर हाथ फेर, प्यार देते हुए कहा, "धन्य हो, बेटी। बहुत अच्छे विचार है तुम्हारे।"

"शान्ति ने समझा कि अब ये औरतें सीता को अपने लड़के के लिये स्वीकार करने की बात कहने लगी हैं। वह यह बात सीता के सामने होने देना नहीं चाहती थी। इस कारण उसने सीता को कह दिया, "सीता! अब तुम जा सकती हो और अपना काम कर सकती हो।"

सीता उठी और कमरे से बाहर निकल बाहर द्वार की ओट में खड़ी, हो उनकी बातें सुनने लगी। उसे सन्देह हो गया था कि ये औरतें उसे देखने के लिये आयी हैं। यह सन्देह उसे उसी समय हुआ था जब उसकी माँ ने उसे कपड़े बदल इन स्त्रियों के लिये दूध, मिठाई लाने को कहा था।

शान्ति ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "यदि आप लड़की को स्वीकार करें तो हम अपने पुरोहित जी को विवाह का मुहूर्त्त निकालने के लिये भेज देंगे।"

"नहीं।" चानन देवी ने कहा, "आप यह कष्ट न करें। हम एक-दो दिन में मुहूर्त्त निकलवाकर अपने पुरोहित जी को आपके घर भेजेंगे। शेष बारात इत्यादिं के लिये सीता के पिता जी को भेज दीजियेगा। वह मुहूर्त्त निश्चय होने के उपरान्त होना चाहिये।"

इस प्रकार बात जान सीता अपने कमरे में चली गई। वह अब विचार कर रही थी कि उसे क्या करना चाहिये? यह तो निश्चय ही था कि वह यह विवाह नहीं करेगी। यह भी उसने सोच रखा था कि यदि अन्य किसी उपाय से यह विवाह न रुका तो जीवनान्त किया जा सकता है, परन्तु जीवनान्त से पूर्व क्या-क्या उपाय किए जायें और उन उपायों को किस प्रकार प्रभावी बनाया जाये? ये ही विचार के विषय थे।

उसे बाहर आई उन औरतों के जाने का शब्द सुनाई दिया। थोड़ी देर बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे सम्बन्धी आये हैं। यह शोभा नहीं देता कि कोई घर में आये और तुम अपने कमरे में पड़ी रहो। ज़रा उठो, पहले उनको प्रणाम करना। फिर उनके लिये दूध और मिठाई ले आना।"

"माँ! मैं आ रही हूँ, परन्तु इन्हीं कपड़ों में हानि नहीं समझती।"

माँ ने समझा कि कहीं उसकी मनःस्थिति न बदल जाये, इस कारण उसने मान लिया।

शान्ति बाहर आई तो दोनों औरतों को प्रणाम कर उनसे मिली। उनमें से एक ने कह दिया, मैं रत्न देवी हूँ। मैं लड़के की बुआ हूँ। हम ज़रा आपकी लड़की को देखने आये थे।"

"पर, बहिन जी!" शान्ति ने धीरे से कह दिया, "लड़की के सामने इस प्रकार की बातें न करियेगा और बातें कर सकती हैं, विवाह की बात तब तक ठीक नहीं, जब तक निश्चय नहीं हो जाता।"

इस समय सीता आ गयी। उसने बाहर से आयी औरतों को हाथ जोड़ नमस्कार किया। माँ ने कहा, "सीता, जरा जाओ तो। दो गिलास दूध और मिठाई ले आओ।"

सीता खड़ी-खड़ी ही रसोई में चली गयी। जब वह चली गई तो माँ ने कहा, "ज़रा उसे चलाकर दिखाना चाहती थी। लड़की रामायण बहुत मीठे स्वर में गाती है। कहो तो उसे कहूँ कि वह आपको पढ़कर सुनाये?"

"नहीं, बहिन जी। इसकी ज़रूरत नहीं। घर-गृहस्थी की बातें आनी चाहियें। पढ़ने से क्या होता है?"

शान्ति चुप रही। दूसरी औरत ने कह दिया, "मेरा नाम चानन देवी है। मैं लड़के की माँ हूँ। वैसे लड़की अच्छी सुन्दर है। हमें पसन्द हैं"

"सीना, पिरोना, खाना बनाना सब कुशलतापूर्वक करती है।" शान्ति चाहती थी कि सीता के आने से पूर्व ही वह उसकी प्रशंसा की सब बात कर दे, जिससे विवाह के विषय में कोई बात उसके सामने न हो सके।

इस पर चानन देवी ने अपनी प्रशंसा के पुल बांधने आरम्भ कर दिये। उसने बताया, "इस समय हमारी पांच दुकानें हैं। अमृतसर, जाखल, फ़िरोजपुर, गुरदास पुर और लायलपुर में। अन्न और कपास का काम है। ईश्वर की कृपा से पिछले चार-पांच वर्षों में भाव ऊंचे-नीचे बहुत हुए हैं और हमारा रुपया बैंकों में भरा पड़ा है।"

"बहिन जी!" शान्ति ने कह दिया, "हम सबको ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये।"

इस समय सीता थाली में दो गिलासों में दूध और दो प्लेटों में मिठाई लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आ गई। उसने महमानों के सामने मिठाई इत्यादि रख दी और स्वयं बैठ गई।

रत्न देवी ने पूछ लिया, "क्या नाम है बेटी।"

सीता ने कह दिया, "जी, रामप्यारी।"

इस पर चानन देवी ने विस्मय में पूछ लिया, "और सीता, तुम से बड़ी है?"

"मौसी।" सीता ने कह दिया, "राम की प्यारी ही तो सीता है।"

सीता की बुझारत औरतें समझ नहीं सकीं। शान्ति समझ रही थी। उसने उनके विस्मय का निवारण कर दिया। उसने कहाः

"बहिन जी! इसका मतलब यह है कि सीता राम की प्यारी थी और यह रामायण पढ़ती-पढ़ती अपने का राम की प्यारी मानने लगी है।"

"ओह!" चानन देवी ने बात समझ, सीता की पीठ पर हाथ फेर, प्यार देते हुए कहा, "धन्य हो, बेटी। बहुत अच्छे विचार है तुम्हारे।"

"शान्ति ने समझा कि अब ये औरतें सीता को अपने लड़के के लिये स्वीकार करने की बात कहने लगी हैं। वह यह बात सीता के सामने होने देना नहीं चाहती थी। इस कारण उसने सीता को कह दिया, "सीता! अब तुम जा सकती हो और अपना काम कर सकती हो।"

सीता उठी और कमरे से बाहर निकल बाहर द्वार की ओट में खड़ी, हो उनकी बातें सुनने लगी। उसे सन्देह हो गया था कि ये औरतें उसे देखने के लिये आयी हैं। यह सन्देह उसे उसी समय हुआ था जब उसकी माँ ने उसे कपड़े बदल इन स्त्रियों के लिये दूध, मिठाई लाने को कहा था।

शान्ति ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "यदि आप लड़की को स्वीकार करें तो हम अपने पुरोहित जी को विवाह का मुहूर्त्त निकालने के लिये भेज देंगे।"

"नहीं।" चानन देवी ने कहा, "आप यह कष्ट न करें। हम एक-दो दिन में मुहूर्त्त निकलवाकर अपने पुरोहित जी को आपके घर भेजेंगे। शेष बारात इत्यादिं के लिये सीता के पिता जी को भेज दीजियेगा। वह मुहूर्त्त निश्चय होने के उपरान्त होना चाहिये।"

इस प्रकार बात जान सीता अपने कमरे में चली गई। वह अब विचार कर रही थी कि उसे क्या करना चाहिये? यह तो निश्चय ही था कि वह यह विवाह नहीं करेगी। यह भी उसने सोच रखा था कि यदि अन्य किसी उपाय से यह विवाह न रुका तो जीवनान्त किया जा सकता है, परन्तु जीवनान्त से पूर्व क्या-क्या उपाय किए जायें और उन उपायों को किस प्रकार प्रभावी बनाया जाये? ये ही विचार के विषय थे।

उसे बाहर आई उन औरतों के जाने का शब्द सुनाई दिया। थोड़ी देर बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही बाहर फिर दो औरतों के बातें करने का शब्द आने लगा। वह कान खड़े कर सुनने का यत्न करने लगी। उसे समझ आया कि एक उसकी माँ है और दूसरी कदाचित् मोहन की माँ भगवन्ती है। अब वह उठी और बाहर बैठक घर में आ गई।

आने वाली भगवन्ती ही थी। वह मोहन की सगाई में आई मिठाई में से कुछ शान्ति को देने आई थी। भगवन्ती ने सीता को देखा तो हाथ पकड़कर अपने पास बैठा लिया और कहा, "सीता! आजकल दिन-भर क्या करती रहती हो?"

"मौसी। तपस्या कर रही थी।" मुस्कराते हुए सीता ने कहा।

भगवन्ती ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "पार्वती की भांति?"

"हाँ, मौसी।"

"और शिवजी मिले?"

"वे तो तपस्या के आरम्भ में ही मिल गये थे। तब से ही मन में निवास कर रहे हैं।"

"सत्य?"

"हाँ, मौसी।"

"और उनके घर कब जाओगी?"

"मैं तो उनके घर में ही हूँ। अब तपस्या समाप्त हो गई है। वे प्रसन्न हो गये हैं ओर मैं भी अपने आप से सन्तुष्ट हूँ।"

दोनों बड़ी स्त्रियां समझ नहीं सकीं कि वह क्या कह रही है। शान्ति ने सीता की बात छोड़कर मोहन की बात आरम्भ कर दी। उसने पूछ लिया, "ब्राह्मणों की लड़की लेकर प्रसन्न हो बहिन?"

"हमें कुछ अटपटा तो लगा था, परन्तु फिर यह विचार कर कि पत्नी मोहन को मिलनी है, प्रसन्नता और सुख उसको होना है। इस कारण उससे ही पूछ लिया था। उसने भी जब सुना कि पंडित जी की लड़की है, आश्चर्य से चकित रह गया और पीछे कहने लगा, 'जब पंडित जी कहते हैं तो ठीक ही होगा। वे विद्वान् हैं। इस कारण उनकी बात तो ठीक ही होनी चाहिये।"

"पर गाँव में चर्चा हो रही है।"

"चर्चा क्या हो रही है?"

"यही कि सोहन और मोहन एक ही पथ पर चल पड़े हैं।"

"शान्ति बहिन! सावित्री बहुत अच्छी लड़की है। जब से वह मेरे घर में आई है मेरा आधा काम उसने समेट लिया है। मैं मन में विचार करती हूँ कि जब सातों भाइयों की बहुएं घर में आएंगी तब घर में सोना बरसने लगेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वे खायें-पीयेंगी नहीं?"

"बहिन। आप में और हम में अन्तर है। आपकी आय व्यापार में लगी पूंजी से होती है और हमारी हाथ की मेहनत से। जब हमारे घर में एक मुख खाने वाला आता है तो वह अपने साथ दो हाथ काम करने के लिये लाता है। जितना वह खाता, पहनता है, उससे दोगुना वह काम कर, पैदा कर देता है। आपकी जाति में जब बंटवारा होता है तो आय का स्रोत बंट जाता है। यह बात हम मेहनत, मज़दूरी करने वालों में नहीं होती। यही बात बहुओं के आने की है। आपकी जाति-बिरादरी में यदि बहू अपने बाप के घर से नकद धन न लेकर आये तो वह खर्चा ही बनती है। आपकी पूंजी में कुछ भी वृद्धि नहीं करती। हमारे घर में बहू हमारी आय का स्रोत दो हाथ तो लेकर आयेगी। उनको वह अपने बाप के घर छोड़ नहीं आयेगी।"

शान्ति इस जीवन-मीमाँसा पर चकित रह गई। उसे एक बात सूझी। उसने सीता से कह दिया, "सुन लो, सीता। हमारी जाति-बिरादरी में लड़की को बाप के घर से इतना धन लेकर जाना चाहिए जितने के ब्याज से उसकी ससुराल में उसका निर्वाह हो सके।"

"माँ।" सीता ने कह दिया, "यह तो मैं पहले जानती थी।"

"कहाँ से सीख आई थी यह लेखा-जोखा?"

"अपने गुरु जी से। उन्होंने ही एक दिन बताया था कि वैश्य समुदाय में लड़कियों के विवाह पर दहेज की प्रथा कैसे बनी थी? वे भी कहते थे कि वैश्य समाज में धन आय का स्रोत है। मेहनत, मजदूरी बहुत कम की जाती है। इस कारण जब बहू किसी परिवार में जाती है तो पूंजी अपने साथ लेकर जाती है।"

"ओह! तुम यह जानती थीं तो फिर तुम अपने विवाह में दहेज देने का विरोध क्यों करती थीं?

"मैं वैश्य समाज में विवाह करना ही नहीं चाहती थी।"

"क्यों?"

"पंडित जी ने एक दिन यह भी बताया था कि धन से धन पैदा करना अर्थात् ब्याज और मकानों के किराये लेने पाप के काम हैं। उतना ही ब्याज अथवा मकान का किराया लेना चाहिये जिससे धन-जायदाद सुरक्षित रह सके। यदि इस प्रकार की अधिक आय हो जाये तो उसे दान-दक्षिणा में दे दें।"

"माँ! लड़की को पहिनने मात्र के भूषण-वस्त्र तो दिए जा सकते हैं, परन्तु ससुराल वालों की पूंजी में वृद्धि करने के लिये नहीं।"

"यह व्यर्थ की बात है।" शान्ति ने कह दिया। सीता ने उत्तर नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भगवन्ती मिठाई दे और बधाई ले चलने को तैयार हुई तो सीता ने कह दिया, "मौसी! मैं सावित्री से मिलने आऊंगी।"

"हाँ। माँ से पूछ कर आ जाना।"

"बताओ, माँ। जाऊँ अथवा नहीं?"

"अपने बाबा से पूछ लेना।"

"तो आज रात पूछूँगी।"

4

रात घर में झगड़ा हो गया। भोजन के समय सीता ने कह दिया, "बाबा। मैं समझती हूँ कि अब मेरी क़ैद की अवधि समाप्त हो गई है। मैं कल पंडित जी से पढ़ने जाऊँगी और फिर अपनी सहेली सरस्वती से भी मिलने जाऊँगी।"

"पढ़ने की क्या ज़रूरत है? एक सप्ताह में तो तुम्हारा विवाह हो जाएगा। तब तुम ससुराल चली जाओगी और यह स्वीकृति तुम्हें अपने घर वाले से लेनी होगी।"

"पर मैं अब विवाह नहीं करूँगी।"

"क्यों?"

"मेरा विवाह हो चुका है।"

"सच। किससे और कब?"

"विवाह हुए तो आज छः वर्ष होने जा रहे हैं। मेरा विवाह मेरे राम जी से हुआ है।"

"कहाँ है तुम्हारा राम?"

"मेरे कमरे में बैठे हैं।"

कुछ देर तक तो सुन्दरलाल समझ नहीं सका, परन्तु शान्ति समझ रही थी। उसने कह दिया, "सीता बुझारतें डालने लगी हैं। इसकी बुझारत का अर्थ है कि यह विवाह नहीं करेगी और जीवन-भर कुंवारी ही रहेगी। परमात्मा की भक्ति करेगी जो वह पिछले छः वर्ष से कर रही है।"

"यह वह क्यों कर रही है? लड़कियां तो अच्छा घर-वर पाने के लिये परमात्मा का भजन करती हैं।"

"बाबा।" सीता ने भूमि की ओर देखते हुए कहा, "मुझे घर और वर दोनों मिल गये हैं।"

"देखो सीता।" सुन्दरलाल ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर डांट के भाव में कहा, "मैं तुम्हारे लिये लड़का देख आया हूँ और अब विवाह होगा ही। यदि अब तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूख हड़ताल की तो मैं भी भूख हड़ताल कर दूँगा।"

"तो बाबा! दोनों की चिताएं बनेंगी।"

"बकवास बन्द करो, सीता।" शान्ति ने आँखें लाल करते हुए कहा।

सीता उठकर अपने कमरे में चली गई और उसने कमरे का द्वार भीतर से बन्द कर लिया।

चुन्नी लाल सीता के पीछे-पीछे गया और भीतर से कुंडा चढ़ाने का शब्द सुन लौट आया। उसने माता-पिता को बताया, "सीता ने अपने कमरे का द्वार बन्द कर भीतर से कुंडा चढ़ा दिया है।"

सुन्दरलाल और उसकी पत्नी दोनों एक दूसरे का मुख देखते रह गये। आख़िर सुन्दरलाल ने कह दिया, "यह सब खराबी पंडित ब्रजलाल की फैलाई हुई है। मैं इसकी जड़ें उखाड़ दूँगा। इसके लिए गाँव में रहना कठिन कर दूँगा।"

"कैसे करेंगे यह? वह न तो आपका ऋणी है और न ही आपकी दान-दक्षिणा पर पलता है।"

"मैं उसका घर फूंकवा दूँगा। इस समय पूर्ण गाँव उसके विरुद्ध हो रहा है। सब समझ रहे हैं कि उसकी शिक्षा के कारण ही सावित्री सोहन के साथ भाग गई थी। रामलुभाया पौल लेकर भी हजामत बनवाता है। पंडित की अपनी लड़की भी मोहन से फंसी हुई है।"

"राम राम कहो जी। और जो कुछ भी मन में आये कहो पर कलावती तो सर्वथा निर्मल मोती है।"

"उसका गोरा रंग देखकर धोखे में मत आओ। मुझे तो कुछ ऐसा लग रहा है कि वह गर्भवती हो गई है। इसी कारण पंडित ने उसके विवाह के लिए जल्दी मचा रखी है।"

"कब होने वाला है विवाह?"

"सब कह रहे हैं कि इसी सप्ताह होगा।"

शान्ति गम्भीर विचार में मग्न हो गई। उसे यह समझ आया कि गाँव में झगड़ा होगा। लाठियां चलेंगी और फिर हत्यायें होंगी। इस सबके परिणामस्वरूप मुकद्दमे होंगे और कदाचित् कुछ लोग फांसी भी चढ़ जायें। इस विचार से उसके पूर्ण शरीर में कंपकंपी हो उठी। चुन्नी लाल समीप बैठा सब बात सुन और समझ रहा था। उसने पिता जी से कह दिया, "बाबा! सीता विवाह नहीं करती तो न करे। आप उससे झगड़ा क्यों करते हैं?"

"तुम चुप रहो।" सुन्दरलाल ने क्रोध में कह दिया, "तुम इन बातों को समझ नहीं सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबा। मैं समझता हूँ। मैं तुमसे अधिक पढ़ा हूँ। मास्टर घनश्याम ने हमें बताया था कि विलायत में औरतें और मर्द इच्छा से विवाह करते हैं और नहीं इच्छा होती, तो नहीं करते। यह हम लोगों की ही मुसीबत है कि माता-पिता गाय, बैलों की भांति जहाँ मन करता है, हाँक देते हैं।"

सुन्दरलाल समझ तो रहा था कि विलायत की बात चुन्नी लाल ठीक कह रहा है, परन्तु हिन्दुस्तान में और फिर हिन्दू समाज में यह प्रथा चल नहीं सकेगी। क्यों नहीं चल सकेगी? यह वह जानता नहीं था। वर्तमान क्रोधावस्था में उसको जानने का अवकाश भी नहीं था। उसने कह दिया, "अबे टटैने, विलायत और अमरीका की बातें करने लगे हो। तुमको यह पता होना चाहिये विलायत में हिन्दू नहीं रहते। वहाँ म्लेच्छ रहते हैं।"

"पर बाबा। वे हम पर राज्य करते हैं?"

"वह बात दूसरी है। सुनो चुन्नी। तुम दुकान समेटो। मैं और तुम्हारी माँ सीता को लेकर कुछ काल के लिये नगर में चले जायेंगे। वहाँ जा इसका विवाह करके ही लौटेंगे।"

अब फिर शान्ति ने बात कही, "पर जायेंगे कैसे? सीता नहीं जायेगी। वह सड़क पर लेट जायेगी तो क्या करियेगा?"

मैं सब ठीक कर लूँगा। तुम चुप रहो।"

शान्ति चुप रही। सब सोने चले गए। सुन्दरलाल और शान्ति एक ही कमरे में सोते थे। सीता घर में दुविधा का प्रसार होते देख चिन्तित थी, इस कारण सो न सकी। इस पर भी वह अपनी खाट पर लेटी थी और समस्या का सुझाव विचार करती हुई जाग रही थी।

सुन्दरलाल ने दीपक बुझा दिया और बिना कपड़े उतारे सो गया। यह सदा से भिन्न बात थी। वह हमेशा दिन के कपड़े बदलकर ही सोया करता था। रात के कपड़े होते थे, कच्छा और बनियान। आज वह धोती कुर्ता पहिने ही खाट पर लेट गया। शान्ति ने यह देखा तो इसका कारण समझ नहीं सकी थी।

उसे नींद नहीं आ रही थी। यह घर में बढ़ रही कलह के कारण थी। कितनी ही देर तक वह सीता की दयनीय दशा पर विचार करती रही। उसको स्मरण आ रहा था कि उस दिन से छः वर्ष पूर्व मोहन सीता के पीछे-पीछे आया था और तब सीता भी कहती थी उसका मोहन से मिलने को जी चाहता है। वह मन में विचार कर रही थी कि उस समय दोनों के मन मिल चुके थे। अब मोहन का विवाह दूसरे स्थान पर होता देखकर भी, वह मोहन का विचार छोड़ नहीं सकी।

सीता के मोहन से विवाह में प्रथम बाधा उसने ही खड़ी की थी। उसे स्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था कि कैसे उसने सीता को मना किया था कि वह भगवन्ती के घर न जाये, वह मोहन से न बोले। अब उसे अपने इस व्यवाहर पर शोक होने लगा। वह विचार करती थी कि उसने गोपाल की जात-बिरादरी को अपने से छोटा समझ ही सीता के लिये मोहन को अस्वीकार किया था, परन्तु वही गोपाल पंडित ब्रजलाल को छोटी जाति का दिखाई नहीं दिया। अब वह अपनी भूल समझने लगी थी।

उसे अपने पति की बात कि कलावती का सम्बन्ध मोहन से पहले हुआ है और सगाई पीछे हुई है, सत्य नहीं लगी। उसे न तो पंडित ब्रजलाल किसी प्रकार से मूर्ख समझ आया था और न ही कलावती छिनार।

परन्तु अब क्या हो सकता था? इस प्रश्न का उत्तर उसके पास नहीं था। उसका पति बल-पूर्वक लड़की का विवाह कर देना चाहता था और उसे इसमें कल्याण दिखाई नहीं देता था।

वह इन्हीं विचारों में खाट पर पड़ी-पड़ी समस्या का सुझाव ढूंढ़ रही थी कि उसे समझ आया कि उसका पति उठ आलने में कुछ टटोल रहा है। उसने विचार किया कि वह लैम्प जलाने लगा है। वह उसी आलने में टटोल रहा था जहाँ लैम्प और दियासलाई रखी रहती थी।

कुछ ही क्षण में उसके पति ने कमरे का द्वार खोला। प्रांगण में शुक्ल त्रयोदशी की चांदनी खिल रही थी। उसके प्रकाश में उसने अपने पति को कमरे से निकलते देखा। वह भी उठी और देखने लगी कि वह क्या करने जा रहा है?

सुन्दरलाल घर से दुकान में गया। वहाँ से वह एक बोतल उठाये हुए वापिस घर में लौट आया। शान्ति ने उसे दुकान से आ घर प्रांगण को पार कर और पिछवाड़े के द्वार को खोल घर से निकलते देखा। चांदनी के प्रकाश में उसने देखा कि उसके हाथ में मिट्टी के तेल की बोतल है। इस बोतल में तेल भर कर वह दुकान पर बेचा करता था।

शान्ति को समझने में देर नहीं लगी कि वह ब्रजलाल का घर फूंकने जा रहा है। विद्युत की भांति इस विचार की प्रतिक्रिया उसके मस्तिष्क में हुई। लाला को रोकना चाहिये। कौन रोके? इस समय उसे गोपाल और मोहन की याद आ गयी। वह नंगे पांव ही और बिना सिर पर कोई कपड़ा लिये, घर से निकल गोपाल के मकान की ओर भागी।

पूर्ण गाँव सो रहा था। वह गोपाल के घर के द्वार पर बिना किसी के देखे जा पहुंची। द्वार भीतर से बन्द था। वह ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगी।

द्वार खटखटाने का शब्द सुन गोपाल ही उठकर आया। वैसे तो द्वार खटखटाने का शब्द इतने ज़ोर का था कि घर भर जाग पड़ा था और गोपाल ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार खोला ही था कि मोहन पीछे-पीछे आ पहुंचा।

शान्ति बहुत घबराई हुई थी। इस कारण वह, "बचाओ! बचाओ।" के शब्द के अतिरिक्त कुछ कह नहीं सकी।

गोपाल ने समझा लाला के घर में डाका पड़ गया है। इस कारण ही यह औरत बिना धोती और सिर पर कपड़ा लिये नंगे पांव भागती हुई आ रही है। उसने कहा, "ठहरो बहिन।" वह भागकर अपनी लाठी लेने भीतर गया तो उसे सामने से सोहन, भगवन्ती और फिर राम तथा सावित्री भी आते मिल गये।

मोहन ने शान्ति को इस प्रकार अस्त-वस्त हालत में देखा तो पूछ लिया, "मौसी, क्या हुआ है?"

"मोहन! भागो, पंडित जी को बचाओ। पंडित जी को बचाओ!!"

इस पर तो मोहन भी अपनी लाठी लेने भीतर को भागा। भीतर जाते हुए उसे बाबा लाठी लेकर आते मिला। मोहन ने आवाज़ दे दी, "बाबा पंडित जी के घर।"

गोपाल समझ गया कि डाका पंडित जी के घर पड़ा है। इसलिये वह उधर ही भागा। उसके पीछे-पीछे मोहन और फिर सोहन और राम भी लाठियां ले भाग खड़े हुए।

भगवन्ती ने शान्ति को इस प्रकार सिर, पांव से नंगे और केवल धवली और कुरती पहिने खड़े देखा तो कहा, "शान्ति बहिन। भीतर आ जाओ। कुछ सिर पर ओढ़ लो।"

शान्ति को समझ आ गयी कि वह उचित वस्त्रों में नहीं है, इस कारण वह भगवन्ती के घर के भीतर जाने के स्थान अपने घर को भाग खड़ी हुई। भगवन्ती कुछ न समझती हुई विस्मय में उसे अपने घर को भागते देखती रह गयी।

उसके समीप सावित्री खड़ी थी। वह सब से पीछे वहाँ पहुंची थी। इस कारण उसने पूछ लिया, "माता जी! क्या हुआ है?"

"कुछ समझ नहीं आया। वह 'बचाओ-बचाओ' कहती हुई आयी थी और फिर अपने को उचित वस्त्रों में न देख वापिस भाग गयी है।"

"इसके घर जाकर पता करना चाहिये।"

"तुम यहाँ ठहरो और देखो भीतर से दरवाज़ा बन्द कर यहीं खड़ी रहना। मैं जाती हूँ और पता करती हूँ।"

भगवन्ती अपने कमरे में गयी और अपने ऊपर की चादर और जूती पहिन सुन्दरलाल के घर जा पहुंची। पीछे का द्वार खुला था। घर में अन्धेरा था। प्रांगण में चांदनी का प्रकाश था। भगवन्ती प्रांगण में चली गयी और "शान्ति, शान्ति" कहकर आवाज़ लगाने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति सीधी अपने कमरे में जा धोती, कुर्ता और चादर पहनने लगी थी। जब भगवन्ती की पुकार आई तो उसने भीतर से आवाज़ दे दी, "आई बहिन।"

परन्तु बाहर आई सीता। सीता भी रात सो नहीं सकी थी। उसने भगवन्ती की आवाज़ पहिचानी तो अपना कमरा खोल बाहर निकल आई। उसने भगवन्ती को प्रांगण के बीचों-बीच खड़े देख कहा, "मौसी। क्या है?"

"तुम्हारी माँ कहाँ है?"

"माँ। सो...।" वह आगे कह नहीं सकी कि शान्ति बाहर आ गयी। भगवन्ती ने कहा, "शान्ति! क्या बात थी?"

"गज़ब हो गया है, बहिन! पंडित जी के घर को आग...।"

इस बात पर भगवन्ती और सीता अवाक् खड़ी रह गयीं। इस समय तक गाँव में हो-हल्ला होने लगा था। शान्ति बोली, "छत पर चढ़कर देखती हूँ।" और वह छत पर जाने की सीढ़ियों की ओर लपकी। भगवन्ती और सीता भी शान्ति के पीछे मकान की छत पर जा पहुंची।

छत पर से पंडित ब्रजलाल का घर दिखाई देता था। उसके एक कोने में आग लगी थी और उस ओर से मकान जल रहा था। लोग अपने अपने घरों से गागर लिये आग बुझाने दौड़े जा रहे थे। पंडित जी के घर की ओर बहुत शोर मच रहा था।

कुछ देर तक आग जलती रही फिर वह धीमी पड़ने लगी। अब यह समझ कि आग नियंत्रण में है, भगवन्ती ने पूछ लिया, "शान्ति! तुमको किसने बताया था?"

"लाला जी ने...।" वह आगे कुछ कह नहीं सकी। इतने से भगवन्ती यही समझी कि लाला जी ने बताया है। यह सुन पूछ लिया, "तो लाला जी भी आग बुझाने गये हैं?"

शान्ति ने कुछ उत्तर नहीं दिया। आग ठंडी पड़ गयी थी। इस समय एक खाट को चार व्यक्ति उठाये लाला के घर की ओर आते दिखाई दिये। खाट पर कोई लेटा हुआ था अथवा कोई मरा पड़ा था, छत पर से दिखाई नहीं दिया। भगवन्ती ने शान्ति से पूछा, "ये इधर क्या ला रहे हैं?" परन्तु शान्ति वहाँ नहीं थी। वह नीचे भाग गयी थी।

भगवन्ती ने विस्मय में सीता के मुख पर देखा। वह खाट लाने वालों को प्रांगण में आता देख रही थी। एकाएक उसके मुख से निकल गया, "ये तो पिता जी हैं।"

दोनों छत ने नीचे उतर आयीं और खाट के पास जा खड़ी हुईं। खाट उठाने वालों में एक मोहन था। उसने खाट प्रांगण में रख दी और कहा, "मौसी! एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलास में जल लाओ। लाला अचेत प्रतीत होते हैं।"

शान्ति भागी-भागी भीतर गयी ओर एक लोटे में जल ले आई। सीता अपने कमरे में से लैम्प जला लाई। सीता ने लैम्प पिता के मुख के समीप ले जाकर देखा तो मुख लहू से लथपथ था। मोहन ने नाक के आगे हाथ रखकर देखा और कहा, "जीवित हैं। सीता, एक साफ़ सा कपड़ा लाओ।" सीता मलमल की चुन्नी ओढ़े हुए थी। उसने उतार कर दे दी। मोहन ने चुन्नी का एक छोर पानी में भिगो कर सिर पर लगी चोट पर रख दिया। उसमें से रक्त बह रहा था। चार-पांच बार ठंडे पानी की पट्टी करने पर रक्त बन्द हो गया। अब उसने घाव पर गीला कपड़ा रख कर ऊपर से कपड़ा बांध दिया।

मोहन ने चुन्नी को कहा, "दुकान में से कपूर ले आओ।"

चुन्नी दुकान में से कपूर की एक डली ले आया। मोहन उसे लाला की नाक के समीप ले जाकर लाला को होश में लाने का यत्न करने लगा।

इस समय गोपाल और पंडित ब्रजलाल वहाँ आ गये। गाँव के कुछ अन्य लोग भी वहाँ आ पहुँचे थे। पंडित ने पहले लोगों को ही कहा, "ज़रा दूर-दूर हट जाओ। खुली हवा आने दो।"

मोहन ने अपने पिता को बताया, "रक्त तो बन्द हो गया है पर अभी चेतना नहीं आई।"

"और क्या कर रहे हो? पंडित जी ने पूछ लिया।

"कपूर सुंघा रहा हूँ।"

"इससे कदाचित् वह होश में न आये। मैं बताता हूँ। चुन्नी, दुकान पर शिलाजीत है?"

"हाँ, पंडित जी।"

"तो लाओ।" उसने अब सीता को कह दिया, "सीता एक कटोरी में दूध गरम करके ले आओ।"

परन्तु दूध में शिलाजीत घोलते घोलते लाला ने आँखें खोल दीं। गोपाल ने पहले देखा। उसने पुकारा—सुन्दरलाल, होश करो। बच गये हो।"

इस पर पंडित जी ने गाँव के लोगों से कहा, "भाई! तुम लोग जाओ। अब लाला को आराम करने दो।"

इस पर भी शिलाजीत और दूध पिला दिया गया और लाला की खाट उठा उसके कमरे में ले जाकर रख दी गयी। लाला सुन्दरलाल को चेतना तो आ गयी थी, परन्तु वह बोल नहीं रहा था और आश्चर्यचकित सबका मुख देख रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5

पंडित ब्रजलाल ने कहा, "अब मुझे अपने घर की सुध लेनी चाहिये।"

"हाँ, आप चलिये।" गोपाल ने कह दिया।

ब्रजलाल गया तो गोपाल ने शान्ति से कह दिया, "शान्ति बहिन! पड़ोस के गाँव से हकीम बुलवाकर लाला की मरहम-पट्टी करवा दो और देखो, जब लाला बिल्कुल होश में आ जायें तो इनसे कहना कि वह पंडित जी को गाली न दें। कहीं गाँव में से किसी ने मुखबरी कर दी तो सात वर्ष की कठोर क़ैद का दंड मिलेगा।"

भगवन्ती इस दंड की बात सुन विस्मय में शान्ति का मुख देखने लगी। इस पर गोपाल ने कहा, "चुन्नी को भेज हकीम साहब को बुला लेना और किसी बात की आवश्यकता हो तो बताना।"

इतना कह गोपाल ने मोहन और भगवन्ती की ओर देखा तो वे उसके साथ चलने को तैयार हो गये। मार्ग में ही गोपाल ने बता दिया, "लाला मेरी लाठी की चोट से घायल हुआ है।"

"यह क्या कर रहा था?"

"पंडित जी के मकान को आग लगा रहा था। एक कोने में आग लगा चुका था और दूसरे कोने की ओर जा रहा था कि मैं पहुंच गया। मैंने इसे पहिचाना नहीं। यह मिट्टी का तेल पंडित जी के मकान के द्वार पर छिड़क ही रहा था कि मेरी लाठी इसके सिर पर लगी। लाठी उठाने के समय तो मैं देख नहीं सका था कि यह सुन्दरलाल है, परन्तु लाठी की चोट से पूर्व मैं जान गया था कि यह लाला है। मेरा हाथ नरम पड़ गया, अन्यथा यह मर गया होता। इस पर भी यह अचेत हो गया। हम और गाँव के अन्य लोग आग बुझाने में लग गये। जब तक आग शान्त नहीं हुई, तब एक यह अचेत पड़ा रहा और इसका रक्त बहता रहा। जब मैंने पंडित जी को बताया कि आग सुन्दर ने लगाई है, तो वे इसका अर्थ नहीं समझ सके। पीछे वे कहने लगे, "कदाचित् मोहन की कलावती से सगाई पर इसे रोष हुआ है, परन्तु रोष में यह ब्रह्म-हत्या करने पर तैयार हो जायेगा, मैं समझ नहीं सका।"

"जब हमने देखा कि यह जीवित है तो इसे खाट पर डालकर इधर ले आये। गाँव के लोगों को यही पता है कि लाला आग बुझाता-बुझाता चोट खा गया।"

ये लोग घर पहुँचे तो दिन चढ़ने वाला हो गया था। भगवन्ती सब बात समझ गयी थी। उसने गौओं के लिए दाना, भूसा तैयार करने के लिये जाने से पहले कह दिया, "शान्ति जानती होगी कि उसका लाला आग लगाने गया है। उसने उसे मना भी नहीं किया होगा। लाला के चले जाने पर वह हमको सचेत करने आई प्रतीत होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, बात तो यही प्रतीत होती है।"

"मेरा विचार है आपको यह बात किसी को कहनी नहीं चाहिये।"

"यह बात पंडित जी को विदित हो गयी है। वे किसी को कह न बैठें। यदि पुलिस आयी तो फिर लाला के घायल होने की बात होगी और मुझे बताना पड़ेगा कि वह क्या कर रहा था?"

"आप पंडित जी से मिलकर बात शान्त करा दीजिये।"

पंडित ब्रजलाल के घर पर सभी परेशान थे। कलावती की सगाई के उपलक्ष में ब्रजलाल की सास, ससुर और साला, सालेहार आये हुए थे और वे बाहर हो-हल्ला सुन जागे थे। जागने पर उनको पता चला था कि मकान में आग लग रही है। यह घटनावश ही था कि जिस कक्ष में वे लोग सो रहे थे, उसमें आग अभी नहीं लगी थी। आग लगी थी इनके सामने के कक्ष में और वहाँ इनका सामान रखा हुआ था। वह तो सब का सब जल गया था। इससे इन सबको भारी हानि पहुंची। पंडित जी के भी कपड़े उनकी पत्नी और लड़की के वस्त्र, आभूषण और लड़के के भी कपड़े उसी कक्ष में थे जिसमें आग लगी थी और वे भी सब जल गये थे।

पंडित ब्रजलाल जब सुन्दरलाल के घर से लौटा तो उसके सब सम्बन्धी परेशानी में अपनी हानि पर विचार कर रहे थे। आग ठंडी हो चुकी थी और गार्गी तथा कलावती अपने सन्दूक ढूंढ़ रही थी कि देखें उनमें रखे आभूषणों का क्या हुआ?

ब्रजलाल घर पहुँचा तो पत्नी को गरम-गरम राख में से सन्दूकों को निकाल ठंडा करते देख उसने कहा, "कुछ बचा है क्या?"

"आप कहाँ गये थे?"

"लाला सुन्दरलाल घायल हो गये थे। उनको घर पहुँचाने गया था।"

"और वह घायल कैसे हुआ था?"

"मुझे तो गोपाल ने बताया था कि वह घायल पड़ा है। मैं उसे देखने गया तो उसे जीवित, परन्तु अचेत पड़े देखा। उसके सिर पर चोट आयी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने लाठी का प्रहार किया है। खाट पर डलवाकर उसको उसके घर पर छोड़ आए हैं।"

इस पर पंडित भवानी शंकर ने पूछ लिया, "किसकी लाठी से वह घायल हुआ है?"

"जब आग ठंडी पड़ने लगी तो गोपाल मेरे पास आया और बोला कि सुन्दरलाल मकान के बाहर अचेत पड़ा है। मैं उसके साथ वहाँ गया तो देखा कि किसी ने लाठी के प्रहार से उसका सिर फोड़ दिया है। उसमें से रक्त बह रहा था।"

इस पर भवानी शंकर ने गम्भीर हो विचार कर कहा, "ऐसा प्रतीत होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि जब आग बुझाई जा रही थी तो इस मकान के बाहर लाठी भी चल रही थी।"

"गोपाल ने बताया है कि उसने ही लाला को घायल किया है और उसको मरने से बचाने के लिए लाला के लिए खाट माँग कर लाया था।"

"पर लाला को गोपाल ने क्यों घायल किया? अवश्य ही वह आग लगा रहा होगा।"

इतना कहते कहते भवानी शंकर ने पूछ लिया, "वह कहाँ पड़ा मिला है?"

ब्रजलाल ने स्थान बताया तो भवानी शंकर समझा कि उस ओर तो आग लगी ही नहीं। इस पर भी वह उस स्थान को देखने चल पड़ा जहाँ सुन्दरलाल अचेत पड़ा पाया गया था। पंडित ब्रजलाल ने स्थान दिखाने के लिये अपने ससुर के साथ चलते हुए कहा, "अब जल मथने की कोई आवश्यकता नहीं।"

"नहीं, ब्रजलाल!" भवानी शंकर ने कहा, "हमें पूरी जांच और फिर तसल्ली करनी है। तुम्हें और लड़की को तो यहीं रहना है। इस प्रकार दुष्ट को पहिचाने बिना कैसे रह सकोगे?"

ब्रजलाल और भवानी शंकर मकान से निकल उस ओर पहुँचे जहाँ सुन्दललाल अचेत पड़ा मिला था, तो एक वस्तु जो ब्रजलाल ने नहीं देखी थी, वह भवानी शंकर की दृष्टि में आ गयी। ठीक जहाँ सुन्दरलाल अचेत पड़ा मिला था, एक बोतल उल्टी पड़ी हुई थी। बोतल में से तेल वहाँ बिखर कर फैल गया था।

भवानी शंकर ने बोतल उठाकर देखी। उसमें थोड़ा-सा मिट्टी का तेल अभी भी पड़ा था। भवानी शंकर ने तेल सूंघकर कह दिया—

"यह मिट्टी के तेल की बोतल है। लाला अवश्य आग लगा रहा होगा। गोपाल ने उस पर लाठी का प्रहार कर उसे अचेत कर दिया होगा। कहीं गोपाल उसे समय पर घायल न कर देता तो वह मकान के इस कक्ष को भी आग लगा देता और हम सब मकान में ही जल कर भस्म हो चुके होते।

"देखो, ब्रजलाल! इस बात की पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए और गोपाल को हमारी बात की साक्षी करनी चाहिए।" इतना कह भवानी शंकर ने बोतल पुनः वहाँ रख दी और कहा, "मैं अभी अश्विनी को थाने में भेजता हूँ। थाना कहाँ है?"

"थाना तो यहाँ से डेढ़ मील के अन्तर पर है। गाँव के चौकीदार को भेजा जा सकता है, परन्तु गुरु जी! इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गाँव में ही हम निपट लेंगे।"

इतना कह ब्रजलाल ने वह बोतल उठाई और गोपाल के घर की ओर चल पड़ा। भवानी शंकर ने पूछ लिया, "कहाँ जा रहे हो?" उसने विचार किया था कि वह चौकीदार के घर को जा रहा है। दिन चढ़ने वाला हो गया था और ब्रजलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जाते देख भवानी शंकर ने कहा, "इस प्रमाण को कहाँ लिए जा रहे हो? इसको तो यहाँ ही छोड़ जाओ।"

"मैं अभी आया गुरु जी।" ब्रजलाल ने लम्बे-लम्बे पग उठाते हुए गोपाल के घर की ओर जाते हुए कह दिया।

भवानी शंकर समझा नहीं और भीतर चला गया। गार्गी और कलावती ने जब अपने आभूषणों का सन्दूक खोला और उसमें अग्नि की गर्मी से आधे पिघले हुए आभूषण देखे तो उनके आंसू निकल पड़े।

भवानी शंकर लड़की की आंखों में आंसू देख क्रोधाभिभूत सुन्दरलाल को गालियाँ देने लगा। इस पर अश्विनी ने पूछा, "भापा! सुन्दरलाल की क्या बात है?"

सुन्दरलाल का नाम सुन गार्गी और अश्विनी की पत्नी भी भवानी शंकर का मुख देखने लगे।

भवानी शंकर ने बता दिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि आग सुन्दरलाल ने लगाई है। वह हम सब को मकान में फूंक देना चाहता था, परन्तु गोपाल ने उसको घायल कर ऐसा करने से रोका है।"

इस पर सब विस्मय करने लगे। भवानी शंकर ने यह भी बता दिया, "ब्रजलाल चौकीदार के पास रिपोर्ट करने गया है।"

"अब क्या बनेगा? सब व्यर्थ है।" गार्गी का कहना था।

"उसे सात वर्ष की कठोर क़ैद का दंड होना चाहिए।"

"भापा!" गार्गी ने अति विनीत भाव से कह दिया, "उनको मना नहीं किया।"

"मना क्यों करता?"

गार्गी अपने मनोद्‌गार में कारण नहीं बता सकी। इस पर भी वह समझती थी कि उसके पति भी ऐसा ही समझते हैं और वह चौकीदार को सूचना देने नहीं गये। यह पंडित ब्रजलाल की प्रकृत्ति के विपरीत था।

पंडित ब्रजलाल को गोपाल रास्ते में ही मिल गया। गोपाल पंडित जी के घर की ओर जा रहा था।

"किधर जा रहे हैं, पंडित जी?" गोपाल ने पूछ लिया।

ब्रजलाल अपने विचारों में लीन जा रहा था। गोपाल के कहने पर वह सतर्क हो खड़ा हो गया और बोला, "भैया! तुम्हारी ओर ही जा रहा था। यह मिट्टी के तेल की बोतल सुन्दरलाल की दुकान की है। यह उसे पहुँचा देनी चाहिये।"

"यह कहाँ मिली है?"

"जहाँ लाला गिरा पड़ा मिला था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह! यह महा दुष्ट सिद्ध हुआ है।" गोपाल ने बोतल पंडित जी के हाथ से ले ली और कहा, "परन्तु पंडित जी! लाला द्वारा आग लगाने की बात चौकीदार तक पहुंच चुकी है और वह थाने में रिपोर्ट करने चला गया है।"

इस समाचार से ब्रजलाल भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। वह यह नहीं चाहता था, परन्तु गाँव में ऐसे लोग थे जो पंडित जी को गुरु नहीं मानते थे और उनकी भांति न तो विचार रखते थे और न ही आचरण करते थे। इनमें गुरुद्वारे का नवीन ग्रन्थी सुरजीत सिंह और उसके चेले चांटे प्रमुख थे।

पंडित ब्रजलाल ने कुछ क्षण तक विचार किया और फिर कह दिया, "गोपाल भैया! तुम यह बोतल लाला की दुकान पर पहुँचा दो। इसको सब गाँव वाले पहिचानते हैं और फिर पुलिस के आने से पूर्व मेरे घर आ जाना और तब क्या बयान देना चाहिए, विचार कर लेंगे।"

"गोपाल सुन्दरलाल के घर को चल पड़ा और पंडित अपने घर लौट गये।

6

ग्रन्थी सुरजीत सिंह जब से बेगमपुरा के गुरुद्वारे में आया था, तब से ही वह बरियामसिंह को धोखा दिये जाने का बदला लेने की बात विचार कर रहा था। उसे इस बात का प्रथम अवसर मिला गोपाल और पंडित ब्रजलाल में सम्बन्ध बनने की सूचना मिलने पर।

सुरजीत सिंह चिढ़ा हुआ था रामलुभाया के विवाह के उपरान्त गुरुद्वारे न जाने पर। साथ ही रामलुभाया ने विवाह के उपरान्त हजामत बनवाई थी। सुरजीत सिंह एक दिन उसके घर पहुंच उससे पूछने लगा, "राम! तुमने तो पौल छकी थी? तुम्हें 'पांच ककारों' का आदर करना चाहिये था।"

"सरदार जी! वह तो मैं करता हूँ।"

"कैसे करते हो? तुमने तो कल हजामत बनवाई है। कई महीनों से रखे केश भी कटवा दिए है।"

"वह बात दूसरी है। मेरी पत्नी गुरमीत कौर मेरे सिर पर बालों को पसन्द नहीं करती।"

"तो उसको समझाओ।"

"समझा तो रहा हूँ, परन्तु सरदार जी! वह मुझको समझा रही है।"

"उसे बुलाओ। हम समझायेंगे।"

"वह यहाँ है नहीं। वह गोपाल चौधरी के घर रहती है और मैं भी रात वहीं जाकर सोता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों?"

"उसे इस घर में अकेले रहने से डर लगता है।"

सुरजीत सिंह ने पूछ लिया, "पर तुम रामलुभाया हो या रामसिंह?"

"महाराज! मैं रामसिंह हूँ और कच्छ, कड़ा, करपाण इत्यादि यह सब मैं रखता हूँ।"

"तुम गुरुद्वारे में आया करो।"

"आऊंगा।"

सुरजीत सिंह इससे सन्तुष्ट नहीं था। जब यह विख्यात हुआ कि एक ब्राह्मण की लड़की का विवाह एक जाट लड़के के साथ होने वाला है तो वह पंडित के विपरीत हो गया। वह समझ रहा था कि गाँव में हो रही अव्यवस्था इस ब्राह्मण और जाट गोपाल के कारण ही है। यदि बरियाम सिंह की बहिन सिख-धर्म के मुख्य चिन्ह केशों को पसन्द नहीं कर रही तो वह इन दोनों के कहने से ही है। यदि रामसिंह की बहिन के अपहरण की बात पर पर्दा पड़ रहा है तो वह भी इन दोनों के कारण ही है।

अब एक और घटना घटी। ब्रजलाल के मकान को आग लग गयी और सुन्दरलाल घायल वहाँ पाया गया। इस पर सरदार सुरजीत सिंह ने अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाये और जब आग बुझ चुकी तो गाँव के चौकीदार को बुला कर उसे यह रिपोर्ट लिखाई कि लाला को पंडित जी के घर की आग बुझाने से रोकने में उसका सिर फोड़ दिया है और वह मरनासन्न अपने कमरे में पड़ा है। सम्भवतः यह कुकृत्य गोपाल ने किया है। आग गोपाल अथवा मोहन ने लगाई है और लाला आग बुझा रहा था और उन दोनों में से किसी ने उसको मार डालने का यत्न किया है।

यह रिपोर्ट बताकर चौकीदार को थाने, जो डेढ़ मील के अन्तर पर एक अन्य गाँव में था, भेज दिया गया। जब चौकीदार थाने की ओर जा रहा था, तो मार्ग में बिहारीलाल शौच करके लौटते हुए उसे मिल गया।

बिहारीलाल ने पूछ लिया, "मुहम्मद दीन! किधर जा रहे हो?"

"आग लगने की रिपोर्ट करने।"

"कैसे लगी है यह आग?"

"यहाँ अफ़वाह है कि मोहन और गोपाल ने लगाई है।"

"अच्छा? वे तो आग बुझा रहे थे।"

"यह सब झूठ है। जब लाला सुन्दरलाल ने उन्हें देख लिया तो वे झूठ-मूठ आग बुझाने लगे। लाला को घायल भी तो गोपाल ने ही किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुमने देखा है?"

"लोग कह रहे हैं।"

बिहारीलाल चुप रहा, परन्तु कुछ ही आगे जाने पर गोपाल पंडित जी के घर जाता मिल गया। बिहारीलाल ने गोपाल को मुहम्मद दीन की सब बात बता दी। गोपाल ने यह कहा, "कोई भय की बात नहीं। जांच होने पर पता चल जायेगा।"

बिहारीलाल अभी गया ही था और गोपाल को पंडित जी बोतल पकड़े आते मिल गए। गोपाल ने मिट्टी के तेल की बोतल ली और लाला सुन्दरलाल के मकान की ओर चल पड़ा। लाला का पिछला द्वार खुला था। गोपाल भीतर के प्रांगण में खड़ा ही आवाज़ देने लगा, "चुन्नी लाल! चुन्नी लाल!!"

चुन्नी आया तो गोपाल ने उसे मिट्टी के तेल की बोतल पकड़ाते हुए कहा, "इसे अपनी दुकान में इसके स्थान पर रख दो।"

"बाबा! यह तुम्हारे पास कहाँ से आई है?"

"जहाँ लाला इसको छोड़ आया था। यह वहीं मिली है, जहाँ लाला घायल पड़ा था।"

"बाबा! भीतर सुरजीत सिंह ग्रन्थी भापा की ख़बर लेने आया है। भापा तो अभी बोल नहीं रहे और सुरजीत सिंह कह रहा है कि पंडित जी के घर को आग तुमने लगाई है।"

"गोपाल इस बात को सुन स्तब्ध रह गया। कुछ देर तक मौन रह विचार करता रहा और फिर बोला, "यह आग सुरजीत सिंह की लगाई प्रतीत होती है।"

"सत्य?" चुन्नीलाल ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा।

जब यह बात कही जा रही थी तो सीता भी मोहन के पिता की आवाज़ पहिचान बाहर आ गयी। जब से लाला सुन्दरलाल होश में आने पर अपने कमरे में ले जाया गया था, तब से वह चुपचाप पड़ा था। उसे दूध, शिलाजीत ओर कस्तूरी इत्यादि खिलायी गयी थी। इससे वह सचेत और सतर्क था। इस पर भी वह मौन था। शान्ति और सीता उसकी सेवा में वहीं थी। गाँव के लोग उसकी ख़बर लेने आ रहे थे। गाँव में यह बात फैल रही थी कि वह घायल हो गया था और अब अपने घर में पड़ा है।

सुरजीत सिंह के सिखाए कुछ लोग आ रहे थे जो अन्य लोगों के सामने गोपाल की निन्दा करने लगे थे। वे यह प्रकट करना चाहते थे कि गोपाल ने ही उस पर प्रहार किया था। गोपाल का विचार उसे मार डालने का था, परन्तु ईश्वर की कृपा से वह बच गए हैं।

शान्ति चुपचाप गाँव वालों की बातें सुन रही थी। अब सुरजीत सिंह आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह भी लगा गोपाल की निन्दा करने।

इस पर शान्ति से नहीं रहा गया। उसने पूछ लिया, "सरदार जी! आपने चौधरी को आग लगाते देखा था क्या?"

"गाँव के लोग कह रहे हैं?"

"तो मत कहिए। मैंने आग लगाने वाले को देखा है। मैं उसे पहिचानती हूँ।"

"कौन है वह?"

"आपको नहीं बताऊंगी। कभी पुलिस जांच करने आयी तो बताऊंगी।"

"तो मुझे नहीं बताओगी?"

"आप तो झूठ बोल रहे हैं। इस कारण आपको नहीं बताऊंगी।"

"मैंने झूठ नहीं बोला। मैंने जो कुछ गाँव वालों से सुना है वही चौकीदार को लिखाया है। सब गाँव वाले यही कह रहे हैं।"

"जब कोई ऐसा आदमी आकर मुझे बतायेगा कि उसने किसी को आग लगाते देखा है तब मैं उसे बताऊंगी।"

सुरजीत सिंह ने बात बदल दी, "और ललायिन! लाला का सिर किस ने फोड़ा है?"

"लाला जी जब भली-भांति होश में आ जायेंगे तो स्वयं बता सकेंगे।"

"और लाला तुम बोल क्यों नहीं रहे?"

सुन्दरलाल बोला नहीं। वह टुकुर-टुकुर मुख देखता रहा। सुरजीत सिंह लाला के चुप रहने का अर्थ समझ नहीं रहा था। वह अभी लाला के बोलने की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि गोपाल बाहर से ही आवाज़ देता हुआ भीतर आ गया, "शान्ति बहिन! शान्ति बहिन!!"

सुरजीत सिंह गोपाल के वहाँ आने पर उठ खड़ा हो गया और बोला, "अच्छा! लाला जी को आराम करना चाहिये। मैं समझता हूँ कि आराम करने से ये ठीक हो जायेंगे।"

गोपाल ने आते ही सुरजीत से पूछा, "सरदार जी! तुम को आग बुझाते हुए देखा नहीं पर तुम को आग लगाने वाले का पता कैसे चल गया है?"

"मैं वहाँ नहीं था, परन्तु जो वहाँ थे वे ही कह रहे हैं।"

"कौन, क्या कह रहा है?"

"एक, हमारे गुरुद्वारे के पड़ोस में रहता है नाम है रत्न सिंह।"

"मैं उसे जानता हूँ। वह भी वहाँ नहीं था और कौन कह रहा है?"

"गोपाल! तुम उनको धमका कर सत्य बोने से मना कर दोगे?"

"और तुम सत्य बोलने में सहायता करोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो गुरुमुख हूँ। झूठ बोल ही नहीं सकता।" इतना कहता हुआ सुरजीत सिंह कमरे से बाहर निकल गया।

उसके चले जाने के उपरान्त गोपाल ने शान्ति से कहा, "तुम द्वार बन्द करके क्यों नहीं रखती? ऐसे लोगों को भीतर आ लाला को तंग मत करने दिया करो।"

इस समय सीता और चुन्नी भी वहाँ आ गये थे। शान्ति उठ बाहर जाते हुए गोपाल से बोली, "भैया! ज़रा बाहर आओ।"

गोपाल बाहर चला आया। शान्ति उसे प्रांगण में लाई और बच्चों के सुनने से दूर ले जाकर कहा, "भैया! मैं जानती हूँ कि आग लाला ने लगाई है और लाला पकड़े जाने के भय से बोल नहीं रहे। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि ग्रन्थी ने लाला को आग लगाने के लिये भड़काया है।"

"कैसे जानती हो यह?" गोपाल ने पूछ लिया।

"लाला पंडित के घर को आग लगाने के लिये जाने से कुछ पहले बरियाम सिंह की बहिन और रामलुभाये के विषय में बात कर रहे थे। मुझे ऐसा समझ आया है कि पंडित जी के विरुद्ध गाँव में गुट-मेल हो रहा है और सुरजीत उनका सरग़ना बना हुआ है।"

"अच्छा, बहिन। इसी सुरजीत ने चौकीदार को बहका कर थाने भेजा है। मैं तो उसको वहीं समझा-बुझा देना चाहता था। अब भी यत्न करूँगा कि बात अदालत तक न जाये। तुम लाला को कहो कि वह ऐसा प्रकट करे कि जैसे वह बहरा, गूंगा और अन्धा हो गया है। उसे समझा दो कि वह कुछ बोले नहीं।"

"मैं कह दूँगी, परन्तु वे मेरी बात मानेंगे अथवा नहीं, कह नहीं सकती।"

"यत्न करो।"

7

गोपाल घर गया और स्नानादि से अवकाश पा अपनी बैठक घर में मोहन को बुला, विचार करने लगा कि क्या किया जाये? इस समय पंडित ब्रजलाल, भवानी शंकर और अश्विनी कुमार वहाँ आ गये।

ब्रजलाल ने बताया, "पुलिस जांच करने आ गई है। वह मेरे बयान ले गई है। हम सबने यही बताया है कि हम सोये हुए थे। घर के बाहर भारी शोर सुन हम जागे और मकान के उस भाग को आग लगी देख उसे बुझाने में लग गए। उस समय गाँव के लोग भी आग बुझा रहे थे और हम कुछ नहीं जानते।

"गोपाल भैया। मैं नहीं चाहता कि कोई भी इस अग्निकांड में फंसे। मेरी जो हानि हुई है वह तो हो गई, मैं अपने काम से किसी को हानि नहीं पहुँचाऊंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब थानेदार कहाँ है?"

"चौकीदार उसे सुरजीत सिंह के गुरुद्वारे में ले गया है।"

"मैंने? गोपाल ने मुस्कराते हुए कह दिया, "थोड़ा झूठ बोलने का फ़ैसला किया है।"

"यह तो बहुत बुरी बात होगी।"

"पर पंडित जी। गाँव में कुछ लोग हैं जो आपको और मुझको लड़ाने का यत्न कर रहे हैं। उनसे बचना भी तो चाहिये।

"देखिये, पंडित जी। मैं इस झूठ बोलने को इस प्रकार समझता हूँ जैसे युद्ध करते हुए दो पग पीछे हठ जायें तो उसे कायरता नहीं कहा जा सकता। उसी प्रकार इस उद्देश्य से झूठ बोलने को पाप नहीं कहना चाहिये।"

"क्या बयान दोगे?"

"मैं कहूँगा कि गाँव में भारी शोर सुन मेरी आंख खुली तो मैं यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है, घर के बाहर निकल आया। पंडित जी के घर की ओर से शोर आ रहा था। मोहन मेरे साथ था। हमें कुछ लोग पंडित जी के घर की ओर से भागे हुए आते मिले। मैंने उनसे पूछा कि क्या है? तो उनके साथ जा रहे सुरजीत सिंह ने बताया, 'पडित जी को मज़ा चखा दिया है।'

"मैंने पूछा, 'क्या चखा दिया है?' इस पर उसने कहा, 'सुबह पता चल जायेगा।'

"सुरजीत सिंह के साथ तीन आदमी और थे। मैं उनकी बात न समझता हुआ पंडित जी के घर की ओर गया तो पता चला कि घर में आग लग गई है। मैं घर को आया और अपने लड़कों को साथ ले पंडित जी के मकान की आग बुझाने चल पड़ा। इस समय तक गाँव में कुछ और लोग भी आ पहुँचे थे और आग बुझाने में लगे हुए थे। दो घंटे से अधिक काल तक यत्न करना पड़ा। आग बुझी तो मैं और मोहन घर लौटे। मार्ग में लाला सुन्दरलाल घायल और अचेत पड़ा मिला। हमने भैरव लाल के घर से खाट ली और लाला को उस पर डालकर उसके घर पहुँचा दिया।"

"और मोहन। तुम क्या कहना चाहते हो?"

"यही कि सुरजीत सिंह और उसके साथियों के हाथ में लाठियां थीं और वे पंडित जी के घर की ओर से भागे हुए आ रहे थे। जब हम पहले पंडित जी के घर पहुँचे थे तो आग अभी धधकी नहीं थी। आग बुझाने का काम तो हमने और बिहारीलाल इत्यादि ने ही आरम्भ किया था।"

"और तुम्हारे हाथ में लाठियां नहीं थीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं पंडित जी।"

ब्रजलाल हंस पड़ा और बोला, "बात पेचीदा हो रही है।"

"पंडित जी। देखते जाइये। हम जाटों वाला सत्य बोलेंगे।"

"वह क्या होता है?"

"कहावत है न, जट यमला ते खुदा नू लै गये चोर।"

"भाई! झूठ बोलकर भी यदि फंस गये तो बहुत बुरा होगा।"

"पंडित जी, देखते जाइये।"

वे अभी बातें कर ही रहे थे कि बिहारीलाल और लक्ष्मण आ गये। गोपाल ने बिहारीलाल से पूछा तो उसने कहा, "मैं अपने बयान दे आया हूँ। मैंने तो यही लिखाया है कि हम जब पंडित जी के घर पहुँचे थे तो गोपाल और उसके लड़के कुएँ से जल निकाल-निकाल आग बुझाने का यत्न कर रहे थे। गोपाल यह यत्न कर रहा था कि आग उस ओर न फैले जिस ओर अभी नहीं लगी थी। वह लोगों को पुकार कर कह रहा था कि आग लगे हुए भाग में और बच रहे भाग के बीच में भी जल-थल कर दो।"

लक्ष्मण ने बताया, "थानेदार अब सुन्दरलाल के घर गया है।"

गोपाल ने पूछ लिया, "तुम वहाँ गये थे क्या?"

"नहीं। वहाँ केवल सुरजीत सिंह और थानेदार मुंशी के साथ गये हैं।"

"सुरजीत सिंह के क्या बयान हुए हैं?"

"हमारे वहाँ पहुंचने से पहले उसके बयान हो चुके थे।"

इस समय थानेदार आ गया। उसने गोपाल की बैठक में बैठे हुए लोगों से पूछ लिया, "यहाँ क्या गुट-मेल हो रहा है?"

"यही," गोपाल ने कहा, "कि पंडित जी की हानि किस प्रकार पूरी की जाये।"

"किस प्रकार हानि पूरी करोगे!"

"उनके मकान का जला भाग बनवाना है। उनका जल गया सामान उनको लेकर देना है।"

"और तुम लोग क्यों यह दोगे?"

"हम उनके यजमान हैं।"

थानेदार अब्दुल सैय्यद ने बैठक में बैठते हुए कहा, "मैं गोपाल और मोहन के बयान लिखने आया हूँ।"

"लिख लो।" गोपाल ने कहा तो थाने के मुंशी ने अपना बस्ता खोला और कलम, दवात खोल लिखने के लिए तैयार हो गया। गोपाल और मोहन ने वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बयान लिखवा दिये जो उन्होंने पंडित जी को बताये थे। इस पर थानेदार ने प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये।

"चौधरी। तुम्हारी नींद खुलने के वक्त कैसा हल्ला था?"

"वह तो ठीक-ठीक बता नहीं सकता। मैं उस समय नींद में था। जब मैं घर से गया तो आवाज़ आ रही थी, "मारो! मारो!!"

"और जब तुम पंडित जी के मकान पर पहुँचे तो क्या शोर था?"

"वहाँ शोर मचाने वाला कोई नहीं था। आग अभी भड़की नहीं थीं।"

"कितना अर्सा लगा होगा तुमको गगरे और मदद ले वहाँ पहुंचने में?"

"तीन-चार मिनट से अधिक नहीं लगे। उस समय भी वहाँ कोई पहुँचा नहीं था।"

"हमने पंडित जी के मकान के बाहर वाले कुएँ पर से पानी निकालकर पंडित जी के मकान के बचे भाग और जल रहे भाग के बीच पानी फेंकना आरम्भ कर दिया।

"उस समय तक गाँव के और लोग भी आ गये थे और पंडित जी के घर के लोग भी आए हुए थे। हमने पहले तो घर के बचे भाग को बचाने का यत्न किया। जब वह सुरक्षित हो गया तब हमने आग बुझानी आरम्भ की।"

इसके उपरान्त थानेदार ने पूछा, "भैरव लाल भी आग बुझाने गया था?"

"हाँ। वह मेरे साथ कुएँ से पानी निकाल रहा था।" मोहन ने कहा।

"खाट माँगने के समय वह कहाँ था?"

"वह हमारे साथ ही था। हम पंडित जी के घर से लौट रहे थे। हम घर के पिछवाड़े से होकर आ रहे थे कि लाला पड़ा मिला।"

"कितने लोग बुझाने के लिये पहुँचे होंगे?"

"चालीस पचास आदमी रहे होंगे।"

"सुरजीत सिंह वगैरा उनमें था या नहीं?"

"हमने उन्हें पहले पंडित जी के मकान की ओर से आते तो देखा था। पीछे वे दिखाई नहीं दिये।"

थानेदार ने कुछ भी नहीं कहा और वहाँ से चल पड़ा। सुरजीत सिंह उसके साथ ही चला गया। जब थानेदार और सुरजीत सिंह चले गये तो पंडित जी ने कह दिया, "गोपाल भैया! तुम्हारा थोड़ा-सा झूठ भी मुझको कानों में खटक रहा प्रतीत होता है।"

"पंडित जी। इसमें झूठ कुछ नहीं। इसमें सच बात को कहने का ढंग अलग है। देखिए, मैं बताता हूँ कि लाला ने आग लगाई है। उसे भड़काया है सुरजीत सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने। लाला इस कारण भड़का है कि मोहन से उसकी लड़की की सगाई होने के स्थान आपकी लड़की की सगाई हो गई है।

"सुरजीत सिंह आपके विरुद्ध इस कारण है कि रामलुभाया की बहिन जो बरियाम सिंह से विवाह दी जाने वाली थी, उसे आपने सोहन के साथ भगाया है। मैं यह समझा हूँ कि वास्तविक दोषी सुरजीत है। लाला मूर्खतावश सुरजीत का हथियार बन गया है।"

"लाला फंसे अथवा न फंसे। इस विषय में मेरी दिलचस्पी नहीं। हाँ, जो षड्यन्त्र का सरग़ना है, उसके बच जाने से पाप हो जायेगा।"

पंडित जी तो किसी के भी फंस जाने को पसन्द नहीं करते थे, परन्तु बिहारीलाल ने चौकीदार की बात बताई कि उसको रिपोर्ट यह दी गई है कि आग गोपाल लगा रहा था। लाला उसे रोकने गया था और गोपाल ने उस पर लाठी से प्रहार किया था। यह सुन पंडित जी समझे कि गोपाल अपनी कहानी बनाने में ठीक है उसके बचने का यही उपाय है। इस पर उसने कह दिया, "गोपाल! अब ऐसा उपाय करो कि तुम्हारे साक्षी मिल जायें।"

गोपाल ने कहा, "पंडित जी! आप निश्चिन्त रहें। सब ठीक होगा।"

पंडित भवानी शंकर ने कह दिया, "मैं तो आज नगर लौट रहा हूँ। अश्विनी को अपने काम पर आज ही उपस्थित होना है। ब्रजलाल से कह रहा हूँ कि शीघ्र मकान मरम्मत करा ले, जिससे विवाह के पहले स्थान ठीक हो जाये।"

"आप चलिये। कदाचित् नगर के किसी अच्छे वकील से सहायता लेनी पड़े।"

"आ जाना। जब तक मुकदमा पुलिस बना रही है, अपने गवाह इत्यादि बनाओ।"

जब ये लोग चले गये तो गोपाल ने बिहारीलाल से कहा, "बिहारीलाल! जिन-जिन के थानेदार के सामने बयान हुए हैं उनको एक-एक कर बुला लाओ। मैं ज़रा सुन लूँ कि मुकदमा किस प्रकार बन रहा है?"

ब्रजलाल अपने ससुर को विदा करने चला गया।। बिहारीलाल भी बाहर निकल गया। लक्ष्मण ने कहा, "बाबा! मैं मुहम्मद दीन को बुलाता हूँ और उससे सारे बयानों की बात पता करता हूँ।"

"हाँ। यदि हो सके तो उसे यहाँ ले आओ।"

लक्ष्मण भी चला गया। इस समय भगवन्ती और शान्ति आ गईं। गोपाल यह जानना चाहता था कि लाला जी के घर में क्या हुआ? उसने शान्ति से पूछ लिया, "अच्छा बहिन। लाला जी ने क्या कहा है?"

"कुछ नहीं। वे ऐसे ही पड़े हुए हैं जैसे मानो न तो वे सुनते हैं और न ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे बोल सकते हैं। थानेदार ने पूछा था कि लाला बोलता क्यों नहीं?

"मैंने तो यही बताया था कि इनके सिर पर चोट लगी है। क्या जाने इनको सुनाई भी देता है अथवा नहीं।

"थानेदार लाला जी को ऊंचे-ऊंचे पुकारता रहा, परन्तु वे बोले नहीं। इसके उपरान्त वे वहाँ से चले गये। इतना कह गये हैं कि लाला जी को हस्पताल में पहुँचा दूँ।

"देखो, शान्ति बहिन। मैं जानता हूँ कि आग लाला जी ने लगाई है, परन्तु तुम कहती हो कि सुरजीत सिंह के कहने पर लगाई है। इस कारण मेरे विचार में अपराधी सुरजीत है। लाला तो भोलेपन में फंस गया है। यदि वह सुन सकता है तो उसे कह देना कि वह मेरे कथन का समर्थन कर दे। यही कहे कि वह शौच कर, ब्रजलाल जी के घर के आगे से जा रहा था कि सुरजीत सिंह इत्यादि पंडित के घर में आग लगा रहे थे। लाला ने उनको मना किया तो सुरजीत सिंह ने लाठी उसके सिर पर दे मारी। वह अचेत हो वहाँ ही गिर गया था और वह कुछ नहीं जानता। नहीं तो लाला स्वयं फंस जाएगा।"

"भैया। मैंने यह बात उन्हें कही तो है, परन्तु वे कुछ भी नहीं बोलते बस मेरा मुख ही देखते रहे हैं। भगवान जाने वे सत्य ही अन्धे और बहरे न हो गये हों।"

"मैं मोहन को कहता हूँ कि वह उनको खाट पर डलवा कर हस्पताल ले जाये। तुम साथ चली जाओ।"

शान्ति ने मोहन की ओर याचना के भाव से देखा तो वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ और लाला के खेतों में काम करने वाले कुछ लोगों को लेकर लाला के घर जा पहुँचा।

8

मुकदमा चल नहीं सका। गाँव के किसी भी आदमी ने सुरजीत सिंह के बयानों का समर्थन नहीं किया। गोपाल के बयानों का समर्थक केवल मोहन था। हाँ, एक-दो आदमियों ने यह बयान दिए थे कि सुरजीत सिंह पंडित के विपरीत हो रहा था और उन लोगों ने उसके पंडित जी के विरुद्ध होने का कारण भी बताया था। इसमें बरियाम सिंह, सोहन और सावित्री की बात भी आ गई। पंडित जी के दोनों को प्रायश्चित कराने पर सुरजीत सिंह नाराज़ था। एक आदमी ने यह भी बताया कि दो दिन पहले सुरजीत सिंह गुरुद्वारे में पाठ के उपरान्त उपदेश करते हुए ब्रजलाल की निन्दा कर रहा था।

इन बयानों के कारण थाने को लौटते हुए थानेदार ने सुरजीत सिंह से कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"सरदार जी! यह आग का मामला तो बहुत संगीन मालूम होता है।"

"हाँ, संगीन तो है।"

"मुझे तो आपको हवालात में रखकर जांच करनी पड़ेगी।"

"क्यों?"

"गोपाल के बयान सुने हैं। मोहन ने उसकी ताईद की है, लेकिन एक और बयान आपके सख़्त खिलाफ़ है। वह है किशनु का। उसने कहा है कि आपने दो दिन हुए गुरुद्वारे में संगत के सामने ब्रजलाल पंडित जी की निन्दा की थी। वह बयान गोपाल और मोहन के बयानों की ताईद में माना जायेगा।"

"परन्तु ये तो मेरे विरोधी हैं।"

"ठीक है। यह अदालत फैसला करेगी कि आप उनके खिलाफ़ हैं या वे आपके खिलाफ़ हैं। मैं तो यह देख रहा हूँ कि आपके बयान की ताईद नहीं हुई कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिसने आपको वहाँ आग बुझाते देखा है। जब आप वहाँ थे ही नहीं तो आपने कैसे देख लिया कि गोपाल आग लगा रहा था?"

सुरजीत सिंह चुप कर गया। वह कुछ कहना चाहता था, परन्तु अपने मन की बात कह नहीं सका। इस पर थानेदार ने स्वयं ही कह दिया, "आप चौकीदार के हाथ घर पर कहला भेंजे कि एक सौ रुपया लेकर थाने में आ जायें। नहीं तो आपको पर्चा चाक कर आप पर मुकदमा कायम हो जायेगा। चौकीदार के बयान यह साबित कर सकते हैं कि सब झगड़े की जड़ आप ही हैं और अपने को बचाने के लिये आप झूठे बयान दे रहे हैं।"

सुरजीत सिंह गम्भीर हो साथ चलता हुआ कहने लगा, "खान साहब। सौ रुपया तो मेरे पास है नहीं।"

"तो किसी से उधार माँग लो। पीछे दे देना।"

"पर किससे उधार माँग लूँ। गाँव में सिर्फ लाला है जो इतनी रकम दे सकता है, परन्तु वह खुद बीमार है और रुपया दे नहीं सकेगा।"

"अच्छी बात है। तो मैं आपको हिरासत में रखूंगा।"

थाने में पहुंच सुरजीत सिंह को मास्टर घनश्याम की बात स्मरण हो गई कि वह भी गोपाल और पंडित के विरुद्ध बातें किया करता था। उसने चौकीदार से कहा, "स्कूल मास्टर घनश्याम को बुला लाओ।"

चौकीदार समझ गया कि रुपये की बात बनने वाली है। इस कारण उसने थानेदार से पूछा, "मैं सरदार साहब का ज़ामन ढूंढने जा रहा हूँ। जाऊँ क्या?

थानेदार सुरजीत के किसी ज़ामन को बुलाने का विचार करते सुन प्रसन्न हो बोला, "हाँ, मुहम्मद दीन। ज़रा उसे माजरा समझा देना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकीदार गया और घनश्याम को थाने में ले आया। वहाँ सुरजीत ने उसे पृथक् में सब बात समझाई तो मास्टर बोला, "तो मुकदमा चलने दीजिये। मैं गोपाल के बच्चे को मजा चख दूँगा।"

"नहीं, मास्टर जी! वह पैसे वाला आदमी है और मुझे सन्देह है कि लाला सुन्दरलाल जान-बूझ कर खामोश है।"

"पर क्या यह ठीक है कि लाला आग बुझाने गया था? मैं तो जानता हूँ कि वह महा डरपोक है और उसमें आग बुझाने का साहस हो ही नहीं सकता।"

"आग बुझाने का साहस है अथवा नहीं, यह ईश्वर जानें अब तो इस बात पर विचार करना है कि मेरे हवालात में रहने से गोपाल पूर्ण गाँव को मेरे विरुद्ध कर देगा।"

"यह तो है, पर आपकी जमानत हो सकती है।"

"देखो। थानेदार को कुछ दिला दो और जो कुछ करो उसकी मार्फत ही करो। उससे झगड़ा कर कुछ नहीं हो सकेगा।"

मास्टर घनश्याम गाँव में गया और पचास रुपये ले आया। वे पचास रुपये देकर उसने कहा, "मेरे पास इतने ही थे। शेष सुरजीत स्वयं नगर में जाकर अपने सम्बन्धियों से एकत्रित कर लायेगा।"

थानेदार मान गया। उसने रुपये जेब में रखे और सुरजीत को कहा, "अभी मुकदमे की जांच होगी और आप कल दस बजे दिन को थाने में आ जाना।"

परन्तु गाँव में परिस्थिति बदल गई थी। रत्न सिंह भाग गया था। किशन चन्द अपने साथी गुरुद्वारे जाने वाले लोगों में से ढूंढने लगा था।

अतः सुरजीत नगर गया और थानेदार को शेष रकम लाकर उसने दे दी। थानेदार ने चौकीदार की रिपोर्ट के नीचे लिख दिया, "जांच करने पर पता चला है कि किसी ने किसी को आग लगाते नहीं देखा। सुन्दरलाल किसी से टकरा कर चोट खा गया है।"

मुकदमा नहीं चला। लाला सुन्दर लाल हस्पताल में पहुँचा दिया गया और सुरजीत वहाँ पहुंचकर बताने लगा कि उसने सौ रुपया देकर अपनी जान छुड़ाई है और अब वह ब्रजलाल तथा गोपाल के खिलाफ़ कुछ नहीं करेगा। इस पर लाला बोल पड़ा। उसने कहा, "पर सरदार जी! आप शीघ्र ही घबरा गये हैं। एक-दो दिन हवालात से रह जाते तो सब ठीक हो जाता।"

शान्ति लाला की खाट के समीप बैठी दोनों में हो रही बात सुन रही थी। लाला उससे पहले डॉक्टरों के यत्न करने पर भी नहीं बोला था। आख़िर डॉक्टरों का कहना था कि रक्त बहुत बह जाने के कारण वह बहुत दुर्बल हो गया है। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कारण इसका मस्तिष्क काम नहीं करता।

जब सुरजीत सिंह ने अपने सौ रुपया दे छूटने की बात कही तो लाला बोल पड़ा। उसे बोलते देख शान्ति हंस पड़ी। हंसते हुए बोली, "मुकदमे में एक गवाह मैं भी तो थी।"

"तुम...तुम नहीं मानोगी तो मैं फिर गुम-सुम हो जाऊँगा।"

इस पर तो सुरजीत सिंह भी हंसने लगा। शान्ति ने कहा, "मैं समझती हूँ कि अब घर वापिस चलना चाहिये। यहाँ दो रुपये नित्य कमरे का किराया देना पड़ रहा है।"

"हाँ, डॉक्टर को बुला लाओ। उसको कह कर छुट्टी ले लेता हूँ।"

शान्ति डॉक्टर को बुलाने चली गईं उसके जाते ही सुरजीत ने कहा, "लाला! तुम बहुत बड़े बेईमान आदमी हो। खूब बहाना बनाया था।"

"मैं समझ गया था कि मैंने गलती की है और उस गलती को ठीक रास्ते पर ला रहा था।"

डॉक्टर आया और वह लाला को बोलते और डॉक्टर को पहिचानते देख बहुत प्रसन्न हुआ। उसने खाने-पीने और सिर के घाव की नित्य पट्टी कराने की बात कह लाला को हस्पताल से छुट्टी दे दी।

सुन्दरलाल के इस दुष्कृत्य पर भी उसके घर की समस्या सुलझी नहीं। अमृतसर सरकारी हस्पताल से लौटने के दो-तीन दिन उपरान्त बनवारी लाल के घर के लोग सीता के विवाह का निश्चय करने आये। सुन्दरलाल अनिश्चित मन था। तब तक सीता पुनः पंडित जी के घर पढ़ने के लिये जाने लगी थी। यद्यपि पढ़ने के लिये जाने वाली दूसरी लड़कियों में अब केवल गोपाल की लड़की राधा ही आती थी। इस पर भी पंडित ब्रजलाल नियम से पढ़ाने बैठते थे और अपनी लड़की कलावती और राधा के साथ सीता को भी पढ़ाते थे। अब सीता के साथ सीता की माँ शान्ति देवी भी आती थी। प्रत्यक्ष में वह गार्गी से मिलने जाती थी, परन्तु वास्तव में वह गाँव वालों की दृष्टि में और अपने मन में भी अपनी युवा लड़की की देख-रेख के निमित्त ही यह मानती थी।

वह प्रायः गार्गी के साथ बैठी-बैठी लड़कियों को पढ़ते देखा और सुना करती थी। उसे पंडित जी की पढ़ाई में कोई आपत्तिजनक बात प्रतीत नहीं होती थी।

जिस दिन बनवारीलाल के घर की स्त्रियाँ और पुरुष विवाह की तिथि इत्यादि निश्चय करने आये, सीता को पंडित ब्रजलाल से पुनः पढ़ने जाते हुए चार-पांच दिन हो गये थे। उस दिन बनवारीलाल के घर लोगों के आने के समय सीता और उसकी माँ ब्रजलाल जी के घर गई थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरलाल ने बनवारी लाल के घर के लोगों को घर की बैठक में बैठाया और अपने लड़के चुन्नीलाल को सीता और उसकी माँ को बुला लाने के लिये पंडित जी के घर भेज दिया। वह स्वयं पुरुषों में बैठ अपनी बीमारी का वृत्तान्त बताने लगा।

चुन्नी लाल पंडित जी के घर गया और माँ को बाहर बुलाकर बताने लगा, "माँ! नगर से बनवारी लाल के घर के पुरुष और स्त्रियाँ आयी हैं।"

शान्ति का मुख विवर्ण हो गया। वह आज सीता द्वारा झगड़े की आशंका करने लगी थी। एकाएक उसके मन में विचार आया कि सीता को समझाने के लिये पंडित जी और गार्गी की सहायता लेनी चाहिये। इस कारण चुन्नी लाल को बाहर खड़ा रहने देकर वह भीतर पंडित जी के सामने जा खड़ी हुई शान्ति के विवर्ण मुख को देख गार्गी ने पूछ लिया, "क्या बात है शान्ति बहिन।"

"मैं पंडित जी से एक बात पृथक् में कहना चाहती हूँ। इन लड़कियों से पृथक् में।"

"और मुझ से भी?"

"नहीं बहिन। तुम और पंडित जी में कोई अन्तर नहीं है।"

गार्गी ने शान्ति की बात पंडित जी से कही और पंडित जी ने शान्ति का विवर्ण मुख देखा तो लड़कियों को छोड़ बाहर प्रांगण में आ गये। गार्गी और शान्ति उनके साथ साथ वहाँ आकर पंडित जी के सामने खड़ी हुईं। बात शान्ति ने की। उसने सीता के विवाह का विवाद संक्षेप में सुना कर कहा, "इस समय बनवारी लाल के घर के लोग आये हैं। आप सीता को समझा दीजिये कि विवाह एक धर्म-कार्य है और उसे मान जाना चाहिये।"

"पंडित जी ने एक मिनट तक आँखें मूंद विचार किया और फिर कह दिया, "शान्ति बहिन। मन में बनी धारणा को मिटाकर उसके विपरीत धारणा निर्माण करना एक मिनट में कैसे हो सकेगा? इससे भी आवश्यक बात यह है कि मैं जानता नहीं कि लाला ने इसके लिये कैसा लड़का ढूंढा है? मैं इस विषय में कुछ कह नहीं सकूँगा।"

शान्ति ने कह दिया, "इस लड़के के विषय में न सही, आप विवाह की उपयुक्तता पर तो इसे कह ही सकते हैं।"

"हाँ, मैं समझता हूँ कि प्रायः सब युवक-युवतियों को विवाह कर लेना चाहिये, परन्तु बहिन, इस बात को समझाने के लिये भी तो समय लगेगा। जब घर में विवाह की तिथि निश्चित करने तुम्हारे समधी आकर बैठे हैं तो तुम मुझे विवाह के विषय में समझाने की बात कहती हो। यह इस प्रकार सम्भव नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कम से कम इसे इतना तो कह दीजिये कि अपने माता-पिता का कहा मानना चाहिये।"

"यह मैं कह देता हूँ। आओ, बहिन। तुम्हारे सामने ही सब बात कह देता हूँ।"

ब्रजलाल भीतर कमरे में गया और सीता से बोला, "सीता बेटी। तुम्हारी माँ तुमको घर चलने के लिये कह रही हैं। वे कुछ कह रही हैं। मेरी सम्मति मानो तो अपने माता-पिता की धर्मयुक्त बात को मानना ही अच्छे बच्चों का कर्त्तव्य है। जाओ, भगवान् तुम्हारा कल्याण करेगा।"

"सीता चुन्नी लाल के आने और माता द्वारा पंडित जी को बाहर ले जाकर समझाने को देख रही थी। वह समझ रही थी कि उसके विवाह की बात हो रही है। उसका मन कह रहा था कि नगर से कुछ लोग आये हैं और चुन्नी लाल माँ तथा उसे बुलाने के लिये आया है।

अब पंडित जी की सीख कि माता-पिता का 'धर्मयुक्त कहना' मानना अच्छे बच्चों का कर्त्तव्य है, उसने सुनी। उसमें धर्मयुक्त शब्द पर विशेष बल दिया गया समझ आया। वह एक क्षण तक गम्भीर विचार में मग्न रह पंडित जी का मुख देख मुस्कराती हुई बोली, "पंडित जी। आप की आज्ञा का पालन करूँगी।"

शान्ति को धर्मयुक्त का अर्थ यह समझ आया कि विवाह कर्म-धर्म ही है। अतः पंडित जी ने सीता को विवाह स्वीकार कर लेने की सम्मति दी है।

वह प्रसन्नचित्त सीता को लेकर घर चली आयी। घर पर सीता और शान्ति बैठक घर में नहीं गयीं। उन्होंने प्रांगण में खाट डलवा कर स्त्रियों को वहाँ ही बुला लिया। सब को खाटों पर बैठा शान्ति स्वयं सीता को लेकर एक खाट पर बैठ गयी।

लड़के की माँ उठकर सीता के दूसरी ओर आ बैठी। वह सीता की पीठ पर हाथ फेर प्यार देते हुए बोली, "बेटी सीता। मुझे पहिचानती हो?"

"जी।" सीता ने निःसंकोच भाव में उत्तर दिया, "आप उस दिन आयी थीं जिस रात यहाँ गाँव में अग्नि-काण्ड हो गया था और बाबा घायल हो गये थे।"

"ठीक है, बेटी। मैं तुम्हारी सास हूँ और तुम्हें अपने घर ले चलने का मुहूर्त्त निश्चय करने आई हूँ।"

"माँ जी।" सीता ने अभी भी उसी भाव में कहा, "आप माता तुल्य हैं। सास न सही माता तो हैं ही।"

"नहीं बेटी। मैं सास भी हूँ। तुम्हारे पति की माँ होने से तुम्हारी भी माँ हूँ।"

सीता ने अपने मन की बात इनको कह देनी उचित समझी। उसने चानन देवी के मुख पर देखते हुए कहा, "जी नहीं। आपको विदित हो जाना चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेरा विवाह हो चुका है। मेरे स्वामी की आप माँ नहीं हो सकती।"

इतना कह सीता उठ खड़ी हुई "यदि आप मेरे स्वामी जी को देखना चाहती हों तो मेरे साथ आइये। मैं आपको उनके दर्शन करा सकती हूँ।"

"और वह कहाँ है?" चानन देवी ने भौचक्क लड़की के मुख पर देखते हुए पूछ लिया।

जो चार अन्य स्त्रियाँ खाटों पर बैठी थीं, कुछ न समझती हुई स्तब्ध रह गईं।

9

सीता ने खड़े हो कह दिया, "आइये माँ जी मैं दिखा सकती हूँ।"

शान्ति ने पृथक् में लड़की और चानन देवी में बात करने के विचार से कहा, "आइये। उसको भी देख लीजिये। मैं समझती हूँ, उसे भी आप अपने घर ले जाइयेगा।"

चानन देवी कुछ भी न समझती हुई उठी और सीता से बोली, "चलो। दिखाओ।"

जाने से पूर्व उसने अपने साथ आई...स्त्रियों से कहा, "आप बैठिये। मैं अभी आयी।"

सीता, माँ और चानन देवी को अपने कमरे में ले गयी। उसके एक कोने में चौकी लगी थी और चौकी पर तुलसीकृत रामायण रखी थी। उस पर दो फूल पड़े थे। चौकी के साथ दीवार पर सीताराम की तस्वीर लटक रही थी।

सीता चौकी के सामने बैठ और राम के सामने माथा नवा हाथ जोड़ कुछ क्षण तक आँखें मूंदे बैठी रही। पश्चात् उसने आँखें खोलीं और अपने पीछे खड़ी माँ और चानन देवी से बोली, "माँ जी। बैठिये। ये हैं मेरे पति देव। अब अन्य कोई इनका स्थान नहीं ले सकता।"

"पर, बेटी।" चानन देवी ने कहा, "इनको अपने साथ ले चलना। हम भी इनकी सेवा का फल प्राप्त करेंगी।"

"आप नहीं समझीं माँ जी! मैं इनके घर में रहती हूँ। ये यहाँ से जा नहीं सकते और मैं यहीं रहूँगी। मेरा अब किसी अन्य से विवाह नहीं होगा।"

इतना कह सीता पुनः भगवान् की मूर्ति के अभिमुख हो शीश चौकी पर रख आँखें मूंदी पड़ गईं।

शान्ति और चानन देवी कुछ देर तक लड़की को देखती रहीं। एकाएक चानन देवी संकेत से शान्ति को कमरे से बाहर ले गयी और उसे प्रांगण में ले जाने के स्थान साथ के कमरे में ले जाकर पूछने लगीं, "बहिन। यह क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़की विवाह न करने की बात कह रही है और हम इसे विवाह करने पर राज़ी कर रहे हैं। यह अभी मानी नहीं, परन्तु हम आशा क़रते हैं कि एक बार इसे अपने पति की संगत प्राप्त हुई तो यह अपना हठ छोड़ पति की भी उतनी ही भक्तिनि बन जायेगी जितनी यह भगवान् की है।"

"पर, बहिन। यह सब अब विचारणीय हो गया है।"

शान्ति मुख देखती रह गयी। चानन देवी ने अपने पति को जो अन्य पुरुषों के साथ बैठक में बैठे दूध और मिठाई ले रहे थे, संकेत से बाहर बुला लिया। ज़ब बनवारी लाल बाहर आया तो चानन देवी ने उसे सीता से हुई पूर्ण बात बता कर कह दिया, "अभी विवाह की तिथि निश्चय न करिये। जब लड़की मेरे साथ हमारे घर चलने को तैयार होगी तब विवाह की तिथि निश्चय कर दी जायेगी।"

"तो यह दूध," जो वह भीतर आधा छोड़ आया था, "न पियूँ?"

"नहीं पी लीजिये। अभी तिथि निश्चय नहीं होगी।"

इसके उपरान्त वह प्रांगण में अपने साथ आई स्त्रियों में चली गयी। वहाँ भी खाना-पीना हो रहा था।

चानन देवी ने भी दूध पिया और मिठाई खाई तदुपरान्त उसने अपने साथ आई औरतों को कहा, "अब हम चल रहे हैं। बहन शान्ति स्वयं हमारे घर आयेंगी और आकर बतायेंगी कि विवाह का क्या मुहूर्त्त निकला है?"

जब शान्ति ने सीता का चानन देवी से हुआ वार्तालाप अपने पति को बताया तो वह पहले तो क्रोध में उसे पीटने को लपका, परन्तु शान्ति ने उसकी बांह से पकड़ रोक लिया। सुन्दर लाल प्रश्न-भरी दृष्टि से शान्ति की और देखने लगा।

शान्ति ने अति विनीत भाव से पूछ लिया, "क्या करने जा रहे हैं? पहले मुझे तो बताइये?"

"मैं उसकी हत्या कर दूँगा।"

"तो पहले मेरी हत्या कर दो। आपके फांसी चढ़ जाने पर विधवा होने से यह अधिक ठीक होगा।"

"तो दो हत्यायें करूँ?" सुन्दर लाल का क्रोध शान्त हो रहा था।

"दो हत्याओं से भी एक ही बार फांसी लगेगी। तो एक से दो अच्छी नहीं होंगी क्या?"

सुन्दरलाल के क्रोध का उबाल ठण्डा पड़ने लगा था। इस पर उसने कहा, "तो क्या चाहती हो मुझसे?"

"चलकर ठण्डा जल पीजिये। तब बताऊंगी।"

इस समय सीता अपने कमरे के बाहर वाद-विवाद का हल्ला सुन, वहाँ आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी और प्रश्न सूचक दृष्टि से माता-पिता को देखने लगी। सुन्दर लाल खड़ा था और शान्ति उसकी बाहें पकड़े हुए थी। शान्ति ने सीता को देखा तो कह दिया, "सीता! पिता जी के पीने के लिये घड़े का ठण्डा पानी लाओ।

सीता कुछ-कुछ समझ रही थी। वह भागी-भागी रसोई घर में गयी ओर एक गिलास में ठण्डा जल लेकर आ गयी। इस समय तक सुन्दर लाल शान्त हो चुका था और शान्ति के साथ प्रांगण में एक खाट पर जा बैठा था। वहाँ भूमि पर गिलास और दोनें जिनमें आयीं स्त्रियाँ दूध, मिठाई पी और खा रही थीं, पड़े थे।

सीता गिलास में पानी लाई तो सुन्दर लाल ने ले लिया और एक ही घूंट में पूर्ण गिलास खाली कर गिलास सीता को देते हुए बोला, "तो तुम विवाह नहीं करोगी?"

"पिता जी!" सीता ने आँखें नीचे किये हुए कहा, "विवाह मेरा होना है और चिन्ता आप कर रहे है। जब होना होगा हो जायेगा।"

"और राम लुभाया की बहिन की तरह हमारा मुख काला कर दिया तो?"

"तो मुझे घर से निकाल दिजियेगा। मेरे गले में पत्थर बांध तालाब में डुबा दीजियेगा। तब आप पुण्य के भागी बन जायेंगे।"

"और तब तक खाओगी-पीयोगी कहाँ से?"

सीता ने इस दिशा में कभी विचार नहीं किया था। इस कारण इस प्रश्न पर वह गम्भीर हो गयी। उसने कुछ देर तक विचार कर कहा था, कल तक बता दूँगी।"

"क्या बता देगी?"

"खाना-पीना कहाँ से चलेगा। यही पूछा है न आपने?"

"तो किसी से राय करने जाओगी?"

"जी।"

"मोहन से?"

"जी नहीं। अपने भगवान् से।"

"और वह तुमको रोटी देगा?"

"देता रहा है। आगे भी देगा।"

"पहले तो मैं देता रहा हूँ:"

"वही दिलाता था। अब वह किसी अन्य को देने को कह देगा।"

"किसको कह देगा?"

"जिस पर उसका विश्वास होगा।"

इस पर शान्ति ने पिता और बेटी के वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अब छोड़िये इस बात को। पहले यह बताइये, मुझे भी खाने-पीने को देंगे अथवा नहीं?"

"तुम तो पत्नी हो।"

"तो मैं अपने भाग से सीता को दे दूँगी। जाओ, सीता! अपने भगवान् से यही कहो कि वे हम सब को सुमति दे।"

इससे विवाह की योजना का पटाक्षेप हो गया। घर में सामान्य स्थिति हो गयी।

पिता के साथ वाद-विवाद के अगले दिन वह पंडित ब्रजलाल जी से पढ़ने गयी तो शान्ति उसके साथ थी। उसने पिछले दिन से घर का एक दाना अन्न नहीं लिया था। शान्ति के आग्रह करने पर उसने कहा था, "माँ! देखती जाओ। मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगी। वह तो तब करने वाली थी जब तुम और पिता जी बल-पूर्वक विवाह करने वाले थे।"

शान्ति समझी नहीं। उसे बात समझ तब आई जब सीता पंडित जी के घर पढ़ने गयी। वहाँ जा उसने पंडितायिन को पृथक् में ले जाकर कहा, "मौसी! घर में कुछ खाने को है क्या?"

गार्गी ने विस्मय में सीता के मुख पर देखते हुए पूछा, "है तो। पर क्या बात है?" शान्ति समीप खड़ी सुन रही थी।

सीता ने कहा, "भूख लगी है। भीख माँग रही हूँ। भिक्षाम् देही, माँ!"

गार्गी ने प्रश्न-भरी दृष्टि में शान्ति की ओर देखा तो शान्ति ने कह दिया, "गार्गी बहिन! इसे खिला दो। इसने कल रात भी घर पर कुछ नहीं खाया।"

गार्गी समझ गयी कि घर पर झगड़ा हुआ है। इस कारण उसने एक भी शब्द और कहे बिना रसोईघर में जा सीता को वहाँ बुला लिया। उसे पटरे पर बैठा उसके सामने एक अन्य पटरे पर थाली रख उसमें साग, दाल और चार रोटी रख दीं।

सीता ने हाथ धो पटरे पर बैठ दो रोटी में साग लपेट कर पृथक रख लिया और शेष दो को खाने लगी। गार्गी ने पूछा, "और बेटी, इनको किसलिये रखा है?"

"रात को खाने के लिये।"

गार्गी ने प्रश्न भरी दृष्टि से फिर शान्ति की ओर देखा। उसकी आँखें आंसुओं से भर रही थीं। गार्गी को अपनी ओर देखते हुए उसने आँखें मूंद लीं। आंसू ढुलक कर गालों पर बहने लगे। गार्गी ने सीता से पूछ लिया, "क्या बात है, सीता?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता ने ग्रास मुख में डाल चबाते हुए कहा, "संसार की रीति निभा रही हूँ, मौसी! लड़कियां बड़ी होने पर माँ-बाप के घर पर बोझा नहीं रहनी चाहियें न? सो यही मैं कर रही हूँ। भगवान् ने कहा है कि साधुनियों को भिक्षा माँग कर निर्वाह करना चाहिये और मैं साधुनी बन गयी हूँ।"

इस पर शान्ति ने गालों पर से आंसू पोंछते हुए पिछले दिन के सब झगड़े की बात बता दी।

गार्गी ने कुछ विचार किया, "ठीक तो कहती है सीता! यदि इसने विवाह नहीं करना तो इसका अधिकार नहीं रहा कि पिता के घर पर बोझा बनी रहे।"

"परन्तु, सीता! साधुनी के कुछ कर्त्तव्य भी हैं। वे पालन करोगी तभी भिक्षा का अन्न पचा सकोगी।"

"मौसी! वह भी बता दो?"

"वे तो पंडित जी बतायेंगे। पर मैं तो यह कहती हूँ कि तुम मौसी की बेटी बन जाओ। हम एक बेटी को कुछ दिनों में विदा करने वाले हैं और घर में रिक्त हो रहे स्थान को तुम भर दोगी तो मैं कृतज्ञ रहूँगी।"

"मौसी! अभी तो भिक्षा के रूप में ही दो। साधुनी के कर्त्तव्य गुरु जी से सीखने का यत्न करूँगी और यदि न सीख सकी तो फिर मौसी की लड़की बन जाऊँगी।"

गार्गी ने दो रोटी और लाकर थाली में रख दी। सीता ने उसमें से भी एक उठाकर रात के लिये रख ली और एक को खाती गयी।

गार्गी और लायी, परन्तु सीता ने नहीं ली। उस दिन पढ़ाई के उपरान्त शान्ति ने पंडित ब्रजलाल से भी बात कही। ब्रजलाल इस स्थिति पर बहुत देर तक चिन्तन करता रहा। अन्त में उसने कह दिया–

"शान्ति बहिन! यह तुम्हारे घर की बात है। मैं इसमें राय नहीं दूँगा। इतना सीता को आश्वासन देता हूँ कि उसे मैं भूखा नहीं मरने दूँगा। यदि लाला सीता को अपने घर में न रख सकें तो वह कलावती के स्थान हमारी लड़की बन हमारे घर में रह सकेगी। जब तक सीता चाहे हमारे घर से खाने के लिए ले सकती है।"

इसके उपरान्त फिर लाला और सीता में एक ओर तथा शान्ति और लाला में दूसरी ओर बहुत बातचीत हुई आखिर शान्ति ने समस्या का सुझाव उपस्थित कर दिया। उसने अपने पति से कह दिया–"सीता को स्वेच्छा से रहने दो। आप पंडित जी को बीस रुपये मासिक दान-दक्षिणा में देते जाइये।"

सीता ने अपने कपड़ों के लिए सूत कातना आरम्भ कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

समय व्यतीत होते देर नहीं लगती। इसके व्यतीत होने का ज्ञान तो बदलती परिस्थिति से होता है।

राधा और शकुन्तला, दोनों बहिनों का विवाह एक ही घर में प्रान्त की राजधानी में हुआ था। पहले राधा का विवाह हुआ था। उसके पति चमनलाल पंडित भवानी शंकर के 'ओरियण्टल कालिज' में पढ़ने वाले एक शिष्य थे। जब उसने एम. ओ. एल. पास किया और उसी कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हुआ तो पंडित जी ने लड़की की प्रशंसा की और विवाह हो गया।

चमनलाल वैश्य समाज में उत्पन्न हुआ था और उसके पिता लड़के के विवाह पर बीस हज़ार नकद दहेज की आशा लगाए हुए थे। चमनलाल गुरु जी से बात कर बैठा। उसका कहना था, "पंडित जी, जालन्धर छावनी के एक विख्यात धनी की सगाई आ रही है। विवाह दहेज की रकम पर हो रहा है। पिताजी कहते हैं कि उन्होंने मेरी पढ़ाई पर बीस हजार व्यय किया है और इतना वे मेरे ससुराल वालों से लेंगे। वे भाव-ताव कर रहे हैं।"

"तो तुम्हारी नीलामी हो रही है। नीलाम करने वाले ने तुम्हारा दाम बीस हजार लगाया है।"

"पर क्या करूँ, पंडित जी? बिरादरी में सर्वत्र यही हो रहा है।"

"तो बिरादरी छोड़ दो।"

"परन्तु विवाह तो बिरादरी में ही होगा।"

"क्यों? दूसरी बिरादरियों में लड़कियों का अभाव है क्या?"

"बिना जान-पहिचान के कौन विवाह करेगा?"

"तो मैं यत्न करूँ?"

"किसी ब्राह्मण कन्या से।"

"हाँ, परन्तु वैश्य माता-पिता की क्षत्रिय वंशोत्पन्न।"

"क्या मतलब, पंडित जी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़की गुणों से ब्राह्मण है। उपनिषदादि शास्त्र पढ़ती है। संस्कृत में बातचीत कर सकती है। वैसे स्वभाव से भी ब्राह्मण ही प्रतीत होती है। वह है एक जाट ज़मींदार की लड़की। ज़मींदार होने से माता-पिता वैश्य हुए और जाट होने से क्षत्रिय हुए।"

"आप उसे कैसे जानते हैं?"

"उसके भाई से मेरी दोहती का विवाह हुआ है और वह उस परिवार की बातें बताती रहती है।"

"देखने में कैसी है?"

"तुम स्वयं जाकर देख सकते हो।"

"तो पता बता दीजिए। मै उनसे मिलना चाहूँगा।"

चमनलाल गुरु जी से लड़की की प्रशंसा सुन उससे विवाह की इच्छा करने लगा। पंडित जी ने अपने दामाद ब्रजलाल के नाम पत्र लिखकर चमनलाल को दे दिया। चमनलाल बेगमपुरा में गया और राधा को देख पंडित जी के घर उससे संस्कृत भाषा में बातचीत कर आया। तदनन्तर चमनलाल ने अपने घर वालों से लड़कर राधा से विवाह कर लिया।

गोपाल ने अपनी सामर्थ्यानुसार दहेज दिया परन्तु वह बीस हज़ार दाम का नहीं था। चमनलाल का पिता नाराज़ था, परन्तु धीरे-धीरे राधा के नम्र स्वभाव ओर विद्वता पूर्ण बातों एवं व्यवहार से सास-ससुर का हठ टूटा और राधा के विवाह के आठ वर्ष उपरान्त जब चमनलाल के छोटे भाई सदानन्द ने एम. ए. पास किया तो राधा की बहिन शकुन्तला से सम्बन्ध सहर्ष स्वीकार हो गया।

दोनों बहिनों ने भैया-दूज के दिन भाइयों को टीका गाँव में जाकर लगाने की इच्छा प्रकट की तो मोहन को भेजा गया और वह उन्हें ले आया।

मोहन लाहौर गया और दोनों को ले आया। अब गोपाल के घर में अपनी मोटर गाड़ी थी। मोहन, सोहन और राम उसे चलाते थे। श्याम ने डाक्टरी की परीक्षा पास कर लाहौर में चिकित्सा कार्य आरम्भ कर दिया था। उसका काम भी खूब चलता था। उसके पास एक अपनी मोटर गाड़ी थी। गोपाल ने उसे कह दिया था कि उसे बहिनों से टीका लगवाने के लिये गाँव में पूर्ण परिवार के साथ आना चाहिये। वह भी अपनी पत्नी निर्मला और दो बच्चों को साथ लेकर आया था। मोहन अपनी गाड़ी में दोनों बहिनों और उनके चार बच्चों को लेकर गाँव में पहुँचा था। मोहन चाहता तो था कि बहिनों के साथ उनके घर वालों को भी लाये, परन्तु वे काम से अवकाश न पा सकने के कारण मोहन के साथ नहीं आये। इस पर भी वे कह रहे थे कि आगामी रविवार के दिन वे आयेंगे और बच्चों को साथ ले लौटेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहन ने अमृतसर में लोहे के फरनीचर का कारखाना लगा लिया था और वह लोहे के कील-कांटे से लेकर मेज-कुर्सी तक बनवाने लगा था। वह रहता गाँव में ही था। नित्य प्रातः काम पर जाता था और सायंकाल लौट आता था। उसके कारखाने में गाँव के कुछ युवक भी काम करते थे। सोहन ने उनके लिये एक ट्रक ले रखा था और उसमें वह सबको ले जाता था ओर सायंकाल ले आता था। कारखाना अच्छा लाभ देने लगा था।

राम, माणिक और लाल खेतों पर काम करते थे। उन्होंने भी अपने खेतों में वृद्धि की थी। चालीस एकड़ नजूल की भूमि सरकार से लेकर पैदावार करने लगे थे। इसमें दस एकड़ पर नींबू और सन्तरों का बगीचा लगा लिया था।

इन तीनों के विवाह हो चुके थे। राम के घर तीन बच्चे थे। दो लड़के और एक लड़की। माणिक के घर भी दो बच्चे थे। दोनों लड़के थे।

लाल का विवाह अभी हाल ही में हुआ था। उसने सोहन की नकल की थी। वह नगर से एक लड़की का अपहरण कर लाया था। बहुत झगड़ा हुआ था। लड़की का पिता नगर में अच्छी पदवी पर था। गोपाल को जब पता चला कि लड़की बिना माता-पिता को बताये चली आयी है तो उसने उसे बहुत समझाया।

लड़की थी चंचल कुमारी। उसके पिता रामचन्द्र मूद ज़िला कचहरी में रजिस्ट्रार था। उसे डिप्टी कमिश्नर की कचहरी में होने का अभिमान था। पुलिस में रिपोर्ट तो वह पिछले दिन ही कर चुका था, परन्तु अभी तक पुलिस सुराग नहीं पा सकी थी।

गोपाल ने जब चंचल को समझाया कि उसे अपने माता-पिता की इच्छा के बिना विवाह नहीं करना चाहिये तो वह मान तो गयी, परन्तु बोली, "मेरे माता-पिता मानेंगे नहीं।"

"तो विवाह मत करना।"

गोपाल ने उसे सीता की कहानी सुना दी। सीता अभी तक अविवाहित थी। वह इस समय पच्चीस वर्ष की थी और नगर में लड़कियों के एक स्कूल में संस्कृत पढ़ाती थी। वह नित्य बाइसिकल पर नगर को जाती और आती थी। वह रहती अपने माता-पिता के घर ही थी, परन्तु गार्गी और ब्रजपाल का अपने माता-पिता के समान आदर करती थी। भोजन इत्यादि उनके घर ही लेती थी।

सीता की कहानी सुन और सीता से बातचीत कर वह अपने बाप के घर जाने को तैयार हो गयी। जब गोपाल उसे ले जाने लगा तो लाल ने बताया, "बाबा! इसका बाप डिप्टी कमिश्नर की कचहरी में रीडर है।"

"तो फिर क्या हुआ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह आपको क़ैद करवा देगा।"

"तो फिर क्या होगा? तुम्हारे पाप-कर्म का फल मुझे मिल जायेगा। तुम बच जाओगे। मुझे इसमें खुशी होगी।"

लाल इस बात से लज्जा अनुभव करता हुआ खड़ा रह गया। मोहन ने गाड़ी निकाली और चंचल को गाड़ी में ले जाने के लिये बैठाया तो गोपाल मोहन के समीप बैठ गया। जब गाड़ी चलने लगी तो लाल भी लपक पर चंचल के पास आ बैठा।

गोपाल ने कहा, "तुम किधर जा रहे हो?"

"यदि कुछ पाप हुआ है तो उसका दंड भोगने के लिये। बाबा, तुम चिन्ता न करो। मैं चलूँगा और अपना अपराध मान लूँगा।"

चंचल इस परिवार की निर्भीकता और सज्जनता पर चकित थी। वह समझ रही थी कि यदि कोई और परिवार होता तो उस जैसी सुन्दर लड़की को छुपा कर रखने का यत्न करता। यहाँ तो घर के बड़ों ने रात भर लड़की को समझाने-बुझाने में व्यय कर दिया था और अगले दिन प्रातः ही वे उसे लेकर जाने लगे तो अपना अपराध स्वीकार करने के विचार से ही वे चले थे।

वह मन ही मन विचार कर रही थी कि उसका निर्वाचन गलत नहीं। परन्तु वह सन्देह करती थी कि उसके माता-पिता उसे मन की बात करने देंगे।

वह सब अमृतसर में रीडर साहब के मकान पर पहुँचे तो चंचल लपक कर मोटर से उतरी और बोली, "बाबा! मोटर ले भाग जाओ। अभी किसी को पता नहीं चला। मैं अपने माता-पिता से निपट लूँगी।"

"नहीं, बेटी।" गोपाल ने कहा, "दरवाज़ा खटखटाओ। मैं तुम्हारे पिता से क्षमा माँग कर ही जाऊँगा।"

चंचल देख रही थी कि लाल का पिता उसके पिता से मिलने की हठ कर रहा है और वह जानती थी कि पिता उनको दंड दिलवाये बिना छोड़ेंगे नहीं। कचहरी के प्रायः सब लोग सरकारी सहायता उपलब्ध होने के अभिमान से भरे रहते थे।

द्वार खटखटाने पर सूद साहब ने ही द्वार खोला। वह द्वार के बाहर सड़क पर मोटर गाड़ी और उसमें दो युवकों को बैठे देख तथा चंचल ओर एक वृद्ध व्यक्ति को द्वार पर खड़े देख, समझ नहीं सका कि क्या कहे?

चंचल द्वार खुलते ही घर के भीतर भाग गयी और गोपाल ने हाथ जोड़ कहा, "साहब! भारी धृष्टता हो गयी है और उसके लिये क्षमा माँगने आया हूँ।"

"पर लड़की को तुम ले गये थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं। मेरा मूर्ख लड़का था।"

"तो उसे बुलाओ। मैं उसे पुलिस के हवाले कर दूँगा।"

"ठीक है। वह इसी प्रयोजन से आया है।"

"सत्य?"

"जी।"

"बुलाओ।"

लाल, जब पिता ने उसे आने का संकेत किया, तो चला आया। रामचन्द्र ने लड़के को देखा तो एक चांटा उसके मुख पर लगा कर बोला, "बदमाश के बच्चे। ठहरो।" और वह अपने लड़कों को ऊपर की मंजिल से बुलाने लगा, "अरे मक्खन! अरे नन्दु! नीचे आओ। पकड़ो इस बदमाश को।"

गोपाल ने हाथ जोड़ कर कहा, "बाबू साहब। हल्ला करने की क्या आवश्यकता है? हम भागने के लिये नहीं आये। व्यर्थ में लड़की को और अपने परिवार को बदनाम कर रहे हो!"

परन्तु सूद साहब को क्रोध चढ़ा हुआ था। जब तक उसके लड़के नीचे आयें वह पुनः लाल को मुक्कों और लातों से पीटने लगा। लाल, रामचन्द्र से बहुत बलवान था, परन्तु चुपचाप मार खाता हुआ सामने खड़ा था। इतने में चंचल अपनी माँ को लिये हुए पिता और लाल के बीच आ खड़ी हुई। एक आध घूंसा उसे भी लगा तो सूद साहब का हाथ रुका। चंचल की माँ ने कहा, "परमात्मा के लिये भीतर चलिये।"

"मैं इसे हवालात में डलवाना चाहूँगा।"

"पर, शोर किसलिये मचा रहे हैं? देखिये, पड़ोसी खिड़कियों में से झांकने लगे हैं।"

बहुत कठिनाई से सूद साहब भीतर गये। गोपाल और लाल द्वार पर ही खड़े रहे। मोहन मोटर में बैठा था। वह हो रहे झगड़े में भाग नहीं लेना चाहता था। उसका विचार था कि यदि कहीं सत्य ही लाल और उसके पिता को हवालात में डलवा दिया गया तो उनको छुड़ाने का यत्न करने के लिये उसे पृथक् ही रहता चाहिये।

जब लाल को रामचन्द्र पीटने ही लगा था तो उसके मन में विचार आया था कि उतर कर बीच-बचाव करे, परन्तु पिता को शान्त चित्त खड़े देख और लाल को चुपचाप मार खाते देख, वह भी शान्त चित्त बैठा रहा।

जब सूद महोदय पत्नी के आग्रह पर भीतर गये और लड़की तथा लड़की की माँ भीतर जाने लगीं तो माँ ने गोपाल की ओर देखकर कहा, "आप जाइये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं माँ!" चंचल ने उत्तर में कहा, "मैं भी जाना चाहूँगी"

चंचल की माँ, मनोरमा, मुख देखती रह गयी। इस पर गोपाल ने कह दिया, "हम अपना पता दे सकते हैं। हमारी आवश्यकता हो तो पुनः हम आ जायेंगे। हम अपने अपराध का पूरा दण्ड भोगने के लिए तैयार हैं।"

मनोरमा, गोपाल इत्यादि को निर्भीक भाव में खड़े देख उनके कथन का अर्थ समझने के लिये उनका मुख देखने लगी।

चंचल ने कहा, "माँ! इनको भीतर बुला लो।"

माँ को भय था कि झगड़ा बढ़ न जाये। इस कारण उसने कहा, "इन्हें फिर बुला लेंगे।"

मनोरमा ने द्वार भीतर से बन्द कर लिया। अब गोपाल और लाल मोटर में सवार हो चले आये।

इसके पांच-छः दिन पश्चात् चंचल का पिता रामचन्द्र आया और चंचल की लाल से सगाई पक्की कर गया। तदुपरान्त विवाह हो गया।

2

गोपाल के सब लड़के अभी इकट्ठे ही थे। श्याम लाहौर में डाक्टरी करता था और सोहन अमृतसर में कारखाना चलाता था। जब ये दोनों पृथक् व्यवसाय करने लगे तो माँ ने दोनों लड़कों और उनकी बहुओं को बुलाकर पूछ लिया कि वे संयुक्त परिवार में रहेंगे अथवा नहीं?

इस गोष्ठी में सब लड़के और जिनका विवाह हो चुका था, उनकी बहुएं भी उपस्थित थीं। प्रश्न सोहन और श्याम से पूछा गया था। अतः उत्तर की आकांक्षा उनसे ही की जा रही थी।

श्याम ने कहा, "माँ! तुम बताओ, क्या चाहती हो?"

"मैं कुछ नहीं चाहती। जब मैं इस घर में आयी थी तब तुम्हारे कोई चाचा, ताया नहीं थे। परिणामस्वरूप तुम्हारे पिता को अपने पिता की सम्पत्ति बांटने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई थी। सम्पत्ति कुछ अधिक थी भी नहीं। यह छोटी सी हवेली ही थी।

"तुम्हारी दादी और तुम्हारे पिता ने मेहनत से इस घर का और सम्पत्ति का निर्माण आरम्भ किया था। मैं तो तुम लोगों को ही बनाती रही हूँ।

"मैं समझती हूँ कि अब परिवार दो भागों में बंट रहा प्रतीत होता है। तुम्हारी बहू पढ़ी-लिखी और नगर की रहने वाली है। सोहन भी अब नगर में रहने के कारण वहाँ के तौर-तरीके समझने लगा है। इस कारण तुम हमारे जैसी गाँव की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अर्थ-व्यवस्था स्वीकार करते हो अथवा नगरों की?"

प्रश्न श्याम ने किया, "पर, माँ! तुम दोनों में क्या अन्तर समझती हो?"

"एक अन्तर तो सामने ही है। हम सब ईमानदारी से, मेहनत से काम करते हैं। हम सबकी मेहनत का ढंग भिन्न-भिन्न है। इस पर भी सब की मेहनत का फल अर्थात् धन, एक ही वस्तु है। उस धन से हम अपनी सुख-सुविधा, जितनी जिसको आवश्यक होती है, ले लेते हैं। कोई अधिक खाता है और कोई कम खाता है। इस पर किसी को आपत्ति नहीं होती।"

इस पर श्याम ने कह दिया, "माँ! यह तो समाजवाद हो गया। आजकल के पढ़े-लिखे भी इसको पसन्द करते हैं।"

"पर, क्या तुम और तुम्हारी पत्नी भी पसन्द करते हो?"

श्याम अपनी पत्नी निर्मला का मुख देखने लगा। निर्मला पंजाब विश्वविद्यालय की 'ग्रेजुएट' थी। वर्तमान युग का अर्थशास्त्र पढ़ी थी। साथ ही लाहौर की रहने वाली होने के कारण पहिरावे पर बहुत व्यय करती थी।

वह गाँव की अर्थ-व्यवस्था को नगर की अर्थ-व्यवस्था के अनुकूल नहीं समझती थी। परन्तु वह अपनी आपत्ति कि उसके खाने-पीने, पहिनने और अन्य खर्चों पर प्रतिबन्ध अरुचिकर होगा, कह नहीं सकी थी।

सोहन ने बात स्पष्ट कर दी। उसने कह दिया, "देखो श्याम। मैं देख रहा हूँ कि मैं कारखाने से लखपति बनने जा रहा हूँ। इस पर भी मैंने सावित्री से इस विषय पर विचार किया है। वह यह कहती है कि बैंक में लाखों इकट्ठे होने पर भी खाते-पीते और सुख-सुविधा पर व्यय बहुत कम ही करेंगे। यदि हमें इस बात का विश्वास हो कि आवश्यकता पर हम बैंक में से निकाल सकेंगे तो बैंक के खाते पर नाम हमारा हो अथवा मोहन दादा का, क्या अन्तर पड़ता है।"

अब निर्मला ने बातों में हस्तक्षेप किया और बोली, "भैया! इसमें दो बातें विचारणीय है। एक तो यह कि जब आवश्यकता होगी तब बैंक में कुछ होगा भी क्या? साथ ही यह भी विचारणीय है कि हमारी आवश्यकता किसी दूसरे को व्यर्थ भी प्रतीत हो सकती है।"

इस पर सावित्री कहने लगी, "पर, बहिन। जब बैंक में नहीं होगा तो हम अपनी आवश्यकता को कम क्यों नहीं रखेंगे? ऐसा अपने पास धन होने पर भी करना ही पड़ता है।"

अब श्याम ने अपनी पढ़ी-लिखी पत्नी को समझाया, "सावित्री भाभी ठीक कहती हैं। यदि हम अपने व्यय पर नियन्त्रण नहीं रखेंगे तो घर से पृथक् होते हुए भी तो मुसीबत में फंस सकते हैं। देखो, निर्मला। भोग असीम है; परन्तु धनोपार्जन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की सामर्थ्य असीम नहीं। इससे जिस बात की तुम आशंका करती हो, वह तो सदैव और सब परिस्थितियों में उत्पन्न हो सकती है।

"रही बात यह कि हमारी आय को दूसरे व्यय कर जायेंगे। भला, यह बताओ, दूसरे कौन हैं? वही तो हैं न, जो खेतों पर मेहनत कर मेरी पढ़ाई और मेरे पढ़ने-लिखने पर व्यय करते रहे हैं।"

निर्मला निरुत्तर हो गई थी। इस पर भी उसका मन सन्तुष्ट नहीं था।

इस समय मोहन ने कहा, "देखो, श्याम। तुम पहले समझ लो कि संयुक्त परिवार और समाजवाद समान नहीं हैं। दोनों में भारी अन्तर है। हम पूछ रहे हैं कि संयुक्त परिवार में सम्मिलित होना चाहोगे अथवा नहीं? हमारे घर में समाजवाद नहीं है।"

निर्मला अर्थशास्त्र के नवीनतम सिद्धान्त को जानती और समझती थी। इस कारण वह पूछने लगी, "दादा, क्या अन्तर है दोनों में? और फिर हमारा यह संयुक्त परिवार समाजवाद से किस बात में अच्छा है? मैं समाजवाद को तो मन से स्वीकार नहीं कर सकी।"

मोहन ने अपने कहने का अर्थ बताया, "समाजवाद एक लोहे का शिकंजा है जो दूसरों ने व्यक्ति पर चढ़ाया होता है। जब समाज में कोई आर्थिक योजना, जाति के नेता से अथवा जाति के बहुमत से चलाई जाती है और वह प्रत्येक व्यक्ति को माननी होती है, तब समाजवाद होता है। बहुमत के अथवा नेता के मत का विरोध नहीं किया जा सकता। साथ ही कोई भी व्यक्ति समाज छोड़ नहीं सकता।

"परन्तु संयुक्त परिवार में ऐसा नहीं है। हम किसी प्रकार के व्यय का अधिकार घर के पुरखा को अथवा घर के सज्ञान प्राणियों के बहुमत को देते हैं, यह बात पृथक् है। परन्तु घर के प्रत्येक व्यक्ति को परिवार को छोड़ जाने की सदा अनुमति रहती है। परिवार के बाहर संसार में उसके लिए स्थान होता है और घर में रहने के लिए उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होता।

"साथ ही घर के सब प्राणी रक्त का सम्बन्ध रखने के कारण एक दूसरे के हित की समाज के घटकों से अधिक चिन्ता करते हैं समाज के घटक किसी प्राकृतिक बन्धन से बंधे नहीं होते।"

अर्थशास्त्र की ज्ञाता निर्मला को समझ आने लगा था। मोहन ने अपने कथन को दूसरों के हृदयङ्गम करने के लिए कुछ समय के लिये चुप कर जाना ठीक समझा। निर्मला ने यह समझा कि बात समाप्त हो गयी है। उसने एक अन्य प्रश्न पूछ लिया, "दादा। पृथक् होते समय परिवार की सम्पत्ति में से क्या मिलेगा।"

"देखो भाभी। मेरी बात अभी समाप्त नहीं हुई मैंने अभी समाजवाद और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त परिवार में केवल एक अन्तर बताया है। उसे भी एक उदाहरण देकर बताऊं तो बात और भी स्पष्ट हो जायेगी।

"मानो देश का प्रधानमंत्री है। वह रसिक प्रवृति का है और वह देश की पूर्ण पूंजी नाचघरों नाट्य शालाओं तथा अन्य कला के केन्द्रों के पर व्यय कर देता है। एक विद्वान् किसी दार्शनिक विषय पर अन्वेषण के लिये धन की माँग करता है। प्रधान को व्यर्थ प्रतीत होता है। परन्तु देश का नागरिक प्रधानमंत्री की सम्मत्ति के विपरीत स्वयं कार्य कर नहीं सकता। उसके पास कुछ अपना होता नहीं और जातीय कोष में से उसे कुछ मिल नहीं सकता। यह समाजवाद है।

"संयुक्त परिवार में यदि डाक्टर साहब कुछ ऐसी बात पर धन व्यय करना चाहते हैं जिसे घर का पुरखा ठीक नहीं समझता तो डाक्टर साहब परिवार को छोड़ सकते हैं। उनकी अपनी आय है उनके लिये परिवार के बाहर रहने को स्थान है।

"एक बात और है। समाज में नेता के पास सेना है और वह सेना के बल पर, अपनी सम्मत्ति के विपरीत व्यय करने की इच्छा करने वाले को गोली से मरवा सकता है, कैद करवा सकता है। परिवार के पुरखा के पास केवल नैतिक और युक्ति बल के अतिरिक्त अन्य कुछ साधन नहीं हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि परिवार समाज नहीं और संयुक्त परिवार समाजवाद नहीं।

"रही बात कि परिवार से पृथक् होने के समय पारिवारिक सम्पत्ति में से क्या मिलेगा? इसके लिये कुछ तो कानून बना है। शेष परिवार के पुरखों की तथा परिवार के सदस्यों की सहानुभूति और न्याय-बुद्धि का भरोसा करना चाहिये। यदि सरकारी कानून से यह सहानुभूति और न्याय बुद्धि कम प्रतीत होती हो तो न्यायालय का द्वार खटखटाया जा सकता है। मैं तो यह समझता हूँ कि न्यायालय की अपेक्षा घर के पुरखा से कुछ अधिक ही मिलने की आशा है।

"एक अन्तिम बात है। वह है परिवार में रक्त का सम्बन्ध होना और समाज तथा देश में कानून का सम्बन्ध होना। मुझे पहला अधिक सुखकर समझ आता है। इस पर भी भाभी! यदि तुम चाहो तो परिवार से अभी अथवा कभी भी पृथक् हो सकती हो।"

"यदि इस समय हम परिवार से पृथक् हो जायें तो क्या मिलेगा हमें?"

उत्तर गोपाल ने दिया, "परिवार में दो वस्तुएं हैं जो बंटवारे में कभी भी नहीं आयेंगी। एक है भूमि और दूसरी है गोधन। जब से मैंने होश सम्भाला है, हम गौयें दान-दक्षिणा में देते आये हैं। देखो, बहू! मैं भूमि और गौओं को माँ के समान समझता हूँ। ये बांटी नहीं जायेंगी। जब तक जिऊंगा यह पूर्ण परिवार की सम्पत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी। पीछे ये उसकी रहेंगी जो इन की सेवा करेगा। इससे उत्पन्न अन्न, परिवार भर के खाने को मिलेगा। परन्तु आय उसकी होगी जो सेवा करेगा।

"जहाँ तक जमा पूंजी का प्रश्न है वह उस समय जब बंटवारा होगा सब सज्ञान कार्य करने वालों में बराबर बांट दी जायेगी।"

"और हमारी आय का क्या होगा?"

"जितना कमाओ और जितना उसका भोग करो, यह तुम्हारी अपनी न्याय बुद्धि पर निर्भर करता है। जो वर्ष के उपरान्त शेष बचेगा वह परिवार का होगा। जब कोई आय करने वाली वस्तु, सम्पत्ति अथवा उपकरण खरीदोगे तो वह परिवार के धन से खरीदा जायेगा और आय परिवार की होगी।"

निर्मला और श्याम ने परिवार में ही रहना स्वीकार किया था। इस बातचीत को हुए भी चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे और श्याम खा पीकर अपने चिकित्सा कार्य से लगभग बारह-तेरह सहस्र रुपया प्रतिवर्ष परिवार को देता था। सोहन का कारखाना अब तीस सहस्र रुपये के लगभग वार्षिक आय देने लगा था।

मोहन कुछ भी उपजाऊ कार्य नहीं करता था। उसने गाँव में एक संस्कृत विद्यालय खोल रखा था। उस विद्यालय में विद्यार्थी गाँव में से और गाँव के बाहर से पढ़ने आते थे। पंडित ब्रजलाल भी इसी विद्यालय में दर्शनशास्त्र पढ़ाता था। पढ़ाई का कुछ भी शुल्क नहीं लिया जाता था। विद्यालय का एक भवन बन चुका था और उसमें विद्यार्थियों के रहने का स्थान था। विद्यार्थी रहते निःशुल्क थे, परन्तु खाने-पहिनने का प्रबन्ध अपना करते थे।

मोहन पिता के घर में ही रहता था। भोजन और वस्त्र का प्रबन्ध भी घर से ही होता था। मोहन की विद्वता की ख्याति अब गाँव के बाहर राजधानी और अन्य नगरों में होने लगी थी।

3

इस वर्ष भैया-दूज का समारोह मनाने के लिये मोहन बहिनों को उनकी ससुराल से ले आया था। परमात्मा की कृपा से ऋतु ठीक रहने के कारण भूमि की आय बहुत हुई थी और पूर्ण परिवार धन-धान्य से युक्त था।

गोपाल का पूर्ण परिवार को गाँव में बुलाने का एक विशेष तात्पर्य भी था। लाल की पत्नि पढ़ाई के लिये केवल को विलायत भेजने पर आपत्ति कर रही थी। केवल इस समय लाहौर डी.ए.वी. कॉलिज में एफ.एस.सी. में पढ़ता था और उसका विचार केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में बी.एस.सी. इंजीनियरिंग की पढ़ाई पढ़ने का था। श्याम इसमें उसे प्रोत्साहन दे रहा था। सोहन इस विषय में कुछ अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह नहीं दिखा रहा था। इस पर भी वह विरोध नहीं कर रहा था। विरोध कर रहा था लाल और वह भी अपनी पत्नी चंचल के भड़काने पर। राम और माणिक दोनों के विवाह देहात में ही हुए थे और उन दोनों की बहुएं दिन भर मेहनत-मशक्कत कर सुख अनुभव करती थीं। उनके अंगों में अभी परिवार के धन-सम्पदा ने विकार उत्पन्न नहीं किया था।

मोहन से उसकी माँ ने पूछा था। मोहन ने कहा था कि मैं केवल के प्रोफेसर से राय करके ही बताऊंगा। वह लाहौर इस मतलब के लिये भी गया था कि वह प्रोफेसर की सम्मत्ति ले। उसकी सम्मत्ति कुछ अधिक केवल के पक्ष में नहीं थी। इस पर भी उसने विरोध नहीं किया था। प्रोफेसर सी.वी. पुराणी का कहना था, "अभी देश को इतने ऊंचे शिक्षा प्राप्त इन्जीनियरों की आवश्यकता नहीं। देश की वर्तमान अवस्था में देश का धन और परिश्रम व्यर्थ जायेगा।"

परन्तु प्रोफेसर साहब की इस युक्ति ने मोहन का समाधान नहीं किया था। इस कारण अभी अपने मन की बात कहने में उसे संकोच हो रहा था।

बात परिवार में करनी और भी आवश्यक हो गयी, जब चंचल ने कहा कि परिवार में कुछ लोग धन का अपव्यय इस कारण कर रहे हैं, क्योंकि उनको यह ज्ञात है कि उनके अपव्यय का बोझा बंट जाता है। चंचल ने इस कथन में एक उदाहरण भी दिया था। कुछ महीने पहले राम अपनी पत्नी के साथ कलकत्ता घूमने गया था और वहाँ से एक रेडियो-ग्राम जो बिजली और चाबी दोनों से चलता था, उन्नीस सौ रुपये का मोल ले आया। रेडिया-ग्राम बहुत सुन्दर था। उसकी ध्वनि भी अति मधुर थी, परन्तु गाँव में बिजली नहीं थी। इस कारण रेडियो-ग्राम का वह भाग जो बिजली से चलता था, व्यर्थ था।

जब मोहन ने राम से कहा कि बिना बिजली वाला लाना था, तो राम की पत्नी सुशीला ने कह दिया, "केवल चाबी से चलाने वाला ग्यारह सौ रुपये का था, परन्तु वह बहुत भद्दा बना हुआ था। मुझे उसका रूप पसन्द नहीं आया।"

"पर, भाभी। यह आठ सौ रुपया तो यहाँ कभी भी काम नहीं आयेगा।"

"दादा! डाक्टर भैया एक दिन कह रहे थे कि हम घर में अपना बिजली का कारखाना लगवा सकते हैं। वह कारखाना तेल से चलेगा और घर भर में वैसा ही प्रकाश होगा और पंखे चल सकेंगे, जैसे नगर में चलते हैं।"

मोहन को बात समझ में आ गयी। परन्तु लाल की पत्नी चंचल न समझ सकी और उसने कह दिया था कि उनको उतना ही रुपया दे दिया जाये जितना रेडियो-ग्राम पर व्यय हुआ है और जितना घर में बिजली के निर्माण में व्यय होगा।

मोहन को यह बात पसन्द नहीं थी। इस पर असन्तोष बढ़ने लगा और लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की पत्नी घर भर से तटस्थ और रुष्ट रहने लगी। इसके साथ एक बात यह भी थी कि लाल की पत्नी गर्भ धारण किए हुए थी। इस कारण भगवन्ती उससे किसी प्रकार का झगड़ा करना नहीं चाहती थी।

भैया दूज के अवसर पर इस विषय पर विस्तृत विचार करने के लिए गोष्ठी हो गयी। गोपाल, भगवन्ती और उनके सातों लड़के उपस्थित थे। गोपाल समझता था कि बहिनों के भी पारिवारिक गोष्ठी में उपस्थित होने से भाइयों की सहिष्णुता में वृद्धि होगी। इसलिए उन्हें भी बुला लिया गया था। वह तो चाहता था कि दोनों दामाद भी आ जाते तो वे भी परिवार की समस्या में किसी प्रकार का सुझाव दे सकते थे।

टीका लगाने की रस्म समाप्त हुई तो भगवन्ती के कहने पर परिवार के अट्ठारह सज्ञान प्राणी बैठक-घर में उपस्थित हो गए। सीता भी आयी हुई थी। वह भी स्त्रियों में बैठी वार्त्तालाप सुन रही थी। बात भगवन्ती ने आरम्भ कर दी,

"अभी तक तो हमारी राय से परिवार का व्यवहार चलता रहा है। तुम्हारे बाबा अपनी जाटों वाली बुद्धि से परिवार की गाड़ी चलाते रहे हैं; परन्तु ज़माना बदल गया है और तुम सब लोग अपने बाबा से अधिक पढ़ गए हो। नगर में जाकर रहने से अनुभव भी अधिक हो गया है। इस कारण तुम सबके ज्ञान और अनुभव के प्रकाश में परिवार की व्यवस्था पर विचार करने का अवसर आया है। अतः मैंने तुम सबको यहाँ बुला लिया है। अब तुम लोग बताओ कि परिवार में सब प्राणी एकत्रित रहना चाहते हो अथवा नहीं?

"यह कहावत है कि धन-विग्रह का मूल है। अतः एकत्रित रहने का अर्थ आर्थिक दृष्टि से एकत्रित रहने का ही है।"

भगवन्ती के कथन के उपरान्त बातों का सूत्र चंचल ने अपने हाथ में लिया। उसने कहा, 'मैं उम्र में सबसे छोटी हूँ और आपके परिवार में सबसे नई प्राणी हूँ। इस कारण मेरी धृष्टता को यदि आप पसन्द न करे तो मैं क्षमा पहले ही माँग लेती हूँ।

"प्रथम तो मैं यह कहना चाहती हूँ कि बाबा और माँ जी को यदि परिवार में बंटवारा पसन्द न हो तो पहले ही बता दें। मैं एक शब्द भी इस विषय में नहीं कहूँगी। इस पर भी वह यदि यह विचार करें कि वर्त्तमान व्यवस्था तो उनके जीवनकाल के उपरान्त रह नहीं सकेगी, तो क्या अच्छा नहीं कि वे अपने जीवन-काल में ही इसको सुलझा जायें। इस समय हमारे विचार में कुछ ऊंच-नीच हुआ तो उनके आदेश से हम सन्तोष कर लेंगे। पीछे हम झगड़ भी सकते हैं।

"दूसरी बात जो मैं कहना चाहती हूँ, वह यह है कि साझे की सम्पत्ति में व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते समय वह सावधानी नहीं रखी जा सकती जो अपनी कमाई में रखी जा सकती है।

"केवल भैया विलायत जाना चाहते हैं। उनके प्रोफेसर इसमें लाभ नहीं समझते; परन्तु ये परिवार का बीस-पच्चीस हज़ार रुपया उसमें फूँक देना चाहते हैं।

"भैया राम ने दो सहस्र रुपये का एक खिलौना लिया है और उसमें भी सात आठ सौ रुपया इस प्रकार व्यय हुआ है कि उसका कोई लाभ नहीं।

"इस कारण मेरा यही निवेदन है कि बाबा सबको जो वे उचित समझे बांट दें। तदनन्तर जिसके पास जितना फालतू होगा, उतना ही वह व्यय अथवा अपव्यय कर सकेगा।"

श्याम हंस पड़ा और बोला, "चंचल भाभी को तो वकील बनना चाहिए था। यदि ये वकालत पास कर लेतीं तो परिवार का यह अभाव भी पूर्ण हो जाता।"

"तो श्याम, तुमको चंचल की बात ठीक समझ आयी है?" गोपाल का प्रश्न था।

उत्तर सोहन ने दिया, "वकील ने मुद्दई का मुकदमा बहुत खूबी से पेश किया है। पर, बाबा! मुद्दालय के वकील की बात भी तो सुन लो। फैसला दोनों पक्ष की बात सुन कर ही दोगे न?"

"तो मुकदमे में कोई मुद्दालय भी है?" गोपाल ने पूछा,

"हाँ, बाबा। बिना मुद्दालय के तो कोई मुकदमा होता ही नहीं और मुद्दई बन सकता ही नहीं।

"बाबा। इस मुकदमे में मुद्दालय मैं हूँ और मेरा वकील सावित्री है। वह मुद्दई के वकील की बात में बहुत बड़े-बड़े छिद्र देखती है।"

इस वार्त्तालाप में परिवार के सभी सदस्य रस ले रहे थे। विशेष रूप से राम और गोपाल थे। राम एक मेहनत, मजदूरी करने वाला किसान था। वह अपने सब भाइयों से अधिक परिश्रम का काम कर सकता था। इस कारण वह समझ रहा था कि परिवार रहेगा तो वह इसके धन-दौलत का सुख भोग करेगा और यदि परिवार बिखर गया तो वह अपने परिश्रम से बाबा जैसे ही एक नवीन परिवार का संगठन कर लेगा।

यद्यपि उसकी पत्नी द्वारा क्रय किया रेडियोग्राम भी झगड़े के मूल में था, परन्तु वह जो कुछ मोहन दादा से, शास्त्र सुन और समझ सका था, वह यह ही था कि कर्म और कर्म-फल से आसक्ति छोड़ कर कर्म करता हुआ ही मनुष्य चित्त की शान्ति को प्राप्त कर सकता है। वह इसी शान्ति में विचर रहा था। वह बिना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बोले निर्णय की प्रतीक्षा करता हुआ मौन बैठा रहा।

"तो हाँ, सावित्री। तुम बताओ?" भगवन्ती ने उसकी ओर देख कर पूछ लिया।

सावित्री ने कहा, "इस विवाद में बाबा और माँ जी को घसीटना ठीक नहीं। वे तो आज से पहले ही यह व्यवस्था दे चुके हैं कि हम जब भी चाहें पृथक्-पृथक् हो सकते हैं। साथ ही हम सब उनकी यह व्यवस्था मान चुके हैं कि घर में भूमि और गौयें नहीं बंटेगी। ये बाबा की सम्पत्ति है। वे इसे अपने जीवन-काल में अपने अधिकार में रखेंगे..."

गोपाल ने बात बीच में ही काट दी। उसने कहा, "सावित्री! कुछ अपने मन से कह रही है। मैं भूमि इत्यादि को अपने पास रखना नहीं चाहता। मैं तो केवल यह चाहता हूँ कि यह एक के पास रहेगी। किसके पास, कैसे दी जायेगी, यह हम समय पर निश्चय कर लेंगे।"

"बाबा ने वही बात कही है जो मैंने कही है।" सावित्री ने कह दिया, "मैं अपनी बात की व्याख्या करने वाली थी। वह इस प्रकार है। बाबा, भूमि और गौओं को माँ समझते हैं और इसका बंटवारा नहीं चाहते। जीवन-काल में बाबा इनको अपने पास रखेंगे और तदनन्तर जिसे अपना योग्य उत्तराधिकारी मानेंगे, उसे दे जायेंगे। यह बाबा का इसे अपने पास रखना ही समझा जाएगा। यदि इसका निर्णय हम करेंगे कि इनको कौन ले, तो हम इनकी नीलामी करेंगे। मुझे इसमें भारी आपत्ति होगी। जिनको हम माता की पदवी देते हैं उनको हम भला बोली पर चढ़ायेंगे क्या? हम तो यह करेंगे नहीं। बाबा जिसके हाथ इनको पकड़ा जायेंगे, वह इनकी सेवा करेगा। सेवा करेगा तो सेवा का फल भी पायेगा।

"अतः बाबा और माँ क्या चाहते हैं? यह हम सबको विदित है। मैं अपने भाइयों और बहनों से यही कहूँगी कि बाबा की इच्छा पर फूल चढ़ायें। उसका उल्लंघन न करें। रही नकदी और सम्पत्ति। मैं समझती हूँ कि चंचल बहिन से पूछ लिया जाये कि वह क्या चाहती हैं? वह उन्हें दे दिया जाए। चंचल को यह विदित नहीं कि यह धन स्वयं एक व्यय होने वाली वस्तु है। उसने व्यय किया तो क्या और परिवार में किसी अन्य ने व्यय किया तो क्या?

"प्रश्न उपस्थित होता है कि वह परिवार के भीतर रह कर व्यय करना चाहती है अथवा बाहर रह कर? वह भीतर रह कर व्यय कर सकती हैं। उस अवस्था में उससे उपलब्ध भोग वस्तु पूर्ण परिवार की होगी।

"आभूषण, फर्नीचर अथवा अन्य सुख-सुविधा के उपकरण सबके प्रयोग के लिए होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घर में दो मोटर गाड़ियां हैं। एक मोटर ट्रक है। ये सब परिवार के साझे में है। रेडियोग्राम आया है तो सब सुनते हैं। कल को डाक्टर भैया घर में बिजली लगवा देंगे तो सबके लिए लगवायेंगे।

"हमारा अपना है केवल रोटी, साग, भाजी और पहनने के कपड़े। मैं चंचल बहिन से पूछती हूँ कि उसके खाने और पहनने में कहाँ कमी हुई है?

"यहाँ ईश्वर की कृपा है कि घर के लोग सब पेट भर खाते हैं और फिर घर पर कोई आ जाए उसके लिए भी यहाँ काफी है।

"चंचल बहिन के पास कपड़ों की कमी है क्या? घर में आभूषण भी हैं। जब भी, जो भूषण, हम में से जो पहनना चाहता है वह उसे मिल जाता है।

"इससे मैं तो यही समझी हूँ कि चंचल बहिन की बात में कुछ भी सार नहीं है। यदि वह नगर में जाकर रहना चाहती हैं तो जाकर रह सकती हैं। अपने घर वाले से पूछ लें कि वह वहाँ क्या काम कर सकेगा?"

सावित्री के कथन के उपरान्त किसी को कुछ भी कहने को रहा नहीं। भगवन्ती ने बहुओं से पूछा तो सबने सावित्री की बात का समर्थन कर दिया। माणिक की बहू सदारानी थी। वह पड़ोस के गाँव की लड़की थी। भगवन्ती उसके विषय में सदा शंकित रहती थी। उसने ब्रजलाल से विद्या ग्रहण नहीं की थी। उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। वैसे घर का काम-काज करने में वह बहुत सुधड़ थी। भगवन्ती ने उसी से पूछ लिया, "क्यों, सदारानी। तुम क्या चाहती हो?"

"माँ जी। मैं तो इस घर में आई हूँ और इसी में से मेरी अर्थी निकलेगी। जब यहाँ से खाने पहनने को मिलना बन्द हो जायेगा तब भी भूखी और नंगी यहाँ ही पड़ी रहूँगी।"

"मैं यह नहीं पूछ रही।" भगवन्ती ने कहा, "मैं पूछ रही हूँ कि तुम घर की सम्पत्ति का बंटवारा कर अपना चूल्हा-चौका पृथक् करना चाहती हो क्या?"

"मैं तो यह समझती हूँ कि यहाँ का चूल्हा-चौका मेरा है। आप जानती हैं। भोजन मैं बनाती हूँ और सब मेरा बना ही खाते हैं।"

"तो तुम्हें सबको खिलाने में कष्ट नहीं होता?"

"कष्ट किस बात का? काम तो करना ही पड़ेगा। रोटी नहीं बनाऊंगी तो कुछ अन्य काम करना होगा। बिना काम के कैसे रह सकूँगी। मुझे रोटी बनाने का काम पसन्द है।"

"तो बताओ, चंचल।" भगवन्ती ने पूछ लिया, "क्या चाहती हो?"

"मैं तो अपने मन में निर्णय कर चुकी हूँ कि हमको स्वतन्त्रता से उन्नति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का अवसर मिलना चाहिए। हम अमृतसर में रहेंगे। वहाँ ये किसी प्रकार का व्यवसाय करेंगे।"

"ठीक है तुम जब चाहो यहाँ से जा सकती हो। भूमि और गौओं के अतिरिक्त पूर्ण सम्पत्ति का सात भागों में बंटवारा होगा। प्रत्येक वस्तु का दाम लग जायेगा और चाहो तो अपने पूर्ण भाग की वस्तुयें ले सकोगी और चाहो तो उनके दाम में से अपना भाग ले सकोगी।"

"दाम कौन लगाएगा?"

"मोहन लगाएगा। और यदि उसके लगाए दाम पर आपत्ति हो तो बताना, मोहन के बाबा निश्चय कर देंगे।"

"माँ जी। मेरा दम यहाँ घुटता प्रतीत होता है। मैं यहाँ नहीं रह सकती।"

"तो कब जा रही हो खुली हवा में?" भगवन्ती ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"आज सायंकाल ही।"

"जा सकोगी? परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।"

इस पूर्ण वार्त्तालाप को सीता भी सुन रही थी। वह मोहन को टीका लगाया करती थी और उस दिन भी टीका लगाने आई हुई थी।

4

सीता इन जाटों की बातों का मुकाबला कर रही थी अपने परिवार की बातों से। जब से सुन्दरलाल ने यह पूछा था कि यदि वह विवाह नहीं करेगी तो खाये-पीयेगी कहाँ से? वह समझ गई थी कि उसके पिता के मस्तिष्क में कुछ खराबी है। वह मन में विचार करती थी कि यदि वह अपने पिता के घर में रहती है, तो घर का कुछ न कुछ काम करती ही रहेगी। उसके बदले में क्या रोटी, कपड़ा भी नहीं मिलना चाहिए?

सीता ने इस जाट परिवार के सदस्यों की बात सुनी थी। विशेष रूप् से माणिक की पत्नी सदारानी की बात। उसने कहा था, "रोटी नहीं बनाऊंगी तो कुछ अन्य काम करना ही होगा। काम किए बिना कैसे रह सकूँगी?"

सीता जानती थी कि यही तो भगवान् कृष्ण ने कहा है कि एक क्षण भी कर्म के बिना नहीं रहा जा सकता। जब कर्म करते हैं तो उसका फल स्वयमेव मिलता है।

उसके पिता ने समझा था कि पिता के घर में रहेगी तो खाएगी, पहनेगी, परन्तु काम कुछ नहीं करेगी। अथवा काम करेगी तो उसका मूल्य वस्त्र और भोजन के दाम से कम होगा। सीता अपने को इतना हीन नहीं मानती थी। इसी कारण उसने पिता के घर से कुछ भी न लेने का निर्णय कर लिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्या थी तुरन्त कुछ व्यवस्था करने की। उस रात उसने भोजन ही नहीं किया था। अगले दिन वह गार्गी मौसी से भिक्षा माँगने चल पड़ी थी। इसके साथ ही वह पंडित ब्रजलाल के घर में कुछ काम ऐसा करना चाहती थी जिससे वहाँ भोजन करने का दाम पूरा कर सके।

घर में कूटना-पीसना तो चलता ही था। सीता ने उसमें गार्गी का हाथ बंटाना आरम्भ किया था। जब से रामलुभाया की बहिन सावित्री का विवाह हुआ था, घर का काम गार्गी और कलावती कर रही थीं।

जब सीता ने इसमें हाथ बंटाना आरम्भ किया, गार्गी और कलावती के पूछने पर उसने कह दिया, "घर में कलावती का स्थान लेने का यत्न करने लगी हूँ।"

जब सुन्दरलाल ने नियम से बीस रुपया मासिक पंडित जी को देने आरम्भ किए तो ब्रजलाल ने कहा था, "लाला जी। यह सीता के भोजन के प्रतिकार में देते हैं क्या? मैं यह नहीं लूँगा।"

"क्यों?"

"मेरे यहाँ ढाबा नहीं खुला हुआ है जहाँ रोटी बिकती हो।"

"पंडित जी। इसे दान समझ लीजिए।"

"हाँ, इस भावना से देना चाहो तो दे सकते हो। मैं ब्राह्मण हूँ और इस अधिकार से दान ले सकता हूँ।"

सुन्दरलाल बीस रुपए देता रहा। सीता अपने माता-पिता के पास रहती रही, परन्तु दिन भर वह पंडित जी के घर पर रहती थी और गार्गी के काम में हाथ बंटाती तथा पंडित जी से पढ़ती थी।

चुन्नी का विवाह हुआ तो वह अपने ससुर के साथ अमृतसर में काम करने लगा। सुन्दरलाल ने कहा भी, "चुन्नी। तुम एक ही तो लड़के हो। यदि तुम घर छोड़ गए तो मेरा काम-धन्धा ठप्प हो जाएगा।"

चुन्नी का कहना था, "भापा, मैं देहात में काम नहीं कर सकता। यहाँ उन्नति करने का मार्ग खुला नहीं।"

"पर, मैं यहाँ अकेला काम नहीं कर सकूँगा।"

"तो यहाँ का काम बन्द कर दो।"

"और भूमि?"

"वह अधिया पर उठाकर नगर को चल दो। वहाँ आढ़त की दुकान कर लेंगे।"

"अच्छा। तुम ऐसा करो। दुकान अमृतसर में कर लो। रात को यहाँ रहा करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चुन्नी लाल ने दुकान अमृतसर में कर ली। इसमें उसका ससुर साझीदार था। चुन्नीलाल का एक साला था। वह बी. ए. पास कर रेल में अफसर बन गया था। इस कारण चुन्नी के ससुर का अभाव तो पूर्ण हो गया, परन्तु सुन्दरलाल के घर में अभाव प्रकट हो गया।

इसके साथ यह भी हुआ कि चुन्नी की पत्नी अधिक से अधिक माँ के घर में रहने लगी। वास्तव में माँ के पास रहने के लोभ के कारण ही चुन्नी की पत्नी चुन्नी को गाँव का काम-धंधा छोड़ नगर में चलने की प्रेरणा देती रहती थी। शीघ्र ही चुन्नी के साले की नौकरी की बदली हो गई वह नार्थ वैस्टर्न रेलवे से बदल कर रेलवे बोर्ड के केन्द्रीय कार्यालय दिल्ली में चला गया। अब उसने अपना घर भी दिल्ली में ले लिया। इस अवस्था में तो चुन्नी की पत्नी पक्के रूप से अमृतसर रहने लगी।

ज़माने में परिवर्तन द्रुत गति से हो रहे थे। देहातों की जनता नगरों की ओर आकर्षित हो रही थी। छोटे-छोटे ज़मींदार ज़मीन बेच-बेच कर नगरों में नौकरियां और कारोबार करने आ रहे थे। गोपाल का परिवार उन ज़मींदारों की भूमि मोल ले रहा था और खेती-बाड़ी को बढ़ाकर और उन्नत ढंग से करने लगा था। अन्न, अनाज और अन्य उपज के अधिकतर पदार्थ भी अब लाद-लाद कर सीधा नगर में बेचने के लिए ले जाये जाते थे। गोपाल ने अब अपना रुपया भी नगर के एक बैंक में जमा करा दिया था। इस सबका परिणाम यह हो रहा था कि सुन्दरलाल की दुकान का मुख्य काम समाप्त होकर नमक, मिर्च, तेल बेचने का धंधा ही रह गया था। अधिक मेहनत न कर सकने के कारण उसने अपनी भूमि अधिया पर गोपाल को दे दी थी।

यह परिवर्तन सीता देख रही थी और इन परिवर्तनों में वह देख रही थी कि जहाँ मोहन के पिता का परिवार दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहा है, वहाँ उसके पिता की आर्थिक अवस्था गिरती जाती थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि चुन्नी निरन्तर गाँव से धन ले जाकर नगर के व्यापार में डाल रहा था। परिणाम यह हो रहा था कि भोग के लिए भी धन का अभाव हो रहा था।

इस स्थिति में भी ब्रजलाल ने सीता की सहायता कर दी। सीता ने संस्कृत की प्रथमा, मध्यमा और फिर शास्त्री की परीक्षा पास कर अमृतसर में संस्कृत पढ़ाने की नौकरी कर ली। अब वह नित्य बाइसिकल पर नगर को जाती थी। उसे एक सौ रुपया मासिक वेतन मिलने लगा था।

पंडित जी का लड़का श्यामचरण इंगलैंड से बैरिस्टर बन कर आया था। वह वहाँ से एक अंग्रेज लड़की को पत्नी बनाकर ले आया था। श्यामाचरण ने वकालत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का काम लाहौर में आरम्भ कर दिया था। वह वहीं कोठी में रहता हुआ अपना काम कर रहा था। उसकी पत्नी 'मेरी' हिन्दुस्तान आने पर एक दो दिन के लिए बेगमपुरा गाँव में अपने ससुर और सास के पास आकर रही थी। परन्तु उन दो दिनों के अनुभव में वह समझ गई थी कि गाँव का वातावरण उसके अनुकूल नहीं। उसके ससुर की भोजन व्यवस्था में वह भूखी रहती थी और गाँव के लोगों के घूर-घूर कर अपनी ओर देखने से व्याकुलता अनुभव करती थी।

ब्रजलाल भी उसके रात देर तक जागते रहना और प्रातः दिन निकलने के बहुत पीछे तक बिस्तर पर सोये रहना देख-देख कर मन में अशान्ति अनुभव करता था। अतः न तो पुनः मेरी ने कभी बेगमपुरा आने की इच्छा प्रकट की और न ही ब्रजलाल को उसे बुलाने में सुख-सुविधा प्रतीत हुई।

मेरी को अपने ससुर के घर में यदि किसी के साथ कुछ लगाव हुआ था तो वह मोहन के साथ था। मोहन घर का दामाद था और एक पाठशाला चला रहा था। परन्तु उसके बातचीत का ढंग, मुख पर तेज तथा मस्तक पर गम्भीरता के लक्षण मेरी को आकर्षित करने में सफल हुए थे। मोहन को लाहौर आने पर उनकी कोठी में ठहरने का निमन्त्रण मिलता रहता था।

सीता में भी मेरी की रुचि बनी थी सीता तो एक दो बार लाहौर मेरी और श्यामचरण के घर रह भी आई थी। कलावती और गार्गी से तो मेरी को घृणा थी।

इस प्रकार दस वर्ष में बेगमपुरा गाँव के परिवारों में भारी परिवर्तन हो चुके थे।

मोहन गाँव का पाधा माना जाने लगा था। वह गाँव के बच्चों को देवनागरी अक्षर पढ़ाता था तथा प्रारम्भिक गणित के तीन नियम जोड़, ऋण और गुणा सिखाता था। तदनन्तर लड़के गाँव में खुले सरकारी स्कूल में भर्ती हो जाते थे। मोहन का मुख्य काम गाँव के और बाहर से आए बड़ी आयु के जिज्ञासुओं को हिन्दू-शास्त्र पढ़ाना था।

कलावती का एक जाट के घर विवाह करने से ब्रजलाल प्रतिष्ठा पहले तो गिरी। परन्तु यह संसार की रीति है कि जो इससे डरता है उसे लोग डराते हैं और उसके सिर पर चढ़ कर कूदते हैं। जो संसार की ओर घूर कर देखता है, संसार उसकी प्रतिष्ठा करता है। ब्रजलाल ने जब अपने विचार मार्ग पर चलना ही ठीक समझा और गाँव वालों की टीका-टिप्पणी से वह अपने मार्ग से विचलित नहीं हुआ तो लोग उसकी प्रचलित रीति-रिवाज की अवहेलना को भूल गये। ब्रजलाल में एक गुण था कि वह किसी भी व्यक्ति से व्यवहार अथवा बातचीत करते समय निष्पक्ष और निर्लेप भाव ही बना कर रखता था। कभी किसी ने उसकी निन्दा की अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसा की, इसका उसके व्यवहार पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं पड़ता था।

दो वर्ष से ब्रजलाल और मोहन का विद्यालय एक ट्रस्ट के अधीन कर दिया गया था। उस ट्रस्ट में कलावती का मामा अश्विनी कुमार, गोपाल का लड़का श्यामलाल, राधा का पति चमनलाल तथा ब्रजलाल और मोहन थे। ट्रस्ट रजिस्टर्ड करा लिया गया था और ट्रस्ट के नाम पर दान-दक्षिणा प्राप्त की जाती थी। दो वर्ष में विद्यालय के लिए एक सुन्दर भवन और विद्यार्थियों के लिए निवास-गृह बन चुका था। एक पुस्तकालय का भी निर्माण किया जा रहा था।

इस समय विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बीस थी। वे दर्शन और वेदाध्ययन करते थे। दो विद्यार्थी अन्वेषण कार्य भी कर रहे थे। उनके प्रयोग के लिए पांच-छः सहस्र पुस्तकें पुस्तकालय में एकत्रित हो गयी थीं। इनके अतिरिक्त पुस्तकालय का सम्बन्ध लाहौर की पब्लिक और विश्वविद्यालय की लायब्रेरियों के साथ जोड़ दिया गया था। यह पुस्तकालय इन बड़े पुस्तकालयों से पुस्तकें पढ़ने के लिये ला सकता था। इस विद्यालय के विद्यार्थी इन पुस्तकालयों में जाकर भी अध्ययन का कार्य करते रहते थे।

5

भैया-दूज के दिन गोपाल के परिवार की गोष्ठी समाप्त हुई तो सीता मिश्रित भावों से आंदोलित अनुभव करने लगी। जब परिवार के अन्य लोग उठकर अपने-अपने काम-धन्धे में लगने लगे तो चंचल उठकर मोहन के समीप बैठ पूछने लगी, "दादा! अब यह किस प्रकार होगा?"

मोहन सीता से कुछ पूछने के लिये उसके पास आया था। कलावती तो पहले ही उसके समीप बैठी थी। चंचल ने समीप बैठ जब उक्त प्रश्न किया तो मोहन ने अपना ध्यान उसकी ओर कर पूछ लिया, "किस विषय में पूछ रही हो, चंचल भाभी?"

"सम्पत्ति के बंटवारे के विषय में।"

"बंटवारा तो पांच मिनट का काम है। घर का प्रत्येक पदार्थ दाम सहित सूची में लिखा है। पूर्ण सम्पत्ति का जोड़ भी लगा है। उसका सातवाँ भाग गिन लेना तो आधे मिनट का काम है। अब रह जायेगा कि लाल ने वस्तुएं लेनी हैं अथवा नकद? यह वह बतायेगा तो मैं सब गिनती वगैरह कर बाबा से स्वीकृति ले, दे दूँगा।"

"हम तो नकद लेंगे।"

"लाल को आकर यह कहना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जो कहती हूँ।"

मोहन ने मुस्कराते हुए कहा, "ठीक है, भाभी! तुम्हारी इच्छा चलेगी परन्तु वह इच्छा लाल के मुख से व्यक्त होनी चाहिए। भाभी! परिवार में भागीदार वह है। इस कारण उसे आकर बात करनी चाहिए।"

"वे कहते हैं कि उन्हें आकर कहने में लज्जा लगती है।"

"सत्य? तो वह अनुभव करता है कि वह कोई लज्जास्पद बात कर रहा है?"

"कुछ पढ़ा-लिखा न होने के कारण उनमें हीन-भावना व्याप्त हो रही है।"

"पर वह तो भाभी से अधिक पढ़ा प्रतीत होता है।"

"मैं तो 'इण्टर' तक पढ़ी हूँ। वह कौन-सी परीक्षा पास किये है?"

"सत्य? भाभी! तुमने 'इण्टर' पास किया है? तब तो तुम मुझसे भी अधिक पढ़ी हो। अच्छा, ऐसा करो। यदि वह स्वयं नहीं आ सकता तो अपना वकालत नामा किसी को लिखकर दे दे। तो मैं उसको सब कुछ समझा दूँगा।"

चंचल एक कचहरी के अधिकारी की लड़की होने के नाते वकालत नामा इत्यादि का अर्थ समझती थी। इस कारण निरुत्तर हो कहने लगी, "हम तीसरे प्रहर नगर को जा रहे हैं। अभी तो हम अपने पहनने के वस्त्र ही लेकर जायेंगे। पीछे आज रात अथवा कल वे स्वयं आयेंगे। तो आप उनको हमारा भाग चुका देना। हम बहुत शीघ्र अपना व्यवसाय अमृतसर में आरम्भ करने वाले हैं।"

"ठीक है। बहुत ही जल्दी हिसाब हो जायेगा। आप अपनी योजना आरम्भ कीजिए।"

चंचल उठकर गयी तो सीता ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "इसको क्या हुआ है?"

मोहन ने धीरे से कह दिया, "इसको कुछ नहीं हुआ। इसके बाप को कुछ हो रहा है। वह कचहरी में अपराधियों के साथ रहते-रहते सबको अपराधी मानने लगा है। परन्तु इसकी बात से एक बात और पता चली है कि लाल को इसकी और अपने ससुर की योजना में तथ्य प्रतीत नहीं हो रहा। उसका सम्पत्ति के लिए कहने न आने से यही समझ में आया है।"

इस पर सीता ने कह दिया, "मुझे तो लाल का भी अन्त कुछ वैसा ही प्रतीत हो रहा है जैसा चुन्नी का हुआ है। कल पिता जी माता जी को बता रहे थे कि अमृतसर वाली दुकान घाटे में जा रही है और चुन्नी कहता है कि भूमि बेचकर दुकान की पूंजी को सुदृढ़ किया जाए।"

"और लाला जी क्या करने जा रहे हैं?"

"वे भी विचार कर रहे हैं कि गाँव में कुछ काम-धन्धा रहा नहीं। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे गाँव का सब कुछ बेच कर नगर में चले जाएं और चुन्नी के कारोबार को सुधारने का यत्न करें।"

"तो वे अपनी भूमि और हवेली भी बेच देंगे?"

"इसी दिशा में विचार कर रहे हैं।"

"और सीता, तुम क्या करने जा रही हो? गाँव में रहोगी अथवा लाला जी के साथ नगर में चली जाओगी?"

"नगर में कोई आकर्षण नहीं है। मैं तो स्कूल की नौकरी भी छोड़ने की बात पर विचार कर चुकी हूँ।"

"सत्य। क्यों?"

"नित्य बाइसिकल चलाते-चलाते नगर जाने और वहाँ से लौटने में जी उकता गया है।"

"पर, सीता! यह बात तो मुझे आज तक समझ नहीं आयी कि तुमने वह नौकरी स्वीकार क्यों की थी?"

सीता हंस पड़ी। हंस कर बोली, "कभी-कभी यह मूर्ख मन ऐसे परीक्षण करने पर उद्यत हो जाता है, जिन्हें बुद्धि अस्वीकार कर चुकी होती है।"

"तो तुम किसी विषय पर परीक्षण कर रही थीं?"

"हाँ। लोग कहते हैं कि स्त्री आर्थिक विचार से स्वतन्त्र हो तो सुख पायेगी। मैं यह अनुभव करना चाहती थी।

"यह बात मौसी गार्गी के पिता जी ने बताई थी। उनके कहने से मैंने शास्त्री की पढ़ाई की और परीक्षा पास कर ली। पंडित जी की सहायता से मैं फ़र्स्ट डिवीज़न में पास हो गयी। तदनन्तर मौसी के पिता ने ही अमृतसर 'गर्ल्स नॉर्मल स्कूल' में संस्कृत पढ़ाने पर नौकर करवा दिया। जब वहाँ की नौकरी मैं स्वीकार करने लगी तो पंडित जी ने मेरी नौकरी करने को पसन्द नहीं किया। वे पूछने लगे कि क्या आर्थिक विचार से कुछ अभाव है, जो नौकरी करने लगी हो?

"मैंने पंडित भवानी शंकर जी की बात उनको बता दी। मैंने कहा कि किसी विपरीत काल के लिए आश्रय बनाने की बात विचार कर रही हूँ।

"पंडित जी ने कहा, 'स्त्री के लिए यह स्वाभाविक आश्रय नहीं है। स्वाभाविक आश्रय तो पति होता है, परन्तु तुमको अपने भविष्य पर अविश्वास उत्पन्न क्यों हुआ है? परमात्मा पर भरोसा कब से छोड़ा है?'

"मैं चुप कर रही, परन्तु अपने मूर्खता-पूर्ण विचारों को मूर्तिमन्त करने के लिए नौकरी स्वीकार कर ली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और अब?" मोहन ने पूछ लिया, शारीरिक थकावट के कारण छोड़ रही हो अथवा मूल विचार पर ही सन्देह हुआ है?"

"दोनों बातें प्रतीत होती हैं। शारीरिक कष्ट तो सहन भी किया जा सकता है, यदि कष्ट उठाने में उद्देश्य पर विश्वास हो। उसी पर से विश्वास उठ रहा है।

"भैया! वहाँ लड़कियों के स्कूल में भी एक अबला स्त्री को, कलावती के पिता जी के कथनानुसार स्वाभाविक आश्रय देने वाले प्रस्ताव करने लगे हैं।"

"तो वह आश्रय लेने का विचार हो रहा है?"

सीता मुस्कराते हुए बोली, "उस आश्रय को तो जीवन के आरम्भ से ही अस्वीकार कर चुकी हूँ। मैं तो अभी भी विवाह कर सकती हूँ, परन्तु ये आश्रय देने वाले नवीन प्रत्याशी बिना विवाह के आश्रय की बात कर रहे हैं। भैया, अब स्कूल जाने को चित्त नहीं करता।"

"तो त्याग-पत्र दे दो।"

"वह दे दिया है। परन्तु अभी स्कूल जाना छोड़ा नहीं।"

"कब से छोड़ने वाली हो?"

"एक दो दिन में त्याग-पत्र स्वीकार होने तक की छुट्टी के लिए प्रार्थना करने वाली हूँ।"

"तो आज ही कर दो।"

"सत्य? जल्दी किस बात की है?"

"अपने विद्यालय में एक स्थान तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। हमें एक पुस्तकाध्यक्ष की आवश्यकता है।"

"क्या वेतन देंगे?"

"रोटी, कपड़ा और निवास स्थान। जब तक काम करो इतना, और काम से रिटायर होने पर रहने का स्थान और कलावती के पिता जी की सम्पत्ति और मकान भोगने और रहने के लिए।"

"पर, आप श्यामाचरण जी को जानते नहीं। तभी कह रहे हैं।"

"उसके विषय में पंडित जी निर्णय कर देंगे।"

"दादा! वह एक अति भयंकर जीव है। वास्तव में उसकी पत्नी ही उसे ऐसा बनाए हुए है। वह चाहती है कि मैं उसकी सौतन बन उनकी कोठी में रहूँ।"

"और श्यामाचरण विवाह करेंगे?"

"यही तो बात है। वे मुझे पंडित जी के आश्रय में समझ मुझ पर अपना अधिकार समझने लगे हैं। कोई आश्रय देना चाहता है और कोई अधिकार जमाना चाहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम क्या चाहती हो?" अब कलावती ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया।

इस प्रश्न का आशय समझने के लिए सीता कलावती का मुख देखने लगी। कलावती ने उसे चुप देख पूछ लिया, "तो समझी नहीं, सीता बहिन?"

"प्रश्न तो सुना है। इसका अर्थ भी समझा है, परन्तु प्रश्न का उद्देश्य नहीं समझी।"

"बात तो स्पष्ट ही है। इस संसार में मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन और आश्रय ढूंढ़ता रहता है। आज के विषम संसार में स्वतन्त्रता से रहना किसी के लिए भी सम्भव नहीं।

"आश्रय और साधनों में अन्तर यह है कि साधन निर्जीव होते हैं। उनका प्रयोग करने वाले की इच्छा और आवश्यकता पर निर्भर करता है। मनुष्य साधनों को बदल अथवा छोड़ भी सकता है। आश्रय मिलना आश्रय देने वालों की इच्छा और आवश्यकता पर निर्भर होता है। आश्रय मिले तो लिया जा सकता है। न मिले तो मुख देखना पड़ता है।

"अधिकार आश्रय देने वाला प्राप्त करना चाहता है। जो आश्रय निःस्वार्थ भाव से बिना प्रतिकार की आकांक्षा से दिया जाता है वह आश्रय नहीं कहलाता, वह सहचारिता कहलाती है।

"अब बताओ, सीता बहिन। क्या चाहती हो?"

"मैं तो स्वतन्त्रता चाहती हूँ और वह पा नहीं रही।"

"अच्छा विचार करो कि किसलिए वह स्वतन्त्रता नहीं मिल रही। देखो, स्वतन्त्रता के मार्ग में बाधा आभ्यान्तरिक है अथवा बाहरी? मेरा अभिप्राय है कि यह शरीरजन्य है अथवा परिस्थितियों की देन?"

इस पर सीता गम्भीर हो विचार करने लगी। धीरे-धीरे उसके मन में प्रकाश होने लगा। वह मन ही मन विचार करती रही। शारीरिक आवश्यकतायें हैं—भूख, प्यास, यौन तृष्णा, मकान, वस्त्र, मानसिक और बौद्धिक माँगें। इसके अतिरिक्त वह अनुभव करती थी कि समाज के आसुरी घटकों से रक्षा। अतः वह समझ गयी कि स्वतन्त्रता में बाधायें केवल बाहरी ही नहीं हैं, वरंच आभ्यान्तरिक भी है। इन सब बाधाओं को निःशेष किए बिना स्वतन्त्रता असम्भव है।

बाधाओं की लम्बी सूची में उसने केवल एक पर ही अधिकार प्राप्त किया था। वह थी यौन तृष्णा। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, थकावट मानसिक और बौद्धिक भूख को वह निःशेष नहीं कर सकी थी। कदाचित् कर भी नहीं सकती थी। एक सीमा तक ही वह इन्हें कम कर सकी थी। अधिक कम करने में वह अशक्त थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार विचार कर वह एक परिणाम पर पहुंची कि नगर के स्कूल की नौकरी छोड़ उसे जीविका के लिये कहीं अन्य काम करना होगा। उसे अपने निवास के लिए भी अब प्रबन्ध करना ही होगा। आसुरी प्रकृति वालों से रक्षा का भी प्रबन्ध करना ही है। इस कारण वह मोहन के प्रस्ताव पर विचार करने लगी थी। उसने कलावती के प्रश्न का उत्तर मोहन को दिया।

"दादा। पुस्तकाध्यक्ष का कार्य कब से मिल सकेगा?"

"आज से ही।"

"और विद्यालय में रहने का स्थान?"

"स्थान तो है। केवल उसमें उचित फर्नीचर नहीं है। वह मैं बाबा से कह देता हूँ। निर्वाह योग्य तो आज ही लग जायेगा और उचित सुविधाजनक, जो तुम बताओगी, वह शीघ्रातिशीघ्र लग जायेगा।"

"मुझे स्वीकार है।"

6

तीसरे प्रहर लालचन्द मोहन के पास आया और बोला, "दादा! कुछ सामान मैं यहाँ से ले जा रहा हूँ। उनको ले जाने के लिए मोटर ट्रक दे दो। और यदि असुविधा न हो तो अपनी मोटरगाड़ी में हमें नगर छोड़ आओ।"

"किस समय जा रहे हो?"

"अभी।"

मोहन ने ट्रक के ड्राइवर को कह दिया और स्वयं मोटर निकाल कर ले आया। लालचन्द और चंचल ने अपने वस्त्रों को दो ट्रंकों में भर लिया था और दो बिस्तर बांध रखे थे। दो पलंग जो घर के ही बने हुए थे, वे भी उन्होंने ले जाने उचित समझे। चंचल की कुछ पुस्तकें थीं। उनमें अंग्रेजी के उपन्यास अधिक थे। वे एक बड़े से बंडल में बंधे थे। यह सब सामान उठवाकर ट्रक में रखवा दिया गया। चंचल ट्रक वाले को अपने पिता के घर का पता बता, वहाँ आ जाने को कह, स्वयं अपने पति के साथ मोहन की मोटर में बैठ गयी।

मोहन गाड़ी स्वयं चलाता था। वह आगे ड्राईवर के स्थान पर बैठा और पूछने लगा, "कहाँ चलना है, लाल?"

"इस समय तो हम चंचल के पिता के घर पर जायेंगे।"

मोहन ने गाड़ी चला दी। पन्द्रह मिनट में उनको लेकर वह लाला रामचन्द्र सूद के घर के सामने जा पहुंचा। चंचल और लाल गाड़ी से उतरे और मोहन से बोले, "दादा, आओगे भीतर?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ। यदि चंचल कहे तो इसके माता-पिता से नमस्ते कहना चाहूँगा।"

"तो आईये। आप पिता जी को बता दीजिएगा कि हम गाँव छोड़ आए हैं।"

मोहन गाड़ी से नीचे उतर आया और गाड़ी को बन्द करते हुए बोला, "भाभी! यह तुम्हारी बात है। यह तुम ही बताना। हाँ, यदि उन्होंने कुछ पूछा तो मैं बता दूँगा।"

चंचल गम्भीर हो मकान के द्वार के बाहर लगी घंटी बजाने लगी। द्वार चंचल की माँ ने खोला। माँ ने लड़की, लड़की के घरवाले और मोहन को द्वार पर खड़े देखा तो विस्मय में कहा, "आओ चंचल। भीतर आओ। आओ बेटा।" उसने मोहन और लाल की ओर देख कर कह दिया।

तीनों भीतर गए तो बैठक घर में ले जाकर उनको बैठा दिया गया। वहाँ चंचल के भाई मक्खन लाल और नन्द लाल बैठे उपन्यास पढ़ रहे थे।

मक्खन बड़ा था और एक स्कूल में मास्टर लगा हुआ था। नन्दलाल ने अभी-अभी वकालत पास कर प्रैक्टिस करनी आरम्भ की थी।

"आओ चंचल। कैसे आयी हो?" मक्खन लाल ने पूछा।

"पिता जी कहाँ हैं?"

"वे बाजार से कुछ खरीदने गये हैं। क्यों, क्या बात है? बैठो। तुम तो बता रही थीं कि तुम्हारी ननद लाहौर से आयी है। इस कारण तुम प्रातः यहाँ रुकी ही नहीं थीं।"

"ठीक है भापा। पर कुछ बात हुई है जिससे मैं अपनी सास का मकान छोड़ नगर में रहने के लिये चली आयी हूँ।"

इस सूचना से चंचल के दोनों भाई और माँ अवाक् चंचल का मुख देखते रह गये।

इस समय तक सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये थे। चंचल की माँ मनोरमा ने ही बात आरम्भ की। उसने मोहन को सम्बोधन कर पूछ लिया, "बेटा, क्या हुआ है?"

"माँ जी।" मोहन ने बता दिया, "यह तो मैं जानता नहीं कि क्या हुआ है? कुछ दिन हुए चंचल ने माता जी से कहा था कि यह परिवार से पृथक् होना चाहती है। आज घर के सब लोग एकत्रित थे। इस कारण माता जी ने बात चला दी। इस पर सब का मत यही था कि जो घर में रहना नहीं चाहता, उसे दे-दिला कर पृथक् कर दिया जाये। इस पर बाबा ने इनको बता दिया है कि कितना कुछ इनको मिलेगा। बस ये दोनों कहने लगे कि मैं इनको मोटरगाड़ी में यहाँ छोड़ जाऊँ। इनके कहने पर मैं इनको लेकर यहाँ चला आया हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ जी। हमारे घर में जब बात विचार ली जाती है तो फिर उसे पूरा करने में हम देर नहीं करते।"

चंचल की माँ तो अभी इस घटना पर विचार ही कर रही थी कि चंचल के बड़े भाई मक्खन लाल ने पूछ लिया, "क्यों चंचल, सब कुछ छोड़-छाड़ कर किसलिए चली आयी हो?"

"भैया! पिता जी से राय कर चुकी हूँ।"

इसने सबका मुख बन्द कर दिया। मनोरमा ने मोहन से ही पूछ लिया, "तो अपने भाई को क्या देकर पृथक् किया है?"

"यह पिता जी का निर्णय है कि घर की भूमि और गौयें बांटी नहीं जायेंगी। परिवार की शेष सब वस्तुएं और नकदी लिखत-पढ़त में हैं। उसका सातवाँ भाग लाल को मिल जायेगा।"

"और दे देने के उपरान्त इनका घर से क्या सम्बन्ध रहेगा?"

"पारिवारिक सम्पत्ति में भागीदार होने के अतिरिक्त ये भाई और चंचल भाभी रहेंगी। ऐसे ही जैसे राजी-खुशी से पृथक् हुआ भाई होता है।"

"और लड़ा हुआ नहीं?"

"लाल हम से लड़ा नहीं है। क्यों लाल, बताओ तुम्हारी किसी से लड़ाई है?"

"नहीं, माता जी।" लाल ने कह दिया, "मैं लड़ कर नहीं आया और न ही बाबा ने लड़कर मुझे घर से निकाला है।"

"तब तो ठीक है।"

"अभी रहोगी कहाँ?" मक्खन लाल ने पूछ लिया।

"इसी कारण तो पिता जी को पूछ रही हूँ। उन्होंने कहा था कि हाल बाज़ार वाले मकान में मैं रह सकूँगी।"

"पर वह तो किराये पर चढ़ गया है।"

इस सूचना पर चंचल के मुख पर भी परेशानी के चिह्न दिखाई देने लगे। इस समय बाहर ट्रक के आकर खड़े होने की आवाज़ सुनाई दी।

लाल उठ कर बाहर चला गया। इसी समय मिस्टर सूद बैठक घर में आ गये। उसने आते ही पूछा, "बाहर सामान किस का आया है?"

मोहन देख रहा था कि चंचल के वहाँ आने की कोई आशा नहीं कर रहा था। इस पर भी वह मौन था। मिस्टर सूद को प्रश्न का उत्तर मनोरमा ने दिया, "चंचल गाँव छोड़ चली आयी है।"

"अच्छा? पर, चंचल! आने से पहले सूचना देनी चाहिए थी।"

"पिता जी। आपने कहा था कि मैं आऊंगी तो हाल बाजार वाले मकान में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह सकूँगी। अब भैया कह रहे हैं कि वह किराये पर चढ़ गया है।"

"यह ठीक है, पर वह तो एक महीना पहले की बात थी। तुम आज प्रातः जब भाइयों को टीका करने आई थीं तो तुमने बताया नहीं था कि तुम आ रही हो?"

इस पर चंचल ने कह दिया, "पिता जी! अब तो आ गयी हूँ।"

मोहन ने कह दिया, "चंचल भाभी! तुम चाहो तो फिर गाँव को चल सकती हो और जब सुविधा हो पुनः आ सकती हो।"

चंचल कहने ही वाली थी कि ट्रक पर से सामान अभी न उतारा जाये, परन्तु रामचन्द्र ने कह दिया, "नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। आ गयी है तो आ गयी है। अभी सामान कहीं रखवा देते हैं और तुम्हारे लिये मकान एक दो दिन में ढूंढ़ देंगे।"

चंचल इस बात से प्रसन्न थी, परन्तु मक्खन लाल ने पूछ लिया, "तब तक चंचल रहेगी कहाँ?"

"इसका अपना कमरा क्या हुआ?"

"वह इसकी बड़ी भाभी ने अपने पढ़ने-लिखने का कमरा बना रखा है।"

"जब तक चंचल यहाँ रहती है तो उससे कह दो कि तुम्हारे कमरे में बैठकर पढ़ लिया करे।"

"पर मेरी पढ़ाई में विघ्न पड़ेगा।"

"देखो मक्खन। कुछ दिन की बात है। चंचल के लिए कुछ ही दिन में मकान मिल जाएगा। तब तुम और तुम्हारी बीवी पृथक्-पृथक् बैठ कर पढ़ाई कर सकोगे। आख़िर चंचल के रहते हुए भी तो वह तुम्हारे कमरे में ही पढ़ा करती थी।"

मक्खन चुप तो हो गया, परन्तु उसके मुख से स्पष्ट था कि वह सन्तुष्ट नहीं था।

इस समय तक पलंग और सन्दूक मकान के सेहन में रख ट्रक वाले बाहर चले गए।

इस पर मोहन भी उठ खड़ा हुआ। उसने लाल से पूछ लिया, "लाल! मैं अब जाऊँ?"

रामचन्द्र ने कहा दिया, "नहीं, चाय आ रही है।"

"जी मैं चाय नहीं पिया करता।"

"मिठाई तो खा सकोगे? जाओ मनोरमा! सबके लिए चाय, मिठाई इत्यादि ले आओ और मोहन जी के लिए दूध।"

"जी, नहीं। जल।"

"अच्छा, जल।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7

मोहन के जाने के उपरान्त चंचल ने अपने अविवाहित दिनों के कमरे पर अधिकार जमा लिया। उसके पलंग वहाँ सेहन में ही पड़े रहे। अपने बिस्तर और ट्रंक वह अपने कमरे में ले गयी। पलंग उस कमरे में आ नहीं सकते थे। एक पलंग वहाँ पहले ही रखा था।

चंचल के पिता के घर में आने के तीन दिन उपरान्त गोपाल और मोहन आये। मोहन अपने साथ पारिवारिक हिसाब-किताब की पुस्तक लाया था। साथ ही चैक बुक भी लाया था।

रामचन्द्र और मक्खन लाल अपने-अपने काम से तब आए ही थे। नन्दलाल ने अपनी बैठक हाल बाज़ार में रखी हुई थी और कचहरी के उपरान्त वह वहाँ कुछ काल के लिए बैठने जाता था। तदनन्तर वह क्लब में चला जाता था। वहाँ से प्रायः रात के दस बजे लौटा करता था। रात का भोजन वह प्रायः क्लब में ही लेता था।

मोहन और गोपाल आये तो लाल और चंचल घर पर नहीं थे। वे सिनेमा देखने गये हुए थे। उन दिनों मैटिनी शो तीन बजे से साढ़े पांच बजे तक चलता था और वे उसी में गये थे। मनोरमा ने बताया कि वे आने ही वाले हैं। अतः इन दोनों के जलपान का प्रबन्ध कर दिया गया और वे लाल और चंचल की प्रतीक्षा में वहाँ ठहर गये।

कुछ बात करने के विचार से रामचन्द्र ने पूछ लिया, "कुछ काम है लाल से?"

उत्तर मोहन ने दिया। उसने कहा, "मैं परिवार की पूर्ण सम्पत्ति का वृत्तान्त लेकर आया हूँ। इनसे उस दिन पूछा था कि ये घर का सामान बाटेंगे अथवा उनका भी दाम ही लेंगे। मैं चैक बुक साथ लाया हूँ। जिससे आज इनको इनके भाग का दाम दे दिया जाये।"

"कितना कुछ इनका बनता है?"

"फर्नीचर और अन्य सामान जिसका खेती-बाड़ी से सम्बन्ध नहीं, पैंतालीस हज़ार तीन सौ बत्तीस रुपये का है। इसमें उस अनाज का दाम भी है जो कट कर खलिहान में रखा है।

"हमारे पास नकद रुपया बीस सहस्र बैंक में है। कुछ हमने लोगों से लेना भी है। वह भी छः सहस्र सात सौ रुपया है। इस प्रकार नकद छब्बीस सहस्र सात सौ का सातवाँ भाग तीन हज़ार आठ सौ दस रुपये बनते हैं। सम्पत्ति में से यदि ये कुछ भी लेना नहीं चाहते तो उसका भी सातवाँ भाग छः हज़ार चार सौ तीस मिल सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो कुछ भी न हुआ।" रामचन्द्र ने नाक चढ़ाते हुए कहा—"चौधरी गोपाल दास, आप रहते तो ऐसे हैं। जैसे लखपति हों। कितनी भूमि है आपके पास?"

उत्तर मोहन ने दिया—"इस समय नब्बे एकड़। इसमें से पांच एकड़ में बग़ीचा लगा हुआ है और शेष पर बदल-बदल कर फ़सल करते हैं।"

"मैं समझता हूँ कि केवल भूमि-भूमि ही तीन लाख रुपये मूल्य की है।"

"परन्तु वह बंट नहीं रही है।"

"क्यों?"

"बाबा जी की इच्छा नहीं।"

"उनकी इच्छा तो उनके जीवन-काल तक ही चल सकती है। पीछे तो बंटेगी ही।"

"जी नहीं।" गोपाल ने दृढ़ता से कहा, "वह मेरी सम्पत्ति है और उसे मैं बांटूगा नहीं।"

"ठीक है, चौधरी साहब! परन्तु आप अनन्त-काल तक बैठे रहेंगे क्या?"

"मरने से पहले मैं उसे किसी एक को "गिफ्ट" कर जाऊँगा।"

"परन्तु वह बंटेगी ही। नगर बहुत द्रुत गति से फैल रहा है और दस वर्ष में आपका गाँव नगर कमेटी के क्षेत्र में आ जायेगा। वहाँ मकान बनेंगे और दाम दस-बीस लाख हो जायेगा।"

"भूमि बांटने का प्रश्न तब हमारे सामने आयेगा। अभी मैं उसकी चिन्ता नहीं कर रहा।"

"चौधरी साहब! भूमि ही तो मुख्य वस्तु है जिसमें से लाल को भी भाग मिलना चाहिये। कम से कम उसके भाग की भूमि को पृथक् निशान लगा देने चाहिये और उसकी उपज उसे मिलती रहनी चाहिये।"

मोहन ने दृढ़ता से कहा, "लाला जी! भूमि के विषय में और गौओं के विषय में कुछ बात नहीं हो सकती। यह हमारे पूर्ण-परिवार का निश्चय है।"

"तो बात कचहरी में जायेगी।"

मोहन ने उठते हुए कहा, "तो अब कचहरी में बात होगी।"

गोपाल किसी प्रकार का समझौता करना चाहता था। उसने कह दिया "मैं अपनी पैतृक भूमि से लाल का भाग दे सकता हूँ।"

"नहीं बाबा!" मोहन ने कहा, "भूमि की बात नहीं होगी।"

गोपाल अनिश्चित मन था। वह अभी भी बैठा हुआ था। इस समय रामचन्द्र ने पूछ लिया, "वह पैतृक भूमि कितनी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर गोपाल ने दिया, "वह तीस एकड़ है।"

"तो उसमें से साढ़े चार एकड़ लाल को मिल सकेगी।"

"गोपाल ने कहा, "हाँ।" परन्तु मोहन अभी भी खड़ा था। उसने कह दिया, "लाला जी, नहीं। भूमि बंटवारे में नहीं है।"

"पर मोहन।" रामचन्द्र ने नम्रता स्वीकार करते हुए कहा, "तुम कानून तो जानते नहीं। इस पर भी झगड़ा करते हो।"

"कानून की बात वकील करेंगे। मैं तो बुद्धि की बात करता हूँ।"

रामचन्द्र हंस पड़ा। वह कुछ कहने ही वाला था कि लाल और चंचल आ गये। चंचल ने अपने ससुर और जेठ को देखा तो कुछ झुक कर हाथ जोड़ नमस्ते कर दी। पूर्व इसके कि मोहन इत्यादि कुछ कहें, रामचन्द्र ने लाल को कह दिया, "तुम्हारे बाबा तुमको सम्पत्ति में तुम्हारा भाग देने आये हैं।"

"बाबा। उसके लिये मैं स्वयं वहाँ आने वाला था। आपने व्यर्थ में कष्ट किया है।"

अभी भी रामचन्द्र ने ही कहा, "ज़रा सुन तो लो कि क्या सौगात लेकर आये हैं।"

"बाबा। बता दो। लाला जी को पता लग जाये कि मैं कितना धनी हूँ।"

मोहन ने कहा, "लाल! हम समझते हैं कि बातचीत ऐसे नहीं होगी। बाबा अपना वकील अथवा मुख़्तयार भेज़ेंगे। वे तुमको सब बता देंगे। तुम उनसे ही बात करना।"

"पर दादा। कुछ बताओ भी तो?"

इस पर मोहन पुनः बैठ गया। चंचल भीतर चली गयी। मनोरमा दूध और मिठाई ले आयी। मोहन वही गणना जो वह लाला जी को बता चुका था, बताने लगा तो मनोरमा ने कह दिया, "पहले जल-पान कर लीजिये। फिर शान्त चित्त से बात करेंगे।"

मनोरमा ने अपने पति को भी कहा, "आपके लिए चंचल चाय ला रही है। आप चाय पी लें पीछे आराम से बात करिये। मेरा कहा मानिये। लाला जी के घर की बात में हमको दखल देने की आवश्यकता नहीं।"

"मक्खन की माँ! तुम चुप रहो। लातो के भूत बातों से समझते नहीं। मुआमला कचहरी में जायेगा।"

"तो जाये।" उत्तर अभी भी मनोरमा ने दिया, "पर यह जल-पान तो यहाँ हो सकता है। इसका कचहरी से सम्बन्ध नहीं।"

रामचन्द्र बैठ गया और बड़ी प्लेट में से मिठाई की एक डली उठा अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामने रखी छोटी प्लेट में रख, उसे तोड़कर खाने लगा। मनोरमा ने मोहन को कहा, "मोहन बेटा! कोई मत-भेद की बात है तो वह कचहरी में अथवा बाहर सालस डालकर समझ-समझा लेना। परन्तु परस्पर सम्बन्ध मुकदमे का विषय नहीं। जल-पान करो और फिर समझ-समझा लेना।"

मोहन ने भी मिठाई अपनी प्लेट में रख खानी आरम्भ कर दी। गोपाल ने भी अपने भाग की मिठाई ले ली।

मोहन ने तो जल लिया। गोपाल ने दूध और रामचन्द्र, लाल तथा चंचल ने चाय ली।

खाते-पीते हुए कुछ बात नहीं हुई। जब खाना-पीना हो चुका तो मोहन ने वही गणना और राशियां बता दीं जो उसने चंचल के पिता को सुनायी थीं। लाल मौन हो सुनता रहा। जब मोहन सुना चुका तो उसने कहा, "मैं सब सामान की सूची और उस पर व्यय हुआ धन लिखा हुआ लाया हूँ। वह भी देखोगे?"

"नहीं। आवश्यकता नहीं। दादा, यह बता दो कि नकद लेने पर मुझे तुरन्त क्या मिलेगा?"

"सब दस सहस्र दो सौ पांच रुपया तुम्हारे भाग का बनता है।"

"और भूमि की उपज की भी तो कुछ बात थी?"

"हाँ। वह तुम्हारे घर के खाने भर के लिए उपज में से मिलती रहेगी। जब तक भूमि पिता जी के पास है, यह चलेगा। माता-पिता के देहान्त के उपरान्त इस विषय में अभी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।"

"दादा! मैं दो तीन दिन तक गाँव में आऊंगा और तब बताऊंगा कि मैं क्या-क्या लूँगा? मेरी समझ में एक बात आ रही है, परन्तु मैं चंचल से राय कर ही बताऊंगा।"

गोपाल उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ जोड़ रामचन्द्र को नमस्ते कह दी। मोहन ने भी सबको नमस्ते कह चंचल के पिता से कहा, "लाला जी! अब आप चंचल और लाल को उनके हित की बात समझा दीजिए। मैं अपने साथ एक फारखती का प्रपत्र बनवाकर लाया था। वह लाल को लिखना पड़ेगा। इस कारण यदि आपकी इच्छा हो तो वह प्रपत्र मैं आपको दे सकता हूँ। जिसमें उसमें भी किसी प्रकार का संशोधन करना हो तो आप लाल को बता सकेंगे।"

"हाँ। वह भी दे जाओ। यदि लाल मुझसे राय करेगा तो उसमें भी राय दे दूँगा।"

"लाल को आपकी राय से ही काम करना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8

जब गोपाल और मोहन चले गए तो घर में बहुत विवाद हुआ। वास्तव में विवाद तो उस दिन से ही हो रहा था जिस दिन से चंचल इस घर में आई थी।

चंचल का जब से विवाह हुआ था अपने ससुर के घर में सबको मेहनत से काम करते और खाते-पीते, गाते-बजाते देख रही थी। यह उसके पिता के घर से विलक्षण बात थी। वहाँ कार्यालय के समय पुरुष लोग काम पर जाते थे और घर पर केवल स्त्रियां ही रह जाती थीं। बच्चे स्कूल चले जाते थे। स्त्रियां घर का काम-काज नहीं करती थीं। चौका-बासन और घर की सफाई इत्यादि के लिए नौकरानी थी। कपड़े धोबी धोता था। जब पुरुष वर्ग और बच्चे घर आते थे तो पुरुष दिन भर नौकरी अथवा कार्य करने से थके होते थे। साथ ही उनके लिए घर पर कुछ काम नहीं होता था। बच्चे खेलने नगर के बाहर खुले मैदान में चले जाते थे। घर में खेलने को स्थान नहीं था। रात को स्त्रियां पतियों की संगत में रहती थीं। बच्चे पढ़ते-पढ़ते सो जाते थे। इस प्रकार पारिवारिक जीवन कुछ भी नहीं था।

गाँव में तो दिन चढ़ने से रात सोने तक मनोरंजन सा ही होता रहता था। सब काम को खेल की भांति करते थे। जब कुछ भी कार्य करते थे तो कण्ठस्थ की हुई जप जी का अथवा गीता का पाठ होता रहता था। अब बच्चे भजन भी सीख आए थे। वे भी काम करते हुए गाते रहते थे। जब से घर में रेडियोग्राम आया था तो वह भी बजता था। रेडियो पर समाचार इत्यादि भी सुने जाते थे। यह सब ठीक चंचल के पिता के घर से विलक्षण था।

पहले तो यह अपने माता-पिता और भाई-भावजों को एक विचित्र बात समझ बताती रही। तदनन्तर वह यह बताने लगी कि उस हो-हल्ला में भी घर के सब लोग काम करते हैं। सब बच्चे मोहन दादा की पाठशाला में पढ़ने जाते हैं। वहाँ पढ़ाई का ढंग भी विलक्षण है। वहाँ पढ़ाई गाने-बजाने और कण्ठस्थ किये श्लोकों से आरम्भ होती है।

जब पुरुष अथवा बच्चे खेतों में अथवा घर पर हाथ से काम करते हैं तो कंठस्थ किए भजन, श्लोक भी बोलते रहते हैं।

कुछ दिन के उपरान्त वह बताने लगी, "मुझसे तो काम हो नहीं सकता। मैं कपड़े धो रही होती हूँ, तो मेरा ध्यान ग्रामोफोन के रिकार्ड बजने की ओर जाता है तो कपड़े धोने का डंडा मेरे हाथ पर ही आ लगता है। मैं जा रही होती हूँ तो मोहन दादा का लड़का श्लोक बोलता हुआ सामने से मिल जाता है तो मेरे हाथ में पकड़ी वस्तु गिर जाती है अथवा मैं किसी से ठोकर खा जाती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन चंचल ने अपने पिता को सुनाया, "काम मुझसे होता नहीं और सबको काम करते देख मुझे लज्जा लगने लगती है।"

"तो तुम गाँव छोड़कर नगर में रहने आ जाओ।"

"अकेली कैसे आऊँ?"

"नहीं। घरवाले को साथ ले आओ।"

"वह यहाँ आकर क्या करेंगे?"

"कुछ काम करा देंगे। घर वालों से अपना हिस्सा-पत्ती लेकर आ जाए।"

"और पिता जी, रहेंगे कहाँ?"

"हाल बाजार वाले मकान में आकर रह जाना।"

इस आश्वासन पर चंचल अपने पति को नगर में आकर रहने और किसी प्रकार का काम-धन्धा करने की प्रेरणा देने लगी। इस प्रेरणा में वह गाँव के घर की सब बातों में दोष निकालने लगी। साथ ही वह संयुक्त परिवार के दोष बताने लगी।

कुछ दोष तो रामचन्द्र ने अपनी लड़की को सुझाये थे और कुछ अपनी बुद्धि से जोड़-तोड़ लगाकर उसने बताया। अन्त में जब सोहन के कारखाने और उसकी आय का हो रहा दुरुपयोग बताया तो लाल भ्रम में पड़ गया।

जिस दिन वे आए थे उसी रात चंचल को पृथक् में बैठा कर उसके पिता ने कहा था, "तुम बिना कुछ लिए-दिए चली आई हो। अब यहाँ निर्वाह कैसे करोगी?"

"हमको सम्पत्ति में से भाग मिलेगा। वह तो आज भी मिल जाता, परन्तु मैंने स्वयं ही जल्दी नहीं मचाई। मैं डर रही थी कि कहीं कोई कह न दे कि मैं कंगलों की लड़की हूँ जो इतनी बेसब्र हो रही हूँ।"

"और यदि उन्होंने कुछ न दिया तो?"

"नहीं, पिता जी। वे ऐसे नहीं हैं। मुझे विश्वास है कि वे एक-एक पाई हमें यहाँ दे जायेंगे।"

"और तुम्हारा घरवाला काम क्या कर सकता है?"

"वे कपड़ा बुनने का काम जानते हैं।"

"इससे आठ आना रोज का काम कर सकेगा।"

"वे कपड़ा बुनने का कारखाना लगा लेंगे।"

"उसमें लाखों रुपये चाहियें।"

"अभी थोड़े में काम आरम्भ करेंगे और धीरे-धीरे उन्नति करेंगे।"

"वह तो किसी देहात में ही हो सकेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और यहाँ क्यों नहीं?"

"यहाँ जुलाहे मिलने कठिन हैं।"

"तो आप ही कोई काम बता दीजिए?"

"काम तो बता सकता हूँ, परन्तु उसके लिए धन और अनुभव की आवश्यकता होगी।"

"धन कुछ तो मिल ही जाएगा। अनुभव प्राप्त करने के लिए उन्हें कहीं काम पर, भले ही बिना वेतन के लगवा दीजिए।"

"और तब तक पूंजी में से निकाल-निकाल कर खाओगी?"

"हम माँ से माँग कर खा लेंगे।"

"माँ तो मेरे और तुम्हारे भाइयों की आय में से ही दे सकेगी और मक्खन तो मुंह फुलाए बैठा है। वह कह रहा है कि वह पहले ही कहता था कि चंचल द्वार पर सफेद हाथी बांध रही है।"

इस पर भी चंचल ने कह दिया, "पिता जी। मैंने समझा था कि आप विचार कर ही मुझे गाँव छोड़ने की बात कह रहे हैं। मैं आ गई हूँ। अब तो आपको सहायता करनी ही होगी। मैं लौट कर वहाँ कैसे मुख दिखा सकती हूँ।"

"लौटने की बात मैं नहीं कह रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुम उसे समझाओ कि वह मेरे साथ कचहरी चला करे। मैं उसको कुछ न कुछ आय करने का ढंग सिखा दूँगा। मेरा विचार है कि वह शीघ्र ही दस-बीस रुपए नित्य की आय करने लगेगा।"

"आप बताइए, मैं उनको कहूँगी तो वे मेरा कहा मान लेंगे?"

"बस यही है कि वह कोट, पतलून पहन मेरे साथ कचहरी में चला चले। मैं उसका परिचय कुछ वकीलों से करा दूँगा और काम बन जाएगा।"

लाल और उसकी पत्नी में भी बातें हुईं। भविष्य का एक चित्र खींचा गया और लाल को चंचल ने प्रेरणा दी कि उसे लाला जी के सांथ कचहरी जाना चाहिए और जैसा वे कहें वैसा ही करना चाहिए।

लाल जब से ससुराल में आकर रहने लगा था, तब से सबके मुख पर एक विशेष प्रकार की गम्भीर मुद्रा बनी देखने लगा था। यदि किसी के मुख पर दया और सहानुभूति की कुछ झलक दिखाई देती थी तो चंचल की माँ के मुख पर थी।

चंचल की भाभियां, जो पहले हंस-हंस कर उससे बातें किया करती थीं, अब ऐसे मौन और गम्भीर हो गई थीं मानो उनके सिर पर मनों ठंडा जल पड़ गया हो।

चंचल को भी अपने ससुर की पारिवारिक सम्पत्ति में से केवल दस सहस्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लगभग राशि अपने भाग में मिलने वाली सुन कुछ निराशा हुई थी। वह तो लगभग एक लाख रुपये पाने की आशा कर रही थी। अगले दिन गाँव में जाकर पूर्ण ब्योरा सुनने की वह इच्छा करने लगी थी।

रात चंचल ने दस सहस्र रुपये की रकम पर निराशा प्रकट करते हुए भी साहस बंधाने की बात ही की थी। उसने कहा, "हम अभी जीवन के आरम्भ काल में ही हैं। हमें विचारशील और कर्मशील बनना चाहिए। मुझे पूर्ण आशा है कि कुछ ही वर्षों में हम लखपति हो जाएंगे।" इतना कह चंचल ने लाला रामचन्द्र की योजना बता दी।

लाल ने पूछा, "वहाँ क्या काम करना होगा?"

"खेतों में कसी चलाने से सुगम कार्य ही होगा। पूर्ण बात तो मैं जानती नहीं। आप पिता जी के साथ चले जाइये और जैसे वे कहें वैसा ही करें।"

लाल मान गया। अगले दिन पायजामा, कोट पहन और पगड़ी बांध और एक भले घर के युवक की रूप-रेखा बना, वह लाला रामचन्द्र के साथ कचहरी चला गया।

सायंकाल वह आया तो ससुर के साथ बैठ उसने चाय पी। चाय पीते हुए रामचन्द्र ने कहा, "लाल। कल तुम्हें मुझसे पृथक् में जाना है। मैं समझता हूँ कि दो तीन वर्ष में तुम्हारे पास इतनी पूंजी हो जाएगी कि तुम अपने पिता से अधिक प्रतिष्ठित और समृद्ध हो जाओगे।"

जब वह अपने कमरे में चंचल के साथ पृथक् में बैठा तो उसके पूछने पर उसने बताया, "आज मुझे तीस रुपये की आय हुई है।" इतना कह उसने जेब से तीस रुपये निकाल चंचल के सामने रख दिए।

चंचल ने रुपए गिने और उनमें से पांच रुपए अपने पति को लौटा कर शेष अपने सन्दूक में रख लिए।

इसके उपरान्त उसने पूछा, "क्या काम बताया है, पिता जी ने?"

"कुछ नहीं। मेरा वकीलों से परिचय करा दिया और मुझे यह कह कि जैसा वे कहें वैसा ही करना है, वे अपनी कचहरी में जा बैठे।

"मैं वकीलों के कमरे में बैठा रहा। कुछ ही देर में एक वकील आया और उसने एक व्यक्ति से मेरा परिचय करा दिया और मुझसे कहा कि इसकी बात सुन लो और फिर उसके अनुसार कहने के लिए इसके साथ चले आना।

"मुझे उस व्यक्ति ने अपना नाम-धाम और काम बता कर कह दिया कि कह देना कि मैं उसे जानता हूँ।

"जब पेशी की आवाज़ पड़ी तो वह व्यक्ति मुझे कोर्ट रूम में ले गया। मैंने,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा उसने कहा था, कोर्ट में जा कह दिया। वही वकील, जिसने मुझे उस व्यक्ति से परिचय कराया था, कुछ पूछता रहा। मैं हाँ, हाँ करता रहा और वहाँ बैठे एक आदमी ने कुछ लिखा। मैं हस्ताक्षर कर बाहर चला आया। बाहर आकर उस व्यक्ति ने मेरी जेब में दस रुपये का नोट डाल दिया।

"इस प्रकार यह सब कुछ मिला है।"

चंचल ने हंसते हुए कहा, "यह तो बहुत मज़ेदार काम है।" लाल ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

अगले दिन से लाल अपने आप कचहरी में जाने लगा। उसका वकीलों के अतिरिक्त भी कुछ लोगों से परिचय होने लगा था। कभी-कभी तो किसी फौजदारी के मुकदमे में झूठी साक्षी भी देनी पड़ती थी। आय निश्चित नहीं थी। चार-पांच रुपये से लेकर चालीस पचास रुपये तक हो जाती थी।

परन्तु यह काम कुछ अधिक दिन तक चल नहीं सका। उसके इस काम आरम्भ करने के पांचवें-छठे दिन की बात है। लाल को एक हत्या के मुकदमे में झूठी साक्षी भरने के लिए समझाया जा रहा था। उसे बताया जा रहा था कि उसे यही कहना है कि अभियुक्त उसके गाँव में खेतों पर काम करता है।

आज उसने मुकदमे के विषय में कुछ व्याख्या से पूछा तो वकील ने समझा कर कह दिया यदि वह ठीक ढंग से गवाही दे सका तो उसे एक सौ रुपया मिलेगा।

लाल की साक्षी हुई उसके उपरान्त एक स्त्री की साक्षी हुई उस स्त्री ने बताया कि अभियुक्त उससे बलात्कार करना चाहता था। मेरे पति ने मेरी रक्षा करने के लिए इसको रोकना चाहा, दोनों में लड़ाई हो गई मेरे देखते-देखते दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए और इसने मेरे पति का गला घोंट कर मार डाला।

उस स्त्री ने यह भी बताया कि यह झगड़ा उनके घर में हुआ था। अभियुक्त दीवार फांदकर घर में आया था और जाने के समय तो यह द्वार में से होकर गया था। यह तो उस हत्या के उपरान्त भी मुझसे बलात्कार करने वाला था, परन्तु मैं ज़ोर ज़ोर से चीखें मार रही थी। मेरी आवाज़ सुन कर पड़ोस के दसौन्धासिंह के लड़के आ गए थे। उन्होंने इसे भागते हुए देखा था।

लाल इस भयंकर कथा को सुन पसीना-पसीना हो गया। मुकदमा डिप्टी कमिश्नर की अदालत में हो रहा था और लाल का ससुर अदालत में हाकिम के पीछे हटकर बैठा हुआ सब बयान लिख रहा था।

मुकदमा समाप्त हुआ। अभियुक्त के भाई ने उसे एक ओर ले जा कर एक सौ रुपया दे दिया। साथ ही उसका धन्यवाद कर दिया। एक बात उसने और कही, "कदाचित् तुम को सैशन कोर्ट में फिर यही गवाही देनी पड़ेगी। उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए मैं तुम्हे पृथक् फीस दूँगा।"

लाल ने अभी भी उत्तर नहीं दिया। इस दिन सौ रुपए का नोट पकड़ते हुए उसका हाथ कांप रहा था। यह उसके अपने मन की चंचलता का प्रतीक था।

उस दिन लाल ससुर के घर नहीं गया। बहुत देर तक उसकी प्रतीक्षा की जाती रही। चंचल ने अपने पिता से पूछा, "आज कुछ विशेष बात हुई थी?"

"कुछ विशेष नहीं। आज नित्य से अधिक आय ही हुई होगी।"

"मेरा विचार है।" चंचल ने कह दिया, "वह गाँव में अपने माता-पिता से मिलने गए होंगे।"

9

सीता ने नगर के स्कूल से नौकरी छोड़ दी और बेगमपुरा के विद्यालय में पुस्तकाध्यक्ष का काम करने लगी। उसे विद्यालय में ही रहने को एक कमरा मिल गया। भोजन वह पंडित जी के घर पर ही करती थी।

उस दिन सायंकाल उसने अपनी माँ से कह दिया, माँ! मैं अब विद्यालय में ही रात को सोया करूँगी।"

"क्यों?"

"तुम तो यह गाँव वाला मकान छोड़ रही हो। तब मैं यहाँ किस के पास रहूँगी?"

"पर तुम यहाँ रहोगी ही क्यों? तुम्हारे पिता अमृतसर जाने की बात इसलिए भी तो कह रहे थे कि तुमको नित्य नगर को जाना पड़ता है।"

"मैं अब वहाँ भी नहीं जाया करूँगी। मैंने वहाँ की नौकरी छोड़ दी है।"

"क्यों?"

"मन ऊब गया है।"

"और विद्यालय में क्या करोगी?"

"यहाँ मोहन दादा ने काम बता दिया है।"

"पर वह इतना वेतन दे देगा?"

"मैं समझती हूँ कि वहाँ से यहाँ अधिक ही मिलेगा। खाना-पीना तो दोनों स्थान पर समान है। यहाँ रहने को मकान भी मिलेगा और स्वाध्याय के लिए बहुत समय होगा।"

"वेतन कितना होगा?"

"माँ। वेतन कुछ नहीं होगा। भोजन, वस्त्र, मकान और स्वाध्याय के लिए समय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कुछ मूर्ख होती जाती हो। पहले अपने वेतन में से दस, बीस रुपये मुझे दिया करती थीं। अब तो नहीं दे सकोगी।"

"यह तो मैं भूल ही गई थी। मोहन जी से कहूँगी और वे इसका प्रबन्ध भी कर देंगे।"

"तुम कुछ ऐसी बातें कर रही हो जैसे मोहन के परिवार में सम्मिलित होने जा रही हो?"

"हाँ। पर माँ, यह तो तब से ही है जब से मैं उनको राखी बांधने लगी हूँ और टीका लगाने लगी हूँ।"

"मतलब यह कि तुम बहिन ही रहोगी? मैं तो कुछ और ही मतलब समझी थी।"

"क्या मतलब समझी थी?" सीता ने गम्भीर हो पूछ लिया।

"यही कि वह ब्राह्मण की लड़की से ऊब गया है और अब बनिए की लड़की पर हाथ साफ करने लगा है।"

"माँ। तुम कुछ नहीं समझती। यह बात तो आज से पांच वर्ष पहले समाप्त हो चुकी है। वह कलावती से ऊबा नहीं। तब उसने अपने पुराने संस्कारों के अधीन यह बात कलावती के द्वारा ही की थी और मैंने इसका उत्तर उसके हाथ में राखी बांध कर दिया था। तब से ही मैं उसकी बहिन बन राखी बांधती हूँ और टीका लगाती हूँ।

"नहीं माँ। ऐसी कोई बात नहीं। मुझे तो कुछ ऐसा समझ आया है कि वह मुझे पंडित जी की लड़की बना उनकी उत्तराधिकारिणी बनाना चाहता है।

"मैंने उससे कहा कि मैंने नौकरी छोड़ दी है तो वह कहने लगा कि मैं उनके विद्यालय में नौकरी कर लूँ। मैंने वेतन पूछा तो बताने लगा कि रोटी, कपड़ा, मकान और बूढ़ी हो ज़ाने पर पंडित जी की सम्पत्ति का उत्तराधिकार।"

"मुझे सन्देह है कि वह तुमको बिना विवाह किए पत्नी के रूप में प्रयोग करना चाहता है।"

"नहीं माँ! वह ऐसा नहीं है।"

"तो कब विद्यालय में जाओगी?"

"मोहन दादा तो कह रहे थे कि आज ही चली आऊँ, परन्तु मैंने कहा है कि कल से आऊंगी। आज पिता जी घर पर नहीं हैं।"

शान्ति चुप रही। लाला सुन्दरलाल नगर में चुन्नीलाल की दुकान पर गया हुआ था। उसका विचार नहीं था कि वह गाँव को लौट सकेगा, परन्तु दुकान पर बिगड़ती अवस्था को देख उसने अब एक दिन भी देर करनी उचित नहीं समझी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ तुरन्त रुपए की आवश्यकता थी। अतएव वह सूर्यास्त से पहले ही लौट आया और अपनी समस्या गोपाल को बता आया।

जब वह घर पहुंचा तो सीता अपने कमरे में अपनी पुस्तकें इत्यादि समेट रही थी। वह अगले दिन मकान छोड़ देना चाहती थी। उसने नगर के स्कूल से एक मास की छुट्टी लेने के लिए प्रार्थना-पत्र भी लिखकर तैयार कर लिया था।

शान्ति घर की बदलती परिस्थिति पर विचार करती हुई शोक-मुद्रा में अपने कमरे में बैठी थी।

सुन्दरलाल ने उसे देखा तो पूछ लिया, "आज खाना नहीं बना?"

शान्ति ने अपने पति को देखा तो चौंक कर पूछ लिया, कब आए हैं आप?"

"मुझे आए तो दो घंटे से ऊपर हो गए हैं। मैं गोपाल से मिलने गया था। वहाँ दो घंटे से ऊपर लग गए हैं।"

"क्या काम था उससे?"

"मैंने निर्णय कर लिया है कि भूमि और मकान, दोनों बेच डालूँ और इनका नकद दाम लेकर व्यापार में लगा दूँ।"

"तो गोपाल यह लेने को तैयार हो गया है?"

"वह तो कहता था कि मैं यह मकान और भूमि न बेचूँ। इन को गिरवी रख कर उससे ऋण ले लूँ। परन्तु मैंने बेचना ही ठीक समझा है। उसने वचन दिया है कि वह कल प्रातः काल बताएगा कि कितना दाम दोनों का दे सकता है।"

"आप कितने की आशा करते हैं?"

"दस सहस्र भूमि का और पांच सहस्र मकान का।"

"तो क्या हमारी अवस्था इतनी दुर्बल हो गई कि हम पन्द्रह सहस्र भी एकत्रित नहीं कर सकते?"

"मैं आज अनुभव करता हूँ कि घर में ज्यादा लड़के होने से कितना लाभ होता है। यदि चुन्नी का एक भी भाई और होता तो यहाँ बेचने की आवश्यकता न पड़ती। चुन्नी नालायक निकला है। उसे व्यापार का ढंग नहीं आता और सब कुछ उसने समाप्त कर दिया। इस समय दूसरों से दुकान का लेना एक लाख रुपए से ऊपर बनता है, परन्तु हाज़िर धन एक पैसा नहीं। मैं पिछले कई महीने से भूमि पर ध्यान नहीं दे सका और फसल खराब हो रही है।

"इस कारण नकद रुपया प्राप्त करने के लिए और स्वयं निश्चिन्त होकर वहाँ बैठने के लिए मुझे नगर में जा कर रहना ही पड़ेगा।"

"तो मुझे भी वहाँ चल कर रहना होगा?"

"तो मैं वहाँ अकेला रहूँगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब मकान बेच देंगे तो मैं वहाँ चलूँगी ही। परन्तु मैं तो सीता की बात पूछ रही हूँ।"

"सीता तो वहाँ जाती है। अब वह भी वहीं रहने लगेगी।"

"नहीं। वह नहीं जाएगी। उसने वहाँ की नौकरी छोड़ दी है और यहाँ मोहन के स्कूल में नौकर हो गई है।'

"तो अब नित्य वहाँ से यहाँ आया करेगी?"

"उसने रहने का प्रबन्ध भी विद्यालय में ही कर लिया है।"

"इस लड़की ने बहुत तंग किया है।"

"मैं तो अपनी भूल पर पश्चात्ताप करती हूँ। मैं ही हठ कर रही थी कि इसका विवाह जाटों के घर में नहीं होगा। यह मेरी महान भूल थी।"

"वह तो हो गई अब क्या किया जाये।"

"कुछ नहीं। मैं समझती हूँ कि सीता कल प्रातः विद्यालय में रहने चली जाएगी। मैं भी उसी समय मकान छोड़ दूँगी।"

"और सामान?"

"मोहन से ट्रक लेकर सब सामान उसमें लदवा कर ले जाएंगे।"

गोपाल के घर में सीता ने संकेत से बात तो उस दिन सुबह ही कर दी थी। इस पर भी वे सब कुछ इतना शीघ्र होने की आशा नहीं करते थे।

जब सुन्दरलाल गोपाल से बात कर गया तो गोपाल ने मोहन को बुला लिया। अभी राधा और शकुन्तला गाँव में ही थीं। यह निश्चय था कि उनके पति रविवार के दिन आयेंगे और अपने बच्चों को तथा पत्नियों को ले जायेंगे। मोहन अपने भाइयों में बैठा था और परिवार की स्थिति पर विचार कर रहा था। श्याम को अगले दिन बहुत प्रातः काल अपने काम पर लाहौर जाना था। सोहन ने भी कारखाना बन्द रखा था और वह भी अगले दिन प्रातः काल ही जाने वाला था।

इस समय मोहन का बड़ा लड़का भागीरथ आया और बोला, "भापा। बाबा बुला रहे हैं।"

"किसको बुला रहे हैं?"

"आपको।"

मोहन उठकर बाहर बैठक में चला आया। सुन्दरलाल जा चुका था। गोपाल अकेला बैठा था। उसने मोहन के समीप बैठ कर कहा, "सुन्दरलाल की हालत बहुत खराब हो गयी प्रतीत होती है। वह मकान और खेत बेचने का प्रस्ताव लेकर आया था।"

"सुबह सीता भी कुछ ऐसी ही बात कह रही थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो हम उसकी सम्पत्ति खरीद लें?"

"मैंने साधारण रूप से श्याम और सोहन से बात की है। वे दोनों इसमें कोई हानि नहीं देखते। केवल मकान की बात विचारणीय है। उसका क्या करेंगे?"

"मकान को नया बनवा लेंगे और कोई काम चालू कर लेंगे।"

मोहन देख रहा था कि उसका पिता काम के विस्तार की योजना बनाता रहता है। उसने कहा, "बाबा! देहात में कारखाना ठीक रहेगा क्या?"

"क्यों, क्या हानि है?"

"मैं मुंशी प्रेमचन्द लिखित 'रंगभूमि' पढ़ रहा था। उसमें यह प्रकट करने का यत्न किया गया है कि कारखानों की सभ्यता गाँवों की सभ्यता को बिगाड़ देती है।"

"पर गांधी जी तो कहते हैं कि गाँवों में दस्तकारी चलनी चाहिए।"

"हाँ, परन्तु कारखाना खोलने और दस्तकारी चलाने में अन्तर है। दस्तकारी से अभिप्राय है हाथ से काम करना।"

"परन्तु हाथ के काम करते हुए भी तो मशीनें चलाई जा सकती हैं।"

"हाँ। जैसे कपड़ा सीने की मशीन चलती है।"

"मेरा वही मतलब है। ऐसा काम चलाओ कि जब भी कोई किसान खाली हो, तो आकर कारखाने में काम कर जाये और जितने घण्टे काम करे उतनी उजरत ले जाए।"

"बाबा। यह विचार करना होगा। साथ ही इस विषय में किसी जानकार से राय लेनी होगी। इस समय तो मकान लें अथवा न लें, इस पर विचार करना है।"

"मेरा विचार है कि एक समय सुन्दरलाल ने मेरी बहुत सहायता की थी और अब वह कष्ट में है तो मुझे उसकी सहायता करनी चाहिए।

"मैंने उसे कहा था कि वह ऋण के रूप में रुपया ले सकता है, परन्तु वह बेचने की ही बात करता रहा है।"

"कितना दाम माँगता है?"

"भूमि और मकान दोनों का पन्द्रह हज़ार रुपया।"

"अच्छा बाबा। मैं कल उससे मिल कर बात करूँगा।"

"वह चाहता है कि प्रातः काल तक निर्णयात्मक बात कर दी जाए और पांच हज़ार रुपया पेशगी उसे दे दिया जाए।"

"कल ही?"

"हाँ।"

"अच्छा, मैं कल दिन निकलते ही उससे मिलकर बात करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

सुन्दरलाल अभी सोकर उठा ही था कि मोहन ने उसके मकान के पिछवाड़े का द्वार खटखटा दिया।

शान्ति ने कहा, "मोहन आया है।"

"मोहन? आवाज़ आई है?"

"नहीं। पर दरवाज़ा खटखटाने का ढंग उसका ही है। वह बचपन से ही यहाँ ऐसे ही आया करता है।"

सारा परिवार मकान की छत पर सो रहा था। सीता सबसे पहले जाग कर शौचादि के लिए जा चुकी थी। सुन्दरलाल नीचे उतर आया और द्वार खोलकर मोहन को खड़ा देख हंस पड़ा।

"चाचा। किसलिए हंसे हो?"

"सीता की माँ ने कहा है कि यह मोहन है और सत्य ही तुम हो। इससे चाची के मन का तार तुम्हारे मन से मिला देख हंसी आ गयी है।"

"चाची, मेरे प्रति माँ का वात्सल्य अनुभव करती हैं।"

"सुनाओ, कैसे आए हो?"

"कल आप पिता जी से भूमि बेचने की बात कह रहे थे?"

"हाँ, भूमि और मकान दोनों।"

"मैं कहने आया हूँ कि बेचने की क्या आवश्यकता है? कुछ ऋण चाहिए तो बहुत सस्ते ब्याज पर मिल सकता है।"

"नहीं, मोहन! तुम समझे नहीं। रुपये की आवश्यकता तो है, परन्तु यहाँ सम्पत्ति छोड़ने की भी आवश्यकता पड़ रही है। मैं चुन्नी के साथ जाकर काम करूँगा। यहाँ का काम पहले ही बिगड़ रहा है। इस कारण इधर का ध्यान छोड़कर वहाँ के कारोबार को बचाने का यत्न करना चाहता हूँ।"

"देख लीजिए। हम आपकी प्रत्येक प्रकार से सहायता करने के लिए तैयार हैं।"

"वह तो मुझे विश्वास है, परन्तु यदि मेरे घर में तुम्हारे पिता से आधे भी लड़के होते तो मैं गाँव को छोड़ता नहीं। एक ही तो लड़का है और वह भी सरल चित्त है। दूसरे उसे ठग रहे हैं।"

"अच्छा, यह बताइये कि क्या दाम लेंगे?"

"मैंने तुम्हारे बाबा को बताया था कि दस सहस्र भूमि का और पांच सहस्र मकान का।"

"मकान का तो ठीक है, परन्तु भूमि का कम नहीं है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दरलाल मुस्कराया और पूछने लगा, तो तुम बताओ कि क्या देना चाहते हो?"

"लाला जी! आप अपनी भूमि के विषय में जानते नहीं। इसी कारण दाम कम लगा रहे हैं। मैं उसके बीस सहस्र ठीक समझता हूँ।"

सुन्दरलाल समझ नहीं सका कि मोहन हंसी कर रहा है अथवा सत्य कह रहा है। वह आश्चर्यवत् उसका मुख देखता रह गया।

मोहन ने कहा, "लाला जी। कितना पेशगी चाहिए?"

"पांच सहस्र अभी चाहिए।"

"आप एक रसीद लिख कर ले आइए। मैं चैक काट कर दे दूँगा। चैक का नम्बर घर पर ही आकर भर देना।

"जिस दिन रजिस्ट्री कराएंगे और ज़मीन दाखिल खारिज कराएंगे, रुपया उसी समय मिल जायेगा।"

"वह मैं एक सप्ताह में ही करा दूँगा।"

गोपाल ने जब सुना कि मोहन भूमि का दाम बीस सहस्र कह आया है तो एक क्षण तक वह विस्मय में मुख देखता रह गया, परन्तु तुरन्त ही समझ गया। वह समझ गया कि मोहन न तो बनिया है और न ही जाट। बनिया होता तो मूल्य कम करने का यत्न करता। जाट होता तो बिना मोल के ही छीनने का यत्न करता। वह ब्राह्मण है। उसने न्याय-संगत बात करने का यत्न किया है।

जब श्याम ने सुना कि सुन्दरलाल का मकान और भूमि ली जा रही है तो वह भी प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "बाबा। अब लाला के मकान को पुनः बनवाने के लिए मुझसे नक्शा बनवाना।"

"पर मैं तो वहाँ कोई दस्तकारी खुलवाना चाहता हूँ। जिसमें गाँव के किसान अपने खेती-बाड़ी के काम से अवकाश पा कुछ पैदा कर सकें।"

"उसी के विषय में कह रहा हूँ। मैंने जापान में हो रहे घरेलू कामों पर साहित्य पढ़ा है और मैं उसकी नकल में यहाँ भी कुछ करना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है रजिस्ट्री हो लेने दो। फिर विचार कर लेंगे।"

लाला सुन्दरलाल पांच हज़ार रुपये की रसीद लिख लाया। मोहन ने चैक लिख दिया। चैक नगर के एक बैंक के नाम था। सुन्दरलाल अभी आया ही था कि सीता आ गयी। उसने कहा, "दादा। मैं अपने कपड़ों तथा पुस्तकों के सन्दूक विद्यालय में चपरासी के पास रख आयी हूँ। अब चलकर कमरा खुलवा दो।"

"नगर के स्कूल का क्या हुआ?"

"मैंने पिता जी को अपनी छुट्टी का प्रार्थना-पत्र लिख कर दे दिया है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे मुख्याध्यापिका को दे देंगे।"

मोहन ने एक कमरा विद्यालय के पुस्तकालय के पिछवाड़े में साफ़ करवा चौकी, पलंग, मेज़, कुर्सी आदि लगवा रखे थे। उसने चपरासी को चिट्ठी लिख दी कि कमरा सीता के लिए खोल दे।

सीता गयी तो शान्ति आयी और उसने कहा, "मोहन! मैं कल तक घर का सब आवश्यक सामान बांध तैयार हो जाऊँगी। अपना ट्रक सामान ले जाने के लिए दे सकोगे क्या?"

"मौसी! कल किस समय चाहती हो?"

"मध्याह्न पूर्व ग्यारह बजे के लगभग।"

"मिल जाएगा।"

इसके उपरान्त श्याम अपनी मोटर में ही लाहौर को चल दिया। मोहन विद्यालय के प्रबन्ध में लग गया।

प्रातः के समय तो पंडित ब्रजलाल पढ़ाते थे। मध्याह्नोत्तर मोहन पढ़ाता था। एक अन्य अध्यापक था जो दिन भर पढ़ाता था। जितने भी लड़के पढ़ने आते थे, तीन घंटे पढ़ते थे। कुछ प्रातः आते थे। कुछ मध्याह्नोत्तर।

लड़कियों की भी एक पाठशाला थी, परन्तु वह गोपाल की बगिया में लगती थी। वहाँ दो कमरे और बनवा दिए गये थे। लड़कियों की पाठशाला में पढ़ने वाली छात्रायें केवल चार थीं और वे भी नियम से पढ़ने नहीं आती थीं। एक लड़कियों का और एक लड़कों का सरकारी स्कूल गाँव में खुल गया था। मोहन और ब्रजलाल से पढ़ने वाले लड़के गाँव के बाहर से भी आते थे। गाँव के पांच छः ही थे। उनमें मोहन के अपने लड़के थे और सोहन के लड़के भी थे। शेष विद्यार्थी प्रायः बाहर के थे और संस्कृत पढ़ते थे।

मोहन बाबा को साथ ले एक दिन लाल के ससुराल में उसका हिसाब-किताब बताने गया था। परन्तु लाल के ससुर के व्यवहार से वह प्रसन्न नहीं था। पहले दिन जब वह चंचल और लाल को छोड़ने गया था तो उसे समझ आया था कि चंचल और लाल अपने मन से ही गाँव छोड़ नगर में रहने गए हैं, परन्तु उस दिन उसे यह समझ आया कि लाला रामचन्द्र लाल को पिता से झगड़ा करने के लिए भड़का रहा है।

घर लौटते समय गोपाल ने मोहन से कहा, 'मैं समझता हूँ कि तुम्हारे बाबा से मिली भूमि का भाग लाल को मिल जाना चाहिए।'

मोहन का कहना था, "बाबा जितनी भी भूमि लाल को दोगे वह किसी दूसरे के पास बेच देगा। मैं समझता हूँ कि साढ़े चार एकड़ भूमि का दाम लगाकर उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजी के रूप में अधिक धन दे दिया जाये।

"एक बात मुझे पसन्द नहीं आ रही। वह यह है कि यदि लाल मुझसे अथवा श्याम या सोहन से राय करता तो हम उसको किसी व्यवसाय में शिक्षा भी दिलवा देते और वह व्यवसाय खुलवा भी देते। बंटवारा व्यवसाय चलने पर बाद में हो जाता।"

"उसने कहा तो है कि वह दो-तीन दिन में हिसाब-किताब करने आएगा। उस समय उसको समझा देना। मान जाए तो ठीक रहेगा।

"देखो, मोहन। लाल बीवी के मोह-जाल में फंसा हुआ विवेक को भूल रहा है। यह हमारा कर्त्तव्य है कि उसे सन्मार्ग दिखायें।"

घर पर पहुंच अपने कार्य में लगे हुए घर के लोग बंटवारे के विषय में बातचीत करने के लिए लाल के आने की प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु वह नहीं आया।

जिस दिन गोपाल और मोहन चंचल के पिता के घर गए थे, उसके ठीक एक सप्ताह के उपरान्त तांगे में सवार चंचल आई। राम की बहू सदारानी ने उसे आते देखा तो हाथ जोड़ नमस्ते की और उससे गले मिलने के लिए उसको अपनी ओर खींचा तो चंचल को सर्वथा शीतल पा उसने उसे छोड़ दिया और विस्मय में पूछ लिया, "क्या बात है चंचल?"

चंचल ने पूछ लिया, "वे कहाँ हैं?"

सदारानी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "वे कौन?"

"आपके देवर।"

"लाल की बात पूछ रही हो? उसे तुम साथ जो ले गई थी।"

चंचल ने समझा कि किसी प्रकार की धोखा-धड़ी हो रही है इस कारण सदारानी को वहीं छोड़ वह अपनी सास के क़मरे में चली गई। भगवन्ती मध्याह्न का भोजन कर आराम कर रही थी। गोपाल लकड़ी के कारखाने में था। अब तो गोपाल ने गाँव के दो अन्य युवकों को भी काम सिखा कर तैयार कर लिया था और अब वहाँ काम दिन भर होता रहता था। गोपाल का सबसे छोटा लड़का केवल बी. एस. सी में पढ़ता था और वह विलायत जाने का यत्न कर रहा था। वह जब भी गाँव में आता था कारखाने में सुधार और परिवर्तनों का सुझाव देता रहता था। इस कारण कारखाने का बना फर्नीचर अब दिल्ली और लाहौर तक जाने लगा था।

भगवन्ती ने चंचल को कमरे के द्वार पर खड़े देखा तो भीतर बुला लिया, "आओ, बेटा चंचल। कब आई हो? लाल भी आया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल ने हाथ जोड़ नमस्ते कहते हुए पूछा, "माँ जी। वे यहाँ नहीं आये क्या?"

"कौन नहीं आए? लाल की बात कह रही हो? कब आया है वहाँ से?"

चंचल भगवन्ती के पास पलंग पर बैठ गई और डबडबाई आंखों से अपनी सास की ओर देखते हुए कहने लगी, "आज तीन दिन हुए वे काम पर गये थे और फिर घर नहीं लौटे। मैंने समझा था कि आपसे मिलने आए हैं। परन्तु जब वे तीन दिन तक नहीं लौटे तो मैं पता करने आई हूँ।"

"क्या काम करने तथा कहाँ जाने के लिए कह गया था?"

"पिता जी ने कोई काम कचहरी में बताया था। काम तो मैं जानती नहीं, परन्तु वे तीस चालीस रुपए नित्य लाने लगे थे।"

भगवन्ती उठी और कमरे से बाहर निकली तो सदारानी वहाँ खड़ी थी। वह भी लाल के विषय में किसी प्रकार की आशंका करने लगी थी और सत्य बात जानने के लिए उत्सुक थी। भगवन्ती ने सदारानी को देखा तो पूछ लिया, "बाबा कहाँ हैं?"

"कारखाने में हैं।"

"किसी को भेज उनको बुलाना। और देखो, किसी को विद्यालय में भेज मोहन को बुला भेजो।"

सदारानी को समझ आया कि किसी प्रकार की दुर्घटना हो गई है। मकान के सेहन में खेल रहे बच्चों को विद्यालय और कारखाने में भेज स्वयं भगवन्ती और चंचल के पास कमरे में आ गई।

चंचल बता रही थी, "पिता जी ने उनको कहा था कि अपने परिवार पर पृथक् होने का दावा कर दे। वे मुकदमा करने से इन्कार करते रहे। इस पर पिताजी ने कहा कि यदि मुकदमा नहीं करना है तो कहीं काम करना चाहिए। इस पर वे कचहरी जाने लगे। वे नित्य तीस-चालीस रुपये जेब में लेकर आते थे। मैं तो यह समझी थी कि कुछ ही दिनों में हमारी हालत सुधर जाएगी। हम आपकी सहायता के बिना भी स्वतन्त्र कारोबार चला सकेंगे।

"एकाएक, तीन दिन हुए, वे कचहरी से लौटे ही नहीं। रात बहुत देर तक प्रतीक्षा की गई। मैंने समझा कि वे आपसे मिले बिना उदास हो गए होंगे। जब वे इतने दिन तक भी नहीं लौटे तो मैं पता करने चली आयी हूँ।"

गोपाल पहले आया और सब वृत्तान्त जान किसी भययुक्त बात की आशंका करते हुए चंचल से बार-बार लाल की बात पूछने लगा।

जब मोहन आया तो सब बैठक में आ गए थे। राम और माणिक भी खेतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से आ गए। मोहन ने विचारोपरान्त कहा, "मैं समझता हूँ कि लाल को अपने काम पर लज्जा लगी है और वह कहीं छुपा बैठा है। बाबा, चिन्ता की बात नहीं। मैं उसे ढूंढ लाऊंगा।"

"पर दादा! उन्होंने कुछ लज्जा की बात की थी?" चंचल ने पूछा।

"देखो चंचल भाभी। लज्जा एक् मन की भावना है। यह भिन्न-भिन्न प्रकृति के मनुष्यों के साथ और भिन्न-भिन्न स्थितियों में भिन्न-भिन्न विषयों और मात्रा में हो सकती है। हमारे घर में पला हुआ युवक कुछ ऐसी बातों को लज्जास्पद मान सकता है, जिन्हें आपके पिता के घर में वैसा न माना जाता हो। अपने-अपने घर की प्रथा पर निर्भर करता है।"

"तो दादा! आप समझते हैं कि उन्होंने अपना कुछ अनिष्ट नहीं कर लिया। मेरा तो हृदय कांप रहा है।"

"मेरा अनुमान यही है। मैं उसे बचपन से जानता हूँ। वह जीवन में रस लेने वाला व्यक्ति जीवन छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो सकता। इस पर भी अनुमान ही है।

"भाभी! तुम तांगा वापिस कर दो। अब यहीं रहो। मैं समझता हूँ कि यदि वह मिल गया तो तुम्हारे यहाँ रहते उसे वापिस लाना सुगम होगा।"

"माता जी नगर में चिन्ता करती होंगी।"

"मैं उनको समाचार भेज दूँगा। मुझे लाल को ढूंढने नगर में जाना पड़ेगा। मैं स्वयं लाला जी से मिल अपना अनुभव और ढूंढने का कार्यक्रम बता सकूँगा।"

11

मोहन ने जब सुना कि लाल नित्य तीस-चालीस रुपये कमा कर लाने लगा था। तब ही उसे सन्देह हुआ कि अवश्य वह किसी प्रकार की अधर्मयुक्त आय होगी। इस बात का विचार आते ही वह यह समझ गया कि लाल के मन में इस काम से ग्लानि उत्पन्न हुई होगी। पंडित ब्रजलाल जी की शिक्षा और अपने घर का वातावरण बेईमानी की आय को कभी क्षम्य नहीं मान सकता था। अतः लाल ससुराल में अनियमित आय करने से विक्षुब्ध हो, वहाँ से भाग गया होगा। साथ ही वह लाल को इतना मूर्ख नहीं मानता था कि वह किसी भी कठिनाई में अपने को निस्सहाय मानने लगा हो। निराश होना वह अपने परिवार की प्रकृति के सर्वथा प्रतिकूल मानता था और आत्म-हत्या निराशा की उपज ही है।

इस प्रकार मन ही मन में युक्ति कर वह इस परिणाम पर पहुंचा था कि लाल कहीं छुपा बैठा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने चंचल को वहीं गाँव में रह जाने की सम्मति दी। तो चंचल ने कह दिया, "दादा, आप नगर में माँ जी से मिलिए और उनको पूर्ण बात से अवगत करा दीजिए।"

"मैं अभी नगर जा रहा हूँ। तनिक उस काम के विषय में भी जान लूँ जो वह किया करता था और जिससे तीस-चालीस नित्य की आय करने लगा था। तब ही मैं लाल का पता पाने की आशा करता हूँ।"

मोहन ने एक अटैची केस में कुछ कपड़े रखे और अपने साथ माणिक को ले कर नगर को चल दिया।

मोहन को गए तीन दिन हो चुके थे। घर के सब प्राणियों को लाल के लापता होने का समाचार मिल चुका था और वे गाँव में एकत्रित हो रहे थे।

रविवार का दिन था। गोपाल ने प्रातः पाठ से उठते ही कहा, "मैं आज मोहन के लौटने की आशा कर रहा हूँ।"

"अकेले ही?"

"मुझे कुछ आशा हो रही है कि लाल मिल गया है। मोहन को गये तीन दिन हो चुके हैं और वहाँ से किसी की भी चिट्ठी-पत्री नहीं आई।

"आज मैं खेतों में शौच के लिए गया था और वहाँ अभी बैठा ही था कि सामने बबूल के पेड़ पर कोआ बैठा कांय-कांय करने लगा। वह समय अभी कोओं के उठने का नहीं होता। इस पर भी उसे कांय-कांय करते सुन मैं समझ गया। अब पूजा पर बैठे-बैठे भी मुझे यही समझ में आया है।"

गोपाल बासी रोटी और नमकीन छाछ पी बाहर बैठक में आया तो वहाँ पंडित ब्रजलाल बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। गोपाल वहाँ आया तो पंडित जी ने पूछ लिया, "मोहन की कोई खबर आई?"

"पंडित जी! अभी तक तो नहीं।"

"आज उसका कोई न कोई समाचार आना चाहिए।"

"मन तो मेरा भी यही कह रहा है।"

"पंडित जी। जलपान के लिए क्या लेंगे?" कलावती ने बैठक में आते हुए पूछ लिया।

ब्रजलाल हंस पड़ा। गोपाल इस हंसने का कारण जानता था। कलावती जब भी अपने पिता को कुछ खिलाने के विचार से आती थी तो उनको पिता जी कहने के स्थान पंडित जी कह कर सम्बोधित किया करती थी। गोपाल ने गंभीर हो कह दिया, "ठीक है, पंडित जी। आप अपनी शिष्या से तो लेकर खा सकते हैं।"

"गोपाल भैया। अब तो मैं तुम्हें अपना समधि समझता ही नहीं। मैं तो तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाई ही मानता हूँ। इससे मुझे अब तुम्हारे घर का खाने में संकोच नहीं होता, परन्तु गार्गी तो अब बिना खिलाए घर से निकलने देती ही नहीं।"

"तो गोपाल को अपने बड़े भाई और भावज को घर भोजन करने का निमन्त्रण देना चाहिए न?"

"हाँ। विशेष निमन्त्रण के समय तो बिना खाए आना ही होगा, परन्तु कलावती की माँ निमन्त्रण स्वीकार करेगी अथवा नहीं? मैं कह नहीं सकता।"

इस समय नगर से मनोरमा, रामचन्द्र और उनका लड़का मक्खन लाल आ पहुँचे। रविवार के दिन कचहरी और स्कूल में छुट्टी होने के कारण चंचल और लाल का पता लेने चले आए थे।

गोपाल ने उठ कर उनका सत्कार किया और उनको बैठक में बैठाया तथा चंचल को उनके आने की सूचना घर में भेज दी।

रामचन्द्र ने बैठते हुए पूछ लिया, "लड़के की कोई खबर आयी?"

"अभी तक तो कोई खबर नहीं आयी। मोहन ने माणिक द्वारा, अमृतसर से यह खबर भेजी थी कि आपसे इस बात का पता चला है कि आपके किसी व्यक्ति ने लाल को लाहौर की रेलगाड़ी में बैठे देखा है और वह लाहौर जा रहा है। वहाँ से उसका कोई समाचार नहीं आया।

इस समय चंचल आकर अपनी माँ को भीतर ले गयी। मनोरमा भगवन्ती से मिली और फिर माँ बेटी दोनों पृथक् में बैठी हुई बातें करने लगीं।

दिन के ग्यारह बज गये थे। रामचन्द्र, मक्खन लाल नगर लौट जाने की तैयारी में लगे थे कि बाहर मोहन की गाड़ी का हार्न बजने का शब्द हुआ। शब्द सुन सब उठ खड़े हुए और मकान के द्वार की ओर लपके।

गोपाल, सोहन, राम, माणिक तो बैठक में ही थे। घर के भीतर से भी स्त्रियां और बच्चे द्वार पर पहुंच गये थे। मोहन, लाल और राधा तथा राधा का पति गाड़ी से उतर ही रहे थे कि दूसरी गाड़ी में श्याम, उसकी पत्नी निर्मला और शकुन्तला तथा उसका पति भी वहाँ आ पहुँचे।

लाल ने आगे बढ़ अपने बाबा और ब्रजलाल के चरण स्पर्श क्रिये। तदनन्तर माँ के चरण स्पर्श कर उसने अपने सास और ससुर को झुक कर नमस्ते की।

पंडित ब्रजलाल ने लाल की पीठ पर हाथ फेरते हुए पूछ लिया, "कहाँ रहे हो, लाल?"

"पंडित जी।" लाल ने मुस्कराते हुए पंडित जी के मुख पर देखा और कहा, "अब तो आपके चरणों में हूँ। दिन भर का भटकता हुआ सायंकाल से पूर्व ही लौट आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी तो मध्याह्न भी नहीं हुआ।"

चंचल और उसकी माँ सबसे पीछे खड़ी थीं। जब लाल ने चंचल की अश्रु-पूर्ण आंखों को देखा तो पंडित जी को यह कह, "अभी आया।" चंचल के समीप जा पूछने लगा, "तो मेरे आने पर रोने लगी?"

चंचल आंखों से रोते हुए और मुख से हंसते हुए दया भाव में अपने पति की ओर देखने लगी। लाल ने कहा, "तो चलो, पहिले तुमसे ही बात कर लूँ।"

उसने मोहन के समीप जा कर कहा, "दादा। तुम बाबा को सब बात समझाओ और मैं तनिक चंचल को बता आऊँ। इतना कह वह चंचल को पृथक् कमरे में ले गया और उससे अपने मन की स्थिति का वर्णन करने लगा।

मोहन सबको लेकर बैठक घर में चला गया। जब सब बैठ गये तो मोहन ने बताया, "लाल छोटे जीजा जी के घर ठहरा हुआ था। सदानन्द जी ने उसको अपने यहाँ रखा और उसके मन की वास्तविक अवस्था को जानने का यत्न किया।

"सदानन्द जी का कहना है कि लाल जब वहाँ पहुंचा था, तो वह अतिहीन मानसिक अवस्था में था। उन्होंने धीरे-धीरे उसको समझाया। इस प्रकार उसकी मानसिक अवस्था को सुधारने का यत्न किया।

"मैंने लाल से गुप्त रहने का कारण पूछा तो वह बताने लगा कि उसे अपने बाबा का घर छोड़ आने पर अपने से घृणा उत्पन्न हो गयी थी। वह मन में यह विचार करने लगा था कि बम्बई चला जाये और वहाँ कुली के काम से आरम्भ कर जब तक वह लखपति नहीं बन जाता तब तक वह अपने पाप का प्रायश्चित हुआ नहीं मानेगा। वह बम्बई जाने की हिम्मत बटोर रहा था। सदानन्द जी उसे अर्थशास्त्र के सिद्धान्त समझा रहे थे। उनका कहना था कि यह ठीक है कि परिश्रम ही धन होता है, परन्तु परिश्रम बिना पूंजी के बहुत कम फल उत्पन्न करता है। पूंजी है, भूमि और भूमि से उत्पन्न होने वाले पदार्थ। सदानन्द जी ने मेरे वहाँ पहुंचने तक लाल को समझा रखा था कि जब घर में भूमि है तो फिर अपने अकेले परिश्रम की किचिंत आय से आरम्भ करने के स्थान कुछ भूमि की पूंजी से परिश्रम आरम्भ क्यों न किया जाये?

"इतना समझ जाने पर भी लाल अपने व्यवहार पर इतना लज्जित था कि वह बाबा को मुख दिखाने के लिये तैयार नहीं होता था। बहुत कठिनाई से मैंने उसे यहाँ आने के लिए तैयार किया। कल इससे एक योजना बन पायी है और फिर मैंने श्याम जी और चमनलाल तथा राधा को सूचित किया तो सब वहाँ एकत्रित हो गये और फिर आज हम सब यहाँ आ गये हैं।"

"तो क्या योजना बनायी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्याम जी ने लाल के लिये शहर में एक दवाईखाना खोलने का प्रस्ताव किया है। इस काम के लिये लाल को एक वर्ष की "ट्रेनिंग" लेनी पड़ेगी। तब वहाँ किसी अच्छे से स्थान पर थोक और परचून दवाइयों का काम आरम्भ करा दिया जायेगा। इसमें पचास हज़ार के लगभग पूंजी लगेगी। काम परिवार का होगा और लाल के लिये शहर में रहने का एक अच्छा सा मकान ले दिया जायेगा अथवा बनवा दिया जायेगा।"

"और लाल कहाँ है?" गोपाल ने पूछ लिया

मोहन ने बताया, "वह चंचल भाभी से इस योजना की स्वीकृति ले रहा है।"

"ठीक है। बिना हाईकोर्ट से निर्णय कराये कोई मुकदमा सुलझता भी तो नहीं।" पंडित ब्रजलाल ने कह दिया।

इस सब समय रामचन्द्र और मक्खन लाल चुपचाप बैठे रहे थे। मनोरमा भीतर चंचल और लाल से बातचीत कर रही थी।

लाल को बाहर आने में देर नहीं लगी और मनोरमा अपनी समधिन भगवन्ती से विदा माँगने चली गयी। मनोरमा ने कहा, "बहिन जी! हम स्त्रियों की अवस्था ऐसी है कि पुरुषों के काम में हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं। यह जो कुछ हुआ है चंचल के पिता की करनी से ही हुआ है। मैं उनकी बात को गलत समझती हुई भी कुछ कह नहीं सकती थी। चंचल बेचारी अनुभव विहीन होने से भ्रम में फंस गयी थी।

"अब मैं चंचल को यहीं छोड़े जा रही हूँ। आप भी तो उसकी माँ हैं। जैसे चाहें उसे रखें।"

जब मनोरमा बाहर अपने पति को चलने के लिये कहने आयी, तब पंडित ब्रजलाल कह रहा था, "बड़ा परिवार होना दोष नहीं। ईश्वर की यह योजना है कि उसने मनुष्य को काम करने के लिये दो हाथ देकर भी मुख एक ही दिया है। हाथों की शेष कमाई दया, धर्म और दान-पुण्य के लिये है।

"परन्तु मुख और हाथों से ऊपर परमात्मा ने मस्तिष्क भी दिया है जो मुख और हाथों पर नियन्त्रण रखता है। बिना विद्या के न हाथों का अधिक होना लाभ दे सकता है और न ही मुख का एक होना किसी प्रकार की बचत कर सकता है।"

रामचन्द्र सूद, उसकी पत्नी तथा लड़का गोपाल आदि से विदा लेकर नगर को तांगें में लौट रहे थे तो रामचन्द्र ने कह दिया, "मुझे तो इन जाटों की बातें समझ में नहीं आती।"

"पिता जी।" मक्खन लाल ने कह दिया, "ये लोग गन्दगी के कीड़ों की भांति कुलबल-कुलबल करते दिखाई देते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरमा से नहीं रहा गया। उसने कह दिया, "मक्खन! जिस बात का ज्ञान न हो, उसको उसके जानने वाले के पास जा सीखना चाहिये। मैं तो यह समझी हूँ कि यह परिवार सरल चित्त, मेहनती और ईमानदार लोगों का है। यही कारण है कि एक विद्वान ब्राह्मण ने अपनी लड़की इन जाटों के घर विवाह दी है।

●●●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की इतिहास पर रचनाएं

भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास

इतिहास में भारतीय परम्पराएं

श्री पी एन ओक की खोजपूर्ण रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम "आज़ाद हिन्द फौज की कहानी"

भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें

क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?

विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय

ताजमहल मन्दिर भवन है

ताजमहल तेजोमहालय शिव मन्दिर है

भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग (2 भाग)

आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है

फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है

लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं

दिल्ली का लाल किला लाल कोट है

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (4 भाग)

कौन कहता है अकबर महान था ?

हास्यास्पद अंग्रेज़ी भाषा

क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है

आरोग्य सौन्दर्य तथा दीर्घायु (व्यायाम व सूर्य नमस्कार)

ज्योतिष स्वयं शिक्षक - फल ज्योतिष

Lucknow's Imambaras are Hindu Building

Christianity is Chrisn-Nity

The Taj Mahal Is A Temple Palace

World Vedic Heritage 2 vols.

Some Missing Chapters Of World History

Some Blunders of Indian Historical Research

Who Says Akbar Was Great ?

Agra Red Fort is a Hindu Building

www.hindisahityasadan.com

2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05

E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर (स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक (स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान (स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात (स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या (स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप (1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे (1949-.... का काल

श्री गुरुदत्त की समाजिक रचनाएं

अमानत
अनदेखे बन्धन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इबलीस
कला
घर की बात
आशा निराशा
अपने पराए
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
न्यायाधिकरण
नए विचार नई बातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेयसी
बन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मै न मानूँ
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सब एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

Gurukul Library 168892

www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चैम्बर्स,10/54 डी बी गुप्ता रोड,करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (बहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर बोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना बदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

Central Library
167892
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

081
167892

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
[illegible]		
[illegible]		
Data Ent. by		
[illegible]		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-E आगत संख्या 167892

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

भाव और भावना
भाग्यचक्र (संस्मरण)

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षाः एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएें

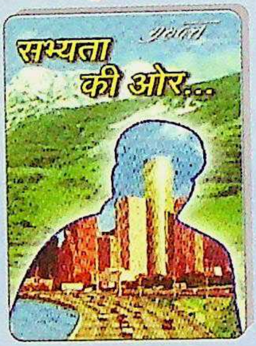

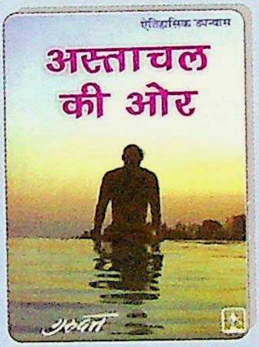

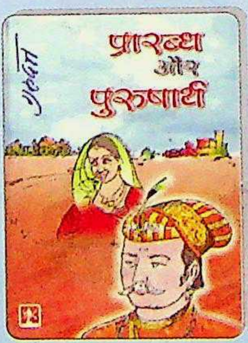

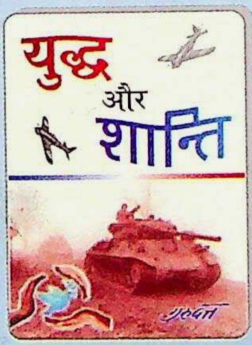

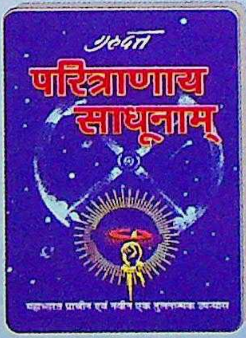

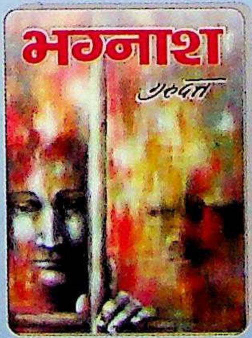

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344
www.hindisahityasadan.com ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar